# वियतनाम
# का
# स्वातन्त्र्य-सघर्ष

इस शताब्दी के
भयानक और दारुण यथार्थ को
आंकने और परखने की
एक जीवन्त कोशिश है
यह विचारोत्तेजक कृति।



नेशनल पब्लिशिंग हाउस • दिल्ली

# वियतनाम
# का
# स्वातन्त्र्य-सघर्ष

अर्थात्
हिन्द-चीन मे
सयुक्त राज्य अमरीका का
हस्तक्षेप

डॉ० धीरेन्द्र

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२३ दरियागंज दिल्ली ११०००६
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण १९७३ • मूल्य १५.००
© डॉ० धीरेन्द्र

भारती प्रिंटर्स दिल्ली ११००३२
द्वारा मुद्रित

VIETNAM KA
SWATANTRYA SANGHARSH
(A history and critical study of
world crisis)
*by* Dr Dhirendra

शहीद !
इन्सान शहीद होता है न !
लेकिन वियतनाम के स्वातन्त्र्य संग्राम में—
जन्मे-अनजन्मे बच्चे,
गर्भवती माताएँ,
खेत में धान बोती स्त्रियाँ
छप्पर के कगार पर बैठे बूढ़े
गिरजा और पगोडो में ध्यानावस्थित भक्तजन,
जंगल में उन्मुक्त भैंसे, हाथी, लंगूर,
पानी में तैरती मछलियाँ,
आकाश में उडते पक्षी,
खलिहान में पड़ा अनाज,
खेत में लहलहाती धान की बाले,
पहाड़ों के ढलान पर खड़ी कुश की ऊँची दूब,
देवदार के पेड और स्वयं खड़ी चट्टानें,
आंगन में खेलते बच्चे और बागों में रेंगा पानी,
किसानों के झोंपड़े, कुत्ते, सूअर, मुर्गियाँ,
ये सब शहीद हुए हैं,
क्योंकि उन सब का, हजारों लाखों का, जड और चेतन का,
बस एक अपराध था—
वे सब वियतनामी थे।
उन सब शहीदों की स्मृति में
प्रतिशोध के आंसू !!



नितान्त व्यस्त होकर भी प्रोफेसर नोम चाम्स्की से हमें जो सहयोग और प्रोत्साहन मिला है। उसके लिए हम किन शब्दों में उनको धन्यवाद दें! डमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ वियतनाम के नयी दिल्ली स्थित दूतावास से हमें चित्र और अन्य सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं जिनके हम आभारी हैं। सप्रू हाऊस की इंडियन कौंसिल आफ वर्ल्ड अफेयर्स तथा अमरीकी सूचना विभाग के लायब्रेरी के कर्मचारियों का भी मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने सदैव तत्परता से मेरे अध्ययन की सामग्री जुटाने में भरसक सहयोग दिया है।

वियतनाम का स्वातन्त्र्य-संघर्ष हमारे युग की सबसे अधिक चर्चित कहानी है। इसीलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि यह छोटी-सी पुस्तक बड़े विवादों का विषय बन जाय। लेकिन नेशनल पब्लिशिंग हाउस के मालिक श्री मलिक परिवार ने इस विवादास्पद विषय पर पुस्तक प्रकाशित करने का साहस दिखाया है। यह हिन्दी के लिए गौरव और हमारे लिए विशेष सन्तोष की बात है।

मेरे मित्र श्याम विमल ने अनेक तरह की सहायता दी है जिसे औपचारिकता के शब्दों से दूषित नहीं करना चाहूँगा।—और निर्मला ने इसकी सहायक ग्रन्थसूची तैयार की है। और उससे भी अधिक इसलिए कि उसने मेरी खानाबदोशी को स्नेहिल झल्लाहट से निभाये रखा।

## अपनी बात

जिन्हे एशिया म प्रजातान्त्रिक प्रवत्तिया को पनपते देखने की चाह है उन्ह वियत नाम और हिन्द चीन मे सयुक्त राज्य अमरीका की नीतिया से आघात पहुचा है। लकिन एक भारतीय होन क नाते मुझे इस बात से और भी अधिक ठेस पहुची कि पिछन दशक म जहा कि विश्व साहित्य राजनीति सनिक व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अथशास्त्र अन्तर्राष्ट्रीय कानून और समाचार ससार वियतनाम के स्वातन्त्य सग्राम से किसी न किसी रूप म प्रभावित हुए बिना न रह सके—और विश्व भाषाओ म सकडा पुस्तकें और हजारा लेख प्रकाशित हो चुके है—हमारी राष्ट्र भाषा और हिन्दीतर भाषाओ मे एक भी आधिकारिक पुस्तक या लेख इस विषय पर उपलब्ध नही है।

वियतनाम युद्ध न लटिन (दक्षिण) अमरीका के पददलित देशा म नयी आशा और उत्साह का जन्म दिया है—ना पश्चिम क सृजनात्मक साहित्य म उसने कथानक कविता और कथा साहित्य मे नयी-नयी प्रवत्तियो को इनस प्रेरणा मिली है। स्वय अमरीकी लोक साहित्य और उद्देश्यहीन अमरीकी जन जीवन का 10 000 मील दूर लडी जा रही लडाई की आग न झुलसाकर नव जीवन की सम्भावित नयी दिशा दर्शायी है। लेकिन—इतनी बडी वास्तविकता से और इतन लम्बे समय तक—कम से कम दिसम्बर 1971 तक जबकि 7वें बेड के परमाणु शक्ति चालित विमानवाहक एण्टरप्राइज ने बगाल की खाडी मे घुसने की धृष्टता दिखलायी—हमारा समाचार ससार और बुद्धिजीवी अछूता, असरोकारी भावना मे भरा कस रह पाया ? यह कोई बहुत बडी अनसुलझी पहेली तो नही है हा हमारे देश की वस्तुस्थिति की एक बडी विडम्बना है।

जिन लोगा के हाथ म कलम थी और प्रचार क साधन थ उन्होन भी देश क बहु सख्यक लोगा तक वियतनाम म अमरीकी हस्तक्षेप की सच्चाई न पहुँचने दी। दर असल वास्तविकता तो यह थी कि अमरीकी एजेंसिया के प्रभावशाली प्रचार काय के कारण स्वय अमरीकी जनता भी यही समझती रही कि चीन की शह पर उत्तरी वियतनाम न अमरीकी बेडे पर गहरे समुद्र म अकारण गोलाबारी की है। चीन क प्रति सन्देहशील प्रवत्ति के कारण भी हमने वियतनाम के स्वातन्त्य-सघष क प्रति

सहानुभूति महसूस नहीं की। नयी दिल्ली के एक सुप्रसिद्ध प्रधान सम्पादक का कहना था कि 'हमारे दुश्मन (चीन) का दुश्मन (अमरीका) हमारा दोस्त होता है। और हमारे चिंतकों और बुद्धिजीवियों ने अमरीका की आक्रामक कारवाइयों को 'प्रजातन्त्र और अधिनायकवादी द्वन्द्व का पर्याय मान लिया। हमारे देश की जनता को वियतनाम सम्बन्धी वास्तविकता से अपरिचित बनाये रखने में वस्तुस्थिति की अजानता एक विशेष कारण रही है।

और कुछ थोड़े अंशों में हमारे शक्तिशाली लेखकों और सम्पादकों के निजी स्वार्थ एवं सैद्धान्तिक पक्षपात ने भी उन्हें इतने अहम मसले पर 'सच्चाई' के प्रति विश्वासघात करने पर विवश किये रखा।

भारतीय बुद्धिजीवी से (1971 दिसम्बर से भी पहले) अपेक्षा की जाती थी कि वह अन्तर्राष्ट्रीय न्याय और वियतनाम के प्रश्नों पर उन्हीं मानवीय मूल्यों और सिद्धान्तों के प्रति लगावपरक जोश का परिचय देगा जो कि उसने गोआ, और बांग्ला देश पर प्रकट किया। हमें सैद्धान्तिक मतावादों के शीतयुद्ध का प्यादा-भर बनकर नहीं रह जाना है। छोटे देशों की प्रभुसत्ता अन्तर्राष्ट्रीय न्याय एवं मानवीयाधिकारों के सवाल ऐसे हैं जिन पर कि भारत के बुद्धिजीवियों से दूसरे राष्ट्र पथ प्रदर्शन की कामना कर सकते हैं।

दर्शन का विद्यार्थी होने के नाते मेरा आग्रह प्रमाणपरक तो अवश्य है किन्तु सत्य असत्य के बीच तटस्थता का नहीं। एक महान प्रजातान्त्रिक देश की सरकार ने जिस अन्याय अदूरदर्शिता, क्रूरता, क्षुद्रता और मूर्खता से वियतनाम में हस्तक्षेप किया है उसके प्रमाण इतने अधिक हैं कि कोई चाहकर भी अमरीका को निर्दोष नहीं कह सकता। फिर सवाल यह नहीं है कि रूस ने चकोस्लोवाकिया में क्या किया? प्रश्न तो यह है कि एक प्रजातान्त्रिक कहलानेवाले देश की सरकार और फौजों ने 'प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों की हत्या कैसे की? और इतने बड़े देश के शिक्षित सभ्य, प्रजातन्त्र की प्रणाली में पले नागरिकों को, नेताओं को, सीनेटरों को पत्रकारों को बुद्धू कैसे बनाया जा सका? आज अमरीका के चिंतक अपनी सरकार की इसी धोखेबाजी की आलोचना कर रहे हैं।

मैं तटस्थता और पक्षपातशून्यता का दावा नहीं करना चाहता। क्योंकि प्रमाण सिद्ध होने पर भी सत्यता न दिखाना स्वार्थपरता तथा कायरता का लक्षण होता है। हाँ, यह दावा अवश्य करूँगा कि इस पुस्तक में कोई भी बात बिना प्रमाण के नहीं लिखी गयी है। फिर चाहे हर बात के साथ फुटनोट न देकर उस पण्डिताऊपन का जामा न पहनाने की कोशिश ही क्यों न की गयी हो। अमरीकी सैनिकों (जो मेरे विद्यार्थी रहे थे), वियतनाम के युवक युवतियों व बौद्ध भिक्षुओं, और

वियतनामी नेताओं से भेंट निजी इण्टरव्यू तथा अमरीकी सैनिक-दस्तावेजों से प्राप्त सामग्री पर यह पुस्तक आधारित है।

वियतनाम और हिन्द चीन समस्या के अनेक पहलू हैं—राजनीतिक औपनिवेशिक आर्थिक सामाजिक अंतर्राष्ट्रीय सैनिक व सामरिक ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीय और सबसे बड़ा पहलू है इन्सानियत का। अमरीका की हिंसक प्रवृत्तियों ने मानव को एक खूंख्वार मशीन में बदल डाला है। इन सभी पहलुओं को यथासम्भव पाठक तक पहुँचाना हमारा लक्ष्य रहा है और इसलिए इस पुस्तक की शैली एक शैली सी बन जाती है जो सम्भव है कुछ पाठकों को अरुचिकर लगे। और इसी कारण अक्सर किसी एक ही तथ्य को अनेक बार दोहराना भी पड़ा है।

जाति प्रथा और साम्प्रदायिक विद्वेष की आलोचना करने से मैं भारत विरोधी नहीं बन जाता। उसी तरह अमरीका की रंगभेद नीति और सैनिकवाद की आलोचना होने से यह पुस्तक अमरीका विरोधी नहीं मानी जानी चाहिए। वास्तव में इसको लिखने की प्रेरणा मुझे प्रोफेसर नोम चोम्स्की से मिली जो अमरीका में वियतनाम युद्धविरोधी आन्दोलन के प्रमुख नेता हैं। 5,00 000 लोगों के बीच जब हम दोनों ने वाशिंगटन में मार्च किया तो उनका उलाहना था कि भारत में युद्ध विरोधी आन्दोलनों का जोर क्यों नहीं जबकि अमरीका में इतनी उग्रता है।

स्वयं अमरीका के कुछ शक्तिशाली तत्त्वों ने अपने राष्ट्रीय आदर्शों की बड़े घिनौने ढंग से हत्या की है। वियतनाम के स्वातन्त्र्य संघर्ष ने विश्व मानवता को राष्ट्रीयता के संकीर्ण दायरों से निकालकर, भ्रातृत्व के रिश्ते से जोड़ दिया है। सवाल अमरीका व गैर-अमरीका का नहीं अन्याय व न्याय का है। हम अमरीका के पतन से इतना सरोकार नहीं। हमारा आग्रह तो वियतनाम के ग्रामीणों के उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाओं से है। उन्होंने पृथ्वी की सबसे बड़ी सैनिकवादी ताकत को चुनौती देकर मानव जाति के इतिहास में एक नयी मिसाल कायम की है। अब देखना यह है कि उनकी कुर्बानियां बेकार न जाने पायें।

इस पुस्तक की अपूर्णताएँ भी मेरी जानकारी में हैं। वियतनाम के जन जीवन के बारे में यहां कुछ भी नहीं लिखा जा सका है। वहां के लोक साहित्य, प्राकृतिक और भौगोलिक सुन्दरता का वर्णन नहीं जोड़ा गया है। वियतनाम के लोगों ने किस वीरता त्याग और लगन से जमीन के अन्दर सुरंग खोदकर पहाड़ों के बीच गुफाएँ बनाकर स्कूल अस्पताल और फैक्टरियां चलाकर अपनी आजादी की लड़ाई और दैनिक जीवनचर्या बनाये रखी है दिन रात अमरीकी बमबारियों के बावजूद किस तरह रूस में बने टैंकों को लेकर और 1 22 मिलीमीटर की 25 मील दूर तक मार करनेवाली विशाल तोपों के सहारे 30 मार्च 1972 को उत्तर

वियतनामी सनिको और दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मोरच न एन लाक, को तुम और क्वान्त्री को मुक्त करवा दिखाया—यह सामरिक इतिहास का एक चमत्कारी रहस्य है। सम्भव है 50,100 मील लम्बी सुरगें खोदकर ये टैंक 17वी समानान्तर रेखा के दक्षिण म हायफाग स पहुँचाये गये हो। ये सब ऐसे पक्ष ह जिन पर विस्तार से पृथक लिखन की योजना है। इस पुस्तक म तो हमारा लक्ष्य मुख्यतया सयुक्त राज्य अमरीका की हमलावर नीतियो और अमरीकी प्रवृत्तियो सम्बन्धी तथ्यो को पाठको के सामने रखना है।

अनक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज परिशिष्ट म दिये गये है। और अन्त म बर्ट्रेण्ड रसल की 'अमरीकी जनता के नाम अपील' जिसे वास्तव मे इस पुस्तक का सिद्धान्त पत्र (थीसिस) समझना चाहिए।

● ●

पिछले 6 महीनो मे कुछ बडी ही अनहोनी बातें हुई है। प्रेसिडेण्ट निक्सन न हनोइ हायफाग पर भयकर बमबारियां करवायी। 7 नवम्बर, 1972 को रिचर्ड निक्सन को भारी बहुमत से दोबारा प्रेसिडेण्ट चुना गया। चुनाव जीतन क हथकण्डो म निक्सन ने हर उचित अनुचित तरीके से काम लिया। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक समझौतो के रहस्य बताने और टक्स म रियायत करने की एवज म बडी-बडी कम्पनियो स करोडो का गुप्त चन्दा इकट्ठा करके 4 करोड डालर (कोई 32 करोड रुपये) निक्सन क चुनाव म खर्च किये गये। एफ० बी० आइ० और सी० आई० ए० के एजण्टो द्वारा प्रतिद्वन्द्वी सेनेटर मैकगवन के आन्दोलन केन्द्रो पर जासूसी कारवाइयां की गयी—उनके दफ्तरो को बग' किया और टलिफोन को टेप किया। और सब स बडी चाल वियतनाम म शान्ति-स्थापना का झासा दिया गया। 22 अक्टूबर को व्हाइट-हाउस न 'शान्ति का मसविदा तयार किया है और कुछ ही दिनो म उस पर हस्ताक्षर हो जायेंगे' की घोषणा की। 4 साल के शासन म जो शान्ति का समझौता नही हो सका, उसे चुनाव स 10 दिन पहले तयार हो जाना'—निक्सन की नीयत का प्रतीक था। हनोई की एक घोषणा क अनुसार समझौते की शर्तें पूरी तरह स निश्चित हो चुकी थी और हस्ताक्षर होन की तारीख दो बार स्थगित की जा चुकी थी। 31 अक्टूबर, 1972 'अन्तिम तिथि' तय हो चुकी थी। 27 अक्टूबर को श्री किसिंगर न कहा कि बस एक बार परिस म और मीटिंग करनी होगी तथा मतभेद ज्यादा नही हैं। लेकिन परिस म किसिंगर व हनोई क प्रतिनिधि थ्री थो के बीच लम्बी गुप्त-वार्ताओ म सब शर्तों क अन्तिम रूप म तय हो जान क बावजूद शान्ति समझौते' पर निक्सन न हस्ताक्षर नही ही किय। शान्ति वार्ताओ को लम्बा चलाकर 'शान्ति' के नाम पर चुनाव जीतने के साथ-साथ अमरीका ने बडे पमान पर सगाँव शासन को हथियार भेजे।

वियतनामी नेताओं से मेरे निजी इण्टरव्यू तथा अमरीकी सैनिक-दस्तावेजों से प्राप्त सामग्री पर यह पुस्तक आधारित है।

वियतनाम और हिंद चीन समस्या के अनेक पहलू है—राजनीतिक औपनिवेशिक आर्थिक सामाजिक अन्तराष्ट्रीय, सैनिक व सामरिक ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीय और सबसे बडा पहलू है इन्सानियत का। अमरीका की हिंसक प्रवृत्तियों ने मानव का एक खूंखार मशीन में बदल डाला है। इन सभी पहलुओं को यथासम्भव पाठक तक पहुँचाना हमारा लक्ष्य रहा है और इसलिए इस पुस्तक की स्वयं एक शैली सी बन आयी है जो सम्भव है कुछ पाठकों को अरुचिकर लगे। और इसी कारण अक्सर किसी एक ही तथ्य को अनेक बार दोहराना भी पडा है।

जाति प्रथा और साम्प्रदायिक विद्वेष की आलोचना करने से मैं भारत विरोधी नही बन जाता। उसी तरह अमरीका की रंगभेद नीति और सैनिकवाद की आलोचना होने से यह पुस्तक अमरीका विरोधी नही मानी जानी चाहिए। वास्तव में इसको लिखने की प्रेरणा मुझे प्रोफेसर नोम चोम्स्की से मिली जो अमरीका मे वियतनाम युद्धविरोधी आन्दोलन के प्रमुख नेता है। 5,00 000 लोगों के बीच जब हम दोनो ने वाशिंगटन में मार्च किया तो उनका उलाहना था कि भारत में युद्ध विरोधी आन्दोलनों का जोर क्यों नही जबकि अमरीका में इतनी उग्रता है।

स्वयं अमरीका के कुछ शक्तिशाली तत्त्वो ने अपने राष्ट्रीय आदर्शों की बड़े घिनौने ढंग से हत्या की है। वियतनाम के स्वातन्त्र्य संघर्ष ने विश्व मानवता को राष्ट्रीयता के संकीर्ण दायरों से निकालकर भ्रातृत्व के रिश्ते से जोड दिया है। सवाल अमरीका व गैर-अमरीका का नही अन्याय व न्याय का है। हम अमरीका के पतन से इतना सरोकार नही। हमारा आग्रह तो वियतनाम के ग्रामीणों के उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाओं से है। उन्होंने पृथ्वी की सबसे बडी सैनिकवादी ताकत को चुनौती देकर मानव जाति के इतिहास में एक नयी मिसाल कायम की है। अब देखना यह है कि उनकी कुर्बानियाँ बेकार न जाने पायें।

इस पुस्तक की अपूर्णताएँ भी मेरी जानकारी में हैं। वियतनाम के जन जीवन के बारे में यहाँ कुछ भी नही लिखा जा सका है। वहाँ के लोक-साहित्य प्राकृतिक और भौगोलिक सुन्दरता का वर्णन नहीं जोडा गया है। वियतनाम के लोगों ने किस वीरता त्याग और लगन से जमीन के अन्दर सुरंग खोदकर पहाड़ों के बीच गुफाएं बनाकर स्कूल अस्पताल और फैक्टरियाँ चलाकर अपनी आजादी की लड़ाई और दैनिक जीवनचर्या बनाये रखी है दिन रात अमरीकी बमबारियों के बावजूद किस तरह रूस में बने टैंकों लेकर और 1 22 मिलीमीटर की 25 मील दूर तक मार करनेवाली विशाल तोपों के सहारे 30 मार्च 1972 को उत्तर

वियतनामी सनिको और दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मोरचे न एन लाव, को तुम और क्वाङ्ग्री का मुक्त करवा दिया—यह सामरिक इतिहास का एक चमत्कारी रहस्य है। सम्भव है 50,100 मील लम्बी सुरगें खोदकर य टक 17वी समानान्तर रेखा क दक्षिण म हायफाग म पहुँचाये गय हो। ये सब ऐसे पक्ष है जिन पर विस्तार से पृथक लिखने की योजना है। इस पुस्तक म तो हमारा लक्ष्य मुख्यतया सयुक्त राज्य अमरीका की हमलावर नीतियो और अमरीकी प्रवृत्तियो सम्बन्धी तथ्यो को पाठको क सामने रखना है।

अनेक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज परिशिष्ट म दिये गय है। और अन्त मे बर्टेण्ड रसल की अमरीकी जनता क नाम अपील जिसे वास्तव मे इस पुस्तक का सिद्धान्त पक्ष (थीसिस) समझना चाहिए।

● ●

पिछले 6 महीनो म कुछ बडी ही अनहोनी बातें हुई है। प्रेसिडण्ट निक्सन ने हनोइ हायफॉग पर भयकर बमबारिया करवायी। 7 नवम्बर, 1972 को रिचड निक्सन को भारी बहुमत से दोबारा प्रेसिडेण्ट चुना गया। चुनाव जीतने के हथकण्डो म निक्सन न हर उचित-अनुचित तरीको से काम लिया। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक समझौतो के रहस्य बताने और टक्स म रियायत करने की एवज म बडी-बडी कम्पनियो से करोडो का गुप्त चन्दा इकट्ठा करके 4 करोड डालर (कोई 32 करोड रुपये) निक्सन के चुनाव म खच किय गये। एफ० बी० आइ० और सी० आइ० ए० के एजेण्टो द्वारा प्रतिद्वन्द्वी सेनेटर मैकगवन क आन्दोलन केन्द्रो पर जासूसी कारवाइया की गयी—उनक दफ्तरो को 'बग' किया और टेलिफोन का टेप किया। और सब स बडी चाल वियतनाम म शान्ति-स्थापना का झाँसा दिया गया। 22 अक्टूबर को ह्वाइट-हाउस न शान्ति का मसविदा तयार किया है और कुछ ही दिनो म उस पर हस्ताक्षर हो जायेंगे' की घोषणा की। 4 साल के शासन म जो शान्ति का समझौता नही हो सका उसे चुनाव स 10 दिन पहले तयार हो जाना—निक्सन की नीयत का प्रतीक था। हनोई की एक घोषणा क अनुसार समझौते की शर्तें पूरी तरह स निश्चित हो चुकी थी और हस्ताक्षर होने की तारीख दो बार स्थगित की जा चुकी थी। 31 अक्टूबर 1972 'अन्तिम तिथि' तय हो चुकी थी। 27 अक्टूबर को थी किसिंगर ने कहा कि बस एक बार पेरिस म और मीटिंग करनी होगी तथा मतभेद ज्यादा नही हैं। लेकिन पेरिस म किसिंगर व हनोई के प्रतिनिधि श्री थो क बीच लम्बी गुप्त-वार्ताओ म सब शर्तों क अन्तिम रूप म तय हो जाने के बावजूद 'शान्ति समझौते' पर निक्सन न हस्ताक्षर नही ही किय। शान्ति वार्ताओ को लम्बा चलाकर शान्ति के नाम पर चुनाव जीतने के साथ-साथ अमरीका ने बडे पैमाने पर सगीव शासन का हथियार भेज।

7 महीने के भीतर भीतर 2 000 से अधिक जेट बमबारों को सैगाव की वायुसेना के अधीन कर दिया गया और इस समय सगाव की कुल फौज 10 00,000 की जा चुकी है। शस्त्रास्त्रों और हवाई जहाजों की सख्या म सगाव रूस अमरीका को छोडकर तीसरे नम्बर पर है। सख्या की तुलना म उसका नम्बर पाचवाँ है। क्योकि सगाव की अपनी कोई औद्योगिक शक्ति नहीं है—इसलिए यह स्पष्ट है कि इतनी बडी फौज का रखने का मतलब है कि दक्षिण वियतनाम अमरीका की आर्थिक व सैनिक सहायता के बिना टिक नही सकेगा। और इस प्रकार अमरीका सगाँव म अपने पर जमाये रखने की कोशिश करेगा। 16 दिसम्बर 1972 को अमरीका ने फिर से हनोई को दोषी ठहरा शाति-वार्ता भग कर दी और उसके जेट विमानो ने हनोई हायफाग इलाके पर घमासान बमबारियां शुरू कर दी हैं। वियतनाम की गगनभेदी तोपो ने दजनो जेट मार गिराये हैं। इसका मतलब है कि वाशिंगटन की सरकार बमबारी के आतक से हनोई को अमरीकी शर्तें मन वाने को विवश करना चाहती है और वियतनाम की जन शक्तियां का एक ही जवाब है

देखना है जोर कितना बाजुए कातिल म है। विश्व-जनमत 'सत्य' के साथ है और सत्य वियतनाम की जनता के साथ। हमारी लोकसभा के 74 सदस्यो ने एक घोषणा म अमरीकी नीति की निन्दा की है। भारत के अनेक राज्यो की विधानसभाओ म वियतनाम स्वातन्त्र्य सघर्ष के समर्थन म प्रस्ताव पास किये गये है और हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने घोषणा की है अततो गत्वा विजय वियतनाम की होगी। भारत की जनता वियतनाम की जनता के साथ है। राष्ट्रसघ के महामन्त्री ने भी अमरीकी बमबारी की आलोचना की है। अमरीका नैतिक दृष्टि से हार चुका है। सैनिक दृष्टि म भी वह अपने लक्ष्य म असफल रहा है। और वियतनाम की जनता का उसे कोई समर्थन नहीं है। इस लिए उसकी पराजय सुनिश्चित है। किन्तु अभी कितना और समय और बलिदान —य सब अज्ञात और अनिश्चित है। इस समय—हजारों टन बम फिर से वियत नाम पर बरस रहे हैं और वे हैं मेड इन यू० एस० ए०।

२ दिसम्बर १९७२ —धीरेन्द्र
समाज राजनीतिक प्रवृत्ति सस्थान
एम १२ ग्रेटर कैलाश १
नयी दिल्ली ११ ४८

# अनुक्रम



•••

• •

वियतनाम
का
स्वातन्त्र्य-संघर्ष

1

# पश्चिमी साम्राज्यवाद के आने से पहले का वियतनाम

*"चीन के विशाल क्षेत्र में ईसाई धर्म और व्यापार के विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि हिन्द चीन में प्रवेश हो। और हिन्द चीन में घुसने के लिए यह जरूरी है कि कम्बोडिया, मेकांग और कोचीन-चीन पर यूरोपियनों का कब्जा रहे।'*

मेन्दोसा, कूज तथा पाइरेज
(सोलहवीं सदी के तीन प्रसिद्ध मिशनरी व व्यापारी सैलानियों के एशिया से भेजे गए लेखों के आधार पर)

*"भौगोलिक दृष्टि से वियतनाम पृथ्वी के एक बड़े भाग—दक्षिण पूर्वी एशिया के ऊपर बैठा हुआ है जिसकी कुल आबादी कोई 25 करोड़ है। वियतनाम पर जिस किसी का अधिकार रहेगा वह पूर्व में फारमोसा व फिलीपीन, पश्चिम में थाईलैण्ड व बर्मा के चावल के भण्डार और दक्षिण में मलयेशिया और इण्डोनेशिया के रबर, कच्चा लोहा, खनिज पदार्थ और टीन पर अधिकार पायेगा।—इस प्रकार वियतनाम केवल स्वयं ही नहीं, बल्कि उस पर आधिपत्य रखकर दक्षिण-पूर्वी एशिया के महान् सम्पत्ति भण्डार और करोड़ों लोगों को प्रभावित किया जा सकता है और उस पर प्रभुत्व रखा जा सकता है।'*

हेनरी केबेट लॉज
(सैगोन स्थित अमरीकी राजदूत 27 फरवरी 1965)

## भौगोलिक स्थिति और स्वातन्त्र्य युद्ध

दक्षिण-पूर्वी एशिया का एक भाग वियतनाम कहलाता है जो द्वितीय महायुद्ध के अन्त तक फ्रान्सीसी साम्राज्य हिन्द चीन का पूर्वीय भाग था। हिन्द चीन या इण्डो चाइना में तीन छोटे देश आते है—वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस। हिन्द चीन की 70 फीसदी जनता वियतनामी है जिसका अधिक भाग वियतनाम में बसा हुआ है। यही क्षेत्र फ्रान्सीसियों के शासन में तीन विभागों में बँटा था कोचीन चीन अनाम और टाकिन। सांस्कृतिक दृष्टि से वियतनाम के अधिकतर लोग चीन से जुड़े हैं जबकि कम्बोडिया और लाओस की जातियाँ स्याम, बर्मा और भारत के नजदीक है।

**वियतनाम** हिन्द चीन के पूर्वी समुद्र-तट पर एशिया महाद्वीप के हृदयस्थल पर स्थित है। उसके उत्तर में खड़ा है विशाल चीनी गणतन्त्र पश्चिम में है उसके पड़ोसी लाओस और कम्बोडिया और पूर्व और दक्षिण की सीमाओं को प्रशान्त महासागर की लहरें निरन्तर चूमती है। सामरिक दृष्टि से इसका बड़ा महत्व है और इसीलिए हिन्द चीन और चीन पर आक्रमण करनेवाले विदेशियों ने इसी को पहले अधिकार में करने के यत्न किये हैं।

वियतनाम का कुल क्षेत्रफल 3 29 000 वर्ग किलोमीटर अर्थात 1 27 000 वर्गमील है। इसका आकार अंग्रेजी के S अक्षर की तरह है किन्तु उसके दोनों छोर चौड़े है और बीच का भाग पतला। सबसे अधिक चौड़ाई उत्तरी भाग की है 600 किलोमीटर। और सबसे कम चौड़ाई मध्य क्षेत्र की है 50 किलोमीटर। उत्तर में चीन की सीमा से लेकर दक्षिण में का माउ के समुद्री छोर तक इसकी कुल लम्बाई है 1,650 किलोमीटर।

फ्रान्सीसी राज के अधीन वियतनाम को जिन तीन प्रशासनिक इकाइयों में बाँटा गया था उन्हें वियतनाम भाषा में कहा जाता है

थेक बो (उत्तर फ्रान्सीसी—टाकिन)

चुङ बो (मध्य, फ्रान्सीसी—अनाम)

नाम बो (दक्षिण फ्रान्सीसी—कोचीन चीन)।

वियतनाम की जलवायु समशीतोष्ण और नमी से भरी है। उसके प्रति वर्ग सेण्टीमीटर पर सूर्यातप कोई 100 किलो कैलोरी प्रतिवर्ष मिलता है। अतएव वर्ष के बारहों महीने हरियाली छायी रहती है और अनेक फसलें पैदा की जाती हैं। सालाना औसत वर्षा 1 500 मैदानों में और पहाड़ों पर 2 000 से 3 000 तक। नमी अधिक से अधिक 80-90 प्रतिशत तक पहुंच जाती है। ये नमी और समशीतोष्ण तापमान वियतनाम के भौगोलिक आकार प्रकार और मानव जीवन की प्रकृति और प्रवृत्तियों का निर्धारित करते हैं।

वियतनाम की दो वडी नदिया हैं लाल नदी और मेकाग। दोना का उदगम चीन से होता है किन्तु उनका मुहाना वियतनाम म ही है। मेकांग को दक्षिण-पूर्वी एशिया की गगा कहा जाता है। वह चीन से निकलकर वर्मा, थाईलैण्ड, लाओस और कम्बाडिया होती हुई वियतनाम के नाम वा (दक्षिणी) तट पर प्रशान्त महा सागर मे जा मिलती है। मैकाग 1,400 $10^9$ घनमीटर जल प्रतिवर्ष वहा ले जाती है। दूसरी अनेक छोटी और बरसाती नदियाँ भी है जो खेती के लिए विनाशकारी और सहायक दोनो ही हैं।

वियतनाम की मिट्टी लाल और पीले रग की होती है और पर्याप्त मात्रा म नमी के कारण बडी उपजाऊ भी। नदिया के जल म विशेष खनिज तत्व भी पाय जाते हैं जिनसे खेती और मछली उत्पादन म सहायता मिलती है।

वियतनाम के जगला म अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ और पशु-पक्षी बहुतायत म पाये जाते हैं। 43 8 प्रतिशत भूमि जगला वन-सम्पदा और घनी टापिकल वनस्पति से भरी हुई ह।

पशुआ मे 200 से अधिक प्रकार के जानवर हात हैं। हाथी बाघ बघेरा, चीता भालू जगली भैंसे आदि बहुतायत म पाये जात है। पेडो पर बन्दर व वनमानुष बहुत हात हैं। पक्षियों म 1 000 स अधिक तरह के प्रकार मिलत हैं— सुन्दर पखावाले मोर तीतर तोत आदि। काले पक्षिया म कोयल बहुत लोक प्रसिद्ध है।

वियतनाम क समुद्री पानी म नदिया म नाला में, नहरा म झीला विशेष कर दक्षिणी भाग नाम वो म 200 से अधिक तरह की मीठे पानी की मछलियाँ और 800 प्रकार की खार पानी की (समुद्री) मछलिया पायी जाती है।

बरसात का बडा विचित्र रूप रहता है। नवम्बर मे अप्रल तक सर्दिया का मौसम होता है जिसम चीन के साइबेरिया की सद और सूखी हवाएँ उत्तरी वियतनाम पर छा जाती हैं। लेकिन क्षत्रीय वातावरण की नमी म मिल जाने क कारण वर्षा भी बहुत हाती है। नवम्बर का महीना सर्दी म सबस अधिक बारिश का समय हाता है। मई-अक्तूबर के महीन म गरमिया की बरसात पडती है जिसमें घुट घुटन और नमी ज्यादा होती है। इन दिना दक्षिणी हवाएँ हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर स उठकर समूचे वियतनाम पर छा जाती ह। आकाश प्राय बादलो से घिरा रहता है।

हवा म नमी और गरमी इतनी ज्यादा हो जाती है कि जो ऐसी जलवायु के आदी न हो उनके लिए रहना और काम करना मुश्किल हो जाता है। और आकाश साफ न होने के कारण हवाई जहाजो और हेलिकॉप्टरो का उडना और अमरीकियो की गतिविधियो म ढीलापन आना स्वाभाविक होता है। यही कारण

है कि अमरीकियों और सगौव के खिलाफ उत्तरी वियतनाम और दक्षिणी वियत नाम के राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे ने इस वर्ष प्रत्याक्रमण 30 मार्च, 1972 को शुरू किया था।

प्राकृतिक दृष्टि से वियतनाम और हिन्द चीन का क्षेत्र बहुत सुन्दर और आकर्षक है। वियतनाम का एक चौथाई क्षेत्र पर्वतों और पहाड़ियों से भरा पड़ा है जिनके बीच बीच में तराई के जंगलात, झीलें और नदियाँ पायी जाती हैं। यहाँ के पर्वत बहुत ऊंचे नहीं हैं। 1000 मीटर से ऊंचे पहाड़ केवल 10 प्रतिशत होंगे जबकि सबसे बड़े की ऊँचाई 3,142 मीटर है जिसे 'फन्सिपेन की चोटी' कहा जाता है। प्रशान्त सागरीय समुद्र-तटों से लेकर समूचे देश पर पर्वतों का जाल-सा बिछा है जो कि सामरिक दृष्टि से वियतनामियों के लिए शत्रु से बचाव का महत्वपूर्ण साधन है। ये पहाड़ियाँ ही अमरीकी बमों के सामने वियतनामी देशभक्तों की सुरक्षा की ढाल हैं और ये ही वे पहाड़ियाँ हैं जिन्हें मिट्टी में बदल डालने के लिए अमरीकी बी 52 ने बमबारी के 'सच्यूरेशन' बमबारी के तरीके अपनाये हैं।

अमरीकी सेनिकों ने जब दक्षिण वियतनाम और लाओस के गाँवों और कस्बों को उजाड़ दिया तब उन उन देशों के राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के लड़ाकों ने इन्हीं पहाड़ियों की गुफाओं में अपने सैनिक कैम्प, हस्पताल, स्कूल, फैक्टरियाँ चलाकर अपनी स्वतन्त्रता की लड़ाई जारी रखी है। और पूरे के पूरे पहाड़ों को मिटाने में अमरीकी साम्राज्य को अभी कम से कम और 50 साल तथा 50 000 बमबार चाहिए। अमरीकियों के पास न इतना समय है, न ही धीरज। लेकिन वियतनामियों की तो प्रकृति ही शान्ति और धैर्य की है और ये सुन्दर पहाड़ सुरम्य घाटियाँ और वन-सम्पदाएँ हमेशा से उनकी सुरक्षा और विकास की गारण्टी देते हैं।

आजकल वियतनाम को अस्थायी रूप से 17वीं समानान्तर रेखा पर दो भागों में बाँट दिया गया है। यह विभाजन 1954 में जेनेवा सम्मेलन में हुआ था जबकि 62 000 वर्गमील का उत्तरी भाग जिस पर कि राष्ट्रवादी हो ची मिन्ह का प्रभुत्व उत्तरी वियतनाम के रूप में स्वीकृत किया गया। 1962 में इसकी जनसंख्या 1 62,00 000 थी। दूसरी ओर 65 000 वर्गमील का क्षेत्र जिसकी जनसंख्या 1963 में 1 53,17 000 आंकी गयी थी, को जेनेवा-समझौते के अन्तर्गत दक्षिण वियतनाम का क्षेत्र माना गया। इस प्रकार पूरे वियतनाम की कुल जनसंख्या 3,15 17 000 है। भौगोलिक दृष्टि से वह इटली से क्षेत्रफल में बड़ा है और जनसंख्या की दृष्टि से स्पेन के बराबर।

## प्राचीन इतिहास

ईसा से कोई 400 साल पहले जिसे कि आजकल संयुक्त राज्य अमरीका कहा

जाता है वह एक घना जगल था। तब सम्भव है कि रैड इण्डियन (आदिवासी) अमरीकी महाद्वीप पर घूमा करते हो। तब जब पश्चिम अभी शायद उभरा भी न था, अनक जातियाँ सुदूर उत्तरी एशिया से विश्व म फली। सम्भवत बेरिंग स्ट्रेट स होकर कुछ अलास्का होते हुए अमरीकी महाद्वीप म जा बसी जिन्होने माया सस्कृति की स्थापना की और उन्ही के उत्तराधिकारिया को आजकल 'रड इण्डियन' कहा जाता है। दूसरी कुछ जातियाँ दक्षिण की ओर बनी और यागत्सी नदी के आसपास बस गयी जिन्ह कि आज चीन का चिनयाग प्रान्त कहा जाता है। इनमे स्याम के येंक परिवार के लोग थ जिन्होने आगे चलकर एक नये साम्राज्य की स्थापना की थी। दूसरी जातिया के बढते हुए प्रभाव के कारण ये लोग येंक याग से दक्षिण की ओर बढे और क्वाक चाऊ मे पहुँचे। अनुमान है कि कोई तीसरी शताब्दी ईसा से पूर्व ये टोकिन और उत्तरी अनाम मे आ बसे। अन्तर्जातीय विवाह होने क कारण चीन से आयी हुई इन जातिया और टोकिन के आदिवासिया म मेल जोल बन्ता गया और आग चलकर एक नयी जाति का प्रादुर्भाव हुआ जिसको कि ऐतिहासिक दृष्टि से आनामी या अनाम के लाग कहा जाता है।

उत्तरी वियतनाम मे चीन से आये हुए यू हे या व्हीट लोगो ने स्थानीय आदि वासिया स मिलकर जिस नये राज्य की स्थापना की उसका नाम था अनाम याई जाति क लोग जा दक्षिण चीन म बस गये थे, उनको बाद मे 221 ईसापूर्व के आसपास चीन के प्रभावशाली शी हुवाग ती ने अपने म मिला लिया। उसके बाद चीनी साम्राज्य ने दक्षिण की ओर पर फलाये और अनाम के छोटे राज्य के प्रसिद्ध एतिहासिक स्थान ह्वे को अपने चीनी साम्राज्य मे मिला लिया।

कोई 1000 वर्ष तक अर्थात 939 ईस्वी तक अनाम की जनता चीनी राजाओ के शासन के अधीन रही। किन्तु इस लम्बी अवधि म अनाम का शिक्षित वर्ग चीनी सास्कृतिक परम्पराओ मे ढल गया और चीनियो और अनामिया के बीच अन्तर्जातीय विवाह भी होते रहे। चीन की सस्कृति उस समय सुदूर पूर्व के देशो म सबसे महान थी और इसलिए उत्तरी वियतनाम के क्षेत्र म उसका स्वागत हुआ। चीन के सास्कृतिक विस्तार क साथ-साथ वियतनाम म जहाँ कनफ्यूशस और ताओ क दार्शनिक सिद्धान्त फले वहाँ बौद्ध धर्म का भी प्रचार हुआ और इसके साथ-साथ लिपि और तकनीकी विकास भी आया।

चीन के साथ इन सम्बन्धो के कारण जहा अनाम मे सास्कृतिक प्रगति हुई वहाँ उसकी प्रतिक्रियास्वरूप राष्ट्रीय भावना का भी प्रादुर्भाव हुआ। चीन की राजधानी से अनाम का फासला बहुत था। इसलिए अनाम मे चीनी गवर्नर या शासन अधिकारी मनचाही करते थे और इस कारण शासन मे भ्रष्टाचार बढा। वियतनामी जनता पर चीनी गवर्नरा का दमन उग्र रूप से होने लगा और दमन की उग्रता के साथ-साथ अनाम की जनता के मन म विदेशी चगुल स बच निकलने

की भावना भी उग्र होती गयी।

दसवीं शताब्दी के आसपास चीन में तांग राजपरिवार का शासन था। तांग शासन में दुर्बलता के कारण भयंकर अराजकता पैदा हो गयी और उसका लाभ उठाकर अनाम के लोगों ने एक स्वतन्त्र अनामी प्रभुसत्ता की स्थापना की। आने वाले कोई पाँच सौ वर्षों में अनाम स्वतन्त्र रूप में अपने ही राजा के अधीन रहा। लेकिन वहाँ की राज्यसत्ता और व्यवस्था चीन की शासन-पद्धति पर ही चलती रहती थी। हालाँकि चीनी शासन उठ गया था किन्तु उसका सांस्कृतिक प्रभाव अनाम की राजशाही पर कायम रहा।

दक्षिण वियतनाम में अधिक संख्या मलय लोगों की थी और उनको चम्प या चम्पा कहा जाता था। उनके रहन-सहन पर आगे चलकर भारतीय संस्कृति का बहुत प्रभाव पड़ा। भारत के व्यापारियों और बौद्ध भिक्षुओं द्वारा भारतीय संस्कृति का इस क्षेत्र में प्रचार हुआ। हिन्दू राजा श्री मार ने चम्प राज्य की स्थापना की और भारतीय राजाओं के अधीन चम्प जाति का बहुत तेजी से विकास हुआ। चम्प अधिवासियों ने शिकार और मछली मारने के आदिम जीवन से ऊपर उठकर भारत से कृषि और व्यापार सीखा। व्यापार में अधिक प्रगति के कारण चम्प के विकासशील लोगों ने चीन से बराबरी के सम्बन्ध स्थापित किये और सुंग जाति के शासनकाल में 960 से 1269 तक चीन से उनके सम्बन्ध बहुत मैत्रीपूर्ण और समानतापूर्ण रहे। 13वीं सदी के आते-आते अनाम के चम्प साम्राज्य पर कम्बोज अर्थात् आजकल के कम्बोडिया के खमेर साम्राज्य की प्रभुसत्ता स्थापित हो गयी और शासकीय दृष्टि से वह कम्बोज का एक प्रान्त मात्र बनकर रह गया।

13वीं शताब्दी में चीन में सुंग राज-परिवार के पतन के साथ-साथ मंगोलों ने जब चीन पर अधिकार कर लिया तो एक बार फिर वियतनाम की स्वतन्त्रता को बाहरी आक्रमण से खतरा पैदा हुआ। कुख्यात कुबलाई खाँ ने अनाम पर तीन बड़े आक्रमण किये और एक आक्रमण चम्प पर। उत्तरी अनाम और दक्षिणी चम्प दोनों राज्यों को भयंकर आक्रमण और लूट का मुकाबला करना पड़ा लेकिन दोनों के बीच मैत्री व एकता के कारण मंगोल आक्रान्ताओं को हार माननी पड़ी। फलस्वरूप अनाम और चम्प जातियों के बीच घनिष्ठता और बढ़ गयी और दोनों राज्यों के बीच मित्रता और अन्तर परिवार विवाह के कारण राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिला।

15वीं शताब्दी में एक बार फिर चीन के मिंग सम्राट ने अनाम को चीन के अधीन करने का प्रयत्न किया और आनेवाले वर्षों में अनाम पर चीन का शासन स्थापित हो गया। फलस्वरूप अनाम की राष्ट्रीय भावना ने फिर जोश मारा और अनाम की जनता ने चीन के आक्रान्ताओं के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध लड़े। 10 वर्षों

तक यह युद्ध चला और 1413 1428 म राजा ली लोय के नेतृत्व म अनाम की जनता न हनाइ शहर पर चीनी सनिका को शिकस्त दी। चीन के मिंग वशीय राजा युग ला की 1424 म मृत्यु हा जाने पर उनके उत्तराधिकारियो म दक्षिण पूर्वी एशिया म चीनी साम्राज्य को कायम रखने की इच्छा समाप्तप्राय हो गयी थी। ली लाय ने अनाम म एक नये ली राजवश की स्थापना की और इसी वश के शासको न अनाम पर आनेवाले एक सौ वष तक शासन किया। चीन से उनके सम्बध मैत्रीपूण थे।

ली वश के शासन के समय अनाम का सास्कृतिक विकास हुआ और अनाम म चीनी चित्रलिपि का प्रयाग इसी युग म प्रचलित हुआ। साहित्य, कला शासन तत्र, सिक्के और माप-तोल आदि का प्रचलन और अनाम की राष्ट्रीय भावना म उग्रता चीनी प्रभाव के साथ-साथ बढती गयी। ठीक उसी प्रकार जैसे कि अंग्रेजी क साथ साथ भारतीय राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ था।

पद्रहवी शताब्दी म अनाम का राज्य अपने सास्कृतिक व आर्थिक विकास के कारण चारा तरफ फलने लगा और उसने चम्प के राज्य पर अधिकार कर लिया। चम्प का अतिम राजा गिरफ्तार कर लिया गया और उसके चारा प्रान्ता को अनाम का भाग बना लिया गया। किन्तु उसका पाँचवाँ भाग 17वी शताब्दी तक स्वतत्र रहा। बाद म उसको भी अनाम राज्य का भाग बनना पडा। सोलहवी शताब्दी म, यूरोप म एशिया को ईसाई बनाने का बडा आन्दोलन चल पडा था और विशषकर स्पेन और पुतगाल के बीच प्रतियोगिता और सहयोग दोना ही एशियावासियो के धम परिवतन के लिए लग हुए थे।

हिंद चीन और खासकर कम्बोडिया को चीन म प्रवश पाने और व्यापार के लिए आवश्यक समझा जाता था। उस समय की स्थिति का वणन साहसिक व्यापारियो भूले भटके नाविका-सनिकों तथा मिशनरियो की जुबानी तथा उनके लेखा स मिलता है। डोमिनिकन फादर गास्पर क्रूज पिण्टा पीयस और मेन्डाजा 16वी सदी क कुछ प्रमुख लेखक हैं जिनसे हम लाओस, कम्बोडिया स्याम, चम्पा या कोचीन चीन की भौगोलिक व सास्कृतिक स्थिति के बार म पता चलता है।

तत्कालीन लेखा और दस्तावेजा से यह पता चलता है कि यूरोपीय उस समय में भी यह मानते थे कि सम्पूण दक्षिण-पूर्वी एशिया और विशाल चीन की मण्डिया म व्यापार और धम प्रसार के लिए हिन्द चीन म प्रवेश पाना जरूरी है और हिंद चीन म घुसने क लिए कम्बोडिया पर प्रभाव रखना आवश्यक।

उस समय भी हिन्दचीन अतर्राष्ट्रीय व्यापार म काफी महत्त्वपूण था और श्रेष्ठ किस्म का चावल इमारती लकडी, गोश्त मछली और हाथी दात का बहुत मात्रा म निर्यात होता था।

पादर क्रूज के लेखो से पता चलता है कि स्पेन और पुर्तगाल की राजकीय सहायता से मिशनरी भी हिंद चीन भेजे गये थे और यूरोप मे लोगो को यह बताया गया था कि हिंद चीन की ये असभ्य जातियाँ ईसाई बनने के लिए तैयार बैठी हैं। किंतु स्वयं क्रूज को कम्बोडिया मे पहुचकर निराशा हुई। उसे हिंदू धर्म और महायान बौद्ध सिद्धातो का ज्ञान हिंद चीन मे हुआ और लम्बे अर्से तक वहाँ रहकर जब निराश लौटा तब केवल एक व्यक्ति को ही ईसाई बनाने मे सफल हुआ था। और वह भी उसके रवाना होने से पहले ही मर चुका था। आनेवाले सालो मे स्पेन से और अधिक मशीनरी, सैनिक व हथियार भेजे गये और मनीला (फिलीपीन) और मलाका मे अड्डा बनाकर दक्षिण-पूर्वी एशिया व हिंद चीन मे बराबर अतिक्रमण किये जाते रहे।

उत्तरी राज्यों की राजधानी प्राय हनोई होती थी जबकि दक्षिण की राजधानी हुए। राज-परिवारो मे अक्सर लडाई-झगडे रहा करते थे और यह कोई अनहोनी बात भी न थी। 200 वर्षों तक 17वी और 18वी शताब्दी के बीच टाकिन अर्थात् उत्तरी भाग और दक्षिणी भाग के चम्प राज परिवारो के बीच मनमुटाव रहने लगे। 18वी शताब्दी के आते आते फ्रासीसी पादरी बडी सख्या मे आने लगे। दक्षिण के एक राजा न्यूइन हान ने भागकर थाई देश मे शरण ली थी। अब फ्रासीसी कैथोलिक बिशप की सहायता से उसने दक्षिण वियतनाम को लेने की कोशिशें की और अत मे सफल हुआ। 1801 मे फ्रासीसियो की सहायता से हान मे उत्तरी भाग की राजधानी हनोई पर भी हमले किये और पूरे हनोई पर अपना अधिकार जमा लिया। हान ने अपना राजकीय नाम जिया लाँग घोषित किया और एक सयुक्त वियतनाम स्थापित करके आधुनिक वियतनाम की नीव डाली। उसने राज्य व्यवस्था और सार्वजनिक हित के कामो की शुरुआत की। जिया लाँग ने पश्चिमी विज्ञान और तकनीक का प्रयोग जापानियो से 70 साल पहले अनाम मे शुरू कर दिया था। लेकिन फ्रासीसी बिशप जिसने जिया लाँग को राज्य-सत्ता हथियाने मे सहायता दी थी अब अनाम के राजा से फ्रास को धर्म प्रचार और व्यापार मे विशेषाधिकार देने की माँग की। फलस्वरूप जिया लाँग ने कैथोलिक ईसाई पादरियो को धर्म प्रचार की सुविधाए दी और फ्रासीसी सलाहकारो और विशेषज्ञो को अपने राज्य मे ऊँचे पदो पर नियुक्त किया। ईसाई पादरी बडे ही उग्र रूप मे वियतनामियो के धर्म परिवर्तन के कामो मे लग गये और कुछ ही वर्षों मे इसके फलस्वरूप वियतनाम की जनता मे यूरोपियो और फ्रासीसियो के प्रति घृणा और भय की भावनाए जोर पकडने लगी।

इसी बीच अग्रेजो ने सिंगापुर पर 1819 मे कब्जा कर लिया था जिसके फलस्वरूप जिया लाग ने 1820 मे अपने उत्तराधिकारी मिन मैन को इस बात की चेतावनी और हिदायत दी कि वह फ्रासीसियो और पश्चिमी साम्राज्यवादियो से

सचेत हो जाय। फलस्वरूप आनेवाले शासकों ने अगले 50 वर्षों में इस बात की असफल कोशिश की कि वे फ्रांसीसी आक्रान्ताओं से अपने राष्ट्रीय हितों को बचायें और चीन से सहायता लेने की कोशिश करें। इस बीच चीन ने अनाम पर अपने थोड़े बहुत शासकीय प्रभाव कायम रखने का असफल प्रयत्न किया और बढ़ते हुए पश्चिमी विकास को रोका न जा सका। चीन की मांचू राजशाही और अनाम के राजा इस बात को न समझ सके कि उनकी शासकीय व्यवस्था पुरानी पड़ चुकी है, उनका शासक वर्ग भ्रष्ट हो चुका है और उनका मुकाबला पश्चिम की बढ़ती हुई औद्योगिक क्रान्ति तथा ऐसे सशक्त लोगों से है जो क्रूर महत्त्वाकांक्षी और निष्ठुर हैं। स्वयं चीन का साम्राज्य पश्चिम की औद्योगिक शक्ति के सामने लड़खड़ा रहा था।

लेकिन वियतनाम के राजा चीन के प्रभाव में और पश्चिम से बचाव की इच्छा से चीन के अधिक समीप आने का यत्न करते रहे और चीन और अनाम दोनों की राजशाहियों ने पश्चिम के लोगों को असभ्य, खूंखार आक्रान्ता मानकर उनसे अलग रहने की कोशिश की। लेकिन इस बीच वियतनाम में बहुत तेजी से सुधार भी हुए। अनाम के हर नागरिक को समान अधिकार दिये गये चाहे प्रभुसत्ता राजा के अधीन थी। शिक्षा का व्यापक रूप से प्रसार हुआ। शासक आम जनता में से चुनकर लिये जाने लगे जैसाकि सदियों पहले चीन में होता था। लेकिन समय हाथ से निकल चुका था और पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियां बहुत तेजी से एशिया को हड़प रही थीं।

उस समय की स्थिति ऐसी थी कि यूरोप के देश सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रान्तियों में से होकर गुजर रहे थे। एशिया में अभी भी राजाओं और सामन्तशाही का बोलबाला था। 5000 वर्ष पुराने कनफ्यूशस के सिद्धान्त और जीवन मूल्य वियतनाम के सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि थी। सामाजिक जीवन में और ग्रामीण जनता में पंचायती शासन व्यवस्था थी। परिवार समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई माना जाता था और राजा की सत्ता सिद्धान्त रूप से बाहरी प्रभाव रखती थी जबकि गांवों के लोग अपनी पंचायतों द्वारा शासन करते थे।

दूसरे देशों की अपेक्षा 19वीं शताब्दी के इस चरण में जबकि फ्रान्स के साम्राज्यवादियों ने वियतनाम पर अपना अधिकार जमाया वहाँ के लोग संयुक्त थे, शासन उदार था और तुलनात्मक दृष्टि से वहाँ के लोग सुसम्पन्न थे। वियतनाम एक हँसता-खेलता स्वावलम्बी देश था। राज्य सत्ता काफी मजबूत थी और अनाम का राज्य कम्बोडिया और लाओस पर अपना अधिकार जमाने के लिए तैयार था। उसकी राजधानी हनोई न होकर ह्वे में थी और कोरिया की तरह अनाम चीन की छत्रछाया को स्वीकार करते हुए भी प्रभुसत्ता की दृष्टि से स्वतन्त्र

था। चीन की छत्रछाया और सांस्कृतिक प्रभाव क्षेत्र में होने के कारण आक्रान्ताओं से आत्मरक्षा का उसको भरोसा था। इतिहासज्ञों के मत में यह कहना सही होगा कि यदि पश्चिमी साम्राज्यवाद ने 19वीं सदी में आक्रमण करके क्रूरता, नृशंसता शोषण, दमन और दमन से अनाम को न कुचला होता तो आज वियतनाम जापान की तरह ही विज्ञान और तकनीक में एक विकसित, सुसम्पन्न और प्रभावशाली राष्ट्र होता।

• •

2

# पश्चिम का एशिया में विस्तार और फ्रान्स का हिन्द चीन में प्रवेश

## (1500-1907)

1494 में पोप ने एक दैवी घोषणा करके पृथ्वी को दो भागों में बाँट दिया था—आधा भाग स्पेन के राजा को और दूसरा आधा पुर्तगाल के शासक को। महात्मा प्रभु ईसा के धर्म में सारी पृथ्वी को बदल देने के लिए तभी से यूरोप के देशों में यह एक आम धारणा पायी जाती है कि पृथ्वी के उन इलाकों में विशेषकर एशिया, अफ्रीका और अमरीकी महाद्वीप जहाँ कि गैर ईसाई लोग रहते थे, वे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि में ईसाइयों से नीचे हैं और यह उनका एक धार्मिक-सांस्कृतिक कर्तव्य है कि गैर ईसाइयों की आत्मा का उद्धार किया जाये। तभी से यूरोप के देशों में एक होड़ सी चली जिसका उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को ईसाई धर्म में बदलना था। पश्चिम की साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों के पीछे यह धार्मिक तत्व महत्त्वपूर्ण होने के साथ ही साथ प्रगति में बाधक सिद्ध हुआ है।

पिछले युगों में यूरोप के देशों में खाने पीने की चीजों के अभाव ने भी उनकी विस्तारवादी प्रवृत्तियों को उत्साहित किया। उन दिनों यूरोप में फल और शाक सब्जियाँ बहुत कम पायी जाती थीं। अक्तूबर-नवम्बर के महीनों में हजारों-लाखों जानवरों को मार डाला जाता था क्योंकि आनेवाली भयंकर सर्दियों में उनको खिलाने के लिए चारे की कमी हो जाती थी। मारे हुए पशुओं का मांस बर्फ में जमाकर सर्दियों के महीनों में धीरे धीरे खाया जाता था। किसी भी तरह के मसालों की कमी के कारण मांस बेस्वाद और बजायका होता था। इसलिए भारत और अन्य एशियाई देशों से मँगाये गये मसालों की कीमत यूरोप के बाजारों में बहुत अधिक होती थी। काली मिर्च, तेज-पत्र, इलायची आदि मसाले यूरोप की मण्डियों में जब पहुँचते थे तब इनकी नीलामी के लिए बड़े बड़े रईस, राजे और महाराजे जमा हुआ करते थे। पन्द्रहवीं शताब्दी में एशिया के देशों की मण्डियाँ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के माने हुए केन्द्र हुआ करते थे। सोना, चाँदी, हीरे-जवाहरात, रेशम, चीनी, चावल, तरह-तरह के कपड़े, बर्तन और इमारती सामान एशिया

की मण्डियां तो दुनिया के हर कोने में पहुंचता था। इन्हीं कारणों से पश्चिम के मनुष्यों में एशिया के साथ व्यापार और सम्बन्ध बढ़ाने की प्रवृत्ति पैदा हुई। अंग्रेजी मुहावरे में इसे कहते हैं 'गोल्ड, ग्लोरी एण्ड गाड' यानी धन, यश और धर्म पाने की इच्छा से पश्चिम के देशों ने अपनी सीमाओं से बाहर निकलकर अफ्रीका, एशिया और अमरीका के लोगों पर अपना साम्राज्य फैलाया।

स्पेन और पुर्तगाल के बाद यूरोप के दूसरे देशों ने अपने अपने उपनिवेशवाद स्थापित किये और एशियाई देशों पर अधिकार के कारण जब वहां के राजाओं को और ऊँची जातियों को अमरीकियों का आर्थिक लाभ हुआ तो दूसरे देशों पर अपने अधिकार को राष्ट्रीयता और राष्ट्रभक्ति का जामा पहना दिया गया। एशियाई देशों पर अत्याचारों को अपने देश के लोगों की सुरक्षा और अपने देश के अधिकारों की रक्षा के नाम पर अनिवार्य आवश्यकता माना गया और यहाँ तक कि यूरोप के विचारकों को भी एक हद तक विवश होकर अपने राजाओं के राष्ट्रवाद, स्वार्थपरता और क्रूरताओं को राष्ट्रभक्ति के नाम पर स्वीकार करना पड़ा। 17-18वीं शताब्दी के आने तक यूरोप में एक नये धर्म का प्रादुर्भाव हुआ जिसे राष्ट्रीयता का नाम दिया जा सकता है। इस प्रकार राष्ट्रीयता आधुनिक युग की एक ऐसी देन है जिसके नाम पर किये गये अनेक बुरे कर्म भी अक्सर उस देश के लोग स्वीकार कर लेते हैं और आम तौर पर बुरी कही जानेवाली कारवाइयाँ भी सहन कर ली जाती हैं।

1791 में फ्रांस की जनता ने बेकारी, भुखमरी, गरीबी और राज्य सामन्त परिवार के अत्याचारों के विरुद्ध एक प्रजातान्त्रिक क्रान्ति की थी। उस क्रान्ति का नारा था बन्धुत्व, एकता और समानता। किन्तु वही फ्रांस की जनता जिसने नये युग का नया दर्शन—एकता, समानता और बन्धुत्व—मानव जाति के राजनैतिक चिन्तन में दिया था आगे चलकर ब्रिटेन, जर्मनी और दूसरे देशों की होड़ में स्वयं भव अन्य एशियाई और अफ्रीकी देशों पर किये गये अत्याचारों और उपनिवेशवाद की कर्ता बन बैठी। इसका कारण था कि उस देश के लोगों को एहसास हुआ कि फ्रांस का भाग्य, आर्थिक विकास और स्वतन्त्रता तथा उनके जन-जीवन का बढ़ता हुआ जीवन-स्तर इसी बात पर आधारित है कि वे बढ़ते हुए औद्योगीकरण के साथ साथ दूसरे देशों की मण्डियों में अन्य यूरोपीय देशों के मुकाबले में पीछे न पड़ जायें।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में फ्रांस और ब्रिटेन इन दो बड़े साम्राज्यवादी देशों के बीच भारत और एशिया के दूसरे भागों में अनेक झड़पें हुई। पुर्तगाल के साथ भी ब्रिटेन और फ्रांस की लड़ाइयाँ हुई और अनेक युद्धों के बाद पुर्तगाल, फ्रांस, ब्रिटेन, अमरीका और रूसी जारों ने चीन के इर्द गिर्द घेरा डाल दिया। 19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में उन सब की गिद्ध-दृष्टियाँ चीन की मण्डियों और

विशाल बाजार पर केंद्रित थी। इसीलिए आपस के झगडा को नजरअंदाज करके एक सयुक्त मोर्चा-सा इन देशो का बन चुका था। भारत का विशाल साम्राज्य अंग्रेजा के हाथ मे आ ही चुका था और फ्रास की साम्राज्यवादी सेनाएँ दक्षिण-पूर्वी एशिया के बहुत उपजाऊ क्षेत्र अनाम और हिंद चीन पर हावी हो चुकी थी। इन इलाका मे खनिज पदार्थ रबर, चावल, चाय, अफीम आदि बहुत अधिक मात्रा म पाये जाते हैं। इसके अलावा इस क्षेत्र की सुरम्य घाटिया मे हाथी बहुत अधिक सख्या म पाये जाते थे। हाथी दाँत तथा जगलो मे पायी जानेवाली इमारती लकडी की उन दिना यूरोप मे बहुत माग होती थी। इसके समुद्री तट जहाजरानी के लिए बहुत उपयोगी है क्योकि जहाजो के गहरे पानी म होने पर भी खुले समुद्री तूफाना से बचाव मिलता है।

1850 के उन अशुभ वर्षों मे जबकि पश्चिमी देशा की एशिया पर हमला की बहुतायत थी, हालण्ड की सेनाओ ने इण्डोनेशिया के हजारा द्वीप-समूहा पर अपना एकच्छत्र साम्राज्य स्थापित कर लिया। ब्रिटेन ने भारत के प्रथम स्वातन्त्र्य सग्राम को असफल करके हमारी भूमि पर महारानी विक्टोरिया का एकच्छत्र साम्राज्य कायम कर लिया था। स्पेन की सेनाएँ फिलिपीन और उसके आसपास हवाई और प्रशान्त महासागर के द्वीपो पर अपने झण्डे पहले से ही गाड चुकी थीं।

उधर अमरीकी जगी जहाजी बेडे कोरिया और जापान की घेराबन्दी करने की कोशिश म थे और चीन की उत्तरी सीमाओ पर रूस के जार की सेनाएँ हमले कर रही थी। ऐसी अवस्था मे एशिया के लोग अपनी अपनी सुरक्षा की चिन्ता मे पडे थे। हमारे देशा को एक-दूसरे के बारे म कोई ज्ञान न था। बहुत से भारत वासिया को तो शायद यह भी पता न था कि अंग्रेजो ने भारत म अफीम की खेती शुरू कर दी थी जिसे वे चीन और दूसरे एशियाई देशा मे बडे मुनाफे पर बेचा करते थे। इसी तरह यूरोप के देशा की सेनाएँ चीन और वियतनाम पर हमलो की तयारियाँ भारत, फिलीपीन, इण्डोनेशिया मलयेशिया और दूसरे अधिकृत क्षेत्रा मे करती थी।

जहा तक अश्वेत जातियो के राजनतिक स्वातन्त्र्य-सग्राम का सवाल है यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि वाल्टेयर और रूसो तथा जफसन के देशा की सेनाओ ने कभी भी उनका साथ नही दिया। बल्कि सच तो यह है कि फ्रास और सयुक्त राज्य अमरीका दोना ही पश्चिमी साम्राज्यवाद के समथक रहे हैं। फिर चाहे स्वतन्त्र विचारका ने उन उन देशा म शोषण और अन्याय का विरोध क्या न किया हो।

मिशनरियो और व्यापारियो की सहायता के लिए भेजे गये फ्रास के जगी बेडा ने 1859 मे सगाँव पर कब्जा कर लिया और फिर फ्रान्स की सेनाएँ उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की ओर बढ़ती गयी। कोचीन चीन (1862) कम्बोडिया (1867)

लाओस (1888 1893) अनाम की राजधानी ह्वे (1884) टोंकिन (1884) और अंकोर (1907) के सारे इलाके पर उनका कब्जा हो चुका था। अगले 80 वर्षों तक वियतनाम के लोगों ने जब-जब आजादी की माँग की तब तक उनको मिला खून, दमन और अधिक शोषण। एशिया के लोग यूरोप के इन विरोधाभासों से बहुत परिचित हैं कि यूरोप के लोगों ने मानवता, प्रजातन्त्र और आर्थिक और वैज्ञानिक विकास के नाम पर एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमरीका के देशों को पिछले दो सौ वर्षों में बुरी तरह लूटा है। स्कूल और अस्पताल खोलने के बजाय फ्रांसीसियों ने जेलों की स्थापना की और वियतनाम की सुसम्पन्न धरती का शोषण किया।

फ्रांस ने, जैसा कि अंग्रेजी राज के अधीन भारत में हुआ, हिन्द चीन की समूची अर्थ-व्यवस्था को फ्रांस के आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए बदल डाला। फ्रांस का उपनिवेशी शासन अल्पसंख्यक नागरिकों, जिनका कि शिक्षा-दीक्षा द्वारा पश्चिमीकरण हो चुका था और जो कि अपने देश की ग्रामीण बहुसंख्यक जनता से पिछड़ चुके थे, की राजभक्ति पर आधारित था। फ्रान्स के अधिकारी और उनकी सेनाओं को हिन्द चीन के समूचे क्षेत्र पर प्रभुसत्ता प्राप्त थी।

फ्रांस के शासन में वहाँ के किसानों को सबसे अधिक कष्ट उठाने पड़े। हालाँकि हिन्द चीन का विश्व में रबर और चावल के निर्यात में तीसरा स्थान था। उसकी जनता निर्धनता से पिसती रही और मुनाफा फ्रांसीसियों को जाता रहा। 1939 में—द्वितीय महायुद्ध के आने तक—हिन्द चीन ने 15 लाख टन चावल का निर्यात किया जो कि उसके उत्पादन का 40 प्रतिशत था। लेकिन 1900 से 1939 के बीच वहाँ की जनता की खुराक में 30 प्रतिशत की कमी आयी—जबकि चावल वहाँ का मुख्य भोजन है।

फ्रांस द्वारा अनेक तरह के टैक्स लगाये गये। भारत में नमक-कर की तरह ही हिन्द चीन और विशेषकर वियतनाम में 'नमक-कर' ही ग्रामीणों में रोष और अशान्ति का मुख्य कारण था। टैक्सों, भूमिकर तथा जमींदारी व्यवस्था के कारण फ्रांस के शासन काल में भयानक निर्धनता बढ़ी। प्रतिवर्ष हजारों किसानों की जमीनें छीन ली जाती थीं—क्योंकि वे टैक्स और कर्ज न चुका पाते थे।

उपनिवेशवादी नीतियों का परिणाम हुआ कि कुछ बड़े परिवारों को छोड़कर बहुसंख्यक गरीबों की बेकारी में पिसती चली गयी और गरीबों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी।

फ्रांस के शासन में 81 जेलों की स्थापना हुई जबकि 2 प्रतिशत से कम बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध था। आधा प्रतिशत से भी कम बच्चे हायर सेकण्डरी की शिक्षा पाते थे और सारे हिन्द चीन में केवल एक यूनिवर्सिटी थी। पूरे लाओस में केवल एक ट्रेण्ड डाक्टर था। 1943 में फ्रांस के उपनिवेशी शासन ने पुलिस के

व्यापार पर जो खर्च किया वह शिक्षा, स्वास्थ्य तथा पुस्तकालयों पर किये गये कुल खर्च से पाँच गुना अधिक था। लेकिन लेखकों और विचारकों को फ्रान्स के ऊंचे आदर्श—समानता और भ्रातृत्व, की बात करना मना था। और हजारों की संख्या में राष्ट्रभक्तों को नजरबन्द रखा जाता था। हिन्द चीन की स्थिति ठीक वैसी ही थी जैसी कि हम भारतवासियों की ब्रिटिश राज के समय।

वियतनाम और हिन्द चीन में आनेवाले वर्षों में क्या हुआ और उसकी प्रवृत्तियाँ और शक्तियाँ किस ओर बढ़ीं, इसका आभास हम वियतनाम के सबसे पहले राष्ट्रपति डॉ० हो ची मिन्ह की वियतनाम स्वतन्त्रता की घोषणा के अवसर पर दिये गये निम्न भाषण से मिलता है

" फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों ने आजादी, समानता और बन्धुत्व का नारा लेकर 80 वर्ष से अधिक धोखे से हमारी पवित्र पितृभूमि के अधिकारों की अवहेलना करके हमारे नागरिकों को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा है। उन्होंने न्याय और मानवता के आदर्शों के विरुद्ध कारवाइयाँ की।

" राजनीति के क्षेत्र में भी उन्होंने हमारी जनता को हर नागरिक अधिकार से वंचित किया था।

" उन्होंने अमानवीय कानून हम पर लादे जिससे कि हमारी जनता में एकता और राष्ट्रीय जागृति की भावना न पनपने पाये और इसलिए उन्होंने हमारे उत्तर मध्य और दक्षिण वियतनाम में तीन तरह की भिन्न भिन्न नीतियाँ अपनायीं।

" हमारे देश में साम्राज्यवादियों ने स्कूलों से अधिक कैदखाने बनवाये। उन्होंने हमारे राष्ट्रभक्तों को निर्दयता से मरवा डाला। उन्होंने हमारे क्रान्तिकारी इलाकों को निरपराध खून से डुबो दिया। उन्होंने जनता की भावना की अवहेलना की और हमारे देश में निरक्षरता को बढ़ावा दिया।

" हमारी जाति को कमजोर करने के उद्देश्य से उन्होंने हमारे देश में अपने यहाँ की बनी हुई शराबें और अफीम के विक्रय को बढ़ावा दिया और उसका प्रचार किया।

" आर्थिक क्षेत्र में भी उन्होंने हमारे नागरिकों को उनकी हर चीज से वंचित किया और हमारी निर्धनता को बढ़ावा देकर हमारे सम्मान को धक्का पहुंचाया। उन्होंने हमारे धान के खेतों को लूटा। उन्होंने हमारी खानों, हमारे जंगलात और खनिज पदार्थों के भण्डारों को अपने अधिकार में ले लिया। बैंक के नोटों को छापने और हमारे देश के निर्यात और आयात पर उन्होंने एकाधिकार बनाये रखा। उन्होंने अनेक तरह के गैरकानूनी टैक्स लगाये जिससे कि जनता, विशेषकर हमारे गांवों की जनता को भयंकर गरीबी में पीस दिया गया।

" उन्होंने हमारे व्यापारियों के रास्ते में अड़चनें डालीं जिससे उनका व्यापार

पड़ने के बाद और हमारे मजदूरों का बड़ी निर्दयता से शोषण किया।

"1940 की पतझड़ के समय जबकि जापान की फासिस्ट सेनाओं ने हिन्द चीन की सीमाओं का उल्लंघन किया था उस समय फ्रांस के साम्राज्यवादियों ने अपने घुटने टेक दिये थे और आत्मसमर्पण कर दिया था। बढ़ती हुई जापानी सेनाओं के आगे फ्रांस ने हमें निश्शस्त्र समर्पित कर दिया था। इस तरह से फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों की जगह एक और साम्राज्यवादी शक्ति, जापान हम पर थोप दिया गया। उस दिन के बाद वियतनाम की जनता ने जो कठिनाइयाँ सहीं उनका इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। अब उन्हें दुगने अत्याचारों का सामना करना पड़ा। क्वांगत्री से लेकर उत्तरी सीमा तक बीस लाख लोगों को 1945 में भूखे मार डाला गया।

"9 मार्च 1945 को फ्रांसीसी सेनाओं को जापानियों ने निश्शस्त्र कर दिया था। फ्रांसीसी या तो डरकर भाग खड़े हुए या उन्होंने बिना शर्त हथियार डाल दिये और इस तरह उन्होंने यह दिखा दिया कि वे हमारी सुरक्षा करने में असमर्थ हैं। उन्होंने यह भी सिद्ध कर दिया कि वे बढ़ते हुए जापानी फासिस्टों के सामने हमें निराश्रित छोड़ सकते हैं।

"फिर भी मार्च के उस दिन के पहले कई बार वियतमिन्ह ने फ्रांसीसियों से इस बात की माँग की थी कि वे जापानियों के विरुद्ध उनका साथ दें लेकिन उपनिवेशवादी फ्रांसीसियों ने हमारी अपील का कोई जवाब न दिया। उलटे उन्होंने अत्याचार करनेवाली नीति को और तेज कर दिया। भागने से पहले फ्रांसीसियों ने हमारे अनेक राष्ट्रभक्तों को मौत के घाट उतार दिया जो कि फ्रांसीसियों की जेलों में बन्द थे।

"इन सब के बावजूद हमारी जनता हमेशा से फ्रांस की जनता के प्रति सहनशीलता और मानवीय भावनाओं के सम्बन्ध बनाये रखने की कोशिश करती रही। मार्च 1945 में जापानियों की सफलता के बाद भी वियतमिन्ह ने अनेक फ्रांसीसियों को सुरक्षित क्षेत्रों में पहुँचने में मदद दी। बहुतों को उन्होंने जापानियों की जेलों से भी भागने में सहायता दी। फ्रांसीसियों की जान माल की रक्षा करने में हमने कभी कोई कसर उठा न रखी।

"आज सम्पूर्ण वियतनाम की जनता हमारी गणतन्त्रीय सरकार के प्रति संगठित रूप से वफादार है और वह फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों की काली करतूतों को पूर्णतया समाप्त कर देने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है।

हमें पूरा विश्वास है कि मित्र राष्ट्र जिन्होंने तेहरान और सान फ्रांसिसको सम्मेलनों में आत्मनिर्णय और समानता के सिद्धान्तों को सभी देशों पर लागू करने की बात को मान्यता दी है वियतनाम की स्वतन्त्रता को स्वीकार करने से पीछे नहीं हटेंगे।

जिन लोगो ने साहस और वीरता से 80 वर्षो से भी अधिक फ्रान्सीसी गुलामी को कभी स्वीकार नही किया और बराबर उसका विरोध किया है और जिस जनता ने हाल के साला मे मित्र राष्ट्रा से कधे से कधा मिलाकर फासिस्टा के खिलाफ लडाई लडी है उस जनता की आजादी को कौन रोक सकता है ? एसी जनता का आजाद रहने का जन्मसिद्ध अधिकार है।

' इन एतिहासिक कारणो के आधार पर हम दुनिया को यह बता देना चाहते हैं कि वियतनाम को स्वतन्त्र रहने का अधिकार है और सच तो यह है कि वह अब एक स्वतन्त्र देश बन चुका है। हम यह भी घोषणा करते है कि वियतनाम की जनता अपनी आजादी को कायम रखने के लिए बडे स बडा त्याग करने के लिए भी दृढप्रतिज्ञ है।

इन शब्दों म वियतनाम की आजादी के सेनानी डा० हो ची मिन्ह ने यह स्पष्ट कर दिया था कि दूसरे देशो की तरह वियतनाम पर भी उपनिवेशवादी देशो न भारी अत्याचार किय है और वियतनाम को आधुनिक युग की क्रान्तिक प्रगति के साथ आगे बढने का अवसर नही दिया। दूसरी बात यह भी स्पष्ट है कि पश्चिमी साम्राज्यवादी बढते हुए जापानी सनिकवाद के सामने वियतनाम की जनता को असुरक्षित छोडकर भाग उठ थ।

तीसरी महत्त्व की बात यह है कि यदि मित्र राष्ट्रो—फ्रास, ब्रिटेन और अमरीका की सेनाएँ—को जापान को हराने के लिए एशियाई जनता का सहयोग जरूरी था तो जो जनता जापान के सनिकवाद के खिलाफ लड सकती थी वह अपने ही देश की आजादी क लिए भी सघष कर सकती है।

• •

3

# द्वितीय महायुद्ध और वियतनाम का स्वातन्त्र्य-सघर्ष (1939 1946)

सन 1940 म जब द्वितीय महायुद्ध छिडा और जब यूरोप म हिटलर की सनाआ न फ्रास पर कूच किया तो फ्रास का अपनी रक्षा की चिन्ता स्वाभाविक थी। एशिया म उन्होन हिन्द चीन को जापानियो क हवाल करके फ्रास की वीची सरकार न फ्रासिस्टो स सहयोग करने की नीति अपनायी। लेकिन जापान क अधीन हो जान के बाद भी हो ची मिन्ह के अनुयायियो ने वियतनाम की आजादी की लडाई जारी रखी और हो ची मिन्ह ने जो स्वय कई बार हमारे भारतीय नेताओ की तरह साम्राज्यवादी जेलो मे बन्द रहे युद्धकाल म वियतनाम की जनता का वियतमिन्ह पार्टी के अधीन सगठित करके जापानियो के खिलाफ लडाई जारी रखी।

मार्च 1945 म जबकि जापान की सनाएँ पीछे हट रही थी हो ची मिन्ह की सेनाए सुसगठित रूप स वियतनाम की शासन सत्ता का अपन हाथ म सँभाल थी। 1940 1945 क दिनो म वियतमिन्ह की राष्ट्रीय सेनाओ ने भूमिगत रहकर जापानियो के खिलाफ लडाई जारी रखी। उनकी जापान विरोधी गुप्त कारवाइयो म उन्हे मित्र' सनाओ और अमरीकी जासूसी सगठन ओ० एस० एस० का सहयोग मिला। लेकिन 1945 का अन्त होते होते एक बार फिर से हो ची मिन्ह की सेनाएँ फ्रासीसियो द्वारा दुबारा वियतनाम को अपने अधिकार म लने क प्रयत्ना क खिलाफ लड रही थी।

2 सितम्बर 1945 को हो ची मिन्ह ने स्वतन्त्र वियतनाम की घोषणा करके दुनिया के देशो से मान्यता देन की अपील की। लेकिन मित्र राष्ट्रो ने जिन्होने कि द्वितीय महायुद्ध के समय बार बार इस बात की घोषणा की थी कि व सभी देशो व जातियो की राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए लड रहे हैं युद्ध समाप्त होने के बाद सभी को स्वतन्त्रता मिलगी हो ची मिन्ह की अपील की अवहलना की। डा० हो ची मिन्ह ने अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमैन को भी एक तार भेजकर फ्रास के

सनिकवाद के खिलाफ वियतमिन्ह को मान्यता देने की अपील की थी। लेकिन यह एक ऐतिहासिक विडम्बना है कि जो अमरीकी राष्ट्रपति जापानियों पर अणुबम गिराने से नहीं झिझका वह फ्रान्सीसियों के सनिकवाद के खिलाफ वियतनाम की जनता की आजादी की लड़ाई के समर्थन में कुछ भी करने के लिए तैयार न था।

वियतमिन्ह के स्वयंसेवक देशभक्त लड़ाके जो अब तक 'मित्र राष्ट्रों' अंग्रेजों, फ्रान्सीसियों और अमरीकी फौजों के मित्र थे जापान के हारते ही अब 'दुश्मन' बन चुके थे। गोरी जातियों के सभ्य 'प्रजातान्त्रिकों' ने मुसीबत की घड़ियों में दिये गये वचन समय गुजर जाने के बाद भुला देना ही उचित समझा।

वियतमिन्ह की सेनाओं ने टांकिन और अनाम के मुख्य मुख्य शहरों और फ्रान्सीसी ठिकानों की घेराबंदी शुरू कर दी। सैगाव और एक दो बड़े-बड़े शहरों को छोड़कर प्रायः सारे ही वियतनाम पर हो ची मिन्ह और उनकी वियतमिन्ह पार्टी का एकाधिकार स्थापित हो चुका था। शुरू शुरू में फ्रान्सीसी अधिकारियों ने बातचीत का दौर शुरू करके वियतमिन्ह को धोखे में लाने की कोशिश की। यह सुझाव रखा गया कि यदि हो ची मिन्ह और उनके वियतमिन्ह नेता इस बात का आश्वासन दें कि स्वतन्त्र वियतनाम, फ्रान्सीसी कामनवेल्थ में रहेगा तो वे बिना युद्ध किये वियतनाम की आजादी को मान्यता दे देंगे। क्योंकि वियतमिन्ह नेता और हो ची मिन्ह युद्ध नहीं चाहते थे इसलिए समझौते की बातचीत शुरू हुई।

6 मार्च, 1946 को फ्रान्स के प्रतिनिधि जीन सेण्टनी और हो ची मिन्ह के बीच हनोई में एक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इसके अनुसार फ्रान्स ने वियतनाम को एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में मान्यता दी जिसकी कि अपनी सरकार, अपनी संसद, अपनी सेना और अपनी स्वतन्त्र अर्थ व्यवस्था होगी। वियतनाम की सरकार ने स्वीकारा कि वह फ्रान्स की सेनाओं के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करेगी और उसके सांस्कृतिक और आर्थिक हितों को स्वतन्त्र वियतनाम में यथासम्भव सुरक्षित रखेगी। फ्रान्स ने अपनी सेनाओं को धीरे धीरे पांच वर्षों के भीतर वियतनाम से हटा लेने का वचन दिया। ऐसा मालूम देता था कि युद्ध ध्वस्त एशिया के इस क्षेत्र पर शान्ति की आशाएँ हावी हो जायेंगी और हो ची मिन्ह और उनके वियतनामी नेताओं का विश्वास था कि उनका संघर्ष समाप्त हो चुका है और वे फ्रान्स के साथ मैत्रीपूर्ण और समानता के सम्बन्धों की उम्मीदें लगाये थे। उन्हें फ्रान्स से घृणा न थी। वे तो फ्रान्सीसी साम्राज्यवाद से छुटकारा पाने के इच्छुक थे। वास्तविकता तो यह थी कि जिस प्रकार भारत के प्रायः सभी राजनीतिक नेताओं का अंग्रेजी संस्कृति और शासन व्यवस्था से लगाव था उसी प्रकार वियतनाम के सभी राष्ट्रीय नेताओं की शिक्षा-दीक्षा फ्रान्स में हुई थी और वे भी फ्रान्स के सांस्कृतिक और दार्शनिक प्रभाव में वियतनाम को बढ़ते देखना चाहते थे।

समझौते के आधार पर वियतमिन्ह ने फ्रान्सीसी सैनिकों को उत्तरी वियतनाम

म शान्तिपूर्ण ढंग से इधर उधर आने की अनुमति दी। लेकिन फ्रांसीसी अधिकारियों ने इस मौके का लाभ उठाकर अपनी सैनिक स्थिति को और भी मजबूत बनाने की कोशिश की। फ्रांसीसी अधिकारियों के मन में समझौते को पालन करने का कोई इरादा नहीं था और उन्होंने दक्षिणी वियतनाम में एक नयी वियतनामी सरकार की स्थापना की घोषणा कर दी। अगस्त 1946 में फ्रांस ने वियतनाम पर एक और सम्मेलन की घोषणा की जिसमें अपने दक्षिण वियतनामी गुर्गों, सैनिक अधिकारियों और पूंजीपतियों के प्रतिनिधियों को वियतनाम की जनता का प्रतिनिधि मानकर इस सम्मेलन में बुलाया। और दक्षिण वियतनाम में एक नयी सरकार की स्थापना की योजना बनायी। इस बीच फ्रांस की सेनाएँ तेजी के साथ उत्तर वियतनाम की बन्दरगाह हाई फांग पर अपनी स्थिति को मजबूत करके उत्तरी वियतनाम के उन क्षेत्रों में जहां वियतमिन्ह सेनाएँ मजबूती से मोरचाबन्दी किये थी आगे बढ़ने की कोशिश करने लगी। हालांकि हनोई के समझौते का उल्लंघन करके फ्रांस की सेनाएं नयी कारवाइयाँ कर रही थी हो ची मिन्ह ने शांति आशा और विश्वास का परिचय दिया और इस बात का पूरी कोशिश की कि युद्ध को किसी प्रकार टाला जाये। वे इस बात के लिए तैयार थे कि एक स्वतन्त्र वियतनाम को फ्रांसीसी कामनवेल्थ में रखा जाय। लेकिन फ्रांस और वियतनाम के बीच जैसे भी हो दोस्ती के सम्बन्ध कायम रहें। हो ची मिन्ह को परिस सरकार से समझौते की आशा थी और वह स्वयं पेरिस गये और जनवरी 1947 में एक बार फिर फ्रांस से समानता के आधार पर संघर्ष को खत्म करने की अपील की। लेकिन फ्रांस की सरकार रबर बागान तथा दूसरे फ्रांसीसी व्यापारियों के हितों के दबाव के कारण समझ-बूझकर भी सत्य और न्याय का पालन न कर सकी।

नवम्बर, 1946 में फ्रांस की सेनाओं ने बड़ी क्रूरता के साथ बिना कारण और बिना चेतावनी दिये हुए हाई फांग की बन्दरगाह पर अचानक बमबारी शुरू कर दी जिसमें हजारों नागरिक मारे गये। वियतमिन्ह की सेनाओं ने हनोई पर फ्रांसीसी सेना का डटकर मुकाबला किया। समुद्र-तट पर जो कि हनोई से बहुत दूर नहीं था हाई फांग बन्दरगाह पर फ्रांसीसियों को अमरीकी जंगी बेड़ों से रसद और हथियार मिल रहे थे। फलस्वरूप उस मुठभेड़ में फ्रांसीसी सेनाओं की विजय हुई। लेकिन वियतमिन्ह की सेनाओं का हौसला और उत्साह अभी टूटा न था। वे हाई फांग और हनोई के शहर छोड़ गये और जंगलों में चल गये और इतिहास के नामी वियतमिन्ह सेनानी जनरल ज्यप के नेतृत्व में वियतनाम की जनता को गाँव गाँव में उठाकर संगठित करके एक नये और बड़े युद्ध की तैयारियों में लग गये।

जनता का एक नया युद्ध छिड़ चुका था। सारे टाँकिन और उत्तरी अनाम में वियतमिन्ह और फ्रांसीसी सेनाओं के बीच झड़पें शुरू हो चुकी थीं और कोचीन

चीन तथा दक्षिण वियतनाम में स्वतन्त्रता-सेनानियों ने गुरिल्ला लड़ाइयाँ छेड़ दी थी। इस प्रकार हो ची मिन्ह जो कि द्वितीय महायुद्ध के बाद में इस बात की सतत कोशिश करते थे कि रक्तपात न हो हताश होकर देख रहे थे कि सारा वियतनाम एक बार फिर युद्ध की आग में जल उठा है।

ऐतिहासिक प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि फ्रांस के अधिकारियों ने सच्चे दिल से वियतमिन्ह के साथ समझौता नहीं किया था। उनके इरादे नापाक थे। यह साबित हो चुका है कि जिस प्रकार याह्या खाँ ने बंगला देश के नेता शेख मुजीबुर्रहमान से मार्च, 1971 में समझौते की बातचीत का दौर शुरू किया था लेकिन उनका इरादा समझौता करना नहीं था किन्तु वक्त टालना था ताकि इस बीच वे अपनी सेनाओं को समुद्री रास्ते से लाकर बंगाल में जमा कर सकें उसी प्रकार फ्रान्स की समझौता-वार्ता के पीछे भी इरादा यही था कि वे सैनिक व शस्त्रास्त्र पहुँचाकर अपनी स्थिति मजबूत कर लें। जब यह सब हो चुका तो फिर उन्होंने हमले की ठानी। लेकिन जनता फ्रांस के साथ न होकर हो ची मिन्ह के साथ थी। इस बीच हो ची मिन्ह के साथियों ने वियतनाम के गणतन्त्र की राष्ट्रीय संसद के लिए सबसे पहला चुनाव किया और जनवरी 1947 में हो ची मिन्ह की मिली जुली पार्टियों के राष्ट्रीय संगठन ने 300 सीटों में से 230 पर सफलता प्राप्त की। नवम्बर 8 को एक नये गणतन्त्रीय संविधान की घोषणा की गयी जिसका आधार था

बिना किसी जाति, वर्ग, धर्म, सम्पत्ति और सेक्स के वियतनाम देश में सारी शक्ति वियतनामी जनता के हाथों में है।

6 जनवरी 1947 को वियतनाम की सरकार ने एक घोषणा जारी की जिसमें उसने विश्व के समस्त राष्ट्रों से इस बात की अपील की कि वे वियतनाम की आजादी को मान्यता दें। उन्होंने मित्र राष्ट्रों को यह बताया कि हालाँकि हनोई की सरकार ने मार्च 6 1946 को दोस्ती का हाथ बढ़ाया और समझौते पर हस्ताक्षर करके फ्रांसीसी कामनवेल्थ में बने रहने की बात को मान लिया था लेकिन फ्रांसीसी सरकार ने धोखा देकर फिर से दमन और अत्याचार शुरू कर दिये हैं। वियतनाम की जनता इसके लिए दृढप्रतिज्ञ है कि वह अपना जन्मसिद्ध राजनीतिक स्वतन्त्रता के अधिकार के लिए और अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा और पवित्रता को बनाये रखने के लिए हर सम्भव उपायों से काम लेगी और वह बड़ी से बड़ी कुर्बानी को तैयार है। 13 फरवरी, 1947 को फ्रान्स के प्रधानमन्त्री पाल रमदियर ने पेरिस में यह घोषणा की कि फ्रांस मार्च 1946 के समझौते के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। इस प्रकार फ्रांस ने लड़ाई के मैदान में वियतनाम के भाग्य का निर्णय करने का एलान किया। अन्तर्राष्ट्रीय कानून व न्याय व्यवस्था की दुहाई देनेवाले पश्चिमी राष्ट्रों ने इस समझौते के उल्लंघन पर कोई विरोध-पत्र नहीं भेजा।

अमरीका द्वारा दिये गये द्वितीय महायुद्ध में बचे हथियारों, शक्तिशाली तोपों और हवाईजहाजों की सहायता से आधुनिकतम सैनिक उपकरणों से लैस फ्रांसीसी सेना एशिया के एक छोटे से निर्धन देश के अप्रशिक्षित और अशिक्षित ग्रामीण गुरिल्ला वियतनामी सैनिकों से लड़ने के लिए उतर आयी थी। लेकिन फ्रांस के साम्राज्यवादियों ने इतिहास का वह पाठ बिल्कुल भुला दिया था कि कितना भी शक्तिशाली, सुसम्पन्न तथा आधुनिक हथियारों से लैस देश क्यों न हो वह जनता की इस पवित्र भावना को कुचल नहीं सकता कि स्वतन्त्रता पाने का उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। फ्रांस की सुसंगठित और अमरीका से सहायता प्राप्त सैनिक शक्ति का सामना करने में असमर्थ वियतमिन्ह सैनिकों ने छापामार गुरिल्ला युद्ध का रास्ता अपनाया और पहाड़ों की दुर्गम घाटियों, जंगलों और धान के खेतों के कीचड़ में फ्रांसीसी मशीनगनों और टैंकों का मुकाबला किया। उन्हें इस बात का पूरा भरोसा था कि आखिर में उनके राष्ट्रीय हित और सत्यमेव जयते के सिद्धान्त बड़ी से बड़ी सैनिक शक्ति और आधुनिकतम हथियारों पर विजय प्राप्त कर लेंगे। सैनिक दृष्टि से सुसम्पन्न होने पर भी फ्रांस हो ची मिन्ह की सेनाओं को न हरा सका।

इस बीच जनता का राजनीतिक समर्थन पाने की असफल कोशिशों में फ्रांस ने अनाम के एक छोटे से भूतपूर्व राजा बाओ दाइ को अप्रैल 1949 में वियतनामी राज्य का राजा स्वीकार कर लिया। फ्रांस ने यह समझा कि यदि वह बाओ दाई को फ्रांसीसी राज्य के इस भाग का सर्वोच्च अधिकारी मान लें तो फिर हो ची मिन्ह के बजाय बाओ दाई से ही वह समझौता कर लेगा। बल्कि सच तो यह है कि इसी बाओ दाई ने अगस्त 1945 में स्वेच्छा से अपनी प्रभुसत्ता को वियतनाम के गणतन्त्र के अधीन कर दिया था।

इस बीच भारत स्वतन्त्र हो चुका था। ब्रिटेन की प्रगतिशील समाजवादी पार्टी सोशलिस्ट पार्टी ने साम्राज्यवादी चर्चिल को चुनावों में हराकर पहली बार एटली के नेतृत्व में ब्रिटेन का मन्त्रिमण्डल बना लिया था। एटली ने ब्रिटिश लोकसभा में इण्डिया बिल प्रस्तुत करके भारत के राजनीतिक नेताओं को जेलों से रिहा करके भारत में राज्य सत्ता को यहां के प्रतिनिधियों को हस्तान्तरित करने की घोषणा कर दी थी। उधर इण्डोनेशिया में डा० सुकर्ण के नेतृत्व में वहां की जनता ने इण्डोनेशियाई गणतन्त्र की घोषणा कर दी थी और हालैण्ड की लोकसभा में भी वहां के समाजवादी दल के मन्त्रिमण्डल ने इण्डोनेशिया की स्वतन्त्रता को मान्यता देने की घोषणा की। इस प्रकार जहां चारों तरफ एशिया के देशों में आजादी की लहर दौड़ रही थी, चीन में माओत्से तुंग के नेतृत्व में साम्यवादी शक्तियां च्यांग काइ शेक के भ्रष्ट शासन को धराशायी कर रही थीं। कुछ ही महीनों में सारे का सारा चीन माओत्से तुंग के अधीन होनेवाला था। अमरीका

ने, साम्यवाद के एशिया मे बढते हुए प्रभाव को न देख सकने की लालसा से वियतनाम म अपनी सारी ताकत फान्सीसी साम्राज्यवाद के समथन म लगा दी।

अमरीकी समथन से फ्रास ने राजा बाओ दाई स एक समझौता करके वियतनाम को फ्रान्सीसी कामनवल्थ का एक भाग घोषित कर लिया। इसी प्रकार कम्बोडिया और लाओस म जनता की इच्छाओ की अवहेलना करके छोटे छोटे राजाओ को वहा का शासक नियुक्त किया जाने लगा। लेकिन लडाई के मैदान म फ्रास की सेनाएँ वहाँ की जनता के सहयोग से बढती हुइ जन शक्तिया का जिनका कि नेतत्व वियतमिन्ह के हाथो म था, मुकाबला करन म असफल रही। 1949 का अन्त होते-होते वियतनाम का बहुत बडा भाग सनिक और शासकीय दष्टि म हो ची मिन्ह के वियतनामी गणतन्त्र के अधीन आ चुका था। जनवरी, 1950 म वियतनामी गणतन्त्र की प्रभुसत्ता को चीनी गणतन्त्र और सोवियत सघ ने मान्यता प्रदान कर दी और दूसरे सारे ही साम्यवादी देशो न इसको स्वीकार कर लिया। अमरीका के विदेश मन्त्री एचिसन और अमरीका की सरकार पर इसकी प्रतिक्रिया बडी ही निराशाजनक हुई। एचिसन न कहा कि हो ची मिन्ह वियतनामी जनता क नेता न होकर वहाँ की जनता की आजादी के सच्च दुश्मन हैं और वे वियतनाम मे रूसी साम्यवादी अत्याचारो क साधन बनेंगे।

जून, 1950 म जबकि अमरीका के सनिकवाद न कोरिया म युद्ध शुरू कर दिया था उसके पीछे भी यही भावना काम कर रही थी। कि बढते हुए साम्यवादी कदमो को रोका जाय और एशिया म इसको सफल न होन दिया जाये। तब अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमन न इस बात की घोषणा की कि व वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस म फ्रास द्वारा स्थापित सरकार को मान्यता देंगे और व फ्रास को हर सम्भव सहायता करके इस बात की पूरी कोशिश करेंगे कि हिन्द चीन म साम्यवाद क प्रसार को रोका जाय। श्री ट्रूमैन न कहा कि जहाँ तक अमरीका का सवाल है कोरिया म छिडा हुआ युद्ध और फ्रास के खिलाफ हिन्द चीन म हो रहा सघष दोनो एक ही युद्ध हैं। इसके बाद का इतिहास और लडाई वियतनाम म अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध होनेवाली लडाई का इतिहास है।

• •

4

# अमरीकी विस्तारवाद और एशिया

*अगर हमने हिन्द चीन खो दिया—तो टीन और टंगस्टीन, जिसका हमारे लिए इतना महत्त्व है—मिलना बन्द हो जायेगा। इसलिए जब हम (फ्रांसीसियों को) युद्ध के लिए 40 करोड़ डालरों की सहायता देते हैं तो हम व्यर्थ पैसा नहीं फेंकते। वह सहायता हम अमरीका के लिए एक भयानक अनहोनी से बचने को देते हैं। हमारी सुरक्षा हमारी शक्ति और उन पदार्थों का जिनकी कि हमें बहुत जरूरत होती है सस्ते से सस्ते में हासिल करने के लिए अमरीका को हिन्द चीन और दक्षिण पूर्वी एशिया की भूमि पर पायी जानेवाली सम्पदा की जरूरत है।*

—प्रेसिडेण्ट आइजनहावर
*4 अगस्त 1953*

*इस (हिन्द चीन) मे टीन, तेल रबर, कच्चा लोहा, तथा अन्य खनिज पदार्थ बहुतायत मे उपलब्ध हैं। यह क्षेत्र सामरिक दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। वहा पर जल व वायुसेना के प्रमुख अड्डे हैं।*

—जान फास्टर डलेस
21 मार्च 1954

संयुक्त राज्य अमरीका भी अंग्रेजों का उपनिवेश रहा था और उसकी स्थापना 1776 में बड़े ही क्रान्तिकारी ढंग से हुई थी। यदि अमरीका के नक्शे को देखा जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि 1776 में वह 13 राज्यों का एक छोटा

सा सगठन था। लेकिन आज वह 50 राज्यो और दजनो उपनिवेशो, जिनको कि टेरीटरी कहा जाता है का एक विशाल साम्राज्य बन चुका है और इसका विस्तार भी उन्ही कारणो से हुआ है जिनको कि हमने धन, धर्म और राष्ट्रीय गौरव का नाम दिया है।

सन 1871 म अमरीकी जगी बेडा न कोरिया पर सबसे पहला हमला किया था। अमरीका के इतिहास की किताबो म कप्तान पेरी द्वारा जापान मे 1853 मे की गयी सबसे पहली सनिक घुसपठ को एक आवश्यक स्व रक्षात्मक और मानवोचित कारवाई बताया जाता है। अपने देश की सीमाओ स कोई बारह हजार मील दूर एक छोटे-से देश पर जो कि उस समय सनिक और आर्थिक दष्टि से कोई विशेष महत्त्व नही रखता था और जिसने विधर्मियो और विदेशियो को अपनी धरती पर उतरने न देने की नीति अपनायी थी जोर जबरदस्ती से अपने जगी बेडो को उतारकर जापान के शासको को किसी भी प्रकार की सैनिक आर्थिक और व्यापारिक सधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर करना अन्तर्राष्ट्रीय कानून की दष्टि से एक कमजोर देश की प्रभुसत्ता की अवहेलना करना था। किन्तु अमरीकी इतिहास की पुस्तको मे पढाया यही जाता है कि वह हमला न था किन्तु जापान की 'असभ्य' सरकार को एक सबक सिखाना था कि वह समुद्र की थपेडो म सताये गये हताश नाविको के साथ किस तरह का मानवोचित व्यवहार करे। इतिहास इसका साक्षी है कि उस घटना के बाद अमरीका ने जापान म जो पर रखे उसे जापान फिर द्वितीय महायुद्ध (1940-45) तक अपनी भूमि स न निकाल सका।

1840 म अमरीकी सरकार न मक्सिको पर हमला किया और कलिफोर्निया न्यू मक्सिको और टक्सास, फ्लोरिडा को हडप लिया। उस समय अमरीका के राजनतिक नेताओ लखको तथा विचारको ने यही कहा था कि कलिफोर्निया और टक्सास अमरीका की नसर्गिक सीमाएँ होनी चाहिए क्योकि भगवान ने ही उन्हे अमरीका की सीमाएँ बना दिया है। पूव म अटलाण्टिक महासागर अमरीका को यूरोप स व्यापार का व्यापारिक जहाजरानी का अवसर देता है तो कलिफोर्निया और टक्सास अमरीका को प्रशान्त महासागर और एशिया की मण्डियो और बाजारो म पहुँचन का मौका देंगे।

इस तरह ऐतिहासिक दस्तावेजो को पढने से यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरीका की गोरी जातियो म सत्त मे साम्राज्यवादी प्रवत्तियाँ ठीक उसी प्रकार जमी हुई हैं जिस प्रकार कि यूरोप की जातियो म थी। अमरीकी साम्राज्यवाद का विस्तार उन्नीसवी शताब्दी के अन्त म अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है जबकि अमरीका ने अपने पडोसी देश क्यूबा पोर्टोरीको तथा दूसरे दक्षिण अमरीकी राज्यो पर अपना अधिकार जमाकर यूरोपीय साम्राज्यवाद को उखाड

दो को दुहाई दे हवाई द्वीप समूह पर और सुदूर पूर्व एशिया में फिलीपीन और गुआम द्वीप समूहों पर कब्जा किया। यह इतिहास की एक विशेष कहानी है कि 1898 से आज तक अमरीकी सेनाएँ इन इलाकों से वापस नहीं लौटी हैं। बल्कि द्वितीय महायुद्ध के बाद प्रशान्त सागर में फैले सैकड़ों द्वीप समूहों जो कि माइक्रोनेशिया द्वीपों के नाम से जाने जाते हैं पर भी अमरीकी सेनाओं ने अपना जाल बिछा लिया।

1898 में अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति मकेनले ने फिलीपीन पर अधिकार जमाने के कारणों का स्पष्टीकरण करते हुए एक भाषण में कहा

मुझे कई रात नींद नहीं आयी और व्हाइट हाउस के कमरों में टहलते हुए मैंने भगवान से प्रार्थना की कि मुझे प्रकाश दो। फिर एक रात आशा की किरण दिखाई दी और सीधे भगवान ने ही मुझे यह प्रेरणा इस प्रकार दी। प्रभु जानता है कि हमने फिलीपीन को नहीं चाहा। वह तो स्वयं हमारी गोद में भगवान के वरदान के रूप में आकर गिर पड़ा है। अब सवाल है कि हम क्या करें ? क्योंकि

(1) फिलीपीन के लोग स्वतन्त्रता के लायक नहीं हैं। हम उन्हें आजादी दे देते हैं तो उनकी हालत स्पेन की उपनिवेशवादी सरकार से भी बुरी होगी।

(2) अगर हम फिलीपीन को छोड़ दें तो फ्रांस और जर्मनी उस पर अधिकार कर लेंगे और यह अमरीका के लिए व्यापारिक दृष्टि से हानिकारक होगा क्योंकि फ्रांस और जर्मनी एशिया में व्यापार के क्षेत्र में प्रतिद्वंद्वी हैं।

(3) भगवान की इच्छा यही लगती है कि हम पूरे फिलीपीन पर कब्जा कर लें और समूचे का समूचा फिलीपीन अपने शासन में लेकर भगवान के नाम पर ईसाई धर्म को फैलाकर वहाँ के इन्सानों का जितना भी हमसे हो सके भला करें। ऐसी ही प्रभु की इच्छा है।

ये मैकिनले साहब थे एक भयंकर साम्राज्यवादी अमरीकी प्रेसिडेण्ट के।

## द्वितीय महायुद्ध और एशिया

1940-45 में जब कि साम्राज्यवादी देशों के बीच जिनमें उस समय का जापान भी शामिल है युद्ध हुआ तो भयंकर नरसंहारों के परिणामस्वरूप एशिया की औपनिवेशिक जनता को यह अहसास हो गया कि जापान फ्रांस जर्मनी ब्रिटेन और अमरीका की गोरी जातियों के लोग कोई देवी शक्ति और भगवान के ऊँचे आदर्शों के रखवाले नहीं हैं। वे हम सी अपूर्ण और दुर्बल मानव हैं जैसे कि हम। इसलिए उपनिवेशों की जनता को भी स्वयं अपने भविष्य और भाग्य के निर्माण का अधिकार होना चाहिए। इसके अलावा जब साम्राज्यवादी ताकतें आपस में लड़ रही थीं तो दोनों ही पक्षों ने उपनिवेशों की जनता का सहयोग पाने की कोशिश की थी। एक ओर अमरीकी अंग्रेज और यूरोपीय शक्तियों ने जिन्ह

कि मित्र राष्ट्रों की सेनाएँ कहा जाता था एशिया के लोगों से सैनिक सहायता मांगी तो दूसरी ओर जापान और जर्मनी की सेनाओं ने भी समर्थन की मांग की। दोनों ही पक्षों ने इस बात के एलान किये कि वे उपनिवेशों की आजादी के लिए लड़ रहे हैं और यदि वे इसमें सफल हुए तो वे उपनिवेशों को स्वतंत्र कर देंगे।

हवाई द्वीप जो कि उस समय संयुक्त राज्य अमरीका का एक उपनिवेश था, के बन्दरगाह पर्ल हार्बर पर जब जापान के बमवारों ने 1941 में हमला किया उस समय उनका दावा यही था कि वे हवाई द्वीप को अमरीकी साम्राज्यवाद से मुक्त कराना चाहते हैं। पश्चिमी साम्राज्यवाद के सबसे बड़े ठेकेदार सर विंस्टन चर्चिल जो उस समय ब्रिटेन के प्रधान मंत्री थे के हुक्म पर अगस्त, 1942 में शांति के मसीहा महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू आदि भारत के नेताओं को 80 000 से भी अधिक हिंदुस्तानियों के साथ जेलों में ठूंस दिया गया था। 1942 और 1945 के बीच का यह वह समय था जबकि भारतवासियों ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ आजादी की लड़ाई का आखिरी दौर छेड़ दिया था। यह इतिहास का वह दौर था जबकि इण्डोनेशिया में डा० सुकर्ण के नेतृत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा था, बर्मा में डॉ० ऊ नू अपनी जद्दोजहद जारी रखे हुए थे, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने बर्मा और मलाया के मैदानों में आजाद हिन्द फौज और आजाद हिन्द सरकार की स्थापना कर दी थी और फिलीपीन की जनता ने अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ फिलीपीनी गणतंत्र की घोषणा कर दी थी। इधर चीन की विशाल युद्ध भूमि में माओत्से तुंग की बढ़ती हुई जन शक्ति च्यांग काई शेक और जापानी सैनिकों के मुकाबले में खड़ी थी।

उसी समय वियतनाम के रण-क्षेत्र में वहां के दुधर्ष और अजेय सेनानी डा० हो ची मिन्ह के नेतृत्व में वहां की जन शक्तियों ने आजादी का संग्राम साम्राज्य वादी शक्तियों के खिलाफ बड़ी सफलता के साथ कायम रखा हुआ था। द्वितीय महायुद्ध का अंत होते-होते हो ची मिन्ह की जन शक्तियों का संगठन और उनका शासन वियतनाम के सभी क्षेत्रों में पूर्णतया कायम हो चुका था।

युद्ध के शुरू में ही जापानी सेनाओं के सामने फ्रांसीसी सेनाएँ टिक न सकीं और उन्होंने हथियार डाल दिये थे। अब जब द्वितीय महायुद्ध का अंत होने को था तब हो ची मिन्ह की सेनाओं ने वियतनाम गणराज्य की घोषणा कर दी और 80 वर्ष बाद अपने देश को फ्रांसीसी और जापानी साम्राज्यवाद से मुक्त तथा स्वतन्त्र करा लिया। किन्तु इतिहास की यह विडम्बना है कि मित्र राष्ट्रों के प्रतिनिधि एक अंग्रेज कमाण्डर ने जापान द्वारा हथियार डाल देने के समय सैनिक नजरबन्दी कैम्पों से रिहा किये गये फ्रांसीसी सैनिकों को हथियार देकर स्वतन्त्र एशियाई वियतनाम का शासन फिर से फ्रान्स के हाथों सौंप दिया।

डॉ० हो ची मिन्ह के राष्ट्रीय सेनानियों ने जिन्होंने कि जापान को हराने में

मित्र-सेनाओं को बहुत बड़ा योग दिया था फ्रांस के द्वारा वियतनाम को अपने अधीन करने के प्रयत्नों के विरुद्ध सैनिक कारवाई जारी रखी। अब वियतनाम का मुकाबला जापानी सेनाओं से न होकर फिर से फ्रांसीसी सेनाओं के खिलाफ था। लेकिन फ्रांस यूरोप में बुरी तरह मार खा चुका था। न उसके पास बन्दूकें थी न जंगी जहाज थे जिनसे कि वह फ्रांस की धरती से 10 000 मील दूर सेनाएं और हथियार भेजकर वियतनाम की जनता पर फिर से अपना अधिकार जमा सके। ऐसी हालत में वियतनाम की आजादी और फ्रांस की हार एक पूर्व निश्चित वास्तविकता थी। लेकिन वियतनाम की एशियाई जनता की आजादी की लड़ाई का दौर अभी और बाकी था और पश्चिमी साम्राज्यवाद का आखिरी पड़ाव अभी पूरा नहीं हो पाया था। यूरोप के साम्राज्यवादी जहाँ अपने बेड़े वापस बुला रहे थे वहाँ अमरीकी साम्राज्यवादियों ने फ्रांस को वियतनाम में जमे रहने और उसके लिए हर सम्भव सैनिक सहायता देने का आश्वासन दिया।

जापान के पतन के बाद जो बड़े-बड़े अमरीकी हथियारों के भण्डार एशिया में मौजूद थे वे सब अब फ्रांस के लिए उपलब्ध हो गये और अमरीका के जंगी जहाजों में भर भरकर फ्रांसीसी सेनाएँ वियतनाम के तटों पर उतरने लगीं। डा० हो ची मिन्ह की घोषणा थी कि 'जनता की आवाज और जन शक्ति को बड़ी से बड़ी सेनाएँ भी नहीं कुचल सकती और जब तक वियतनाम की जनता अपनी आजादी के लिए जान देने को तैयार है तब तक फ्रांसीसी और अमरीकी साम्राज्यवादी भी उसे हरा नहीं सकेंगे।' एशिया के उस महान नेता की यह घोषणा सच सिद्ध हुई लेकिन इस सच्चाई को साबित करने के लिए वियतनाम की जनता ने जो बलिदान दिया है उसका इतिहास में और कोई उदाहरण नहीं मिलता।

इसी बीच चीन में 1949 में अमरीकी सहायता से कायम भ्रष्ट और क्रूर जनरल च्यांग काई शेक के शासन का पतन हुआ। अमरीका के धर्मांध लोगों को च्यांग काई शेक के शासन में एक ईसाई धर्मपरायण सच्चे राष्ट्रभक्त के भाव का एहसास होता था जबकि माओ त्से तुंग की साम्यवादी नीतियों में उन्हें अधार्मिकता, क्रूरता और अमरीका के आर्थिक हितों की हत्या दिखाई पड़ती थी। इस लिए माओ त्से तुंग की सफलता में अमरीका तथा अमरीकी उद्योगपतियों और अमरीकी पूंजीपतियों को सारे एशिया में अपने व्यापारिक हितों को आघात पहुँचने की सम्भावनाएँ दिखाई दीं।

एशिया में यूरोप के साम्राज्यवाद की पराजय को अमरीका ने गलती से पश्चिम के पूंजीवादी हितों की तथा अमरीका की हार समझा। इतिहास के इस सत्य को वे न समझ सके कि वियतनाम की जनता का संघर्ष आजादी की लड़ाई है और वियतनामियों ने वह लड़ाई स्वयं चीन के राजाओं के खिलाफ एक हजार

वध तक लडी थी। 1946 से 1950 के बीच जबकि हो ची मिन्ह की सेनाएँ फ्रांसीसी सनाओं के दाँत खट्टे कर रही थी और अमरीकी बेडो की सहायता स फ्रांस वियतनाम पर बमबारी कर रहा था तब कहते हैं कि हो ची मिन्ह का सलाह दी गयी कि वे चीन की सनिक सहायता स्वीकार कर लें। उनका उत्तर था कि बेचारे फ्रांसीसियो का 10,000 मील दूर स आना पडता है कि जबकि चीन हमारा पडोसी है। अगर एक बार चीन के सनिक हमारी धरती पर आ जायें ता फिर उनको निकालना और भी कठिन होगा। मैं फ्रांस स लड सकता हूँ लेकिन चीन से लडाई मोल लेना मेरे लिए कठिन है।' हो ची मिन्ह ने कभी भी चीन की सेनाओ को वियतनाम म निमत्रण नही दिया। लेकिन फिर भी अमरीकी सरकार ने अपन सनिक विस्तारवाद को अमल म लात हुए पिछले 20 सालो म यही दावा किया है कि वियतनाम म हो ची मिन्ह चीन क सहयोग से साम्यवादी साम्राज्यवाद फलाने की कोशिशें कर रह हैं और चीन की बागडोर मास्को के हाथो म है। उसको रोकना ही 'प्रजातत्र की रक्षा करने के लिए सबसे जरूरी बात है।

लेकिन फ्रान्स क सनिक वियतनाम की जन शक्ति के सामने बहुत दिन न टिक सके और जो हाल च्याग काई शेक की सेनाओ का हुआ वही फ्रांसीसियो का वियतनाम म हुआ। दोनो को ही अमरीकी साम्राज्यवादी सहायता प्राप्त थी। लेकिन जनता का विश्वास व खो चुके थे।

कोरिया युद्ध के समाप्त होते होते अमरीका क सनिक सगठन न खुलकर हिन्द चीन म फ्रान्स की सहायता या बिना सहायता के भी अमरीका की अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद विरोधी नीति और शीतयुद्ध को एशिया म ला खडा किया। वाशिंगटन सरकार ने यह घोषणा की कि वह अतर्राष्ट्रीय साम्यवाद और सोवियत सघ के बढते हुए प्रभाव को रोकने की हर सम्भव कोशिश करेगा। राष्ट्रपति डा ने विनयल होवर सयुक्त राज्य अमरीका की आक्रामक नीतियो की आलोचना शुरु कर दी। उन्होंने अमरीका पर वियतनाम क स्वातन्त्र्य-युद्ध के खिलाफ हस्तक्षप का आरोप लगाया और वियतनाम के समाचारपत्रो न और वहा के चिन्तको और लेखको ने फ्रांस के स्थान पर वाशिंगटन की आलोचना शुरू कर दी।

दक्षिण अमरीकी देशो म भी अमरीकी हितो के विरुद्ध आन्दोलन चल रहे थे और अमरीका के दक्षिणी तट फ्लोरिडा से कोई 70 मील दूर स्थित क्यूबा मे फिडल कास्त्रो और शे गवारा के नतत्व म जन क्रान्ति सफल हो चुकी थी। वहा के अत्याचारी क्रूर तानाशाह बतिस्ता अमरीकी हथियारो की सहायता के बावजूद जन क्रान्ति के सामन हार मान बठा था। क्यूबा म जन शक्ति की इस सफलता से अमरीका क शासको म और सनिक सस्थानो म भयकर निराशा छा गयी और वहाँ के लोगो म एक ऐसी भावना बठ गयी थी कि जसे चारो ओर से क्रान्ति की लहरें

उठ रही हैं जोकि अमरीकी पूंजीवादी साम्राज्य को लील लगी। अमरीका को कार्ल मार्क्स और लेनिन की यह ऐतिहासिक घोषणा कि रूस के बाद चीन और चीन के बाद भारत और भारत के बाद सारी दुनिया साम्यवाद के अधीन आ जायेगी सच होती दिखलायी दी।

डलेस और उसके सैनिक सलाहकारों ने ऐसी योजनाएँ बनायी जिनसे लगता था कि किसी भी समय तृतीय महायुद्ध की आग में यह धरती जल उठेगी। यदि हम आज इतिहास के इस विश्लेषण को लिखने के लिए जिन्दा हैं तो इसका श्रेय सोवियत संघ के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री ख्रुश्चेव और श्री जवाहरलाल नेहरू की नीतियों को है। इन नेताओं की दूरदर्शिता ने अमरीका की अदूरदर्शितापूर्ण नीतियों को सफल न होने दिया।

अमरीका के नीतिज्ञों ने सोचा कि क्यूबा भले ही हाथ से निकल जाय लेकिन अगर वे चीन के खिलाफ वियतनाम में लड़ते रहे और अड़े रहे तो इससे दूसरे छोटे देशों को इस बात का एहसास हो जायगा कि अमरीका जन शक्तियों को सफल नहीं होने देगा। इसीलिए इतने बड़े पैमाने पर वियतनाम में जमे रहने की नीति बनायी गयी। लेकिन वे इतिहास का यह सबक भूल गये कि जन शक्तियाँ अन्याय को हटाने से थमती हैं बड़ी फौजों से नहीं।

अमरीका की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिल ने 1952 के प्रारम्भ में ही दक्षिण-पूर्व एशिया में अमरीका के उद्देश्य व भावी कारवाई पर एक गुप्त रिपोर्ट में कहा था

(अमरीकी सरकार की) दक्षिण-पूर्व एशियाई नीति का उद्देश्य है 1 स्वतन्त्र विश्व (फ्री वर्ल्ड) को सुदृढ़ बनाना 2 उसे साम्यवाद के भीतरी व बाहरी हमलों से सुरक्षित रखना और 3 दक्षिण-पूर्व एशिया को साम्यवाद की प्रभाव परिधि में जाने से रोकना। क्योंकि किसी भी तरीके से अगर साम्यवाद ने दक्षिण पूर्व एशिया पर अधिकार पा लिया तो उससे अमरीका की सुरक्षा को भयंकर खतरा पैदा हो जायगा।

(क) दक्षिण-पूर्व एशिया के किसी भी देश पर यदि साम्यवादी आक्रमण को सफलता मिलती है—तो उसके मनोवैज्ञानिक राजनीतिक व आर्थिक दुष्प्रभाव होंगे। यदि प्रभावशाली ढंग से साम्यवाद को रोका न गया तो किसी एक देश के पतन में रूप शेष के अन्य देश भी साम्यवाद के आगे झुक जायेंगे या कि उनसे साम्यवाद की ओर झुक रहने का डर लग जायगा। और किसी एक देश का साम्यवादियों से मिल जाने का अर्थ होगा समूचे दक्षिण-पूर्व एशिया (बर्मा स्याम हिन्दचीन मलयेशिया और इन्डोनेशिया) और भारत का पतन और आगे चलकर मध्य पश्चिम एशिया (पाकिस्तान और तुर्की शायद अपवाद सिद्ध हों) भी साम्यवादी हो जाएगा। और इस व्यापक रूप में साम्यवाद की ओर झुकाव का दुष्परिणाम

होगा—यूरोप की स्थिरता और सुरक्षा को खतरा।

(ख) दक्षिण-पूर्व एशिया में साम्यवाद की स्थापना से प्रशान्त महासागर के द्वीपों के समूह पर अमरीकी सत्ता के लिए कठिनाइयां उत्पन्न हो जायेंगी। और इससे सुदूरपूर्व में अमरीका के सुरक्षा हितों का गम्भीर खतरा होगा।

(ग) सामरिक आवश्यकताओं के लिए महत्त्वपूर्ण चीजें तथा पटोल टीन व प्राकृतिक रबर, दक्षिण-पूर्व एशिया खासकर मलयशिया व इण्डोनेशिया में बहुत बड़ी मात्रा में पाया जाता है। बर्मा और स्याम बहुत मात्रा में चावल पैदा करते हैं जो कि मलयेशिया श्रीलंका तथा हांगकांग के लिए जरूरी है, और जापान तथा भारत के लिए भी उसका महत्त्व है और ये सब देश स्वतन्त्र विश्व' के महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

(घ) दक्षिण-पूर्व एशिया, विशेषकर मलयेशिया व इण्डोनेशिया के साम्यवादी हो जाने का अर्थ है कि जापान का साम्यवाद की ओर झुकने से रोकना बहुत मुश्किल हो जायगा।

4 यदि फ्रांस वियतमिन्ह के विद्रोह को दबाने में सफल न हुआ तो हिन्द चीन में हालत बिगड़ सकती है जिससे समूचे दक्षिण-पूर्व एशिया में खतरे की शुरुआत हो सकती है।

5 दक्षिण-पूर्व एशिया को गैर साम्यवादी तत्वों के अधीन रखने के लिए यह जरूरी है कि टाकिन की सफलतापूर्वक रक्षा की जाय। लेकिन अगर बर्मा साम्यवादियों के हाथ आ जाता है तो स्याम से होकर आगे बढ़ती हुई उनकी सेनाओं से टाकिन को बचाना सैनिक दृष्टि से असम्भव हो जायगा।

## भविष्य में कारवाही करने के सुझाव

संयुक्त राज्य अमरीका (सरकार) को करना चाहिए कि वह दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में

(च) ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रापेगण्डा करवाये ताकि वहां के लोगों का रुझान स्वतन्त्र विश्व (पश्चिमी विकसित देशों) के प्रति बढ़े।

(छ) ऐसी आर्थिक व तकनीकी सहायता की योजनाएँ बनाये जिससे कि इस क्षेत्र की गैर-साम्यवादी सरकारों के हाथ मजबूत हों।

(ज) दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों को ऐसा प्रोत्साहन दे कि वे आपस में व्यापार सम्बन्ध बढ़ायें और इस बात की कोशिश की जाय कि इन देशों का कच्चे माल का बहाव 'स्वतन्त्र विश्व (विकसित पूंजीवादी देशों) की ओर रहे।

(झ) अन्य देशों से कम से कम फ्रांस ब्रिटेन आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड से समझौता करे कि वे सब मिलकर चीन को चेतावनी दें कि अगर उसने दक्षिण पूर्व एशिया पर हमला किया तो उसके परिणाम बुरे होंगे।

# 5

# 'दीयाँ बीयाँ फूँ' का पतन और जेनेवा-सम्मेलन (1950 1954)

जिस प्रकार भारत म स्वतन्त्रता-आन्दोलन को ब्रिटेन उदारवादी विचारको चिन्तकों और लेखको का समथन प्राप्त था उसी प्रकार फ्रास के दमनकारी उपनिवेशवाद के विरुद्ध वियतनाम के सघष को फ्रास के उदारवादी चिन्तका लेखका और विचारको का पूरा समथन मिला। दिनादिन यह माँग जोर पकडती चली गयी कि फ्रास की सरकार वियतनाम की स्वतन्त्रता को मान्यता दे। लेकिन फ्रान्स के कट्टरपथी सनिकवादियो ने आर्थिक पूजीवादी स्वार्थों को बनाये रखने की दृष्टि से अपने उदारवादी चिन्तको की अवहेलना करके भी ऐसे आन्दोलन को अराष्ट्रीयतावादी और अराजकतावादी (अराजभक्त) कहकर अपनी सनिकवादी कारवाइयाँ वियतनाम म जारी रखी।

1954 के आते-आते 85 प्रतिशत से भी अधिक फ्रास के सनिक खच को अमरीका वहन कर रहा था और ऐसा लगता था कि फ्रान्स की सेनाओ ने बन्ते हुए वियतमिन्ह के राष्ट्रीय आन्दोलन को सफलता से कुचल दिया है। लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत थी। सनिक और राजनीतिक दोनो ही दृष्टियो स वियतमिन्ह के पाँव और मजबूती से जमते जा रहे थे और वियतनाम की बहुसख्यक जनता वियतमिन्ह और उसके नताओ को सच्चा राष्ट्रभक्त मानकर पूरी शक्ति से तन मन और धन लगाकर वियतमिन्ह की सहायता कर रही थी। हो ची मिन्ह वियतनाम के एकच्छत्र सवलोकप्रिय नेता बन चुके थे। हो ची मिन्ह को वियतनाम का ताज वाशिगटन कहा जाने लगा और हिन्द चीन म उनके प्रति लोगो मे वही आदर भाव था जो कि भारत मे गाधी नेहरू और सुभाष तीनो को मिलाकर उनके प्रति था। लेकिन इतने आदर का कारण कोई साम्यवादी चाल न थी जसा कि वाशिगटन की सरकार मानती रही बल्कि हो के नेतृत्व म वियतमिन्ह द्वारा किये गये शिक्षा भूमि और जन-जीवन म व्यापक सुधार थे। जिन जिन इलाका म,

गाँवों और खेतों में वियतमिन्ह का अधिकार होता जाता था वहाँ वे बड़ी तेजी से और दृढ़ता के साथ जन-जीवन, शिक्षा और भूमि सम्बन्धी सुधारों को लागू करते जाते थे। फ्रांसीसी उपनिवेश के समय वियतनाम की 80 प्रतिशत जनता भूमिहीन और अल्पसंख्यक जमींदारों तथा फ्रांसीसी प्रवासियों की मुहताज थी। वियतमिन्ह के आते ही वह स्वयं अपनी भाग्य विधाता बन जाती थी। इन्हीं कारणों में छिपी थी वियतमिन्ह और उनके सफल राष्ट्रीय नेता स्वर्गीय हो ची मिन्ह की लोकप्रियता।

जनवरी, 1953 में संयुक्त राज्य अमरीका में जनरल आइज़नहावर का नया शासन आया और उनके विदेश मन्त्री श्री डलेस की और भी अधिक उग्र नीतियाँ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में दिखायी दीं। वाशिंगटन के सैनिक संस्थान खुलकर अमरीकी राष्ट्रपति जनरल आइज़नहावर को इस बात के लिए विवश करने लगे कि वे वियतनाम में और अधिक जोर शोर से युद्ध की भर्त्सना से काम लें।

जुलाई 27, 1953 को कोरिया में युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर होने के बाद वियतनाम में अमरीकी सैनिकवाद का मुकाबला करने के लिए साम्यवादी चीनी गणतन्त्र ने भी वियतनाम के राष्ट्रवादियों को सैनिक सहायता देने की नीति अपनायी। सितम्बर 1953 में वाशिंगटन ने इस बात की घोषणा की कि वह फ्रान्स को 385 करोड़ डालर की सैनिक सहायता वियतनाम युद्ध के लिए देगा। वाशिंगटन के एक सैनिक अधिकारी के अनुसार 1954 के अन्त तक अमरीका ने फ्रान्स को हिन्द चीन में अपना उपनिवेश बनाये रखने के उद्देश्य में 15 अरब डालर से भी अधिक की सैनिक सहायता दी थी।

लेकिन इतनी बड़ी अमरीकी सैनिक सहायता और पूरे अमरीकी साम्राज्य के सैनिक समर्थन के बावजूद फ्रान्स की अत्याचारी सेनाएँ वियतनाम की जनता की सहायता से लड़नेवाले वियतमिन्ह छापामारों के सामने न टिक सकीं।

मार्च 1954 के आते-आते वियतमिन्ह के सैनिक अब इतने दिलेर हो चुके थे कि वे केवल छापामार युद्ध ही करने की स्थिति में न थे बल्कि खुलकर फ्रांसीसी सैनिकों से मुठभेड़ें भी करने लग गये थे। दोनों के बीच बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ होने लगीं और मई 7, 1954 शायद अश्वेत जातियों के स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास में वह सुनहरा दिन है जबकि 10,000 से अधिक गोरे फ्रांसीसी सैनिकों ने वियतमिन्ह के किसानों की सशस्त्र सेना के आगे हथियार डाले। इतिहास में ऐसी घटना पहली बार हुई जबकि इतने अधिक पश्चिमी सैनिकों ने अमरीकी साम्राज्य के सैनिक संस्थान पेंटागन के पूरे जन, थल और वायुसेना का सहयोग होते हुए भी एक छोटे-से पिछड़े हुए कृषि प्रधान वियतनाम के राष्ट्रीय सैनिकों के सामने आत्मसमर्पण किया।

फ्रान्स के कोई ढाई सौ वर्ष के साम्राज्यवादी इतिहास में यह सबसे पहली और

शमनाक शिकस्त थी। ऐसी ही करारी हारें बाद में फ्रांस को अल्जीरिया में मिली और अमरीका को दक्षिण वियतनाम में। इतिहास में इस हार को दीयाँ बीयाँ फूं के नाम से पुकारा जाता है। दीयाँ बीयाँ फूं के पहाडी इलाका में फ्रांस के सनिकों को जनरल ज्येप के सनिकों ने चारों तरफ से घेरकर उनकी नाकेबन्दी करके शिकस्त दी थी। पेरिस पर इसका बुरा प्रभाव पडा और श्री बेडाल्त की सरकार का पतन हुआ। मैंडस फ्रांस की नयी सरकार ने वहाँ का शासन-सूत्र संभाला। इस सरकार का दावा था कि वह जल्दी ही वियतनाम में शांति व समझौता करके युद्ध को समाप्त कर देगी।

फ्रांस की जनता शांति के लिए आतुर हो उठी थी। वहाँ के अधिकारियों ने दीयाँ बीयाँ फूं की हार से यह मान लिया था कि हिन्द चीन में समस्या को लडाई से नहीं सुलझाया जा सकता, उसके लिए कोई राजनीतिक समाधान खोजना होगा। लेकिन वाशिंगटन के विदेश मन्त्री श्री डलेस और उनके सनिक और सी० आई० ए० के सलाहकारों ने इतिहास के इस सबक को शिरोधार्य करने से इन्कार किया और दुराग्रह के साथ फ्रांस की सरकार को यह सलाह दी कि वह सनिक कारवाई जारी रखकर वियतनाम में लडाई को अवश्य जीते और यदि जरूरी हुआ तो अमरीका चीन की सीमा के नजदीक उत्तरी वियतनाम पर परमाणु बम गिराने के लिए तयार रहेगा। लेकिन विश्व जनमत और दूसरे सभी प्रगतिशील देश हिरोशिमा और नागासाकी तथा कोरिया के भयानक नर सहार को वियतनाम में दोहराने के पक्ष में न थे।

अत जेनेवा में ब्रिटेन और सोवियत सघ द्वारा सयुक्त रूप से हिन्द चीन पर एक शांति सम्मेलन आयोजित किया गया। उसमें इन दोनों के अतिरिक्त 7 और देशों के प्रतिनिधि उपस्थित थे—सयुक्त राज्य अमरीका गणतन्त्र चीन फ्रांस डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम फ्रांस द्वारा सस्थापित सगाँव की सरकार (दक्षिणी वियतनाम) कम्बोडिया और लाओस।

युद्ध विराम और जेनेवा-सम्मेलन के समय युद्ध स्थिति स्पष्ट रूप से वियतमिन्ह की गणतन्त्री सेनाओं के पक्ष में थी। सत्रहवीं समानान्तर रेखा के उत्तर में प्राय सारा ही उत्तरी वियतनाम उनकी प्रभुसत्ता के अधीन था और दक्षिणी भाग का 40 प्रतिशत से अधिक भाग उनके अधीन था। ऐतिहासिक, सास्कृतिक और राष्ट्रीय दृष्टि में वियतनाम एक इकाई था और वियतमिन्ह की माँग थी कि वियतनाम को अविभाजित रखा जाये। लेकिन अमरीका व फ्रांस कोरिया की तरह वियतनाम को भी दो भागों में स्थायी रूप से बाँट देने की कोशिश कर रहे थे। शांति बनाये रखने की इच्छा से और कुछ हद तक कोरिया के युद्ध में हुए नर-सहार से सत्रस्त सोवियत सघ के प्रतिनिधि श्री मोलोटोव और चीन के प्रधान मन्त्री (तब विदेश मन्त्री) श्री चाऊ एन लाई के दबाव में आकर वियतमिन्ह ने देश के अस्थायी

विभाजन को स्वीकार कर लिया। फ्रांस ने यह सुझाव स्वीकार कर लिया था कि 1956 में एक राष्ट्रीय चुनाव किया जायेगा जिसके फलस्वरूप उत्तरी और दक्षिणी भाग फिर से एक इकाई बन सकते हैं।

जुलाई 20, 1954 को शांति संधि की शर्तों पर हस्ताक्षर करने हिन्द चीन के इस युद्धस्थल पर जिसमें वियतनाम, लाओस और कम्बोडिया सम्मिलित हैं, युद्ध विराम की घोषणा की गयी। इस ऐतिहासिक संधि की मुख्य मुख्य धाराएँ थीं

1 वियतनाम को दो अस्थायी भागों में सत्रहवीं समानान्तर रेखा पर बाँट दिया जायगा जिसका उत्तरी भाग वियतनामी गणतन्त्र के अधीन होगा और दक्षिणी भाग वियतनाम राज्य होगा जिसके कि अध्यक्ष राजा बाओ दाई होंगे।

2 वियतमिन्ह की सेनाएँ दक्षिणी भाग से हटकर उत्तर में चली जायेंगी और फ्रांस की सेनाएँ उत्तर से दक्षिण में।

(इस धारा के अन्तर्गत कोई 90 000 वियतमिन्ह जो अधिक संख्या में दक्षिणी भाग के निवासी थे को विवश होकर उत्तर में चले जाना पड़ा। लेकिन बहुत बड़ी संख्या में वियतमिन्ह छापामार अपने-अपने गाँवों में ही बने रहे और दक्षिण के क्षेत्र छोड़कर न गये।)

3 उत्तर और दक्षिण दोनों भागों में जुलाई 20 1956 से पहले-पहले एक अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन के निरीक्षण में आम चुनाव गुप्त मतदान द्वारा एक ही समय किये जायेंगे और इस अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन में भारत, कनाडा और पोलण्ड के प्रतिनिधि होंगे।

4 युद्ध विराम व्यवस्था की देखरेख के लिए एक कण्ट्रोल कमीशन स्थापित किया जायगा जिसकी अध्यक्षता भारत करेगा।

5 उत्तर और दक्षिणी दोनों ही क्षेत्रों पर कोई भी विदेशी सैनिक अड्डे स्थापित नहीं किये जायेंगे और न ही दोनों भाग किसी भी देश से सैनिक गठबंधन कर सकेंगे।

6 उत्तर और दक्षिणी दोनों ही भाग सैनिक तैयारियाँ न कर सकेंगे और न ही वे शस्त्रास्त्र और सैनिक सामान प्राप्त करेंगे।

7 दोनों ही क्षेत्रों में बदले की भावना से विपक्षी दल अपने विरोधी संगठनों के विरुद्ध कोई कारवाई नहीं करेंगे।

8 सबके नागरिक अधिकार सुरक्षित रखे जायेंगे।

राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और मानवीय अधिकारों के महान प्रणेता जफरसन टामपेन और अब्राहम लिंकन के देश के विदेश मन्त्री डलस ने जनेवा सम्मेलन का बहिष्कार किया और यह एलान किया कि अमरीका जेनेवा-सम्मेलन में केवल एक प्रेक्षक के रूप में भाग ले रहा है। श्री डलेस के आदेश पर एक छोटे अधिकारी

का प्रेक्षक के रूप में जनेवा सम्मेलन में भेजा गया।

श्री डलेस ने एक एलान में कहा कि उनकी सरकार जेनेवा सम्मेलन के इस संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए तयार नहीं है लेकिन फिर भी अमरीका इस शांति-संधि की धाराओं के विरुद्ध सैनिक शक्ति का प्रयोग नहीं करेगा। राष्ट्रपति आइजनहावर ने भी ऐसे ही एक वक्तव्य में दुनिया को इस बात का आश्वासन दिया था कि उनका देश शांति बनाये रखने का यत्न करेगा और वे इस शांति संधि के खिलाफ कार्यवाही करने से बचेंगे। लेकिन अखबारों की स्याही अभी सूखने भी न पायी थी कि अमरीका के इस युग के सबसे बड़े अदूरदर्शी विदेश मन्त्री श्री डलेस ने एक स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जिसमें कहा गया था कि शांति बनाये रखने से उनका मतलब यही है कि किसी तरह साम्यवाद का दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण पश्चिम के प्रशान्त महासागर के क्षेत्रों में बढ़ने से रोका जाय। फिर यह आवश्यक नहीं कि उन देशों के निवासी साम्यवाद या समाजवाद के प्रगतिवादी शासन और अर्थ व्यवस्था को स्वीकार करते हैं या नहीं। जहाँ तक अमरीका का सम्बन्ध है वह दक्षिण वियतनाम में साम्यवाद की स्थापना नहीं होने देगा फिर चाहे जनेवा संधि की अन्तर्राष्ट्रीय देखरेख में चुनाव कराके उत्तर और दक्षिण को संयुक्त करने की धारा को ठुकराना ही क्यों न पड़े।

राष्ट्रपति आइजनहावर ने कई वर्ष बाद अपने संस्मरणों में यह स्वीकार किया है कि उनकी सरकार ने 1956 में दक्षिण वियतनाम में चुनाव इसलिए नहीं होने दिये क्योंकि वाशिंगटन की सरकार को यह स्पष्ट पता था कि हो ची मिन्ह बहुत लोकप्रिय हैं और उनकी सरकार 80 प्रतिशत से अधिक वोटों से चुनाव जीत सकती थी।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जेनेवा-सम्मेलन के घोषणा-पत्र की धाराओं का यदि ईमानदारी से पालन किया जाता तो दक्षिण पूर्व एशिया में शांति स्थापित हो सकती थी और यह भी सम्भव था कि इस बढ़ते हुए नर संहार और विध्वंस से वियतनाम को बचाया जा सकता था। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यदि चुनाव होते तो हो ची मिन्ह को जनता अपना नेता चुनती और साम्यवादी राष्ट्रवादी शासन के अन्तर्गत एक संयुक्त वियतनाम स्थापित हो जाता। लेकिन वह सरकार राष्ट्रवादी होती और यह भी सही है कि वह सोवियत संघ और चीन दोनों से ही स्वतन्त्रता के सिद्धान्त पर सम्बन्ध कायम रखने की कोशिश करता क्योंकि हो ची मिन्ह का व्यक्तित्व युगोस्लाविया के मार्शल टीटो के समान ही उग्र राष्ट्रवादी और दृढ़ था। यह भी सम्भव है कि हो ची मिन्ह वियतनाम को एशिया का स्वर्ग बना देते। इस बात की भी सम्भावना और आसार दिखायी देते हैं कि सोवियत संघ और चीन दोनों ही एक तटस्थ दक्षिण-पूर्व एशिया को स्वीकार कर लेते और उस समय की स्थिति में हो चा मिन्ह और श्री जवाहरलाल नेहरू के

आपसी सम्बन्ध भी काफी गहरे थे।

अमरीका के नेताओं ने बार-बार इस बात की दुहाई दी कि वे दक्षिण-पूर्व एशिया और वियतनाम में चीन की विस्तारवादी आक्रामक नीतियों का रोकने के लिए ही लड रहे हैं। अमरीका के विदेश मन्त्री ने और रक्षा सेनाओं ने अनेक बार ऐसे वक्तव्य दिये कि यदि हम वियतनाम में न लडे तो फिर हम चीनी और एशियाई आक्रान्ताओं से कैलीफोर्निया की गलियों में लडना पडेगा। इस बात का अब भी ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि साम्यवादी चीन ने कभी भी इस बात की इच्छा जाहिर की हो कि वह दक्षिण-पूर्व एशिया को चीन का एक भाग बनाना चाहता है। फिर फरवरी, 1972 के दिनों में जबकि निक्सन ने पीकिंग की यात्रा की और वियतनाम पर अमरीका के हवाबाजों ने भयंकर बमबारियाँ की तब व बमबारियाँ किसको रोकने के लिए की जा रही थी ?

वियतनाम के मानवतावादी राष्ट्रीय नेता श्री हो ची मिन्ह को इस बात में कोई सन्देह नहीं लग रहा था कि फ्रांस जेनेवा-सन्धि की शर्तों का पालन करेगा। लेकिन उन्हें इस बात का एहसास न था कि डलस और अमरीका इतनी क्रूरता और अदूरदर्शिता से फ्रांस द्वारा हारे हुए युद्ध को अमरीका की जीत में बदल देने की हर सम्भव कोशिश करेगा।

1955 में फ्रांस की सेनाएँ दक्षिण वियतनाम से हटने लगी और जब हो 1956 के चुनावों की आशा लगाये बैठे थे अमरीका ने अपने पिछलग्गुओं से मिलकर एशिया में साम्यवाद के प्रसार को रोकने की दुहाई देकर दक्षिण-पूर्व एशिया सन्धि संगठन (सीटो) की स्थापना की घोषणा कर दी और दक्षिण वियतनाम को इस संगठन का अनियमित सदस्य बना लिया। सीटो एशियाई सैनिक सुरक्षा सन्धि पर 8 सितम्बर, 1954 को 8 देशों ने हस्ताक्षर किये जिनमें संयुक्त राज्य अमरीका ब्रिटेन, फ्रांस आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड स्याम फिलीपीन और पाकिस्तान थे। इन नामों में यह स्पष्ट है कि 3 को छोडकर बाकी सभी गोरी जातियों के देश थे और इन 3 एशियाई देशों—स्याम, फिलिपीन और पाकिस्तान में भी लोकप्रिय सरकारें नहीं थी। अतः ऐसे सैनिक संगठन को एशिया के स्वातन्त्र्य प्रिय देशों की और जनता का समर्थन प्राप्त नहीं हो सकता था। सीटो घोषणा-पत्र में यह कहा गया था कि इस सैनिक संगठन का उद्देश्य है बाहरी आक्रमणों और आन्तरिक तोड फोड (विद्रोह) की कारवाइयों का विरोध करना। स्पष्ट रूप से इसका उद्देश्य यह था कि कल्पनाजन्य चीन के विस्तारवाद को रोकना और साथ ही यदि इस बात की सम्भावना हो कि कहीं पर साम्यवादी शक्तियाँ स्थानीय जनता के सहयोग से चुनाव द्वारा भी शासन-सत्ता में आ सकती हैं तो उसको भी सैनिक कारवाई द्वारा रोका जा सके। उस समय राष्ट्रपति आइजनहावर ने पाकिस्तान को सीटो के अधीन दिये गये शस्त्रास्त्रों की सफाई देते हुए यह

आश्वासन दिया था कि उसको दी गयी सैनिक सहायता का उद्देश्य केवल साम्यवादी चीन के खिलाफ उसकी रक्षा करना है। लेकिन भारत की जनता इस बात से परिचित है कि पाकिस्तान ने इन्हीं शस्त्रास्त्रों के बल पर साहस बटोरा और भारत पर हमला करने का दुस्साहस किया।

जेनेवा-सन्धि की धाराओं में उत्तर और दक्षिण दोनों ही भागों को और कम्बोडिया और लाओस को भी किसी भी सैनिक संगठन में शामिल होने से मना किया गया था। इसलिए कम्बोडिया, लाओस और दक्षिण वियतनाम से सीटो की सदस्यता पर हस्ताक्षर तो नहीं कराये गये लेकिन एक नयी चाल चली गयी। सीटो सन्धि की एक धारा में यह बात जोड़ दी गयी कि उसका उद्देश्य विशेष रूप से कम्बोडिया, लाओस और दक्षिण वियतनाम की रक्षा करना है। वास्तव में सच यह है कि डलेस और वाशिंगटन इस प्रोटोकाल के द्वारा यथाशक्ति छूट पाना चाहते थे ताकि अमरीका के प्रेसिडेण्ट हिन्द-चीन के क्षेत्र में मनचाहा हस्तक्षेप कर सकें। और अमरीका की सरकार इस बात पर आमादा थी कि वह उत्तर और दक्षिण की एकता न होने दे क्योंकि उसका अर्थ यह होता कि मार्क्सवादी समर्थक शक्तियाँ वियतनाम पर शासन करतीं। इसलिए जेनेवा सम्मेलन की घोषणा के तुरन्त बाद पेंटागान की इच्छाओं को पूरा करने के लिए प्रजातन्त्रीय अमरीका की सरकार ने वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस की इच्छाओं और वहाँ की राष्ट्रीय प्रजातान्त्रिक शक्तियों की बलि चढ़ा दी।

वियतनाम के प्रजातन्त्रीय गणतन्त्र ने सीटो सैनिक संगठन का विरोध किया और इसे जनेवा-सन्धि की अवहेलना और वियतनाम की आजादी पर कुठाराघात बताया। लेकिन अमरीकी विदेश मन्त्री डलेस ने इस प्रजातन्त्रवाद की रक्षा का सूत्र और दक्षिण-पूर्व एशिया के 'मनरो सिद्धान्त' से इसकी तुलना की। मनरो सिद्धान्त अमरीकी इतिहास का वह काला पृष्ठ है जबकि 1812 के आसपास तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति मनरो ने दक्षिण अमरीका तथा प्रशान्त महासागर को अमरीकी प्रभाव क्षेत्र कहकर किसी भी दूसरी यूरोपीय शक्ति को इन क्षेत्रों में अपने अड्डे या राजनीतिक और आर्थिक केन्द्र कायम न करने देने की घोषणा की थी। इस अमरीकी साम्राज्यवादी सिद्धान्त को मनरो डाक्ट्रिन या मनरो सिद्धान्त कहा जाता है।

भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने जो एशिया के स्वतन्त्र राष्ट्रों और एशियाई देशों के आपसी सहयोग और एकता के हामी थे जनेवा-सम्मेलन की कार्यवाही में बड़ी दिलचस्पी ली थी। श्री नेहरू का कदम भी आक्रामक साम्राज्यवादी और युद्धप्रिय नीति में बाधक बनने लगा। उन्होंने सीटो के सैनिक संगठन की धारणा पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि सुरक्षा और शान्ति के नाम पर यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा अन्य क्षेत्रों

म सैनिर गुटव दी करके शा ति का खतर म डाला जा रहा है। 'इस प्रकार के सनिक गठब धन करके जनेवा सम्मेलन क परिणामस्वरूप जिस शा ति की आशा बँधी थी उसकी नींव पर ही कुठाराघात कर दिया गया है। उ होने इस पर दु ख प्रकट करते हुए कहा था कि जेनवा-स धि द्वारा युद्धरत विरोधी तत्त्वा म सहअस्तित्व स्थापित करने का यत्न किया गया है। सीटो का आधार उसी सह अस्तित्व का समाप्त करना है। और इसलिए यह बडे दु ख की बात है कि दक्षिण पूव एशिया क इस सत्रस्त क्षेत्र म अमरीका न गम और शीत युद्ध क जहर के बीज बो दिय हैं।

••

# 6

# हिन्द चीन मे सी० आई० ए० और ए० आई० डी० की हरकते

*अमरीका की दक्षिण पूर्व एशियाई नीति के लक्ष्य हैं (1) स्वतंत्र विश्व (फ्री वर्ल्ड) को मजबूत बनाना (2) उसे साम्यवाद के भीतरी व बाहरी हमले से सुरक्षित रखना, (3) दक्षिण पूर्व एशिया को साम्यवाद की प्रभाव परिधि में जाने से रोकना।*
*दक्षिण पूर्व एशिया में उक्त लक्ष्यों की पूर्ति के लिए की जाने वाली गुप्त व जासूसी हरकतों को यथोचित रूप से बढ़ावा दिया जाना चाहिए।*

—अमरीकी राष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिल द्वारा
1952 मे दिये गये गुप्त सुझाव।

*अमरीका की सहायता के बिना 1955-56 मे दियेम दक्षिण वियतनाम पर अपना कब्जा नहीं जमा सकता था।*
*दक्षिण वियतनाम वास्तव मे अमरीका ने पैदा किया है।*

—पेंटागन के एक विशेषज्ञ का मत
पेंटागन पेपर्स पृ० 25

मई 1954 में जनेवा-सन्धि के अन्तर्गत वियतनाम, कम्बोडिया और लाओस के क्षेत्रों को किसी भी सैनिक संगठन में शामिल न होने और उन्हें सैनिक सहायता न देने की शर्त रखी गयी थी जिसका उद्देश्य यह था कि इस देश के हाल ही में स्वतन्त्र हुए भागों में हथियारों की होड़ शुरू न हो जाय और धीरे-धीरे शान्तिमय स्थिति कायम की जा सके। यही बात भारत और पाकिस्तान के बीच भी तथा दूसरे एशियाई देशों के आपसी सम्बन्धों के बारे में पण्डित नेहरू की पंचशील नीति के अन्तर्गत सह-अस्तित्व की भावना का आधार थी। किन्तु जब वाशिंगटन सरकार ने जनेवा-सम्मेलन की भावना का उल्लंघन करने का निश्चय किया तो

उत्तरी बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप न होने की धारा के प्रभाव से बचने के लिए अमरीका ने सी० आई० ए० (सेंट्रल इण्टलीजेंस एजेन्सी) अर्थात् अमरीका के अन्तराष्ट्रीय गुप्तचर सगठन का इस्तेमाल किया।

अमरीका सरकार को दक्षिणी वियतनाम के अल्पसंख्यक 15 प्रतिशत से भी कम लोगो का समर्थन प्राप्त हुआ है। इन अल्पसंख्यकों में अधिक संख्या ईसाइयों की है और रईस जमीदारों की जिनके परिवारों के अधिकतर व्यक्ति फ्रांसीसी व्यापारी कम्पनियों या फिर फ्रांसीसी उपनिवेशों के उपनिवेशकालीन ऊँचे सरकारी पदों पर और फ्रांस की सेना में उच्च अफसर रहे हैं। ऐसे ही एक कैथोलिक रईस परिवार के एक व्यक्ति न्गो डिन्ह डियम को अमरीका के गुप्तचर विभाग ने सगोंव पर थोपने का फैसला किया। और उसे उसके साथियों को वाशिंगटन में चुनाव के विशेष सलाह दी गयी और उसकी सरकार स्थापित करने और राजनीतिक ताकत बनाने और कायम रखने के लिए वाशिंगटन में उसकी रूप रेखाएँ तैयार की गयी। धन, सेना और सलाहकारों की बड़ी सहायता के साथ डियम को बाओ दाई का सलाहकार और प्रधानमन्त्री बनाकर सगोंव भेजा गया।

बाओ दाई कमजोर व्यक्तित्व के व्यक्ति थे किन्तु फिर भी राजवंश का खून उनकी रगो में बहने के कारण वियतनाम की आजादी के प्रति उनको लगाव था। अत इतिहास के इस मोड़ पर बाओ दाई ने हो ची मिन्ह को वियतनाम का एक मात्र नेता स्वीकार कर लिया और हो ची मिन्ह की सरकार ने देश की एकता बनाये रखने के उद्देश्य से राजा बाओ दाई को सयुक्त वियतनाम का उपराष्ट्रपति का पद देना स्वीकारा। फलस्वरूप बाओ दाई दक्षिणी क्षेत्र को भी उत्तरी वियतनाम में मिलाने के लिए तैयार हो गये। ऐसी स्थिति में डलेस और उसके पिछलग्गुओं ने डियेम को इस बात की सलाह दी कि इस समय यही उचित होगा कि बाओ दाई को पदच्युत कर दिया जाये।

डियम ने बाओ दाई को हटाकर स्वयं को सगोन की सरकार का राष्ट्रपति घोषित कर दिया। अब सवाल यह था कि डियेम जिसका वियतनाम की जनता ने नाम भी न सुना था शासन कैसे कायम रखा जाये? गस्टापो की तरह के सशक्त दमनकारियों को ट्रेंड करने के लिए अमरीका द्वारा एक सलाहकार टीम भेजी गयी। डियम की सरकार को कायम रखने के लिए यह जरूरी था कि आधुनिक हथियारों को चलाने में सुदक्ष लोग उसके सहायक हो। फिर यह सरकार जो कि लोकप्रिय न थी, केवल दमन के आधार पर ही टिक सकती थी। अतएव वाशिंगटन में एक नयी योजना तैयार की गयी जिसके अंतर्गत एक विश्व विद्यालय मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में एक नया विभाग खोला गया जिसका नाम 'अंतराष्ट्रीय केन्द्र' रखा गया। इस विभाग के अधीन वियतनाम में शिक्षा के कार्यों को बढ़ावा देने के लिए वाशिंगटन की सरकार ने आर्थिक सहायता देने का

वचन दिया। सरकार की इस आर्थिक सहायता के द्वारा शिक्षा सामग्री, शिक्षक तथा ऊँचे सलाहकार सगान जाने लगे।

डियम के एक निजी सलाहकार मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के राजनीति के प्रोफेसर श्री फिशल थे। कई वर्षों के बाद इस बात का रहस्य खुला कि विश्व विद्यालय की शिक्षा सहायता के अंतर्गत वास्तव में गुप्तचर विभाग के सदस्यों को प्रोफेसरों का बाना पहनाकर सगाव भेजा गया था और उन बक्सों पर जिन पर कि शिक्षा सम्बन्धी सामग्री, पुस्तकें आदि लिखा था वास्तव में शस्त्रास्त्र थे। जिन शिक्षकों को भेजा गया था वे वास्तव में शिक्षक न थे बल्कि खुफिया पुलिस के आदमी तथा सैनिक सलाहकार थे।

इस विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति का नाम था श्री जान हन्ना। यह एक विशेष उल्लेखनीय बात है कि बाद में 1969 में जान हन्ना को ए० आई० डी० अर्थात ऐजेन्सी आफ इण्टरनेशनल डिवेलपमेंट यानी अन्तर्राष्ट्रीय विकास सगठन का डायरेक्टर बनाया गया। वाशिंगटन पोस्ट (दैनिक) के सोमवार 8 जून 1970 के अंक में प्रकाशित एक लेख के अनुसार जान हन्ना ने एक मुलाकात में यह स्वीकार किया था कि 10 वर्षों में अधिक ए० आई० डी० संस्था ने लाओस और हिन्द चीन के क्षेत्र में सी० आई० ए० की कारवाइयों में हिस्सा लिया है। उन्होंने कहा कि अमरीका के राष्ट्रीय हितों के लिए यह आवश्यक था कि लाओस में सी० आई० ए० की कारवाइयाँ जारी रहें और चूंकि यह किसी अन्य रूप में सम्भव नहीं हो सकता था अतएव हमने अन्तर्राष्ट्रीय विकास सगठन की सहायता ली और बमबारियाँ जालसाजी गुप्तचरी और तोड फोड आदि सभी काम किये गये। इन सबकी ट्रेनिंग लाओस में ए० आई० डी० के कार्यकर्ताओं ने दी जो वास्तव में सी० आई० ए० के सदस्य थे।

अमरीकी गुप्तचर संस्था के द्वारा वाशिंगटन की सरकार ने अमरीकी शिक्षा संस्थाओं के सहयोग से सगाँव में डिक्टेटर डियम की 15 000 से अधिक खुफिया पुलिस को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित करके दमन कारवाइयों की ट्रेनिंग देने में सहायता दी। ए० आई० डी० के वर्तमान डायरेक्टर हन्ना 1955 में मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेण्ट (वाइस चांसलर) थे और उन्होंने सरकारी आदेशों पर वाशिंगटन से साठगाँठ करके हिन्द चीन में हस्तक्षेप की इस व्यापक योजना को क्रियान्वित किया था। अमरीकी सरकार ने उस समय करोड़ों डालरों की गुप्त सैनिक जासूसी और दमनकारी सहायता सगाँव की सरकार को इस विश्वविद्यालय और सी० आई० ए० के द्वारा पहुंचाया था। इसी सहायता के बलबूते पर आगे चलकर डियम ने दक्षिण वियतनाम के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन को कुचलने के उद्देश्य से वहाँ की बहुसंख्यक बौद्ध जनता की प्रजातान्त्रिक माँगों को कुचलने के साथ ठुकराया था। इस डिक्टेटर की नीतियाँ जनता में इतनी अलोकप्रिय हो चुकी थीं कि अन्त

शासन को कायम रखने के लिए डियेम ने नजरबन्दी कैम्प कायम किये जिनमें पाँच लाख से अधिक लोगों को बिना मुकदमे चलाये ठूँस दिया गया। इन नजरबन्दी कैम्पों में वियतनाम के उच्च प्रभावशाली लेखक, चिन्तक, बौद्ध भिक्षु तथा विद्यार्थियों के नेता भी थे।

आगे चलकर जब डियेम की नीतियाँ और उनका दमन चक्र बहुत उग्र हुआ तो सैगाँव के सैनिक वर्ग में भी उसके प्रति अशान्ति और हाहाकार मच गया। फलस्वरूप अमरीका के तत्कालीन उदारवादी प्रेसिडेण्ट श्री कैनेडी ने डियेम को अपनी दमनकारी नीति में परिवर्तन करने का आदेश दिया। यह भी कहा जाता है कि डियेम अमरीकी चंगुल से दक्षिण वियतनाम को उत्तर वियतनाम में मिला देने की तैयारियाँ करने लगे थे। पूरी सच्चाई अभी भी उपलब्ध नहीं है किन्तु इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि डियेम के जुल्मों से जनता ऊब चुकी थी और नये अमरीकी राष्ट्रपति कैनेडी उसको और अधिक समय तक सैगाँव का डिक्टेटर बने रहना नहीं देना चाहते थे। फलस्वरूप सी० आई० ए० ने डियेम की हत्या करवा दी और एक नये सैनिक डिक्टेटर को सैगाँव का शासक बनवाया।

लाओस में सी० आई० ए० की हरकतें सी० आई० डी० के वेश में [illegible] रही और 1969 और 1970 में जाकर अमरीकी सरकार ने खुले [illegible] स्वीकार किया कि 10 वर्षों से अधिक से वह लाओस में हस्तक्षेप करती आ [illegible]। कम्बोडिया के उदारवादी तटस्थ शासक थे लोकप्रिय राष्ट्रपति सिहानुक [illegible] कुशलता के साथ अमरीकी हस्तक्षेप और चीन की गृध्र दृष्टि से बच [illegible] कम्बोडिया को श्री नेहरू की नीति के अनुकूल सह-अस्तित्व और [illegible] रखने की कोशिशें कर रहे थे। लेकिन वाशिंगटन के सैनिक संगठन को [illegible] तटस्थता की नीति नापसन्द थी। अतः 1968 और 1969 के बाद [illegible] सरकार ने श्री सिहानुक की लोकप्रिय सरकार का तख्ता उलट [illegible] दिया।

कुछ ही दिनों बाद 1969 के एक दिन, दुनिया को इस बात [illegible] कि कम्बोडिया के सैनिक अधिकारियों ने श्री सिहानुक का [illegible]। उन दिनों श्री सिहानुक सोवियत संघ की सरकारी यात्रा पर [illegible] चीन के दौरे पर जानेवाले थे। एक ओर तो वाशिंगटन [illegible] कर रही थी कि वह वियतनाम में युद्ध-बन्दी करना चाहती है [illegible] को हटा लेने का इरादा रखती है और दूसरी ओर लाओस और [illegible] क्षेत्रों में भी सी० आई० ए० द्वारा षडयंत्र और सरकारों [illegible] की गयी। इस बीच कम्बोडिया के सैनिक शासन के हाथ [illegible] अमरीकी सैनिक और हवाबाजों की सहायता से [illegible] पैमाने पर सैनिक हरकतें शुरू कर दी गयी। इस प्रकार इतिहास [illegible]

सिमटने के बजाय और दूसरे इलाका म आग फलानेवाली सावित हुई। अमरीका ने कम्बोडिया की छोटी-सी सुरक्षा सना को 80,000 से बढाकर अब 2 50,000 कर दिया है और इतने छोटे स देश पर इतनी बडी फौज का भार वह अभी तो स्वय उठा रहा है। इस प्रकार जनरल लोन को नोमपेन पर थोपकर अब कम्बोडिया को भी एक सनिक समस्या बना दिया गया है। आर्थिक विकास के स्थान पर अब कम्बोडिया मे भी सनिक तयारी चल रही हैं।

इस प्रकार की षडयत्रकारी जासूसी हरकता का एक विशाल जाल-सा बिछा हुआ है जिसम अमरीका के बडे-बडे विश्वविद्यालय और वहाँ के सुप्रसिद्ध फाउडेशनो का भी हाथ माना जाता है। पिछले 25 वर्षों के अन्दर वहाँ के प्रमुख 12 विश्वविद्यालया म स 11 म अतर्राष्ट्रीय अध्ययन के केन्द्र और विभाग खोल गय है। जिनका ज्यादातर खच अमरीकी रक्षा विभाग तथा फोड फाउडशन देता है। उनम कालम्बो, शिकागो, बकल लास एजलिस, कोरनेल हावड इडियाना मसोच्यूटस इन्स्टीटयूट आफ टकनोलाजी मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी और विस्कासिन विश्वविद्यालया के नाम प्रमुख हैं। इन विश्वविद्यालयो मे एशिया अफ्रीका और लटिन अमरीका तथा साम्यवादी देशो क अध्ययन की विशेष सुविधा उपलब्ध की गयी और इनके कोई 95 विभाग खाले गये। इनम स फोड फाउडशन 83 विभागा को आर्थिक सहायता प्रदान करता है कारनगी फाउडेशन 5 को और ए० आई० डी० 2 का।

शायद सबमे पुराना अतर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र कोलम्बिया यूनिर्वासटी म 1946 मे खोला गया था जो कि द्वितीय महायुद्ध के समय क सनिक स्कूल का नया रूप था। इस यूनिवर्सिटी ने 1960 मे एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसम बताया गया था कि कोलम्बिया यूनिर्वासटी के अतर्राष्ट्रीय अध्ययन सस्थान स शिक्षा प्राप्त लोगो के लिए जिन बडी बडी सस्थाओ म नौकरिया मिलती है उनम प्रमुख हैं सी० आई० ए० यू० एस० आई० एस० अमरीका के विदेश स्थित दूतावास सूचना विभाग ए० आई० डी० वहाँ की केन्द्रीय सरकार का विदेश मत्रालय अमरीकी तल कम्पनिया तथा अमरीका क बडे-बड बक जिनका अतर्राष्ट्रीय आर्थिक क्षत्रो मे जाल बिछा है।

इन शिक्षा केन्द्रा के इचार्ज प्राय ऐसे लोग है जो कि अमरीका के सेना विभाग म या उसके गुप्तचर विभाग म काम कर चुके है। विद्यार्थियो को सी० आई० ए० द्वारा छात्रवत्तियाँ दी जाती हैं। स्वय इस लेखक को अनेक ऐसे विद्यार्थिया से मिलन का अवसर मिला है जो कि सी० आई० ए० के पस से कोलम्बिया और दूसर विश्वविद्यालयो म चीन भारत तथा अय एशियाई तथा दक्षिण अमरीकी विकासशील देशो के आतरिक मामला पर पी एच० डी० की उपाधिया प्राप्त कर रहे थे। वहा क कारनगी, राकफेलर

और फोर्ड आदि फाउंडेशनों की आर्थिक सहायता से अमरीकी साम्राज्य के विस्तार में किस प्रकार शिक्षा-संस्थाएँ अपना योग देती हैं, इस पर हाल ही में वहाँ के प्रगतिशील विद्यार्थियों द्वारा की गयी कारवाई के फलस्वरूप जो दस्तावेज उपलब्ध हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्य एशिया, अफ्रीका दक्षिण अमरीका और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में समाजवादी और प्रगतिशील विचारों को दबाये रखने और अमरीकी प्रभाव को बढ़ाने में सहायता देने के उद्देश्य से बाहरी दृष्टि से ऊँचे-ऊँचे शीर्षक देकर गुप्त कार्य किये जाते हैं। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रगतिशील विद्यार्थियों के हाथ एक दस्तावेज लगा जिसमें कहा गया था कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र का उद्देश्य था कि अमरीकी शिक्षण संस्थाएँ ऐसे शोधकार्य करें जिससे कि सरकार के हाथ मजबूत हों और रिसर्च स्कॉलर्स को तीन चार महीने के भीतर भीतर इस बात की ट्रेनिंग दी जा सके कि वे किस प्रकार साम्यवादी देशों की 'लोह की दीवार' को भेदकर वहाँ की जनता में अमरीकी विचारों को फैला सकते हैं।

अक्सर वे लोग जो बाद में वाशिंगटन में सरकार के विदेश विभाग के सलाहकार बने प्रो० रस्तोव डा० हेनरी किसिंगर जिनके नामों से भारत की जनता बंगला देश के युद्ध के समय अमरीकी हरकतों के कारण सुपरिचित हो चुकी है अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्रों से ही निकले थे और उनके संस्थापक रहे हैं। श्री किसिंगर हार्वर्ड विश्वविद्यालय के सहयोगी डायरेक्टर रहे हैं और डीन रस्क 'रॉकफेलर फाउंडेशन' के डायरेक्टर थे। स्वयं जॉन फास्टर डलेस पहले इसी फाउंडेशन के डायरेक्टर थे और बाद में जाकर वह विदेश मन्त्रालय के सचिव बने। इसी प्रकार जेम्स ए० पर्किन्स जो कारनेगी कारपोरेशन के अधिकारियों में थे बाद में कारनेल यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष और चेस मेनहैटेन अन्तर्राष्ट्रीय बैंक के डायरेक्टर बना दिये गये। इस प्रकार अमरीका के शिक्षा संस्थानों के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र और विश्वविद्यालयों के प्रभावशाली व्यक्तियों सी० आई० ए० ए० आई० डी० और विदेश मन्त्रालय तथा सैनिक संस्थानों, पेंटागान और वहाँ की अन्तर्राष्ट्रीय तेल कम्पनियों तथा बड़े-बड़े कारपोरेशनों के बीच आपसी मिलीभगत रही है और इस तरह से यह कहना कि वहाँ की शिक्षा संस्थाएँ स्वतन्त्र रूप से अनुसन्धान का काम कर पाती हैं कठिन है। उदाहरण के लिए विलियम बंडी सी० आई० ए० में थे और उनके भाई मेक जॉर्ज बंडी फोर्ड फाउंडेशन के अध्यक्ष। इसी प्रकार श्री चड वान मिल पतरे जो 1949 तक गुप्तचर विभाग और सी० आई० ए० में प्रमुख थे बाद में रॉकफेलर फाउंडेशन में रहे और एक दूसरे श्री रिचर्ड बिस्सल जिन्होंने क्यूबा पर आक्रमण की योजना तैयार की थी उनके बहनोई। कोलम्बिया के रूसी अध्ययन केन्द्र के प्रमुख पहले फोर्ड फाउंडेशन में रहे और उसके बाद सी० आइ० ए० में। यह हम पहले बता चुके हैं कि रस्टोव और किसिंगर इन्हीं श्रेणियों में हैं

मिमटने के बजाय और दूमरे इलाको म आग फलानेवाली साबित हुई। अमरीका ने कम्बोडिया की छोटी सी सुरक्षा सेना को 80,000 स बनाकर अब 2 50 000 कर दिया है और इतने छोटे स देश पर इतनी वडी फौज का भार वह अभी तो स्वय उठा रहा है। इम प्रकार जनरल लोन को नोमपेन' पर थोपकर अब कम्बोडिया को भी एक सनिक समस्या बना दिया गया है। आर्थिक विकास के स्थान पर अब कम्बोडिया म भी सनिक तयारी चल रही हैं।

इस प्रकार की षडय त्रकारी जासूसी हरकतो का एक विशाल जाल-सा बिछा हुआ है जिसमे अमरीका के बड-बडे विश्वविद्यालय और वहाँ के सुप्रसिद्ध फाउडेशनो का भी हाथ माना जाता है। पिछले 25 वर्षों क अन्दर वहा के प्रमुख 12 विश्वविद्यालयो म मे 11 म अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन के केन्द्र और विभाग खाले गये है। जिनका ज्यादातर खच अमरीकी रक्षा विभाग तथा 'फोड फाउडशन देता है। उनम कोलम्बो शिकागो, बकले लास एजलिस, कोरनेल हावड इडियाना मसीच्यूटस इन्स्टीटयूट आफ टक्नोलाजी मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी और विस्कासिन विश्वविद्यालया के नाम प्रमुख है। इन विश्वविद्यालयो मे एशिया अफ्रीका और लटिन अमरीका तथा साम्यवादी देशो के अध्ययन की विशेष सुविधा उपल ध की गयी और इनके कोई 95 विभाग खोल गये। इनम से फोड फाउडेशन 83 विभागो को आर्थिक सहायता प्रदान करता है कारनगी फाउडेशन 5 को और ए० आइ० डी० 2 को।

शायद सबसे पुराना 'अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्र कालम्बिया यूनिवर्सिटी म 1946 म खोला गया था जो कि द्वितीय महायुद्ध के समय के सनिक स्कूल का नया रूप था। इस यूनिवर्सिटी ने 1960 म एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसम बताया गया था कि कालम्बिया यूनिवर्सिटी के अन्तर्राष्टीय अध्ययन सस्थान स शिक्षा प्राप्त लोगो के लिए जिन वडी बडी सस्थाओ म नौकरिया मिलता है उनमे प्रमुख है सी० आई० ए० यू० एस० आई० एस० अमरीका के विदेश स्थित दूतावास सूचना विभाग ए० आई० डी० वहा की केन्द्रीय सरकार का विदश म त्रालय अमरीकी तेल कम्पनिया तथा अमरीका के बडे बडे बक जिनका अन्तर्राष्टीय आर्थिक क्षेत्रो म जाल बिछा है।

इन शिक्षा केन्द्रो के इचाज प्राय ऐसे लोग हैं जो कि अमरीका के सेना विभाग म या उसके गुप्तचर विभाग म काम कर चुके ह। विद्यार्थियो को सी० आइ० ए० द्वारा छात्रवत्तिया दी जाती है। स्वय इस लखक को अनेक ऐस विद्यार्थियो म मिलन का अवसर मिला है जो कि सी० आई० ए० के पस से कोलम्बिया और दूसर विश्वविद्यालयो म चीन, भारत तथा अय एशियाइ तथा दक्षिण अमरीकी विकासशील देशो के आतरिक मामलो पर पी एच० डी० की उपाधिया प्राप्त कर रहे थे। वहा के कारनेगी, राकफलर

और फोर्ड आदि फाउंडेशनों की आर्थिक सहायता से अमरीकी साम्राज्य के विस्तार में किस प्रकार शिक्षा-संस्थाएँ अपना योग देती हैं इस पर हाल ही में वहाँ के प्रगतिशील विद्यार्थियों द्वारा की गयी कारवाई के फलस्वरूप जो दस्तावेज उपलब्ध हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्य एशिया, अफ्रीका, दक्षिण अमरीका और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में समाजवादी और प्रगतिशील विचारों को दबाये रखने और अमरीकी प्रभाव को बढ़ाने में सहायता देने के उद्देश्य से बाहरी दृष्टि से ऊँचे ऊँचे शीर्षक देकर गुप्त कार्य किये जाते हैं। हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रगतिशील विद्यार्थियों के हाथ एक दस्तावेज लगा जिसमें कहा गया था कि हावर्ड विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र का उद्देश्य था कि अमरीकी शिक्षण संस्थाएँ ऐसे शोधकार्य करें जिससे कि सरकार के हाथ मजबूत हों और रिसर्च स्कालर्स को तीन चार महीने के भीतर भीतर इस बात की ट्रेनिंग दी जा सके कि वे किस प्रकार साम्यवादी देशों की 'लोहे की दीवार' को भेदकर वहाँ की जनता में अमरीकी विचारों को फैला सकते हैं।

अक्सर वे लोग जो बाद में वाशिंगटन में सरकार के विदेश विभाग के सलाहकार बने, प्रो० रस्तोव डॉ० हेनरी किसिंगर जिनके नामों से भारत की जनता बँगला देश के युद्ध के समय अमरीकी हरकतों के कारण सुपरिचित हो चुकी है, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन केन्द्रों से ही निकले थे और उनके संस्थापक रहे हैं। श्री किसिंगर हावर्ड विश्वविद्यालय में सहयोगी डायरेक्टर रहे हैं और डीन रस्क 'राकफेलर फाउंडेशन' के डायरेक्टर थे। स्वयं जान फास्टर डलेस पहले इसी फाउंडेशन के डायरेक्टर थे और बाद में जाकर वह विदेश मंत्रालय के सचिव बने। इसी प्रकार जेम्स ए० पर्किन्ज जो कारनेगी कारपोरेशन के अधिकारियों में थे बाद में कारनेल यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष और चेस मेनहैटेन अंतर्राष्ट्रीय बैंक के डायरेक्टर बना दिये गये। इस प्रकार अमरीका के शिक्षा संस्थानों के अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र और विश्वविद्यालयों के प्रभावशाली व्यक्तियों सी० आई० ए०, ए० आई० डी० और विदेश मंत्रालय तथा सैनिक संस्थानों पेंटागान और वहाँ की अन्तर्राष्ट्रीय तेल कम्पनियों तथा बड़े-बड़े कारपोरेशनों के बीच आपसी मिलीभगत रही है और इस तरह से यह कहना कि वहाँ की शिक्षा संस्थाएं स्वतंत्र रूप से अनुसंधान का कार्य कर पाती हैं कठिन है। उदाहरण के लिए विलियम बंडी सी० आई० ए० में थे और उनके भाई मेग जार्ज बंडी फोर्ड फाउंडेशन के अध्यक्ष। इसी प्रकार श्री फ्रेड वान मिल पतरे जो 1949 तक गुप्तचर विभाग और सी० आई० ए० में प्रमुख थे बाद में राकफेलर फाउंडेशन में रहे और एक दूसरे श्री रिचर्ड बिस्सल जिन्होंने क्यूबा पर आक्रमण की योजना तैयार की थी उनके बहनोई। कोलम्बिया के रूसी अध्ययन केन्द्र के प्रमुख पहले फोर्ड फाउंडेशन में रहे और उसके बाद सी० आई० ए० में। यह हम पहले बता चुके हैं कि रस्टोव और किसिंगर इन्हीं श्रेणियों में हैं

और जान ह्ना, जो 28 वष स अधिक मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय में अध्यक्ष थ डलेस व शासन-काल म अमरीका क उप मुरक्षा सचिव भी रहे। उन्हीं की अध्यक्षता म मिशिगन विश्वविद्यालय द्वारा सी० आई० ए० की नीतियों को वियतनाम म कार्यान्वित किया गया था। य वही व्यक्ति हैं जो 1969 क बाद ए० आई० डी० के अध्यक्ष बनाये गये जिनका हवाला हम ऊपर दे चुके हैं। हमारा उद्देश्य यहाँ पर सी० आई० ए० का पूरा चिट्ठा पेश करना नहीं किन्तु केवल यह दिखाना है कि किस प्रकार अमरीका के व्यापक साम्राज्यवादी इरादों की पूर्ति करने के लिए अनेक वर्षों म वहाँ के प्रमुख शिक्षाशास्त्री सरकार के सलाहकार प्रसिद्ध वक और उद्योगपति सनिक संस्थान पेंटागान और सी० आई० ए० को सहयोग प्रदान करते रहे हैं और वियतनाम की जनता भी दक्षिण अमरीका और अफ्रीका की तरह एक व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र की शिकार हुई है।

इस षडयन्त्र के अन्तगत विकासशील देशों की प्रगतिशील तथा लोकप्रिय सरकारों के तख्ते उलट देने की योजनाएँ बनायी गयी और कार्यान्वित की गयी।

अमरीका की विदेश नीति और विस्तारवादी प्रवत्ति का समझने के लिए यह आवश्यक है कि पहले वहाँ की आर्थिक व्यवस्था और विदेशों म अमरीका क आर्थिक हितों का अध्ययन किया जाये और उसके साथ-साथ अमरीका के सनिक अड्ड उसक सनिक समझौते और अमरीकी पूँजीपतियों स उनके सम्बन्धों को समझा जाय। सबसे प्रमुख बात यह है कि अमरीका की सरकारी एजेंसियाँ वहाँ के दानियों के फाउण्डशन वहाँ की यूनिवर्सिटियाँ वहाँ की सरकार के ऊँचे सलाहकार और सनिक अधिकारियों के आपसी सम्बन्ध और स्वार्थ क्या रहे हैं।

प्रश्न यह नहीं है कि एक शिक्षाशास्त्री अपने देश की सरकार की नीतियों को जिन्हें वह उचित समझता है कार्यान्वित करने म अपनी टनिंग और अपने ज्ञान तथा प्रतिभा का सहयोग न दे। लकिन प्रश्न यह है कि क्या मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय और दूसरे अमरीकी शिक्षा केन्द्र जो विदेशों म सी० आई० ए० के पस से उन देशों की जनता क हितों के विरुद्ध कारवाई करते हैं यह उचित है? और प्रश्न यह है कि व छुपकर शिक्षा सहायता क नाम पर एक बाहरी शक्ति की नीतियों को उन देशों की जनता पर अप्रजातान्त्रिक ढंग से लोकप्रिय सरकारों क तख्त उलटकर अपनी नीतियों को उन सरकारों तथा जनता पर थोपने का माध्यम बनते हैं। शिक्षाशास्त्रियों का क्या यही कत्तव्य है? सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्री वियतनाम म पुस्तकों की जगह बन्दूकें और दमनकारी शस्त्रास्त्र भेजकर वियतनाम से 10 000 मील दूर बठे सगाँव म कर क्या रहे थे?

जून 1 1954 को सी० आई० ए० के एक अधिकारी एडवड लेनस्डेल के नेतत्व में एक अमरीकी सनिक मिशन सगाव भेजा गया जिसका उद्देश्य जेनेवा

सन्धि' के अन्तर्गत फ्रान्स की सेनाओ के वियतनाम से हटने से पहले ही समूचे देश पर खुफिया जासूसो और षडयन्त्रकारियो का जाल बिछा देना था। लेनस्डेल 1950 के आसपास फिलीपीन के प्रेसिडेण्ट मागासाय्से को भी गेस्टापो सरीखे गुप्त सघटन की स्थापना करने मे सहायता दे चुका था। उसकी ट्रेनिंग और फिलीपीन के अनुभवो को अब वियतनाम मे दोहराने का हुक्म मिला।

न्यूयार्क टाइम्स द्वारा प्रकाशित पेंटागान पेपर्स' के गुप्त दस्तावेजो म 1954 55 के बीच लेनस्डेल की देख रेख म 'ए० म० म०' अर्थात अमरीका के 'सगाव मिलिट्री मिशन ने जो षडयन्त्रकारी कारवाइयाँ की उनकी रिपोट का कुछ अश इस प्रकार है

1954 के शुरु मे जबकि अभी दीया बीयाँ फू का पतन नही हुआ था, वाशिंगटन म सगाँव मिलिटरी मिशन' (समम) की योजना तयार की गयी जिसका उद्देश्य था कि फ्रान्स के बाद वियतनामियो को गुप्त युद्ध करने की सहायता दी जा सके।

समम छद्म रूप से वियतनाम म घुसेगा। उसके सदस्यो का काम होगा परा सनिक कारवाइया करना और शत्रु (वियतमिन्ह) के खिलाफ राजनैतिक— मनोवैज्ञानिक युद्ध करना

1 जून, 1954 को अमरीकी वायुसेना के कनल एडवड लेनस्डेल सगाव पहुँचे और समम का काम शुरू हो गया। अमरीकी दूतावास के कायवाहक श्री रोब मैकलिंटोक न आधिकारिक रूप मे लेनस्डेल को एक नियुक्ति-पत्र दिया दिया जिसम उसे सगाव स्थित 'एसिस्टेंड एयर अटाशे का पद दिखाया गया था। लेन स्डेल सी० आई० ए० को वाशिंगटन स गुप्त सचार व्यवस्था भी मुहैय्या की गयी। वियतनाम मे हालात खराब थे। दीयाँ बीयाँ फू का पतन हो चुका था और फ्रान्स वियतमिन्ह के आगे हार मान चुका था। सगाँव के हवाई अड्डे पर गोला-बारूद के बड़े भण्डार को वियतमिन्ह क छापामारो ने उडा डाला था। अमरीकी दूतावास के कायवाहक मैकलिंटोक ने लेनस्डल को वियतनामी (दक्षिण पन्थी) पालिटि कल नेताओ स मिलवा दिया। वे लेनस्डेल के फिलीपीन मे नाम-काम स पहले ही परिचित थे। थोडे से समय मे ही सकडो वियतनामियो स लेनस्डेल का सम्बन्ध कायम हो चुका था।

यू० एस० आई० एस० (सयुक्त राज्य अमरीका का सूचना विभाग) के चीफ श्री जाज हेल्येर के साथ मिलकर हनोई और वियतनामी सेना के लिए (के खिलाफ) एक मनोवैज्ञानिक युद्ध की ट्रेनिंग दी जाने लगी। सगाव के सूचना विभाग के लोगो के लिए भी एक कोर्स तयार किया गया और हनोई म अफवाहे फलाने की कारवाइयाँ की गयी। सबसे पहली अफवाह जो फलवायी गयी वह यह थी कि टोंकिन के एक गाँव म कम्युनिस्ट चीनी रेजिमेट आया और उसने वियतनामी लडकियों के साथ बलात्कार किया। जब गाँववालो ने उसका विरोध किया तो

चीनियों ने मारे गाँव के गाँव का सफाया कर दिया। इस अफवाह से वियतनामियों को 1945 में च्यांग काई शेक की सेनाओं द्वारा किये गये अत्याचारों की याद हो आयी और उन्हें लगा कि 'वियतमिन्ह के शासन में चीनी सारे वियतनाम पर कब्जा कर लेंगे।

ऐसी अफवाहें फैलाने के लिए 'वियतनामी मनोवैज्ञानिक युद्ध सैनिक कम्पनी' के जवानों को सुस्पष्ट हिदायतें दी गयीं और वे हनोई की जनता में जा मिले।

7 जुलाई 1954 को (अमरीका से) डियम आ पहुँचे। स्थिति निराशाजनक था। फ्रांसीसी सेनाओं ने टोंकिन प्रान्त के कैथोलिक क्षेत्र फट डियम व नाम डिंह को खाली कर दिया था। वियतनामी कैथोलिक लोगों के अर्ध सैनिक स्वयंसेवक (सुरक्षा के लिए) हनोई और हाइफांग की ओर भाग रहे थे।

डियम बिल्कुल हताश था। उसके बाडीगार्ड भी उसको छोड़ चुके थे।

अमरीकी राजदूत श्री हीथ के आदेश पर समम ने डियेम को गुप्त रीति से आर्थिक सहायता दी ताकि वह काओ डाई आदि (अल्पसंख्यक) दलों व जातियों की फौज खड़ी कर सके। समम ने देशभक्त वियतनामियों (अल्पसंख्यकों) की एक गुप्त सेना तैयार की जो बाद में सगोंव को सौंप दी जा सके। इसको सांकेतिक नाम दिया गया 'मिन्ह'। एक अमरीकी नौसेना के जहाज ने हाईफांग पर गुप्त रीति से 13 मिन्हों को छुपकर उतार दिया।

सितम्बर 1954 का अन्त आते पता चला कि हनोई की सबसे बड़ी प्रिंटिंग फर्म ने उत्तर में रहकर वियतमिन्ह के साथ व्यापार करने का निश्चय किया है। समम ने कोशिश की कि उस विशाल प्रेस मशीन को तुड़वा दिया जाय। लेकिन वियतमिन्ह के सुरक्षा एजेंटों ने हमारे षड्यन्त्रकारियों से पहले पहुँचकर हमारी कोशिशें नाकाम कर दीं।

उक्त कार्रवाई एक वियतनामी देशभक्त द्वारा की गयी थी जिसको हम यहाँ थ्यू नाम से पुकारेंगे। थ्यू का (अमरीकी) अफसर था कप्तान अर्नल्स। इसने पहले उन्होंने हनोई में काला मनोयुद्ध (ब्लैक साई-वार) किया था जिसमें वियतमिन्ह के हस्ताक्षरों से पर्चे बाँटकर टोंकिन जनता को हिदायतें दी गयी थीं कि वियतमिन्ह की सेना द्वारा हनोई क्षेत्र का शासन सँभालने के दिनों में वे कैसा बर्ताव करें। नये सम्पत्ति कानून, करेंसी के नियम और कि सभी कामगारों और मजदूरों को 3 दिन की छुट्टियाँ मनानी चाहिए। परिणामतः सौदों में भगदड़ मच गयी और वियतमिन्ह करेंसी का भाव आधा गिर गया। वियतमिन्ह ने रेडियो से जनता को बताया कि ये पर्चे झूठे थे और फ्रांसीसियों की चाल था। हनोई के एक छोटे पुलिस अफसर को किर ने अपनी टीम में मिला लिया था ताकि किसी भी गुप्तचर को पकड़े जाने पर जेल से भगाया जा सके।

9 अक्टूबर 1954 को कम्युनिस्ट फौजों के मध्य समम की टीम ने भी हनोई

खाली कर दिया। कपड़े के जूता म वियतमिन्ह के सादे सनिक सजीदगी से माच करत आगे वढ रहे थे और पश्चिमी शस्त्रास्त्रो से लस फ्रासीसी लोहे की आवाजा म पीछे हट रहे थे। पश्चिम के हथियार और युद्ध नीतियाँ साम्यवादियो के सनिक राजनीतिक-आर्थिक सघप के आगे हार चुकी थी।

समम की उत्तरी टीम ने हनोई मे अपन अन्तिम दिन वहाँ के पट्रोल के भडारा म मिलावट करने म लगाये ताकि उनकी बसा के इजन खराब हो जायें। उनकी रेल-व्यवस्था के खिलाफ तोडफोड ओर बाद म नष्ट किये जाने की कारवाइया की। (इस काम म जापान स्थित सी० आई० ए० की एक खास टेकनिकल टीम न हमे बडी सहायता दी।) हमने उनके बिजलीघरा, पानीघरा टकिया, पुला और बन्दरगाहो आदि सम्भावित हमले के निशानो पर रिपोट तयार की जिनको बाद म जरूरत पडने पर एजेंटो से नष्ट करवाया जा सके।

इसी बीच जेनेवा-सधि के अनुसार दक्षिण के वियतमिन्ह सनिका का टोकिन (उत्तर) मे ल जाने के लिए रूस और पोलेण्ड के जहाज दक्षिणी समुद्र तट पर आ पहुँचे थे। कप्तान अरण्डेल की सहायता से बिन्ह ने एक पर्चा तयार करवाया जिसम वियतमिन्ह की ओर से सनिका को हिदायत दी गयी थी कि वे हवाई हमले स बचाव के लिए नीचे के डैक पर सफर करें और अपने साथ गम बडिया अवश्य लावें। बाद म हमारे एजेंटा ने अफवाह फला दी कि उन्ह चीन म रेलवे बनाने के लिए मजदूरी करने भेजा जा रहा है इसीलिए गम बडी साथ ले जान को कहा गया है।

फिलीपीन के प्रेसिडेण्ट मागसाय्से की सहायता से एक फ्रीडम कम्पनी की स्थापना की गयी जिसके द्वारा ट्रेण्ड फिलीपीन नागरिको का गुप्त रीति स दूसर देशा म साम्यवाद के खिलाफ लडने भेजा जावे। प्रशान्त महासागर के टापुआ (और फिलीपीन) मे समम के सदस्या न वियतनामियो को तोड फोड की गुप्त ट्रेनिंग देकर उनका छुपे तरीको से उत्तरी वियतनाम मे भिजवान का इन्तजाम किया। हमारे वियतनामी एजेंट कुलिया (मजदूरो) के भेप म लागा म मिल जाते थे।

• •

# 7

# उत्तरी वियतनाम पर अमरीकी हमला और पेंटागान के दस्तावेज (1964—1968)

*एशियाई लोगों से औसतन पाँच गुना प्रति व्यक्ति की खुराक एक अमरीकी खाता है और अमरीकी स्त्रियों के शृंगार का वार्षिक खर्च अफ्रीका के स्वतन्त्र राष्ट्रों के कुल वार्षिक राष्ट्रीय बजट से भी अधिक है।*

*अत्यधिक सम्पत्तिशाली होने की सजा है जन साधारण के भ्रातत्व, अनुभूति एवं जनजीवन से कट जाना। इस अर्थ में धनिक व्यक्ति अनायास ही अपने जन्मसिद्ध अधिकार—विशाल मानव परिवार की सदस्यता—से पदच्युत होकर 'अछूत' बन जाता है।*

—आर्नोल्ड टायन बी
(महान् इतिहासकार)

श्री डलेस जब तत्कालीन अमरीकी विदेश मन्त्री थे तब उन्होंने युद्धप्रिय, आक्रामक नीतियाँ चलायी। साथ ही प्रेसिडेण्ट आइजनहावर के शासन-काल में अमरीका ने 1956 के चुनाव न होने दिये और डियेम की डिक्टेटरशिप ने लगाव और दक्षिण वियतनाम की जनता पर अपना दमन चक्र उग्र रूप में चालू किया। इस सबका परिणाम यह हुआ कि दक्षिण वियतनाम की जनता ने 1958 और 1960 के बीच संयुक्त रूप से एक राष्ट्रीय मोर्चा स्थापित किया जिसको नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट कहा जाता है। इस संगठन के अन्तर्गत बौद्ध भिक्षुओं, साम्यवादियों

समाजवादियों, किसानों, महिलाओं, स्कूलों, विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं, अध्यापक-अध्यापिकाओं आदि के प्रतिनिधि सम्मिलित थे । इसी राष्ट्रीय मोरचे को अमरीकियों ने 'वियतकाग' नाम से पुकारा जिसका सीधा-सा मतलब होता है 'वियतनामी कम्युनिस्ट'।

इधर डियम के अत्याचारी शासन को समाप्त कराने की भूमिगत कारवाइयां तेजी से बढ़ रही थी और उसकी अलोकप्रियता के कारण सगाव की सरकार का पतन सन्निकट दिखायी दे रहा था । इसी समय वहाँ के सैनिक कमाण्डरों द्वारा डियम की हत्या कर दी गयी और इस बात की आशा थी कि एक लोकप्रिय मिली-जुली सरकार स्थापित हो जायेगी । यदि तब यह सम्भव हो जाता तो शायद आगे के लिए रक्तपात की सम्भावनाएँ कम हो जाती। किन्तु सी० आई० ए० और अमरीका के सैनिक संस्थान पेंटागान के लोगों ने राष्ट्रपति कनेडी को और उनके सलाहकारों को गलत राय दी। अमरीका के सैनिक संस्थान ने 1962 मे क्यूबा पर आक्रमण की तयारियों को और उसी समय यह भी तय कर लिया गया कि वे वियतनाम में अपनी सैनिक कारवाइयों को बढ़ाकर उत्तरी वियतनाम पर हमले शुरू कर देंगे । लेकिन प्रेसिडेंट कनेडी ने दूरदर्शिता से काम लिया और पेंटागान और सी० आई० ए० द्वारा की गयी माँग को ठुकरा दिया। फिर भी सगाँव की सरकार को सुदृढ बनाये रखने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद के हौवे को अमरीका की जनता के दिमाग पर बनाये रखने की नीति से विवश होकर कनेडी शासन ने बारह हजार सैनिक सलाहकार सगाँव भेजने का फैसला किया।

उस समय अमरीकी सरकारी अधिकारियों के अनुसार उत्तरी वियतनाम के 300 सलाहकार दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय आन्दोलन और वियतकाग सैनिकों को सहायता दे रहे थे। उत्तरी वियतनाम के 300 सलाहकारों के मुकाबले अमरीका ने 12 000 सलाहकार सगाव भेजे । इसके अतिरिक्त अरबों डालरों की आर्थिक व सैनिक सहायता बमबारों की सहायता और जंगी जहाजों के सातवें बेड़े का वियतनाम के निकट टाकिन खाड़ी मे आगमन, सब इस बात के सूचक थे कि वाशिंगटन के इरादे नापाक हैं। लेकिन जिस प्रकार बंगला देश और भारत की जनता को सातवाँ बेड़ा न डरा सका उसी तरह इस प्रकार की भभकियाँ दक्षिण वियतनाम की जनता के हौसले पस्त न कर सकीं। धीरे धीरे दक्षिण वियतनाम के प्राय सारे ही ग्रामीण क्षेत्र को राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे की जन सेनाओं ने मुक्त करा लिया और इस बात के आसार दिखायी देने लगे कि किसी भी क्षण सगाव के नगरों पर भी उसका अधिकार हो जायेगा। अमरीका के सैगाँव स्थित प्रतिनिधि श्री कबेट लाज तथा अमरीकी सेनापति जनरल टेलर की निजी सुरक्षा भी एक बड़ी समस्या बन गयी और आये दिन अमरीकी सैनिक और सलाहकार सड़कों पर दिन दहाड़े मारे जाने लगे।

इतिहास की बहुत सी बातें अभी भी स्पष्ट नही हो पायी हैं। उदाहरण के लिए इस बात के प्रमाण उपलब्ध हैं कि कोरिया युद्ध की शुरूआत उत्तरी कोरिया से न होकर उस समय के अमरीकी सुप्रीम कमाण्डर जनरल मैकाथर ने की थी। अनेक इतिहास की खोज करनेवालो का अभी तक वाशिंगटन के सनिक दस्तावेजो की लाइब्रेरी म उन फाइलो को देखन नही दिया गया है जिनसे पूण रूप से यह बात प्रमाणित की जा सके। इमी प्रकार अभी भी 1961 और 1963 के महत्त्वपूण सालो म क्या कुछ हुआ है उसके पूण प्रमाण हमे उपलब्ध नही हैं। लेकिन प्रसिडेण्ट कनेडी के एक एशिया सम्बधी मामलो के सलाहकार ने न्यूयार्क टाइम्स के सम्पादक के नाम एक पत्र म यह कहा है कि उस समय सी० आई० ए० और पेंटागान की सलाह को प्रेसिडेण्ट कनेडी ने स्वीकार नही किया था और वियतनाम पर हमले तथा 3 00 000 अमरीकी सनिक भेजने की माँग को ठुकरा दिया था। कुछ विद्वानो का यह भी मत है कि प्रेसिडेण्ट कनेडी की उदारवादी नीतियो के कारण ही वहाँ की अन्दरूनी षडयन्त्रकारी शक्तियो ने कनेडी की हत्या की थी।

कनेडी की हत्या के बाद षडयन्त्रकारियो को रास्ता साफ मालूम दिया और 1963 और 1964 के बीच जबकि तत्कालीन कायवाहक प्रेसिडेण्ट लिण्डन जानसन 1964 के चुनाव की तयारिया कर रहे थ, विदेश विभाग सी० आई० ए० तथा सनिक सस्थान पेंटागान ने मिलकर वियतनाम म आक्रामक तयारियो की एक योजना बनायी। लिण्डन जानसन ने उसको स्वीकृति तो प्रदान कर दी लेकिन राष्ट्रपति का चुनाव होने तक प्रतीक्षा करने की सलाह दी। ये तथ्य हम पेंटागान के गुप्त दस्तावेजो मे मिलते हैं जिन्हे न्यूयाक टाइम्स ने, एक अनुसधानवर्ता डा० डेनियल एल्सबग से प्राप्त करके जुलाई 1971 का प्रकाशित किया।

डा० एल्सबग प्रारम्भ म पेंटागान के सलाहकार और सनिक मामलो के विशेषज्ञ थे और वे इस बात म विश्वास रखते थे कि अमरीका को सभ्य जातियो और प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए भगवान का आशीर्वाद प्राप्त था। इसी भावना स उन्हाने अमरीका द्वारा किये गये वियतनाम म हस्तक्षेप और आक्रमण का पूरे दिल से समथन किया था। लेकिन ज्यो ज्यो उन्हें उसकी गहराइयो और सच्चाइयो का पता चलता गया व विक्षुब्ध हो उठे और उन्हे इस बात का एहसास हुआ कि वास्तव म यह प्रजातन्त्र की रक्षा और अमरीका के आदर्शों का पालन नहीं बल्कि एक छोटे से अध विकसित एशियाई देश की स्वतन्त्रता की लडाई का कुचलन की कोशिशें हैं। इसलिए जल जान और राष्ट्र द्रोह के खतरे को मोल लेकर भी उन्होंने अपनी आत्मा की पुकार पर पेंटागान के गुप्त दस्तावेजो की कापियाँ करके अमरीका के बडे-बडे नेताओ को पढ़ने को दी। उन्होंने कहा कि सच्चाई यह है कि हम एक जन-आन्दोलन और आजादी के युद्ध का कुचलन

की कोशिशों म व्यस्त हैं। लेकिन किसी भी अमरीकी नेता को यह साहस न हुआ कि इन दस्तावेजो को कांग्रेस के सामने पेश कर सके और लोगो को सच्चाई बता सके। आखिर म विवश हो डॉ० एलसबग ने "यूयाक टाइम्स और वाशिंगटन पोस्ट जो कि अमरीका के दो बहुत महत्त्वपूर्ण दनिक हैं उनको यह दस्तावेज दे डाले क्योंकि य कागजात 'क्लासिफाइड' थे और सरकार द्वारा बहुत ऊँचे स्तर पर गोपनीय श्रेणी म रखे जा चुके थे। अतएव उनके द्वारा किया गया यह रहस्योद्घाटन एक भयकर वधानिक अपराध था।

"यूयाक टाइम्स" द्वारा प्रकाशित पेंटागान के कागजात का पढने स यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरीका के शासका सी० आई० ए० और सनिक सगठन के लोगा को एशिया के स्वातन्त्र्य सग्राम के इतिहास का कोई ज्ञान न था और न ही उनके मन म एशियावासियो की राजनीतिक स्वतन्त्रता और उनके मानवीय अधिकारा के प्रति कोई सहानुभूति थी। जसाकि डा० एलसबग न स्वय कहा कि हजारा पष्ठो की इन योजनाओ के दस्तावेजा म जहा कि अरबो डालरा तथा लाखा लोगो पर हमले और विनाश की योजना थी वहाँ कही पर भी हम एक भी वाक्य ऐसा देखने को नही मिलता जिसम कि इन वाशिंगटन के ऊँचे ऊँचे अधिकारियो नेताओ और विद्वानो न कभी भी यह सवाल उठाया हो कि इन सब तयारियो और हमला का प्रभाव वियतनाम या अमरीका के लोगो के जीवन पर क्या पडेगा। कितने लोग मारे जायेंगे, कितने घर बरबाद हो जायेंगे, कितने परिवार उजड जायेंगे और कितने लोग अपाहिज होकर एशिया की धरती पर आनेवाले युगो म भिखमगो की तरह घूमेंगे इन मानवीय प्रश्नो पर वाशिंगटन ने कभी कोई विचार न किया।

अमरीका की वियतनाम सम्बन्धी नीति बनानेवालो क सामने केवल एक धर्मान्धता थी और वह यह कि चाहे कुछ भी हो अमरीका हर कीमत चुकाने के लिए तयार है लेकिन वह एक इच भूमि भी साम्यवादियो के हाथ म पृथ्वी के किसी भाग म जाने नही देगा। लेकिन यह एक इतिहास की विडम्बना है कि जितना ही अधिक वाशिंगटन ने अपनी धर्मान्धता के कारण जुल्म और आक्रमण करने की योजना बनायी उतना ही अधिक साम्यवादी शक्तियो और जन विकास की राजनतिक नीतियो को वियतनाम और दूसरे देशो म समथन मिला।

पटागान के इन दस्तावेजों को पढने म यह भी मालूम होता है कि जहा एक ओर लाखो लोगो की जानें गयी, अरबो की सम्पत्ति का नाश हुआ लाखो अपाहिज बन गये, रक्तपात हुआ नर-सहार हुआ वहा दूसरी ओर अमरीकी सेनाएँ विजय स कही दूर ही रही। उनकी सारी शक्ति केवल इस बात पर लगी रही कि किस प्रकार एशिया के इस प्रागण म अमरीकी हार और अपमान से बचा जा सकता है।

अमरीका के संविधान में सेना को नागरिक शासन के आधीन रखा गया है और युद्ध घोषणा का अधिकार केवल वहाँ की कांग्रेस को है, प्रेसिडेण्ट का नहीं। लेकिन वियतनाम में संविधान को ताक पे रखकर 10 साल से यह युद्ध चलाया जा रहा है। इसमें कोई 10 00 000 से अधिक अमरीकियों ने सीधे भाग लिया है और अरबों डालरों का खर्च हुआ है। लेकिन आज तक कांग्रेस ने युद्ध की घोषणा नहीं की है। यह ऐसा युद्ध है जिसमें सेना के हित नागरिक शासन पर हावी हो गये हैं और प्रजातान्त्रिक संविधान और राज्य-व्यवस्था की उपेक्षा की जा रही है।

पेंटागान कागजात 7 000 पृष्ठों से भी अधिक सरकारी दस्तावेजों का काला चिट्ठा है जिसमें 1945 से लेकर 1968 के बीच जो नीतियाँ और योजनाएँ बनीं उनका आधार कौन-कौन व्यक्ति और कौन-कौनसे विचार थे और किन मूल कारणों से अमरीका ने वहाँ हस्तक्षेप किया। इसका पता लगाने की कोशिश की गयी है। यह स्पष्ट है कि अमरीका ने वियतनाम में भूल से नहीं किन्तु जानबूझ कर हस्तक्षेप किया। शुरू के दिनों में कुछ अमरीकी सैनिक अधिकारी इसके पक्ष में न थे किन्तु वाशिंगटन के सलाहकारों और नेताओं ने वियतनाम में हस्तक्षेप का फैसला कर लिया था जबकि सैनिक दृष्टि से यह स्पष्ट था कि अमरीका कभी भी लड़ाई नहीं जीत सकेगा। पेंटागान के सैनिक शासक कोरिया के युद्ध में इसका पाठ सीख चुके थे। लेकिन जब एक बार पहल कर चुके तो फिर अमरीका के नेताओं में इस बात की ऐतिहासिक परम्परा का विश्वास जमा हुआ है कि अमरीकी झण्डा अभी तक कभी कहीं पर झुका नहीं और इसी धोखे में वहाँ के सलाहकारों और सतर्कता विभाग के विशेषज्ञों ने एक के बाद एक ऐसी नीतियाँ बनायी जिनका परिणाम युद्ध की आग को बढ़ानेवाला सिद्ध हुआ और वियतनाम के युद्ध के दलदल में अमरीका धँसता ही चला गया।

वियतनाम और हिन्द चीन की राजनीतिक समस्याओं और कठिनाइयों पर शान्त मस्तिष्क से सोचने के बजाय अमरीका के सैनिक और आर्थिक हितों पर अधिक जोर दिया गया। अमरीका वहाँ युद्ध की शुरुआत कर उससे बाहर निकलने को तैयार न था अतएव धीरे धीरे सगाँव के अल्पसंख्यक स्वार्थी पद लोलुप राजनीतिज्ञों तथा सैनिक षड्यन्त्रकारियों के निजी स्वार्थों के दाँव पेंचों में अमरीका फँसता गया।

वाशिंगटन सरकार अमरीकी जनता और दुनिया के सामने यह दावा करती रही कि वह तो सगाँव की जनता की सरकार को उत्तरी वियतनाम के हमलों से सुरक्षित रखने के लिए केवल मानवीय दृष्टि से सैनिक कारवाई करने पर विवश हुई है। अमरीकी नेताओं ने वास्तव में खुद पहल की और फिर आँख के बदले आँख वाली नीति अपनाकर षडयन्त्रकारियों, गुण्डा स्वार्थी सैनिक सेनापतियों

और वहाँ के पद-लोलुपों को खरीदने और हिंद चीन के क्षेत्र में वहाँ की जनता पर थोपने की नीति अपनायी। इन पद-लोलुप स्वार्थी गुर्गों को अमरीकी सरकार ने अपने आदेशों को एशिया में व्यापक समर्थन देने का अगुआ समझा। वास्तव में ये लोग नीच और तुच्छ बुद्धिवाले सिद्ध हुए और यद्यपि अमरीकी सरकार ने उन पर अरबों रुपया लुटाया, वे अमरीका के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक न होकर केवल बाधक ही सिद्ध हुए। ऐसे तुच्छ बुद्धि लोगों के कंधों पर बंदूक रखकर अमरीका उनको चलवा तो सका लेकिन वियतनाम की जनता का आदर और स्नेह प्राप्त न कर सका।

अमरीकी विचारकों पर अनेक वर्षों से दोहरायी गयी इस भ्रामक नीति, जिसे कि 'डामिनो थ्यूरी' कहा जाता है का ऐसा असर पड़ा कि वे स्वयं यह मान बैठे कि चीन के साम्यवादी होने के बाद सारे एशिया और उसके बाद आनेवाले कुछ वर्षों में स्वयं अमरीका भी साम्यवादी प्रभाव से न बच सकेगा। इसलिए भय और आत्मविश्वास के अभाव में अमरीकी नेता मतान्ध होकर एक अवास्तविक नीति को सत्य मानकर युद्धात्मक कारवाइयाँ करने पर आमादा हुए। वास्तव में एशिया की जनता को 'डामिनो थ्यूरी' इस रूप में दिखायी दी कि 1776 में संयुक्त राज्य अमरीका के 13 देश अब 50 हो चुके हैं और दजनों और भागों पर अधिकार करके संयुक्त राज्य अमरीका अब एशिया के हृदय पर अधिकार जमाने की कोशिश कर रहा है। जिन एशियाइयों को दो सौ वर्ष से अधिक समय लगा कि वे यूरोपीय साम्राज्यवादियों से अपना पीछा छुड़ा सकें, अब उनको यह एक नयी समस्या दिखायी दी कि उन्हें अमरीकी सेनाओं से भी आजादी के लिए लड़ना पड़ा।

अमरीकी राष्ट्रपतियों को वियतनाम में एक बार सैनिक कारवाई करने के बाद दो चिंताएँ सताती रहीं। एक तो यह कि कहीं उन्हें सोवियत संघ और चीन की सेनाओं से सीधा मुकाबला न करना पड़े जिसका परिणाम तृतीय महायुद्ध हो सकता है और दूसरा यह कि किस प्रकार एक छोटे में एशियाई देश जिसने अभी कुछ ही वर्ष पूर्व फ्रांस की सेनाओं को दीयां बीयां फू में करारी मात दी थी में हार मान ली जाये। क्योंकि यदि ऐसा हुआ तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमरीका को बड़ा भारी धक्का लगेगा। अमरीकी नेताओं की हमेशा द्वितीय महायुद्ध के शुरू में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री श्री चेम्बरलेन द्वारा हिटलर के चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण के समय शांति के प्रयत्नों (आततायी को खुश करने की नीति) जैसी नीति न अपनाने की इच्छा रही। वियतनाम के स्वातन्त्र्य-आंदोलन का सच्चा रूप न समझ सकने के कारण वे इसको एक अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद के विस्तार का ही रूप देते रहे। अतएव इस बात का भय दिखाया जाता रहा और धमकियाँ दी जाती रहीं कि यदि आवश्यक हुआ तो वे परमाणु युद्ध के प्रयोग से झिझकेंगे नहीं। लेकिन

जब इनके गुप्तचरो सनिक हथियारो, बमबारो और जहाजी बेडे के आक्रमणो से भी वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे की लोकप्रियता कम न हो सकी और वह बढ़ती ही गयी तो वाशिंगटन के नेताओ ने इस बात का हवाला देना शुरू किया कि वास्तव म वियतनाम की जनता वियतकाग के साथ नही है किन्तु आतकवादी हथकण्डो द्वारा जनता को डराया धमकाया जा रहा है और अमरीका समर्थित सगोंव सरकार के प्रति अराजभक्त होने के लिए विवश किया जा रहा है।

प्रेसिडेण्ट आइजनहावर का जब शासन काल समाप्त होने को था तब इस बात के आसार स्पष्ट नजर आ रहे थे कि लाओस अमरीका-समर्थित नीतियो से हटकर समाजवादी तत्त्वो के हाथ म चला जायेगा। जब श्री कनेडी राष्ट्रपति चुने गये तब वाशिंगटन की सरकार क्यूबा को मुक्त कराने के लिए दृढप्रतिज्ञ थी। लगता ऐसा था कि भले ही कोई देश कितना भी छोटा क्या न हो, अमरीका की सुरक्षा के लिए और उसके आर्थिक हितो की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि वह साम्यवादियो के प्रभाव म न जाने पाये और अगर ऐसा होता है तो वह अमरीका के अतर्राष्ट्रीय सम्मान के लिए एक घातक बात है।

आर्थिक व सनिक सहायता, जालसाजी और दूसरी तरह के षडयन्त्र जब सफल न हुए तब अमरीका का सनिक सगठन खुले रूप म वियतनाम म और क्यूबा म हस्तक्षेप क लिए तयार हो गया। पेंटागान के दस्तावेज स यह निश्चित रूप से स्पष्ट हो जाता है कि अमरीकी सेनाओ के सामने अतर्राष्ट्रीय साम्यवाद का भूत नाच रहा था और वे सनिक कारवाई करके चीन के बढ़ते हुए साम्यवादी साम्राज्य वाद को रोकने के उन्मत्त विचारो स ओतप्रोत थे।

उस समय की अमरीकी सरकार के इस नीति सिद्धात को 1966 तक अमरीका क बहुमत का समथन प्राप्त था। लेकिन फिर भी अमरीकी प्रेसिडेण्टो ने वियतनाम म जो कुछ भी किया वहाँ की काग्रेस की अनुमति क बिना ही किया और केवल सनिक सगठन पेंटागान क सलाहकारो की इच्छा पर किया। सबस अधिक अदूर दर्शिता पाखण्ड और घमण्ड की भावना स ओतप्रोत जो नीति वियतनाम म कार्यान्वित की गयी उसके प्रणेता थ प्रसिडेण्ट जानसन और उनकी नीति की असफलता क दुष्परिणाम स्वय उनक लिए बहुत बुरे हुए जबकि उन्होंने 1965 म ही अपनी पत्नी को इन शब्दो म पत्र लिखकर कहा

मैं इसम बचकर नही निकल सकता और न ही मैं किसी तरह स इसका समाधान कर सकता हूँ न तो सनिक और न ही राजनिक। तो फिर मैं कर ही क्या सकता हूँ ?

दुनिया की सबस बडी ताकत और भगवान क बाद सबस बडा शक्तिशाली मनुष्य अमरीकी राष्ट्रपति होता है। और यह इतिहास की विडम्बना है कि इतने बडे शक्तिशाली जॉनसन वियतनाम क स्वातन्त्र्य-युद्ध को कुचल दन

की नीतियो की असफलता पर स्वय को हताश पाते हैं। सयुक्त राज्य अमरीका न प्रेसिडेण्ट कैनेडी की हत्या क बाद और 1964 म श्री लिंकन जॉनसन के प्रेसिडेण्ट बनन के तुरत बाद जिस तरह से दुनिया के सामन झूठ बोलकर और स्वय अमरीकी जनता और अमरीकी कांग्रेस का धोखा देकर भारी पमाने पर दक्षिण वियतनाम और उत्तरी वियतनाम म सनिक कारवाइया शुरू की उसकी शुरुआत स्वय म एक बडी रोचक कहानी है।

## उत्तरी वियतनाम पर बमबारी

9 अक्तूबर, 1964 को तत्कालीन विदेश मन्त्री डीन रस्क ने इस बात की घोषणा की कि अमरीकी नीति म वहा के चुनावो के बाद एक नया परिवतन होगा। 13 फरवरी 1965 को सबसे पहला खुला हवाई हमला उत्तरी वियतनाम पर किया गया और उसके बाद बराबर बमबारिया जारी रही। सोचा यह गया था कि बमबारी के डर से उत्तरी वियतनाम के हौसले पस्त हो जायेंगे और पूर वियतनाम कम्बोडिया और लाओस मे अमरीकी नीति को स्वीकार कर लिया जायगा।

हमले की तयारियाँ किस तरह लोगो को बतायी जायें और कौनसा बहाना ढूंढा जाये इसकी पूरी तयारी अमरीकी सरकार न पहले ही कर रखी थी। वियतनाम की पश्चिमोत्तर सीमा पर स्याम म अमरीकी सनिक हवाई अडडो पर और दक्षिणी वियतनाम के सनिक अडडो पर 4 000 स अधिक हेलि काप्टर तथा जट बमबारो और बी 52 बमवारो को जमा और गोला-बारूदो के भण्डारो से तयार कर लिया गया था। वाशिंगटन म अमरीकी सलाहकारो ने मिलकर एक प्रस्ताव की रूपरेखा तयार कर ली थी कि काल्पनिक उत्तर वियतनाम के हमले की खबर का अखबारो म प्रकाशित करवाया जाय और उसके तत्काल बाद अमरीकी प्रेसिडेण्ट वहा की ससद (कांग्रेस) के सामने वह प्रस्ताव रखें।

अगस्त 1964 का अमरीका की समाचार एजेंसिया ने सगव से दुनिया भर म उत्तरी वियतनाम की गनबोटो द्वारा दो विशाल अमरीकी विध्वसको पर गोली चलाय जाने की खबर प्रसारित की। फलस्वरूप अमरीकी कांग्रेस क सदस्यो और जनता मे क्रोध की लहर दौड गयी कि किस प्रकार एक छोटा-सा एशियाई देश चीन की शह पर सयुक्त राज्य अमरीका जैसी महान शक्ति के जगी बेडे पर गोले बरसाने का दुस्साहस कर रहा है! लेकिन किसी को तब यह पता न था कि टोंकिन की खाडी मे वास्तव म हुआ क्या? अमरीकी राष्ट्रपति ने कांग्रेस म प्रस्ताव रखा कि व अमरीकी जनता के प्रतिनिधियो स इस बात की माँग करते हैं कि उन्हें यह अधिकार दिया जाय कि व जो भी उचित कारवाई हो, करें अमरीकी

सुरक्षा और उसके सम्मान को सुरक्षित रख सकें। कांग्रेस ने बडे उत्साह से प्रेसिडेण्ट की इस माग को स्वीकार कर लिया। वास्तव मे टोंकिन की खाडी म जा हुआ वह केवल एक कपोल कल्पित घटना थी।

अमरीका का विध्वसक पात 'मेडोक्स' पहली अगस्त को उत्तरी वियतनाम के समुद्री तटो के समीप पहुँचा और उसकी छाया म दो तारीख को दक्षिण वियतनाम की गनवोटा न उत्तरी वियतनाम के समुद्री तटो पर हमले किय। फल स्वरूप गाली चलाने की आवाजें आयी और मेडोक्स के कप्तान ने अधिकारिया को सूचना दी कि उत्तरी वियतनाम की तोपें उस पर गाली बरसा रही हैं। दर असल सच तो यह है कि महीना पहले से अमरीकी सातवें बेड के जगी जहाज उत्तरी वियतनाम के समुद्री तटो के बीच घुसपैठ कर रहे थ और अपन यन्त्रो का उनके समुद्री तटो पर जाल बिछाकर सनिक सुरक्षात्मक रहस्या को पाने की कोशिश म बहुत समय से लगे थे। अमरीका के विमान उत्तरी वियतनाम पर उड रहे थ और समुद्री जहाज और हेलिकाप्टर तथा पी० टी० बोटो द्वारा उत्तरी वियतनाम की सुरक्षा सीमाओ का एक अर्से से उल्लघन चल रहा था।

अमरीका के तत्कालीन रक्षा मन्त्री श्री मकनमारा स जब पूछा गया कि क्या उन्हे मालूम है कि उनके ही आदेशो पर अमरीकी जगी जहाज मेडोक्स की छाया म दक्षिणी वियतनाम की नौसना ने और अमरीकी सलाहकारो न उत्तरी वियतनाम की सीमाओ का कई बार उल्लघन किया है तो उन्होने काग्रेस की एक जाँच समिति के सामन यह साफ झूठ बोला कि उन्ह ऐसी हरकतो का काई पता नही।

बजाय इसके कि अमरीकी जगी बडे मेडोक्स का उत्तर वियतनाम की जल सीमा स हटा दिया जाता 3 अगस्त 1964 का अमरीकी अधिकारिया ने एक दूसरे जगी बेडे को मडाक्स क पास भेज दिया जिसका नाम था टनर जाय'। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अमरीका के इरादे लडाई छेड़न के थे।

3 अगस्त को फिर दुबारा दक्षिणी वियतनाम की जल थल सेनाओ न उत्तर वियतनाम के सनिक तटो पर हमल किय। पेंटागान के दस्तावजो स अब यह सिद्ध हो चुका है कि अमरीकी जहाजो को पहले स इस बात की खबर थी कि 2 3 और 4 अगस्त को दक्षिणी वियतनाम की सनाए अमरीकी सलाहकारो के साथ उत्तरी वियतनाम पर हमला करेंगी।

दोनो तरफ तनाव बढ चुका था और 4 अगस्त की रात को टनर जाय जगी जहाज न अपन अधिकारिया का यह सूचना दी कि उस पर उत्तर वियतनाम की समुद्री तोपो न हमला किया है। इस काल्पनिक हमल की घटना की खबर क 6 घण्ट क भीतर भीतर गुआम जापान स्याम और मरीन स्थित अमरीकी सनिक हवाई अड्डो म और उसक सातवें बड क विमानवाहक जहाजो स अमरीकी विमानो न उत्तरी वियतनाम पर भयकर बमबारियाँ शुरू कर दी। य बमबारियाँ

भी प्रमाणित करती हैं कि अमरीका द्वारा हमले की तयारियाँ पहले से की जा चुकी थीं अन्यथा 6 घण्टे के भीतर-ही भीतर ऐसे सगठित रूप से हवाई हमले की सम्भावना नहीं हो सकती थी जिसमे सैकड़ो बमबारो ने बड़े योजनाबद्ध रूप से अलग-अलग हवाई अड्डो से उड़कर उत्तरी वियतनाम पर गोले बरसाये।

हमले के शुरू होने के एक घण्टे के भीतर भीतर मध्य रात्रि को प्रेसिडेण्ट जॉनसन ने बड़े नाटकीय ढग से टेलिविजन पर यह ऐलान किया कि उत्तर वियतनाम ने अमरीकी जगी जहाज पर बिना पूर्व उत्तेजना के अन्तर्राष्ट्रीय गहरे समुद्र मे हमले किये हैं और आत्मरक्षा के लिए अमरीका को उत्तर वियतनाम पर बदले की कार्रवाई करने पर विवश होना पड़ा है। अमरीकी प्रेसिडेण्ट ने काग्रेस से किसी भी भावी युद्धात्मक कार्रवाई के समय उचित कदम उठाने और सनिक कार्रवाई करने का अधिकार दिये जाने की अपील की। उन्होंने उत्तरी वियतनाम द्वारा दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण वियतनाम पर किये गये तथाकथित हमले की कटु निन्दा भी की। फलस्वरूप 3 दिन के भीतर भीतर अमरीकी काग्रेस ने बिना किसी बहस के प्रेसिडेण्ट जॉनसन को मनचाही कार्रवाई करने का अधिकार दे दिया। एशिया मे शान्तिवादी नीतियो के नारे पर राष्ट्रपति पद का चुनाव जीते जानसन को 60 दिन भी नहीं हो पाये थे कि योजनाबद्ध रूप से उन्होने वियतनाम के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन को कुचलने के लिए वियतनाम गणतन्त्र पर बमबारी शुरू कर दी।

4 अगस्त, 1964 की उस अशुभ घड़ी मे टोंकिन की खाड़ी मे अमरीकी जगी जहाज मेडोक्स और टनर जाय पर वास्तव मे क्या घटा इसके बारे मे जो प्रमाण बाद मे मिले वे बड़े रोचक हैं।

अमरीकी काग्रेस की विदेश नीति की सलाहकार समिति के अध्यक्ष सनेटर फुलब्राइट को इन जगी जहाजो के अनेक अफसरो ने युद्ध नीति से विक्षुब्ध होकर यह बताया कि उस समय इन जहाजो पर तनात अफसरो को यह पता न था कि उन पर हमला हुआ है। जहाज के रेडियो सिगनलो पर भयकर शोरगुल मच रहा था और कनफ्यूजन मचा हुआ था लेकिन जहाज को कोई नुकसान नहीं पहुँचा और न ही कोई सनिक मरा अथवा हताहत हुआ। किसने किस पर कब गोलियाँ चलायी इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। लेकिन फिर भी इन जहाजो के कप्तानो ने और अमरीकी सनिक अधिकारियो ने दुनिया को और स्वय अमरीकी जनता को यह खबर दी कि उन पर उत्तरी वियतनाम की तटीय तोपो ने हमले किये हैं।

इतिहास यह पूछेगा कि क्या हमला हुआ था? जगी बेड़े टनर जॉय के कप्तान का कहना है कि वह निश्चित रूप से इसके बारे मे कुछ नहीं कह सकते। ज्यो ही उस जहाज के राडार पर कुछ गोली जसी चीज के सिगनल सुनाई दिये उन्होंने पेंटागान को निम्न सन्देश भेजा

ऐसे सकेत मिल रहे हैं जो कदाचित तारपीडो के हो लेकिन निश्चित नही कहा जा सकता कि मौसम की खराबी और अनिश्चित स्वर ध्वनियाँ भी इसके कारण हो सकते हैं। साथ ही जहाज मेडाक्स ने भी कोई स्पष्ट चीज नही देखी। हमारा सुझाव है कि कोई सनिक कारवाई करने से पहले स्थिति की पूरी जाँच करा ली जाय।

इस सन्देश से पेंटागान और अमरीकी प्रेसिडेण्ट के व्हाइट हाउस के अधिकारियों म आतक छा गया क्योंकि वे बदले के हवाई हमला की पूरी तयारियाँ पहल स ही किये बठे थे। व तो यह कहना चाहते थे कि वास्तव म उन पर पहला हमला हो चुका है। उन्होंन इस कपोल-कल्पित हमले की सच्चाई का दुनिया के सामन सिद्ध करने की ठानी हुई थी। इसलिए वे इस मूड म न थे कि कोई भी सनिक कारवाई करने से पहले वस्तुस्थिति की पूरी जाँच कर लें। यह वह समय था जबकि स्वय प्रेसिडेण्ट जानसन थोड़े ही समय में और कुछ ही क्षणो म टलिविजन पर बदले की कारवाई करने की घोषणा करने को आतुर थे।

प्रजातन्त्रीय वियतनाम की राजधानी हनोई ने अमरीका के इस आरोप का खण्डन किया कि उसके समुद्री तटो की सुरक्षात्मक सेनाओ ने अमरीका के जगी जहाजो पर गोले बरसाये है। हावड विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर डा० रस्टोव, ने जो उस समय प्रेसिडेण्ट जानसन के विशेष सलाहकार थे बडे उत्साह स उत्तरी वियतनाम पर खूखार बमबारी करने की नीति का प्रबल समथन किया और व्हाइट हा.उस के एक आपसी वार्तालाप म यह कहा कि "कितने मजे की बात है कि सारा घटनाचक्र हमारे इरादो का साथ दे रहा है।

अमरीका के एक दूसरे विद्वान विलियम बडी ने जो उस समय विदेश मन्त्रालय म एशियाई मामलो के विशेषज्ञ और एशियाई विभाग के प्रमुख थे इस प्रस्ताव का प्रारूप दो महान पहले से तयार किया हुआ था जिससे प्रेसिडण्ट जानसन ने काग्रेस के सामने रखा। इस योजना के पीछे विलियम बडी के अलावा तत्कालीन रक्षामन्त्री श्री मैक्नमारा के सलाहकार जान मैक्नटन और विलियम सलेवान भी थे जिन्होंने कि लाओस म अमरीकी बमबारियो की नीति को कार्यान्वित किया था। इन अमरीकी विद्वानो ने मिलकर उत्तरी वियतनाम पर योजनाबद्ध बमबारी की रूपरेखाए तयार की थी।

उक्त घटना के 4 वष बाद जबकि हजारो अमरीकी हताहत हो चुके और उत्तर और दक्षिण दोना ही वियतनामा के खेतो खलिहाना और किसाना के झोपड और नागरिका के मकान धूलिसात किये जा चुके और लाखो वियतनामी मारे जा चुके तत्कालीन रक्षा सचिव श्री राबट मैकनमारा ने जो आजकल विश्व बक के डायरक्टर हैं सनेटर फुलब्राइट की अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो की समिति के सामन एक नासमझ के रूप म यह कहा कि उन्हे यह याद नही कि उन्होने या

# 8

# अमरीकी आक्रमण का प्रभाव और 'टेट' का प्रत्याक्रमण

*मुझे शोक होता है न केवल जब वियतनामी जनता मारी जाती है बल्कि तब भी जबकि अमरीकी सनिक मारे जाते हैं। लेकिन यह मेरा देश तो नहीं जो अमरीका पर बम बरसा रहा है। यह तो अमरीका है जो मेरे देश पर बमबारियाँ कर रहा है। फिर वे बमबारी खत्म करने की बात करते हैं कि बशर्ते मैं भी उन्हें बदले मे कुछ कन्सेशन दूँ। यह तो वसे हुआ जसे कि शिकागो म कोई गुण्डा आपको गले से पकड ले। फिर पूछे कि बताओ आप उसे क्या देने को तयार हैं कि वह आपको गोली न मारे।*

*तुम्हे हमारा यह दृढ निश्चय पता होना चाहिए हमने अपने देश की आजादी के लिए बहुत लम्बे समय से खून बहाया है और अब कोई शक्ति हमे आत्मसमपण करने को मजबूर नहीं कर सकती। नहीं, तुम्हारे परमाणु अस्त्र भी नहीं।*

**—प्रेसीडेंट हो ची मिन्ह**

(एक अमरीकी पत्रकार स 1968 की बसन्त में हनोई म एक मुलाकात)

प्रसिडेण्ट कनेडी के सलाहकार जनरल मैक्सवैल टेलर ने 1 नवम्बर 1961 को उत्तरी वियतनाम पर हमले की सलाह देते हुए यह कहा था कि हालाकि वियतनाम म इसी प्रकार की बडे पमान पर सनिक कारवाई करने म खतरे जरूर हैं लेकिन उत्तरी वियतनाम की सबस बडी कमजोरी यह है कि वह विमानो द्वारा की गयी बमबारी के आगे ठहर नही सकेगा। इस कमजोरी का फायदा उठाना चाहिए। बमबारी के डर स हनोई दक्षिण वियतनाम के भविष्य के बारे म अमरीका की शर्तों को स्वीकार कर लेगा। लेकिन फिर भी प्रेसिडेण्ट कनेडी ने

हवाई हमले की अनुमति नहीं दी और जब डियेम की हत्या कर दी गयी और उनकी सरकार का तख्ता उलट दिया गया उस समय सगौंव म अमरीकी प्रतिनिधि हैनरी कैबेट लॉज ने अगस्त 29, 1963 को एक सरकारी दस्तावेज म यह कहा था कि हम एक ऐसे रास्ते पर चल पड़े हैं जिसस फिर वापस लौटना मुश्किल होगा। डियम की सरकार का तख्ता पलट दिया गया और ज्यो-ज्यो रहस्यो का पता लोगो को लगेगा त्यो-त्यो हमारे लिए वियतनाम से बच निकलना और भी मुश्किल होता जायगा।

1964 म अमरीका ने बमबारी शुरू करके बडी सख्या म अपनी वायुसेना और जल व थल सेनाए दक्षिण वियतनाम म उतारनी शुरू की। सारे का सारा वियतनाम युद्ध की आग म जल उठा। दक्षिण वियतनाम के नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट ने वियतनाम के सभी वर्गो को साथ लेकर बनाये गये मोरचे के नेतृत्व मे अमरीकी विदेशियो का और उनके पिछलग्गुओ को वियतनाम स निकालने का अपनी स्वतन्त्रता का सघर्ष पूरे जोर शोर से शुरू कर दिया। उत्तरी वियतनाम ने हर सम्भव सहायता अपने दक्षिण वियतनामी भाइयो को देने का वचन दिया और विश्व के सभी मानवतावादी तथा प्रजातन्त्रीय आदर्शो स स्नेह रखनेवाले देशो ने वियतनाम की जनता का समर्थन किया।

फ्रास की सरकार न अमरीका के आक्रमण की खुलकर कडे शब्दो मे निन्दा की और ब्रिटेन हालैण्ड इटली आदि देशो की जनता न अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध बडे-बडे प्रदर्शन किय। नार्वे स्वीडन डेनमार्क आदि देशो ने विरोध के साथ साथ अनेक प्रकार की सहायता सामग्री देने की घोषणा की और चीन सोवियत सघ चेकोस्लावाकिया, पूर्वी जमनी क्यूबा आदि साम्यवादी देशो न शस्त्रास्त्र तथा हर प्रकार की सनिक व जन-जीवन उपयोगी सामग्री सहायता के रूप मे भेजी।

उत्तरी वियतनाम तथा दक्षिणी वियतनाम के राष्ट्रीय मोरचे के सेनानियो न धीरे धीरे सुरक्षात्मक उपायो द्वारा अपनी स्थिति को सुदृढ बनाया और इसम साम्यवादी देशो की पूरी सहायता उन्ह प्राप्त थी। 1965 और 1966 के आते आते हालाकि लाखो टन बम वियतनाम की धरती पर बरसाय जा चुके थे फिर भी वियतनामी जनता की ओर स किसी प्रकार की कमजोरी या कि आक्रामक सरकार और उसके प्रतिनिधियो से समझौते की भावना के कोई आसार दिखायी नही दिये।

न्यूयार्क टाइम्स के सुप्रसिद्ध विदेशी कमटेटर हरीसन साल्सबग को डा० हो ची मिन्ह ने उत्तरी वियतनाम की यात्रा करने की विशेष अनुमति प्रदान की और उन्होने वियतनाम की यात्रा के बाद न्यूयार्क टाइम्स के स्तम्भो मे 1966 म जो कुछ लिखा और उसके जो सचित्र प्रमाण दिये उससे अमरीकी जनता को पता

चला कि वियतनाम के चप्पे चप्पे को अमरीका के बमवारो ने विध्वस्त करके बडे बडे गडढे पदा कर दिये हैं। वहा के पुलो कारखाना, बिजलीघरा भवना स्कूलो और हस्पताला को धूलिसात कर दिया। श्री साल्सवग के लेखो के अनुसार हाई फाग का बन्दरगाह और राजधानी हनोई के पाँच वगमील के शहरी क्षेत्र को छोडकर उत्तरी वियतनाम का कोई भी कस्बा या गाँव ऐसा नही बचा था जिसे अमरीकी बमबारो ने जमीन म न मिला दिया हो।

साल्सवग के इस रहस्योदघाटन ने अमरीकी सरकार द्वारा तब तक दिये गये वक्तव्या को झूठा साबित कर दिया जिनमे जानसन और सलाहकारो न हमेशा यह दावा किया था कि उनके बमबार उत्तरी वियतनाम की भयानक सनिक तयारिया और उनक सनिक अडडा को नष्ट करके दक्षिण वियतनाम पर उनके सम्भावित आक्रमणा की तयारियो को मिटा दने के प्रयत्न कर रहे हैं। श्री सात्स बग ने बताया कि ऐसे कोई बडे सनिक केन्द्र उत्तर वियतनाम मे नही थ जिन पर कि इतने व्यापक रूप से बमबारी करने की आवश्यकता होती।

1967 के अन्त मे वहा अमरीकी कमाण्डर ग्राट शाप न युद्ध स्थिति पर अपनी वार्षिक रिपोट मे यह लिखा था कि अमरीकी हवाई हमला क तीन उद्देश्य हैं पहला उत्तरी वियतनाम द्वारा दक्षिण वियतनाम, लाओस तथा दूसरे हिन्द चीन के क्षेत्रा म भज जानेवाले सनिक सामान को रोका जाना। दूसरा वियतनाम को मिलनेवाली बाहरी सहायता का उस तक न पहुचने देना। और तीसरा उत्तरी वियतनाम की उन सब वस्तुआ चीजो और तत्त्वो को नष्ट करना जिनमे कि उसम युद्ध करने की क्षमता न रह। लकिन फिर भी उन्होने यह स्वीकार किया कि साम्यवादी देशा से मिलनेवाली सनिक सहायता 1967 तक बराबर मिलती रही और उसम कमी नही होन पायी। इसी प्रकार जनरल शाप न यह भी स्वीकारा कि उत्तरी वियतनाम द्वारा लाओस और दक्षिण वियतनाम को भजी गयी सनिक सहायता भी पूरी तरह से रोकी नही जा सकी हालाकि बमबारिया बहुत अधिक हुइ और उनसे बहुत सा सामान गोदाम और यातायात क दूसरे साधना को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया है।

9 जनवरी स लेकर 15 दिसम्बर 1967 तक कोई 1 लाख 22 हजार 960 हवाइ हमले उत्तर वियतनाम पर किये गय। इसी बीच 1384 समुद्री हमले भी उस पर किय गये जिनम 5246 ट्रक 2475 रेल डिब्बे तथा 11425 नौकाए नष्ट कर दी गयी।

जनरल शाप ने यह भी बताया कि अमरीकी हवाई हमला के कारण उत्तर वियतनाम म कोई 6 लाख नागरिका को खेती और उद्योगा से हटाकर युद्धकालीन सनिक रसद पहुँचाने और सेना की सहायता के लिए लगाया गया है। इसस उनकी खती और उद्योग धधा पर बुरा असर पडेगा। उत्तर वियतनाम क निर्माण

युद्ध बहुत महँगा बन गया है।

जनरल शाप ने आक्रमण के तृतीय उद्देश्य का हवाला देते हुए यह कहा कि हमारे हवाई हमला के कारण उत्तर वियतनाम के बिजली उत्पादन केन्द्रों का पूर्ण तया नष्ट कर दिया गया है जिसके फलस्वरूप वहा के उद्योग धधा का उत्पादन 15 प्रतिशत से भी अधिक घट गया है। उत्तर वियतनाम का एकमात्र इस्पात का कारखाना और हाई फाग स्थित उनका सीमेण्ट बनाने का कारखाना भी खत्म कर दिया गया है। (इसी कारखाने का 1972 म दुबारा नष्ट किया गया) इस भयकर औद्योगिक क्षति के कारण अब उत्तर वियतनाम का चीन और सोवियत सघ तथा अन्य पूर्व यूरोपीय मित्र देशा की सहायता पर आश्रित होना पड़ेगा। जीवन की आम आवश्यकताओ की वस्तुएँ भी विदेशा स आयात करने पर वह विवश हो गया है जिसके फलस्वरूप युद्ध सामग्री के आयात मे अधिक असुविधा पदा हो गयी है। आर्थिक दृष्टि से केवल 1967 क साल म ही इस बमबारी के कारण उत्तर वियतनाम मे उत्पादन 50 प्रतिशत घट गया।

एक ओर अमरीकी सेनापति इस प्रकार के भयकर विनाश और विध्वस के आँकड़े दे रहे थे और दूसरी ओर दक्षिण वियतनाम म राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के स्वयसेवक सनिक छापामारा स उलझने म असफलता के कारण अमरीकी प्रेसिडेण्ट से और अधिक सनिक भेजने की माग की जा रही थी। फलस्वरूप 1964 की बम बारी शुरू होने ही अमरीकी युवको को अनिवाय सनिक सेवा कानून के अन्तगत विवश करके हजारो की सख्या म हर तीसरे महीने अमरीका से वियतनाम म भेजा जाने लगा। वियतनाम म अमरीकी सनिको की सख्या दिनोदिन बढ़ती गयी और 1967 क अन्त तक कोई 4,00 000 से अधिक सशस्त्र अमरीकी सनिक उत्तर वियतनाम म पहुँच चुके थे।

युद्ध और विनाश की कहानिया और अमरीकी अत्याचारो का दमन चक्र दुनिया के सभी भागो म भिन्न भिन्न प्रतिक्रियाएँ पदा कर रहा था। थाईलैंड फिलीपीन आस्ट्रेलिया न्यूजीलण्ड तथा दक्षिण कोरिया की अलोकप्रिय सरकारें अमरीकी आर्थिक सहायता क दबाव मे अमरीकी सनिक कारवाइयो का वियतनाम म समर्थन कर रही थी जबकि बाकी सभी राष्ट्र अमरीकी प्रेसिडेण्ट से बमबारी रोकने और युद्ध विराम करने की अपील कर रहे थ। अमरीका के प्रमुख सेनापति जनरल वस्ट मूरल ण्ड ने अमरीकी काग्रेस के एक सयुक्त अधिवेशन म अपनी विजय के आँकड़े प्रस्तुत करते हुए और अधिक सनिक सहायता देकर उनके युद्धस्थल पर हाथ मजबूत करने की अपील की और यह आश्वासन दिया कि यदि उन्हे थोडा और समय और 3 डिविजन और सनिक सहायता तथा 15 स्क्वेड्रन वायुसेना के दे दिये जायें तो व पूर्ण रूप से दक्षिण वियतनाम को अपने अधीन करके उत्तर वियतनाम को समझौते क लिए विवश कर देंगे।

लेकिन समझौता किस बात का ? यह किसी भी अमरीका के प्रवक्ता या नेता को पता न था। फरवरी, 1968 का प्रथम सप्ताह वियतनाम में अमरीकी साम्राज्यवाद के लिए बड़ा अशुभ सिद्ध हुआ और उसको एक ऐतिहासिक घटना के रूप में याद किया जाता रहेगा। टेट वियतनाम का एक सांस्कृतिक त्यौहार है और वसन्त के दिन जबकि अमरीकी सेनापति विजय की घोषणाएँ कर रहे थे और कह रहे थे कि बस वियतनाम में अमरीका की विजय होने ही वाली है वियतनाम की जनता ने एन० एल० एफ० के स्वयंसेवकों और सेनानियों के साथ मिलकर एक व्यापक सैनिक कारवाई को बड़ी सफलता से कर दिखाया।

17वीं समानान्तर रेखा जहाँ कि दक्षिण वियतनाम की सीमाएँ शुरू होती हैं वहाँ से लेकर दक्षिण में मकाग घाटी के मोहाना तक पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण और गाँवों कस्बों और शहरों पर वियतनाम की जनता ने अमरीकी पिठ्ठगू सगाव सरकार के झण्डे उतारकर अपना राष्ट्रीय झण्डा एक साथ फहराया। ठीक एक ही समय एक ही घण्टे और मिनट पर हर अमरीकी चौकी हर अमरीकी हवाई अड्डे और हर अमरीकी सेनापति के शिविर पर हथगोलों तोपों बन्दूकों तथा दूसरे शस्त्रास्त्रों से वियतनामियों ने आक्रमण किये। सगाव स्थित अमरीकी राजदूतावास को कई घण्टों तक एन० एल० एफ० के स्वयंसेवकों ने अपने कब्जे में रखा और सगाव का आधे से ज्यादा शहर मुक्तिवाहिनी ने स्वतन्त्र करा लिया। सैकड़ों अमरीकी विमान तोपें टैंक तथा बख्तरबन्द गाड़ियाँ नष्ट कर दी गयीं और केवल सातवें बेड़े के हवाबाज सक्रिय रूप से सैनिक कारवाई कर उसका प्रतिकार कर सकते थे।

विमान वाहक जंगी बेड़ों से उड़कर अमरीकी बमबारों ने सगाँव के मुक्त हुए शहरी भाग को बमों और राकेटों से तहस नहस कर डाला। अमरीकी सेनापतियों का एक ही आदेश था 'केवल मरा हुआ वियतनामी ही एक अच्छा वियतनामी है'। शत्रु और मित्र पक्ष का कोई अन्तर न रहा और वियतनाम के धर्म स्थान बौद्धों के धर्म मन्दिर गिरजाघर अस्पताल अनाथालय स्कूल आदि सभी भवनों जिनको कि वियतनाम की जनता ने मुक्त करा लिया था बदले की हिंसा से नष्ट कर दिया।

टेट आक्रमण की इस घटना से अमरीकी जनता में अपनी सरकार और सेना के प्रति अविश्वास और भी बढ़ गया। कुछ ही दिन पहले तक जबकि अमरीकी सेनापति इस बात का दावा कर रहे थे कि वे बस अब कुछ ही दिनों में पूर्ण विजय प्राप्त करनेवाले हैं असत्य सिद्ध हुआ। दूसरी ओर विश्व के मानवोचित स्वतन्त्रता के अधिकारों के प्रति सहानुभूति रखनेवाले देशों ने वियतनाम के स्वातन्त्र्य-संग्राम के सेनानियों की इस बात की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की कि उन्होंने बहुत ही मुस्तैदी और साहस के साथ अमरीका के विशाल सैनिक-संगठन की नाक के बिलकुल नीचे

रहकर भी आक्रमण की योजना तैयार की और उसको कार्यान्वित कर दिखाया।

लेकिन टेट आक्रमण से जो सबसे बड़ी बात सिद्ध हुई वह यह कि जबकि अमरीका व जासूस वियतनाम के हर चप्पे चप्पे पर मौजूद थे अमरीकी सैनिक हर क्षेत्र की नाकाबन्दी किये हुए थे अमरीका के बमवार और सैनिक अड्डे वियतनाम के हर कोने पर मौजूद थे तब फिर कैसे वियतनाम के नागों तथा एन० एल० एफ० के स्वयंसेवकों ने सगाव की सरकार और अमरीका के सेनापतियों की गिद्ध-दृष्टि से बचकर ऐसी योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया। यह इसका प्रमाण है कि वियतनाम की जनता की सहानुभूति सगाव की सरकार और अमरीका के सैनिकों के प्रति न होकर एन० एल० एफ० के स्वातन्त्र्य संग्राम के सेनानियों के साथ है।

टेट आक्रमण के बाद 27 फरवरी 1968 को प्रमुख अमरीकी सेनापति जनरल अर्ल व्हीलर ने प्रेसिडण्ट जॉनसन को एक रिपोर्ट में स्थिति का मूल्यांकन करते हुए कहा था कि टेट आक्रमण से यह स्पष्ट हो गया है कि शत्रु ने अपनी हर कोशिश और सम्पूर्ण शक्ति लगाकर यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि वह अब भी युद्ध करने की क्षमता रखता है। हालांकि शत्रु अपने उद्देश्यों को पूरा करने में असफल रहा है क्योंकि उसकी अनेक सैनिक टुकड़ियां बुरी तरह मारी गयी हैं और अब बहुत लम्बे अर्से तक वे फिर युद्ध के काबिल न रहेंगे। फिर भी शत्रु को शहरों कस्बों और गांवों में जनता का काफी समर्थन मिला। लेकिन इस सबके बावजूद भी वे उन पर सफलता के साथ अपना अधिकार न जमा सके। यह सच है कि वियतकांग की फौजों का नैतिक स्तर और आत्मबल बहुत ऊँचा है, परन्तु शत्रु को बहुत नुकसान उठाना पड़ा है। लेकिन स्थिति से यह स्पष्ट हो जाता है कि वह बहुत शीघ्र ही वियतनामी जनता की सहायता से फिर हमले की तैयारी कर सकता है।

अनेक स्थानों पर शत्रु ने बड़ी सफलता से कब्जा किया लेकिन वह सब सफलता अमरीकी वायुसेना की उचित और तेज कारवाई से असफल कर दी गयी। दक्षिण वियतनाम की जनता पर टेट आक्रमण का बहुत बुरा असर पड़ा है और सगाव शासन की लोकप्रियता और मर्यादा को इससे भारी ठेस पहुँची है।

जनरल व्हीलर ने शत्रु (उत्तर वियतनाम) और एन० एल० एफ० की सैनिक तैयारियों की क्षमता का ब्यौरा देते हुए लिखा है कि हालांकि शहरी इलाकों में शत्रु को बुरी तरह मार पड़ी है ग्रामीण क्षेत्रों में उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा। 'टेट आक्रमण के समय एन० एल० एफ० ने कोई 67 000 सैनिकों को युद्ध में धकेला और हमारी ओर से मरनेवालों की संख्या 84 से अधिक न थी जबकि शत्रु के 40 000 लोग मारे गये, 3 000 से अधिक जिंदा पकड़े गये और कोई 5 000 के करीब घायल हुए। टेट आक्रमण से पहले दक्षिण वियतनाम में एन-एल० एफ० सैनिकों की संख्या 2 40 000 के करीब थी। टेट आक्रमण के समय

व अपने सनिकों का कोई पाचवाँ भाग था वह है। लेकिन उनको उत्तर वियतनाम से सहायता बराबर मिल रही है और किसानों और खेतों में काम करने वाले श्रमिकों से भी बराबर लोगों को वे भरती कर रहे हैं। शत्रु के पास शस्त्रास्त्र पर्याप्त मात्रा में हैं जो उन्होंने जंगलों, सेना और नाग्रोम और कम्बोडिया में छिपा रखे हैं। हो सकता है कि कभी-कभी उन्हें रसद मिलने की समस्या का मुकाबला करना पड़ता हो। लेकिन यदि जनता उनके साथ है तो यह समस्या उनके लिए ऐसी नहीं है जो वे हल न कर सकें।

जनरल व्हीलर ने दक्षिण वियतनाम पर टेट आक्रमण के दुष्प्रभाव पर अपने विचार लिखते हुए कहा था कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से टेट आक्रमण ने दक्षिण वियतनाम को करारी चोट दी है विशेष तौर पर नागरिक क्षेत्रों में जहाँ के लोग अमरीकी सनिकों के नजदीक होने के कारण अपने को सुरक्षित समझते थे। अब वे किसी भी क्षण एन० एल० एफ० के हमलों से भयभीत हैं। सगोन की सरकार का ढांचा पहले ही कमजोर था अब और भी हिल चुका है। इसके अतिरिक्त अमरीकी बमबारियों के कारण कोई पाच लाख लोग बेघरबार हो गये हैं और इन लोगों की देखरेख करना एक और नयी समस्या हो गयी है।

टेट आक्रमण से एक ऐसी भयंकर निराशा अमरीकी सनिक और राजनीतिक क्षेत्रों में फैली जिसका परिणाम अमरीकी राष्ट्रपति जानसन की मानसिक स्थिति पर बुरा पड़ा। अमरीकी सेनापतियों ने प्रसिडेंट से और अधिक सनिक सहायता देने की मांग की ताकि वे और भी अधिक तैयारी के साथ टेट आक्रमण का बदला ले सकें। अब तक 5 25 000 से अधिक अमरीकी सनिक वियतनाम में पहुंच चुके थे। अमरीकी सेनापतियों ने अब यह मांग की कि अमरीका में पूरे युद्ध की घोषणा कर दी जाय ताकि सभी वयस्कों को फौजी ट्रेनिंग के लिए विवश किया जा सके।

3 फरवरी को जनरल व्हीलर ने वियतनाम में अमरीकी सेनापति जनरल वस्ट मूरलण्ड को एक तार दिया कि क्या वे किसी प्रकार की और अधिक सनिक सहायता चाहते हैं जो कि वाशिंगटन उनको देने के लिए तैयार है? लेकिन जनरल वस्ट मूरलण्ड वियतनाम के आजादी के सेनानियों से उलझे हुए थे और उन्होंने इस तार का कोई उत्तर न दिया। 8 फरवरी को जनरल व्हीलर ने एक दूसरा तार भेजा जिसमें कहा कि 'क्या आपको और अधिक सनिक सहायता की आवश्यकता है? हम आपको 82वीं हवाई टुकड़ी तथा नौसनिक फौजी भेज सकते हैं जिन दोनों में ही ऐसे सनिक भरे हुए हैं जो पहले ही वियतनाम में लड़ाई का अनुभव प्राप्त कर चुके हैं।

'पहले सनिक सहायता की जो व्यवस्था की गयी थी उससे आप अपने को बँधा न समझें क्योंकि संयुक्त राज्य अमरीका की सरकार वियतनाम में हार मानने

के लिए तयार नही है। सक्षेप म, हम यह चाहते हैं किय दि तुम्हे और अधिक सनिक चाहिए तो माँगो, हम दे देंगे।"

पहली मनिक व्यवस्था के अनुसार 1968 म 5,25,000 स अधिक सनिक न भेजे जाने की शत थी और 5,00 000 पहले से ही दक्षिण वियतनाम म पहुँच चुके थे। उमी दिन 8 फरवरी, 1968 को जरनल वस्ट मूरलण्ड ने सगाव स वाशिगटन को प्राथना की कि वे तुरत ही नाविक सनिक द्वारा उत्तर वियतनाम पर हमले के आदेश दें ताकि वियतनामी सनाओ का ध्यान उत्तर वियतनाम की रक्षा की ओर मोडा जा मके। जरनल वस्ट मूरलण्ड न 9 फरवरी को वाशिगटन का एक दूसरा म देश भजा जिसम कहा गया था

यह कहन की जरूरत नही कि यदि आप तुरत और सनिक भेज सकें तो मैं उसका स्वागत करूँगा। शत्रु की बढती हुई कारवाइयो को रोकन क लिए यह आवश्यक है कि मुझे और अधिक सनिक दिय जाय।

13 फरवरी, 1968 को अमरीकी रक्षा सचिव मैकनमारा न एक और ब्रिगड वियतनाम म भेजन के आदेश दिये और 14 फरवरी को प्रेसिडेण्ट जानमन न एक निजी विदाई समारोह देकर 82वें एयर बोन ब्रिगड के 10,500 अमरीकी सनिको को दक्षिण वियतनाम के लिए रवाना किया।

अधिकाधिक सनिक तयारी और विनाश का आधार यह था कि अमरीका की सरकार के सलाहकारो म केवल सनिक शासको का बोलवाला था। किसी ने इसके मानवीय पक्ष पर विचार न किया। जरनल टेलर न जो उस समय अमरीका के सगाव म राजदूत थे किसी भी प्रकार के समझौते की बातचीत न करन की सलाह दी और उत्तर वियतनाम पर बमबारी जारी रखने को कहा। दूसरी ओर हनोइ की सरकार न अतर्राष्ट्रीय शांति के प्रयत्नो का स्वागत किया और यह माँग की कि वे समझौते की बातचीत के लिए तयार है यदि अमरीका उत्तर वियतनाम पर बमबारी को रोक दे। लेकिन इन सभी शान्ति प्रस्तावो की अवहेलना करत हुए जरनल टलर ने अमरीकी मनिक अड्डो को बढाने तथा और अधिक सनिको को वियतनाम म भेजने का आग्रह किया।

1968 म 5,25 000 हजार मैनिक प्रतिवष कोई 4 00 000 हवाई हमले जिनम कोई 12 00 000 (1 2 मिलियन) टन की बमबारी द्वारा 2 00 000 स अधिक लोगो की हत्या 20 000 स अधिक अमरीकी सनिको के मारे जान के बावजूद अमरीकी सरकार वियतनाम म किसी भी प्रकार की शांति या राज नीतिक प्रभुसत्ता स्थापित करन म असमथ रहा। अत कुछ सलाहकारो का यह कहना था कि टेट आक्रमण म वियतनाम क लोगो न यह सिद्ध कर दिया ह कि वियतनाम की समस्या का समाधान लडाई क मैदान म नही हो सकता। अमरीक

तो अमरीकी भावना में नरमी का इजहार होगा।

## शान्ति आन्दोलन

29 जनवरी 1969 को थोड़ा विरोध ... प्रकाशित ... एक रिपोर्ट में प्रकाशित आँकड़ों का आधार लिया गया और कहा कि टेट आक्रमण से यह स्पष्ट हो चुका है कि दक्षिण वियतनाम के ... में आत्म-विश्वास और उन आदर्शों का अभाव है जिनके आधार पर वे शत्रु का मुकाबला कर सकें। इस बात के कोई आसार दिखायी नहीं देते कि सैगोन की सरकार कभी भी स्थिति का मुकाबला कर सकेगी और एक सशक्त सरकार कायम हो सकेगी।

टेट आक्रमण ने अमरीकी सरकार के नापतौल को ... कर दिया और पहली बार अमरीकी राजनीतिज्ञ ... ने ... यह ... स्पष्ट हो गया कि कोई हल ... विनाश के लिए सरकार का विरोध किया जाने लगा। लेकिन अमरीकी विश्व में ... किसी भी प्रकार के शान्ति समझौते के पक्ष में न थे।

इसी बीच नये चुनाव का समय आ रहा था और अमरीकी जनता विशेष शान्ति-समर्थक राजनीतिज्ञों का प्रतिनिधित्व चाहने लगी थी। अमरीका के विश्वविद्यालयों में आये दिन प्रदर्शन और सरकार विरोधी प्रदर्शन किये जाने लगे क्योंकि अब और भी अधिक संख्या में अमरीकी युवकों को वियतनाम को लड़ाई के मोर्चे पर भेजा जाने लगा था। कोई 50 000 के करीब अमरीकी युवकों ने सेना में भरती न होने की इच्छा से कनाडा में जाकर शरण ली और 10 000 से अधिक अमरीकी युवकों ने अहिंसात्मक ढंग से अमरीकी सरकार की सैनिक नीतियों से असहयोग करके अनिवार्य भरती कानून की अवज्ञा कर 2 से 5 साल के कारावास की सजा पायी।

जनता के बढ़ते हुए असंतोष का दबाव 7 मार्च 1968 को पहली बार अमरीकी कांग्रेस में सदस्यों ने इस बात की माँग की कि अमरीकी प्रेसिडेण्ट और पेंटागान वियतनाम में और अधिक सैनिक भेजने से पहले कांग्रेस से सलाह लें। 10 मार्च को 'न्यूयार्क टाइम्स' ने एक समाचार प्रकाशित किया जिसमें कहा गया था कि जनरल वेस्टमूरलैण्ड ने 2 06 000 हजार और सैनिक भेजे जाने की माँग की है। अमरीकी राजनीतिक जीवन में यह एक नया मोड़ था जबकि एक बड़े भारी भाले सीनेटर यूजीन मैकार्थी जिनका नाम बहुत कम लोगों को मालूम था ने यह घोषणा की कि वे अपनी ही डेमोक्रेटिक पार्टी के चुने हुए प्रेसिडेण्ट जानसन का अगले चुनाव में खुलकर विरोध करेंगे और यदि वे चुने गये तो वे उत्तर वियतनाम पर बमबारी को रोककर हनोई की सरकार से शांति वार्ता करेंगे।

यू हैमशायर म यूजीन मैकार्थी को अमरीकी विश्वविद्यालया के छात्र छात्राओ न अपना तन मन धन लगाकर उनकी उम्मीदवारी को सफल बनाने का आश्वासन दिया। श्री यूजीन मैकार्थी की शान्ति के नाम पर की गयी घोषणा से एक ओर अमरीका म शान्ति आन्दोलन को बडा समथन मिला तो दूसरी ओर 13 माच को व्हाइट हाउस से हुई एक घोषणा के अनुसार प्रेसिडण्ट जानसन न 30 000 और सनिको को वियतनाम भेजन का फसला किया और यह भी कहा कि अगल आनेवाले मई के महीने म 30 000 और भी सनिक भेजे जायेंगे। इस प्रकार शीघ्र ही वियतनाम म अमरीकी सनिको की सख्या 5,80 000 के करीब हो जायेगी।

माच 16 को यूजीन मैकार्थी द्वारा शान्ति के नाम पर हुई लोकप्रियता को देखते हुए भूतपूव प्रेसिडेण्ट जान कनेडी के भाई सनेटर राबट कनेडी ने डमाक्रेटिक पार्टी के टिकट पर चुनाव लडने की घोषणा की। उसके अगले दिन 17 माच को न्यूयाक टाइम्स ने एक खबर छापी जिसके अनुसार अगले 6 महीने के भीतर भीतर 50 000 और अमरीकी सनिक दक्षिण वियतनाम म भेजे जाने की अनुमति प्रेसिडेण्ट जॉनसन दे चुके थे।

18 माच को अमरीकी सनेट के 139 सदस्यो ने जिनम 49 रिपब्लिकन दल और 41 प्रेसिडेण्ट जानसन की अपनी ही डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य थे हस्ताक्षर करके एक प्रस्ताव म यह माँग की कि दक्षिण-पूव एशिया की नीति पर पुर्नविचार किया जाय। उसी दिन प्रेसिडेण्ट जॉनसन एक स्थान पर भाषण दे रहे थ और जब लोगो ने उनका विरोध किया और उनके विरुद्ध प्रदशन किया तो उन्होने आवेश म आकर कहा कि 'लगता ऐसा है कि हनोई जो लडाई ह्वे और खेसान के युद्धस्थल मे नही जीत सका उसे वाशिंगटन म शान्ति आन्दोलना स जीतना चाहता है।' उन्होने कहा कि आप लोगो म से जो लोग मौत स बचने के उद्देश्य से लडाई को जगलो और पहाडो की बजाय अमरीका के शहरो म लाना चाहते हैं जहाँ कि हमारी सभ्य जनता बसती है उनको अभी कुछ और भी देखने को मिलगा।'

लेकिन प्रेसिडेण्ट जॉनसन के इस क्रोधभरे वक्तव्य के बावजूद देश के चिन्तको विचारको और समाचारपत्रो के नेतृत्व का यही कहना था कि प्रेसिडेण्ट जानसन टट आक्रमण और वतमान अमरीकी जनता के युद्ध विरोधी विचारो से बहुत सत्रस्त हैं और कुछ न कुछ नया नीति और नया कदम उठान की सोच रहे हैं। इसी बीच सयुक्त राष्ट्र सघ स्थित अमरीकी प्रतिनिधि श्री गोल्डबग ने प्रेसिडेण्ट जानसन को एक पत्र म यह सुझाव दिया कि व अन्तर्राष्ट्रीय जनमत का आदर करते हुए उत्तर वियतनाम म बमबारी को तुरन्त स्थगित कर दें। प्रेसिडेण्ट जॉनसन को इस पर बहुत क्रोध आया और दूसर दिन अपने सलाहकारो की एक मीटिंग म

उन्होंने आवेश में कहा

> आप सबको इस बात से आगाह हो जाना चाहिए कि मैं यह कह रहा हूँ कि मैं बमबारी रोकूँगा नहीं। आपमें से कोई ऐसा है जिसे यह बात स्पष्ट न हो ?

लेकिन इसी बीच प्रेसिडेण्ट जानसन ने श्री गाल्ब्रेथ से कहा कि वे अपनी दलीलों पर फिर से विचार करें और उनसे फिर मिलें। 22 मार्च को प्रेसिडेण्ट जानसन ने साइगोन में अपने सेनापति जनरल वेस्ट मूरलैण्ड को युद्ध क्षेत्र से हटा लिया जो इस बात का प्रमाण था कि प्रेसिडेण्ट एक नयी नीति अपनाना चाहते हैं। 25 मार्च को जनरल अब्राहम ने वेस्ट मूरलैंड के स्थान पर पद ग्रहण किया और आनेवाले सप्ताहों में धीरे धीरे बमबारी कम करने की नीति अपनायी।

विश्व देशों की राजधानियों में अमरीका विरोधी प्रदर्शन और शान्ति आन्दोलन जारी से जारी रहे थे और वाशिंगटन में व्हाइट हाउस के कमरों में प्रेसिडेण्ट जानसन अनेक देश विदेश के सलाहकारों से मशविरे में तल्लीन थे। प्रेसिडेण्ट जानसन ने 1 अप्रैल को इस बात की घोषणा की कि वे धीरे धीरे उत्तर वियतनाम पर बमबारी को कम करते जायेंगे। और यदि उसके उत्तर में उत्तरी वियतनाम ने दक्षिणी वियतनाम के एन० एल० एफ० की सहायता देना बन्द कर दिया और समझौते की बातचीत के प्रति उत्सुकता दिखायी तो बमबारी पूरी तरह से रोक दी जायगी। उन्होंने कहा

> मैं आज अपने अमरीकी विमानों और जंगी बेड़ों को यह आदेश दे चुका हूँ कि वे उत्तर वियतनाम के क्षेत्रों पर बमबारी बन्द कर दें। लेकिन सीमा के नजदीक के क्षेत्रों पर जहाँ से उत्तर वियतनाम की सैनिक सहायता दक्षिण वियतनाम को पहुँचती है हमारी सैनिक कार्यवाहियाँ जारी रहेंगी। जिस क्षेत्र में हमने बमबारी रोकने का आदेश दिया है उसमें उत्तर वियतनाम की 90 प्रतिशत जनता रहती है और वह उसका प्रमुख क्षेत्र है। उत्तर वियतनाम के सेना पर और घने बसे इलाकों पर बमबारी नहीं की जायगी।

उन्होंने यह भी कहा कि अमरीकी सैनिकों की संख्या 30 000 और बढ़ा दी जायगी। और फिर अन्त में दुनिया को आश्चर्य में डाल देनेवाली सबसे महत्त्वपूर्ण घोषणा जिसको सुनने के लिए विश्व के शान्तिवादी और अमरीका के करोड़ों लोग आतुर थे यह थी मैं अपनी पार्टी का प्रेसिडेण्ट पद के लिए नामजदगी स्वीकार नहीं करूँगा। और 3 अप्रैल को प्रेसिडेण्ट जानसन ने अमरीकी जनता को यह बताया कि हनोई ने अमरीका द्वारा बमबारी को रोक देने के उत्तर में समझौते की बातचीत करने की तत्परता दिखायी है।

टेट आक्रमण द्वारा वियतनाम की जनता ने अमरीका के सैनिक संगठन के दावों को ही झूठा सिद्ध न किया बल्कि अमरीका की राजनीति को भी एक नयी दिशा की ओर मोड़ दिया। जो हालत फ्रांसीसी साम्राज्यवाद की दियाँ बीया फू में हुई थी उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण प्रभाव टेट आक्रमण का अमरीकी सैनिक स्थिति और राजनीतिक मर्यादा पर पड़ा।

## वियतनाम में नर संहार

लेखक चिंतक आदि जो अमरीकी बमबारी के समय उत्तर वियतनाम का दौरा करके लौटे हैं उन सभी का यह कहना है कि बमबारी की भयंकरता को देखते हुए यह आश्चर्य की बात है कि वहाँ के नगरों और गाँवों में अनुपात में बहुत कम लोग मारे गये हैं। किन्तु दक्षिण वियतनाम में जिस क्रूरता से वहाँ की जनता को अमरीकी नीतियों को स्वीकार करने के लिए विवश किया गया और वहां के वयस्कों को लड़ने के लिए मजबूर किया गया और आये दिन वहां के स्त्री-पुरुषों के साथ अमरीकी सैनिकों ने दुर्व्यवहार किये उन सबकी एक लम्बी कहानी अत्याचारों की कहानी है जिसकी सुप्रसिद्ध दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रसल और जीन पाल सात्र ने कड़ी निंदा की।

जीन पॉल सात्र ने आखों देखे प्रमाणों के आधार पर वियतनामी जनता के ऊपर किये गये अत्याचारों के विरुद्ध एक ट्रिब्यूनल का संगठन किया जिसके अधिवेशनों में वे प्रमाण प्रस्तुत किये गये जिनसे यह सिद्ध होता है कि अमरीका ने जान-बूझकर योजनाबद्ध रूप से वियतनाम की जाति का नाश करने की कोशिश की। कोपन हागन से इस ट्रिब्यूनल ने उन सभी प्रमाणों को एकत्र करके उन पर विचार किया और अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधीशों के इस सम्मेलन ने इस बात का निर्णय दिया कि जो प्रमाण उपलब्ध है उनसे यह सिद्ध होता है कि इसमें कोई संदेह नहीं कि संयुक्त राज्य अमरीका शांतिप्रिय निशस्त्र नागरिकों स्त्री-पुरुषों, बच्चों की हत्या का दोषी है। इसके प्रमाण पाये जाते है कि अमरीकी सेनाएं ऐसे क्षेत्र पर आक्रमण करती है और उन लोगों की हत्या करती है और करवाती हैं तथा ऐसे स्थानों पर गोले बरसाती हैं जिनका सैनिक दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं। इस जुल्मों का उद्देश्य वियतनाम की जाति का नाश करके उनकी युद्ध तथा सैनिक तयारी में कमी लाना और इतना आतंक बिछा देना है कि वे लड़ने का साहस न कर सकें और युद्ध जारी न रख सकें।

जीन पाल सात्र ने पिछले ऐतिहासिक उदाहरणों का हवाला देते हुए कहा कि जेनेवा कनवेंशन 1864 में यह कहा गया था कि यदि दो देशों या दो पक्षों में युद्ध हो तो वे लोग जो निशस्त्र हो या जो सैनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान न हो, उन पर किसी भी प्रकार की सैनिक कारवाई करने से परहेज करेंगे। तटस्थ

नागरिकों स्त्री बच्चा और जन-जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं और स्थानों तथा अस्पतालों स्कूलों आदि को नष्ट करके अमरीका ने अन्तर्राष्ट्रीय नियम नियमों और व्यवस्था के विपरीत काम किया है। श्री सार्त्र ने दूसरा उदाहरण देते हुए यह बताया कि अमरीका के आक्रमण का उद्देश्य क्या है? तत्कालीन विदेश मंत्री डीन रस्क ने एक वक्तव्य में कहा था

हम (अमरीकी) अपनी सुरक्षा के लिए लड़ रहे हैं। यदि यह बात सही है तो पहले अमरीकी सरकार ने जो वक्तव्य दिया था कि उत्तर वियतनाम के हमले से दक्षिण वियतनाम की सरकार को बचाने के लिए अमरीका सैनिक कार्रवाई कर रहा है यह झूठ है। अब प्रश्न उठता है कि क्या भगांव में अमरीका की सुरक्षा का खतरा है? इसका स्पष्ट उत्तर यह हुआ कि अमरीकी सेना जहाँ कहीं भी हो उसका उद्देश्य किसी और के लिए खतरा पैदा करना होता है। साम्यवादी खतरे से उत्पन्न स्थिति का मुकाबला करने के लिए वे दक्षिण-पूर्व एशिया पर अपना अधिकार जमाये रखना चाहते हैं। लेकिन यदि इस उद्देश्य से अमरीका ने हनाई में अपने सैनिक अड्डे तैयार किये और वे कम्बोडिया तथा लाओस को वियतनाम की तरह ही अपने अधिकार में बनाये रखना चाहते हैं और इसलिए एक संयुक्त वियतनाम की स्थापना नहीं होने देते तो उनका उद्देश्य अमरीकी सुरक्षा नहीं किन्तु उससे भी कुछ अधिक है। जब डीन रस्क यह कहते हैं कि अमरीकी सेनाएँ वियतनाम में इसलिए लड़ रही हैं कि तृतीय महायुद्ध न हो तो उसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वे अमरीकी नीतियों को इन क्षेत्रों पर कायम रखना चाहते हैं।

अमरीकी सेनाएं वियतनाम में मजबूती से जमी हुई हैं। बमबारी तथा नर संहार भयंकर रूप से जारी है और लाओस में अपने अधिकार को कायम रखते हुए वे कम्बोडिया में आक्रमण की योजना बना रही हैं। इस सबका यही नतीजा निकलता है कि अमरीका चाहे वह कुछ भी कहे जाति संहार करने पर तुला हुआ है। वर्ना कोई पूछे कि हिन्द चीन के लोगों ने कब यह एलान किया कि वे अमरीका को हराना चाहते हैं या कि वे अमरीका को नष्ट करने का दावा करते हैं। फिर वियतनाम, लाओस और कम्बोडिया के पास न हथियार हैं और न इतनी शक्ति कि वे कभी भी अमरीका की सुरक्षा के लिए कोई खतरा पैदा कर सकें।

अमरीका के इतिहास से परिचित लोगों को पता है कि अमरीका की गोरी जातियों ने अमरीका की आदिवासी रेड इंडियन जाति का विनाश किया है। एशियाई जातियों के विरुद्ध और काली और अश्वेत जातियों के विरुद्ध अमरीकियों के दिल और दिमाग में जो घृणा और हीनता के भाव पाये जाते हैं वे कहाँ तक उनकी वर्तमान वियतनाम नीति के पीछे हैं यह अमरीकी सैनिकों की हरकतों से स्पष्ट हो जाता है। अमरीकी सरकार ने अभी तक संयुक्त राष्ट्रसंघ के जेनोसाइड

कन्वेन्शन का अनुमोदन नहीं किया। इसका अनुमोदन न करके उसने यह सिद्ध कर दिया है कि अमरीका स्वयं को उस वचन से मुक्त रखना चाहता है जिसके द्वारा वह वियतनाम या दूसरी अश्वेत जातियों के विरुद्ध संहार की नीति अपना सके।

1966 के बाद से मेकांग से लेकर सत्रहवीं समानान्तर रेखा तक के क्षेत्र में अमरीकी सैनिकों ने जो व्यवहार किया वह उनकी रंगभेद नीति तथा सांस्कृतिक घृणा भावना का ज्वलन्त प्रमाण है। नौजवान अमरीकी सैनिक तरह-तरह की पीड़ा देनेवाले उपकरणों का प्रयोग करते हैं। निश्शस्त्र स्त्री-पुरुषों को गोली का निशाना बनाते हैं। हताहत वियतनामी लोगों के गुप्त अंगों पर वे जूतों से ठोकरें मारते हैं। मुर्दा लाशों के कान काटकर वे ट्राफी की तरह घर ले जाते हैं। अमरीकी सैनिक अफसरों की भी ऐसी ही कहानियाँ हैं। एक अफसर ने डोम हॉरी नि हेलिकॉप्टर से उसने धान के खेत में काम करते हुए वियतनामी कम्युनिस्टों को गोली का निशाना बनाया। वास्तव में वे एन० एल० एफ० के सैनिक नहीं थे क्योंकि वे जानते हैं कि वे हेलिकाप्टर में अपनी आत्मरक्षा कम करें। किन्तु ये लोग बेचारे साधारण किसान थे जो वियतनाम में अपनी परम्परागत खेती में धान बोते और काटते थे। अमरीकी सैनिकों के किंकर्त्तव्यविमूढ़ दिमाग इस योग्य नहीं रहे कि वे वियतकांग और वियतनामियों के बीच कोई अन्तर कर सकें। आपस के मजाक और बातचीत में अमरीकी सैनिक अफसर यह कहते हुए सुने जाते हैं जो कि उनके पूर्वज अमरीका के आदिवासी रेड इंडियनों के लिए कहा करते थे कि अच्छा वियतनामी वही है जो मुर्दा वियतनामी है और जो मुर्दा वियतनामी है वह वियतकांग है। गोली व बमों की मार में मारा गया हर वियतनामी कम्युनिस्ट है यदि मरते समय नहीं तो कम से कम बाद में तो वह कम्युनिस्ट बन ही सकता था।

• •

# 9

# अमरीकी सैनिक वनाम दक्षिण-वियतनाम का मुक्ति-मोरचा और जन-विश्वास

*'वियतकांग की राजनयिक पराजय असम्भव है और इसका कारण है—कि वे जनता के बहुत नजदीक हैं उन्हें वियतनाम की समस्याओं का ज्ञान है और वे अपने राष्ट्रीय सम्मान और स्वतन्त्रता के प्रति सचेत हैं। सैगोन का कोई शासन इन बातों में वियतकांग को कभी हरा नहीं सकता।*

—"दी टाइम्स" (लण्डन)
मार्च 42 1966।

अमरीका—विश्व के इतिहास में इतने बड़े देश ने अपनी सैनिक शक्ति के बल पर वियतनाम को स्वेच्छाचारिता का प्रयोग क्षेत्र बनाना चाहा। उसकी सैनिक कारवाई के पीछे बहुत अंशों तक उसकी ईसाइयत की धार्मिकता का अंधविश्वास छुपा था कि वह साम्यवाद के शैतान के चंगुल से वियतनाम व एशिया की जनता को बचाना चाहता है। ऐसे ही अंधविश्वास के कारण 1495 में पोप से धर्माधिकार प्राप्त कर पुर्तगालियों व स्पेनवासियों ने दुनिया के शांतिप्रिय गैर ईसाई देशों को लूटा था। नरसंहार किया था और भय व लालच के बल पर उन्हें ईसाई बनाने की कोशिश की थी।

1858 में जब रानी विक्टोरिया ने भारत को अपने साम्राज्य का अंग घोषित किया तो उसकी घोषणा में भी ईसाइयत के पाक इरादों को कार्यान्वित करने का हवाला था और अमरीका प्रेसिडेण्ट मैकिनले ने 1898 में जब हवाई फिलीपीन आदि देशों पर अधिकार जमाया तब उन्होंने भी मानव जाति के उद्धार में सहायक होने की भगवद् इच्छा की पूर्ति को ही अपना आदर्श माना था।

पश्चिमी राष्ट्रों के साम्राज्यवादी पूजीवादी शोषण का सद्धान्तिक आधार दुर्भाग्यवश महान सन्त ईसा मसीह का मानव सवापरक उपदेश रहा है लेकिन अफ्रीकी देशा मे एक कहावत प्रचलित है कि "जब गोरा आदमी आया उसके हाथ म वाईबल थी और हमारे पास जमीन। अब हमारे हाथ म बाईबल है और उसके पास जमीन।'

अफ्रीका, दक्षिण अमरीका तथा एशिया के राष्ट्रा म यही हुआ।

मिशनरी के साथ-साथ पहुँचे पश्चिमी देशा के पूजीपति और धम और पूजी की सुरक्षा के लिए आयी फौजें। शेष काम बना हमारे क्षेत्रा म राजे महाराजाआ के आपसी मत मुटाव म, तथा भाषाई प्रान्तीयवाद के विद्वेष म। और पश्चिमी साम्राज्यवादियो न हमारे लोगो को लडाया और धम प्रचार के साथ साथ अपना व्यापार व सनिक शासन स्थापित करते चले। जहा सम्भव हुआ स्थानीय व्यापारिया और किसाना को किसी धोखे स या नय कानून की आड म स्थानान्तरित किया और उनकी मडिया तथा उपजाऊ भूमि अपने व्यापारिया और यूरोप के भूमिहीन बेकारा का याकि अपने स्थानीय गुर्गो को दे डाली। पीछे स्वदश स्थित जनता व विचारका को न्सायत का प्रचार लोर उद्धार व पिछडी जातिया का आधुनिकीकरण सरीखी ऊँची ऊँची बात सुनायी जाती रही।

किन्तु वास्तविकता यह थी कि पश्चिमी मानव अपनी पाशविक प्रवत्तिया हिंसा, धन लिप्सा दम्भ व पाखण्ड की तृप्ति के लिए एशिया म शोषण, विनाश व नर-सहार करके अपने अहकार व लालुपता की ज्वाला का शान्त करना चाहता था।

अमरीकी महाद्वीप पर गोरी जातिया क लागो न जा कुछ किया वह अफ्रीका व एशियाई देशा म घटित साम्राज्यवाद की ही दूसरी और उससे भी कही अधिक क्रूरतापूर्ण इतिहास की एक कडी है।

पिछले 25 वर्षों म अमरीका न हिन्द चीन व वियतनाम म जो हरकतें की हैं उनकी आधारशिला गोरी जातियो के—फ्रास जमनी, पुतगाल, स्पेन और अग्रेजा की प्रवत्तिया का ही अन्यतम रूप है। अन्तर केवल तब और अब का है। पहले 18 19वी सदी म पश्चिमी साम्राज्यवादी सरकारें अपनी फौजा को असभ्य, पिछडी जातिया को ईसा का शान्ति सन्देश सुनाने तथा आधुनिक अथ शासन व्यवस्था म विकास की ओर ले जाने के लिए हमला का हुक्म देती थी।

अब—वाशिंगटन का प्रेसिडेण्ट और सनिक शासन एशिया के पिछडे देशा को 'साम्यवाद से बचाकर 'अमरीकी प्रजातन्त्र का सभ्य सिद्धान्त सिखान के लिए हमला का हुक्म देता है।

अमरीका म साम्यवाद विरोधी भावना ने एक धार्मिक मताधता का रूप धारण कर लिया है। साम्यवाद विरोधी प्रोपगण्डा तथा पाखण्ड उसी अन्ध

सख्या 3 प्रतिशत रह गयी थी जो कि शातिकालीन अनुपात म सबसे कम थी। किन्तु अघोषित वियतनाम युद्ध उस समय अपनी चरम सीमा पर था। जबकि हजारो वियतनामी प्रति सप्ताह मारे जा रहे थ और अमरीकी फौजें लाखो की तादाद म हिन्द चीन पर उतर चुकी थी, अमरीकी प्रेसिडेण्ट अपनी हृदयहीनता की पराकाष्ठा पर उतर आये थे जबकि उन्होने कहा कि अमरीकियो न इतन अच्छे दिन कभी नही देखे।'

प्रजातन्त्र के दावेदार यह भूल गये थे कि प्रजातन्त्र का अथ है जनता का तन्त्र न कि मुट्ठीभर पूजीपतियो का मुनाफा। और विश्व की सबस बडी सनिक शक्ति की वियतनाम के धान क खेतो म मार खाने का रहस्य इसी म छुपा हुआ है। वियतनाम का युद्ध जनता का युद्ध है और जब स्वतन्त्रता व न्याय की मांग पर अपना सवस्व न्योछावर करने को जनता कृतसकल्प हो तो बडी स बडी ताकत भी उनके लाहे को नही झुका सकती। अपने आर्थिक हितो और मुनाफ के लिए अगर अमरीका अपनी सीमाओ से 10 000 मील दूर लडने को तयार है तो वियतनाम की जनता अपने देश की आजादी अपने खेतो की सुरक्षा और अपनी आनेवाली पीढी के भविष्य के लिए कितना त्याग करने को तयार है।

इसका अनुमान नही लगाया जा सकता और यही है अमरीका की हार का मुख्य कारण। उनकी लडाई का आधार असत्यमय है और व चाहते हैं पाशविक शक्ति का भय दिखाकर वियतनाम के किसानो की आजादी व भविष्य का ब्लक मेल कर लें जिसे वियतनाम के वीर सेनानियो न अस्वीकार कर दिया है।

अपनी हर चाल म असफल होकर वाशिंगटन ने वियतनाम और हिन्द चीन क्षेत्र का बमबारी और गसो के प्रयोग स विध्वस्त कर डालने की विभीषिका तयार की। अमरीकी सना और सिपाहियो ने जो जुल्मो सितम का रवया अपनाया उसके सामने चगज व तमूरलग याकि हिटलर व तोजो के सिपाहियो के अत्याचारो की कहानियां फीकी पड जाती है।

प्रस्तुत लखक को अनक वियतनाम नागरिको, बौद्ध विद्वान भिक्षुओ और अमरीकी सनिको से बातचीत का अवसर मिला है। ऐसे सनिको स भी जो वियतनाम म 2 3 साल युद्ध म लडकर लौटे थ और ऐसे भी जो अभी जानेवाले थे। मरे एक गोरे विद्यार्थी ने जो अनिवाय सनिक भर्ती कानून के अधीन वियतनाम युद्ध म जानेवाला था का कहना था म डरपोक हूँ। कानून तोडकर 2 3 साल की जेल तो जा सकता हू पर जिन्दगी भर समाज का बहिष्कार सहन नही कर सकता। जेल का कलक लेकर मुझे न कोई अच्छी नौकरी मिलेगी न कोई अच्छी लडकी। और फिर 2 साल युद्ध म मुझे तनख्वाह मिलेगी देश विदेश की सर करूँगा और युद्ध स लौटकर मुझे पढाई का वजीफा और पेंशन मिलगी।

एक दिन एक रेड इंडियन युवक से बात हुई जो 2 3 दिनो मे ही युद्ध क्षेत्र

म भेजा जानेवाला था "हम तयार रहने के हुक्म आ गये हैं। (जून 1971 की बात है।) लेकिन" मैंने कहा, "निक्सन तो कहते हैं फौजें बुला रहे हैं।' तो वह बोला "वह सब तो दिखावा है। परसों ही हमारे कैम्प से कोई 10,000 जवान वियतनाम को रवाना होंगे।'

'आपके विचार मे अमरीका को युद्ध जारी रखना चाहिए ?'

उसका उत्तर था 'मुझे अन्तर्राष्ट्रीय बातों का पता नहीं। मैं एक रेड इंडियन चीफ का बेटा हूँ। लोगों ने हमारी बहुत सी जमीन लूटी है। अब जो कुछ हमारा बचा है उसे ये कम्युनिस्ट छीनना चाहते हैं। मैं तो वियतनाम में इन्हें ही मिटाने जा रहा हूँ। वरना वे आहायो (अमरीका का एक राज्य) में हमें तंग करेंगे।"

और एक काले अमरीकी युवक ने युद्ध में जाने का कारण बताते हुए कहा

'इन गोरे के देश अमरीका में मेरी जिन्दगी की कीमत ही क्या है ? मैं कोई प्रेसिडेण्ट तो बनने से रहा। सारा जीवन किसी गन्दी बस्ती (स्लम) में सड़ता रहूँगा वरना किसी गोरे सिपाही की गोली का निशाना बना दिया जाऊँगा। वियतनाम में किसी को गोली से मारने का मजा तो आयेगा और फिर सरकार पेटभर खाना देगी शराब देगी हवाई जहाज का टिकट देगी लड़कियाँ देगी, वजीफे देगी और अगर लड़ाई में मारा गया तो मेरे बीवी-बच्चों को पेंशन देगी मुफ्त पढ़ाई के वजीफे मिलेंगे और शायद मरने के बाद मेरा कफन दूसरे गोरे सिपाहियों के साथ एक ही कब्रिस्तान में दफनाया भी जा सकेगा। वरना अमरीका में हम कालों को कब्रिस्तान में भी समानता कब नसीब होती है ?

अमरीका के सरकारी वक्तव्यों के अतिरिक्त इस लेखक को कोई भी दो अमरीकी नागरिक ऐसे नहीं मिले जिन्होंने यह स्वीकार किया हो कि अमरीका वियतनाम में प्रजातन्त्र की रक्षार्थ लड़ रहा है और प्रत्येक अमरीकी सैनिक की कहानी तीन श्रेणियों में रखी जा सकती है —

(1) बहुत बड़ी संख्या ऐसे गोरों की है जो रोमांस, और जोशीले कारनामों की कहानियाँ पढ़-पढ़कर अपने जीवन में कुछ रोमांचक करना चाहते हैं। उत्साह और साहसिक कर देखने और खुलकर ठाँय ठाँय गोलियाँ चलाने के मौके की तलाश में वे वियतनाम युद्ध में भाग लेते हैं। माना कि जीवन में कुछ और साहसिक करने को शेष नहीं रहा। ऐसे युवक प्रायः तलाकशुदा उजड़े परिवारों के लड़के होते हैं यानि हिंसात्मक प्रवृत्तियों से भरे रंगभेद संस्कृति के पौधे जो अश्वेत जातियों को हीन भावना से देखते हैं। वेस्टर्न फिल्म देख-देखकर जिनमें रेड इंडियनों को मार मारकर गोरी जाति की श्रेष्ठता दिखायी गयी होती है वे उसी इतिहास को दोहराना चाहते हैं जिसेकि उनके पूर्वजों ने रेड इंडियनों के खिलाफ किया था। और वियतनाम ऐसे ही कारनामों का क्रीडास्थल है। युद्ध

सख्या 3 प्रतिशत रह गयी थी जो कि शांतिकालीन अनुपात म सबसे कम थी। कि तु अघोषित वियतनाम युद्ध उस समय अपनी चरम सीमा पर था। जबकि हजारा वियतनामी प्रति सप्ताह मारे जा रहे थे और अमरीकी फौजे लाखा की तादाद म हिन्द चीन पर उतर चुकी थी अमरीकी प्रेसिडेण्ट अपनी हृदयहीनता की पराकाष्ठा पर उतर आये थे जबकि उन्होने कहा कि "अमरीकियो ने इतने अच्छे दिन कभी नही देखे।

प्रजातन्त्र के दावदार यह भूल गय थे कि 'प्रजातन्त्र का अथ है जनता का तन्त्र न कि मुट्ठीभर पूजीपतियो का मुनाफा। और विश्व की सबसे बडी सनिक शक्ति की वियतनाम के धान के खेतो म मार खाने का रहस्य इसी मे छुपा हुआ है। वियतनाम का युद्ध जनता का युद्ध है और जब स्वतन्त्रता व न्याय की माग पर अपना सवस्व न्यौछावर करने को जनता दढप्रतिज्ञ हो तो बडी से बडी ताकत भी उनके लोहे को नही झुका सकती। अपने आर्थिक हितो और मुनाफे के लिए अगर अमरीका अपनी सीमाओ से 10 000 मील दूर लडने को तयार है तो वियतनाम की जनता अपने देश की आजादी अपने खेतो की सुरक्षा और अपनी आनेवाली पीढी के भविष्य के लिए कितना त्याग करने को तयार है। इसका अनुमान नही लगाया जा सकता और यही है अमरीका की हार का मुख्य कारण। उनकी लडाई का आधार असत्यमय है और वे चाहते हैं पाशविक शक्ति का भय दिखाकर वियतनाम के किसानो की आजादी व भविष्य का ब्लक मेल कर लें जिसे वियतनाम के वीर सेनानियो ने अस्वीकार कर दिया है।

अपनी हर चाल म असफल होकर वाशिंगटन ने वियतनाम और हिन्द चीन क्षेत्र को बमबारी और गसो के प्रयोग स विध्वस्त कर डालने की विभीषिका तयार की। अमरीकी सेना और सिपाहियो ने जो जुल्मो सितम का रवया अपनाया उसके सामन चगज व तमूरलग यानि हिटलर व ताजा के सिपाहियो के अत्याचारो की कहानियाँ फीकी पड जाती है।

प्रस्तुत लखक को अनक वियतनाम नागरिको बौद्ध विद्वान भिक्षुओ और अमरीकी सनिको स बातचीत का अवसर मिला है। एस सनिको स भी जो वियतनाम म 2 3 साल युद्ध म लडकर लौटे थ और एस भी जो अभी जानेवाले थ। मेरे एक गोरे विद्यार्थी ने जो अनिवाय सनिक भर्ती कानून के अधीन वियतनाम युद्ध म जानवाला था का कहना था मैं डरपोक हूँ। कानून तोडकर 2 3 साल की जल तो जा सकता हू पर जिन्दगी भर समाज का बहिष्कार सहन नही कर सकना। जल का कलक लेकर मुझे न कोई अच्छी नौकरी मिलेगी न कोई अच्छी लडकी। और फिर 2 साल युद्ध म मुझे तनख्वाह मिलेगी दश विजय की मर करूँगा और युद्ध स लौटकर मुझ पढाई का वजीफा और पेंशन मिलेगी।

एक दिन एक रेड इडियन युवक स बात हुई जो 2 3 दिनो म ही युद्ध-क्षेत्र

म भेजा जानेवाला था 'हम तैयार रहने के हुक्म आ गय हैं। (जून 1971 की बात है।) 'लेकिन,' मैंने कहा, "निक्सन तो कहत हैं फौजें बुला रहे हैं।' तो वह बोला वह सब तो दिखावा है। परसो ही हमारे कम्प से कोई 10 000 जवान वियतनाम को रवाना होंगे।'

"आपके विचार म अमरीका को युद्ध जारी रखना चाहिए?

उसका उत्तर था, 'मुझे अ तर्राष्ट्रीय बातो का पता नहीं। मैं एक रेड इडियन चीफ का बेटा हूँ। लोगो ने हमारी बहुत सी जमीन लूटी है। अब जो कुछ हमारा बचा है उसे ये कम्युनिस्ट छीनना चाहत हैं। मैं तो वियतनाम मे इन्हे ही मिटाने जा रहा हूँ। वरना वे ओहायो (अमरीका का एक राज्य) म हमे तग करेंगे।

और एक काले अमरीकी युवक न युद्ध म जाने का कारण बतात हुए कहा

"इस गोरे के देश अमरीका म मेरी जिन्दगी की कीमत ही क्या है? मैं कोइ प्रेसिडेण्ट तो बनने से रहा। सारा जीवन किसी गन्दी बस्ती (स्लम) म सडता रहूँगा वरना किसी गोरे सिपाही की गोली का निशाना बना दिया जाऊँगा। वियतनाम म किसी को गोली से मारने का मजा तो आयगा और फिर सरकार पटभर खाना देगी शराब देगी हवाइ जहाज का टिकट देगी, लडकियाँ देगी बजीफे देगी और अगर लडाइ म मारा गया तो मेरे बाल-बच्चो को पेंशन देगी मुफ्त पढाई के वजीफे मिलगे और शायद मरने के बाद मेरा कफन दूसरे गोरे सिपाहियो के साथ एक ही कब्रिस्तान म दफनाया भी जा सकेगा। वरना अमरीका म हम कालो को कब्रिस्तान म भी समानता कब नसीब होती है?

अमरीका के सरकारी वक्तव्यो के अतिरिक्त इस लेखक को कोई भी दो अमरीकी नागरिक ऐसे नही मिले जिन्होंने यह स्वीकार किया हो कि अमरीका वियतनाम म प्रजातन्त्र की रक्षार्थ लड रहा है और प्रत्यक अमरीकी सनिक की कहानी तीन श्रेणियो म रखी जा सकती है —

(1) बहुत बडी सख्या ऐसे गोरो की है जो रोमास और जासूसी कारनामो की कहानियाँ पढ-पढकर अपने जीवन म कुछ रोमाचक करना चाहते हैं। उत्साह और साहसिक कर दखने और खुलकर ठाय ठाय गोलियाँ चलाने के मौके की तलाश म व वियतनाम युद्ध म भाग लेते हैं। मानो कि जीवन म कुछ और साहसिक करने को शेष नही रहा। ऐसे युवक प्राय तलाकशुदा उजडे परिवारो के लडके होते हैं यानि हिंसात्मक प्रवृत्तियों से भरे रक्तरजित संस्कृति के पाश्र्व म अश्वेत जातियो को हीन भावना से देखते हैं। वेस्टर्न फिल्म देख-देखकर जिनमे रेड इडियनो को मार-मारकर गोरी जाति की श्रेष्ठता दिखायी गयी होती है व उसी इतिहास को दोहराना चाहते हैं जिसकि उनके पूर्वजो ने रेड इण्डियनो के खिलाफ किया था। और वियतनाम ऐसे ही कारनामो का क्रीडाक्षेत्र है। "द

अपराधों और अत्याचारी हरकतों के लिए प्राय इसी श्रेणी के सनिक जिम्मेदार है।

(2) दूसरी श्रेणी उन लडकों की है जो या तो गरीब गोरे परिवारों के हैं या काले है या कि रड इडियन घरो के हैं। शिक्षा स्तर निम्न और आर्थिक दृष्टि से हीन, अमरीका के डालर जीवन से नगण्य और भविष्यहीन। सनिक वर्दी पहन कर वियतनाम म छोटे छोटे एशियाई किसानो पर रोब जमाने म या कि वियत नामी व हागकाग व तोकियो की एशियाई वेश्याओ के शरीर को खरीदकर जिनकी आत्महीनता को किंचित मात्र आत्मगौरव का सहारा मिलता है।

अन्यथा प्राय सम्पन्न परिवारो के गोरे युवक ऊँचे पदो या उच्च शिक्षा प्राप्त ऊँची नौकरियो म लग होन से सनिक सेवा स छुटकारा पा लेते हैं किन्तु गरीब परिवारो क बच्चो को ये सुविधाएँ हासिल नही।

(3) तीसरी श्रेणी उन बेबस युवको की है जो अमरीका को प्यार करते है और अमरीकी उच्च आदर्शों को पन जेफ्सन और लिकन के देश को मुर्दा पूजीपतियो मता धो और पाखण्डियो के हाथ मे पूणतया नही पडन देना चाहते। वे बौद्धिक दष्टि स सजग हैं। जानते हैं कि यह युद्ध एक फरेब है झूठ व अत्याचार से भरा है और खुलकर युद्ध का विरोध करते है किन्तु कानून तोडकर समाज व्यवस्था से बाहर निकल पडने म राष्ट्र का अहित जान पडता है। वे कानून को वधानिक ढग से बदलना चाहते हैं और इसीलिए व्यवस्था का अग बनकर यथा सम्भव युद्ध का विरोध करते है।

एक ओर जहा कि हजारो युवको ने खुलकर क्रातिकारी माग अपनाया है और सनिक व्यवस्था को तोडफोड की कार्रवाइयो द्वारा अव्यवस्थित करन का प्रयत्न किया है वहा दूसरी ओर 40 000 युवको ने अपनी अमरीकी राष्ट्रीयता का तिलाजलि देकर कनाडा मक्सिको और अनक यूरोपीय देशो म शरण ली है जबकि अमरीका क भीतर स शातिपूवक वदलन म विश्वास रखनवालो न वियतनाम म जाकर युद्ध क खिलाफ प्रचार किया है और यथासम्भव सनिको म असहयोग की भावना जगायी है। अनक अमरीकी टुकडियो न रणक्षेत्र म शाति का झण्डा गाडकर लडन स इकार कर दिया है और हजारो की सख्या म अमरीकी सनिक अपन कम्पो स भाग निकल हैं और बिना छुट्टी के कम्प स गायब हो जानवाले फौजियो की सख्या जिन्हें भगोडा कहा जाता है—50 000 प्रतिवष स अधिक है।

लेकिन अमरीकी समाज म मताधो की सख्या अधिक है और सरकारी शासन-तत्र तथा वहा के दो बडे राजनतिक दलो—डेमोक्रेट तथा रिपब्लिकन—म अधिकतर लोग प्रतिक्रियावादी हैं। यहा तक कि गोरी जाति की उच्चता म विश्वास करनेवाला घोर प्रतिक्रियावादी जाज वालस जो दक्षिणी राज्य की

अन्ततोगत्वा निर्णायक नहीं होती।

अमरीका की सैनिक योजनाओं और सिद्धान्तों के पण्डितों ने जो भविष्य वाणियां की वे एक के बाद एक वियतनाम मुक्ति मोर्चे के जवानों ने झुठला दी। उदाहरण के लिए तत्कालीन रक्षा सचिव मैकनमारा ने अक्तूबर 1963 को कहा था

हमारी सैनिक कार्यवाही 1964 के अन्त तक पूर्ण हो जायगी।

और 1■ फरवरी, 1964 को अमरीकी कांग्रेस के सदन में बोलते हुए उन्होंने यही विश्वास दोहराया कि अमरीकी फौज मुक्ति मोर्चे का खात्मा करके सैगांव के शासन की नींव मजबूत करके 1965 के अन्त होने से पहले ही दक्षिण वियतनाम से हट जायेंगी।

और फिर अक्तूबर 1965 में श्री मैकनमारा ने सैगांव में एलान किया।

हमने लड़ाई का पासा पलट दिया है।

इस प्रकार अमरीका सरकारी नेता बार बार अपनी जनता को यही कहते रहे कि दक्षिण वियतनाम में हालत सुधर रही है। नये नये हथियार बमबार, हेलिकाप्टर तोपें और जंगी बेड़े असभ्य खूंखार चीनियों के काले पंजाब वाले एजेंटों दरिद्र वीटकांग कुत्तों को खत्म करने ही वाली हैं। परन्तु हर बार उनके किये दावे झूठे सिद्ध हुए और वियतनाम का अधिकार क्षेत्र दिन व दिन फैलता गया। ज्यों ज्यों अमरीकी सेनाओं ने सैगांव के अलोकप्रिय शासन की हिमायत में गोलियां चलायी बम गिराये त्यों-त्यों हर झोपड़े गांव, गिरजे स्कूल व मन्दिर से उठी आहों से बढ़ती गयी लोकप्रियता मुक्ति मोर्चे की और दक्षिण वियतनाम के लड़के लड़कियां बूढ़े जवानों स्त्री पुरुषों बौद्ध ईसाई भिक्षुओं ने कन्धे से कन्धा मिलाकर वियतनाम की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार के प्रति अपनी आस्था दृढ़ की।

अमरीका से मिले हथियार लेकर सैगांव के सैनिक हजारों की तादाद में वियतनाम के मुक्ति मोर्चे के छापामार देशभक्तों की ओर जा मिलते हैं।

न्यूयार्क टाइम्स के 24 फरवरी 1966 अंक में सैगांव स्थित संवाददाता के अनुसार सन 1965 के वर्ष 113 000 फौजी भाग गये थे। (1964 में उनकी संख्या 72 000 कूती गयी थी) और 1966 में भागनेवालों की औसत और बढ़ गयी है। 11 मई 1966 को तत्कालीन रक्षा सचिव मैकनमारा ने यह स्वीकार किया था कि 12 000 फौजी प्रति माह सैगांव की सेना से भाग जा रहे हैं।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार 20 000 जवान हर माह सैगांव की सेना से भागकर मुक्ति मोर्चे में शामिल हो जाते हैं। इस प्रकार सैगांव की सेना में भगोड़ों की संख्या 1 50 000 प्रतिवर्ष होती है।

लेकिन तत्कालीन विदेश सचिव डीन रस्क ने 23 अप्रैल 1965 को यह कहने

का साहस किया था कि इसका कोई प्रमाण नहीं कि वियतकांग को दक्षिण वियतनाम के लोगों का गहरा सहयोग मिल रहा है।"

एम दुस्साहसिक झूठे वक्तव्य देने का उद्देश्य क्या हो सकता है? अमरीकी जनता को धोखे में रखना। अन्यथा रस्क सरीखा वाशिंगटन सरकार का वरिष्ठ अधिकारी क्या यह सत्य नहीं जानता था कि दक्षिण वियतनाम में जहां एक ओर अमरीका की 5 00 000 फौजें जल थल और वायुसेना और 70 000 सातवें बेड़े की सेनाएँ तथा 70 000 थाईलैण्ड स्थित हवाई फौज और 6 00 000 सैगाव की सेना जो अमरीकी हथियारों से लैस और ग्वाम द्वीप स्थित अमरीका के विशाल बी 52 बमवर्षकों की इतनी दुर्धर्ष शक्ति का प्रयोग अमरीका को थोड़े से वियतकांगों को कुचलने के लिए करना पड़ा—जिन्हें वियतनाम की जनता का कोई समर्थन प्राप्त न था?

प्रस्तुत लेखक ने एक बार जब दक्षिण वियतनाम मुक्ति मोर्चे की नेता श्रीमती बिन्ह से पूछा कि इतनी विशाल अमरीकी सैनिक मशीनरी से लड़ते रह सकने का रहस्य क्या है तो वे बोलीं—'जनता का विश्वास।' और इतिहास की विडम्बना यही है कि वाशिंगटन के कम्प्यूटर अभी तक यह हिसाब नहीं लगा पाये हैं कि जनता का विश्वास मिटाने के लिए कितने बड़े बमों की जरूरत पड़ती है।

जन क्रांति आन्दोलनों का मुख्य काम यही होता है कि अपने आचरण और प्रोग्राम द्वारा जनता का विश्वास प्राप्त करें और प्रतिक्रियावादी शक्तियों और जनता के हितों के बीच की खाई को बढ़ाते जायें। दक्षिण वियतनाम के भूमिहीन किसानों को भूमि सम्बन्धी कानूनों में दिलचस्पी थी। स्कूलों और अस्पतालों की उन्हें अपने गाँवों में आवश्यकता थी। बजाय इसके कि सैगाव के अमरीकी दूतावास में कब एक बड़े डिनर का आयोजन हुआ। या कि कितने अरब डालरों के हथियार सैगाव के सैनिक डिक्टेटरों को अमरीका मुफ्त देने को तैयार है। या कि कितने हजार वर्गफीट धरती पर अमरीकी नमूने के डांस हाल और सिनेमा व नाच घर दक्षिण वियतनाम में बनाये गये हैं।

अमरीका और उसके कठपुतले फौजी डिक्टेटर जहां एक ओर अधिकाधिक सैनिक तैयारियां और स्विटजरलैण्ड के बैंकों में अपनी तिजोरियों को बढ़ाने की कोशिशों में लगे रहे और अल्पमत के उन जमींदारों ने जो कि जनसंख्या का 2 प्रतिशत हैं—दक्षिण वियतनाम की उपजाऊ भूमि के 45 प्रतिशत भाग के मालिक हैं सामाजिक व आर्थिक सम्बन्धों में यथास्थिति बनाये रखने के लिए अमरीकी योजनाओं की सफलता में अपना हर योग दिया वहां दूसरी ओर दक्षिण वियतनाम के गांवों खेतों खलिहानों और पहाड़ों जंगलों के दूर-दूर स्थित पिछड़ी जातियों आदिवासियों और निर्धन भूमिहीन अशिक्षित कोटि-कोटि जनता में, मुक्ति मोर्चे के सेनानियों ने आन्तरिक सरकार के अधीन क्षेत्र में भूमि सुधार तथा

चिरापमित शिक्षा सचार व स्वास्थ्य सेवाओं की स्थापना व सुधार की केवल कागजी योजनाएँ ही नहीं बनायीं किन्तु उन्हें क्रियान्वित कर दिखाया। वियतकांग अधिशासित क्षेत्र में 2,500 से अधिक स्कूल स्थापित किये गये। हर गांव कस्बे में चिकित्सा की सुविधाएँ मुहय्या की गयीं और मुक्ति मोर्चे के सैनिकों के शिविरों में ग्रामीणों का इलाज किया जाने लगा।

निरक्षरता मिटाने का राष्ट्रव्यापी आन्दोलन संगठित किया गया जिसके अन्तर्गत वयस्कों के लिए विशेष कक्षाएँ चलायी गयीं। और सबसे महत्त्वपूर्ण मुक्ति मोर्चे द्वारा अधिकृत क्षेत्र में तुरन्त भूमि सुधार क्रियान्वित हुआ। हजारों एकड़ उपजाऊ भूमि जमींदारों से छीनकर भूमिहीनों को हस्तान्तरित कर दी गयी। साक्षरता आन्दोलन की सफलता के हेतु अमरीकी बमबारियों के बावजूद पहाड़ों की गुफाओं और भूमिगत प्रिंटिंग प्रेसों में छापकर 57 दैनिक व पाक्षिक पत्र पत्रिकाएं मुक्ति क्षेत्र में बसनेवालों को मुहय्या की गयीं ताकि उनकी साक्षरता व विकास हो। जन क्रान्तिकारी आन्दोलनों की सफलता का यही मूल मन्त्र है कि वे सामाजिक व राजनीतिक मौलिक सुधार तेजी से लाते हैं। यदि वे ऐसा करने से झिझकते हैं तो वह क्रान्तिकारिता का दावा नहीं कर सकते। और ऐसे मौलिक सुधारों को क्रियान्वित करने के लिए *आवश्यक* होता है कि एक शासकीय प्रारूप तैयार रहे जिसकी बागडोर योग्य व ईमानदार व्यक्तियों के हाथों में हो। ऐसी शासन व्यवस्था व्यापक मुक्ति आन्दोलन का अभिन्न अंग होना चाहिए—अन्यथा गुरिल्ला सैनिक और बन्दूकधारी लुटेरों में अधिक अन्तर नहीं रहता। और लुटेरों के साथ जनता नहीं चलती।

वियतकांग के क्रान्तिकारी दक्षिण वियतनाम में जहां एक ओर विदेशी अमरीकियों से अपनी आजादी की लड़ाई लड़ने में हर कुर्बानी करने का दुस्साहस कर रहे हैं वहां घूसखोरी से रहित प्रगतिशील शासन व्यवस्था भी चला रहे हैं। उन्होंने जनता का अटूट विश्वास प्राप्त कर लिया है। और इस बात में अमरीका की फौजें और बन्दूकों के सहारे खड़ा सैगोन के जनरलों का भ्रष्ट शासन बुरी तरह असफल रहा है।

श्री जार्ज बाल जो कैनेडी व जानसन के शासन में विदेश मन्त्रालय के उप सचिव थे उन्होंने इस तथ्य को बड़े स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया। उनका कहना है कि सैगोन के शासन में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं जिसने वियतनाम के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया हो—और इसलिए हम (अमरीका) चाहे जो कुछ करके दुनिया को *यह दिखाना चाहें कि वह वियतनामियों की प्रतिनिधि सरकार है*—पर सच तो यह है कि सैगोन का शासन हमारे पैसे और हमारे ही खून से चलता है। यदि हम अपनी फौजें हटा लें तो वह 24 घण्टे में अधिक नहीं टिक सकता।

नयी दिल्ली के एक भारतीय पत्रकार ने जो अमरीकी नीति के समर्थक रहे हैं

एक बार इस लेखक से कहा था कि

'लेकिन 'वियतनाम की सफलता तो आतंक पर आधारित है। वे ता ठग है ठग। लोगो का कत्ल करके अपना शासन चलाते हैं।'

अमरीका के सरकारी प्रवक्ताओ ने भी ऐसे ही प्रचार को काफी बढावा दिया है।

हालांकि इसमे कुछ सच्चाई का अश हो सकता है कि क्रातिकारी जन आदोलन जब तब आतक का भी सहारा लेता हो, किन्तु सगाव के सैनिक डिक्टेटर और अमरीकी सैनिक—जब इतने बमो और टैंको का आतक दिखाकर जनता को अपने अधीन न कर सके तो वियतनाम की सफलता को 'आतकवादिता' कह कर अस्वीकारना समझदारी की निशानी नही किन्तु आत्मप्रवचना होगी।

प्रस्तुत लेखक ने श्रीमती बिह से 'आतक' की बात पूछी थी, उनका कहना था

हमारा तो अस्तित्व ही जनता की सहानुभूति पर चलता है। हम बस आतक पर जी सकते है।

मेरे मित्र भिक्षु थिच हात हाह ने जो सगाव स्थित बौद्ध विश्वविद्यालय मे सामाजिक शास्त्र सकाय के डीन हैं, इसी प्रश्न पर, अपनी पुस्तक का हवाला देकर कहा था

'गुरिल्ला युद्ध के सभी विशेषज्ञ इस तथ्य को स्वीकार करते है कि गुरिल्ला युद्ध कृषक जनता की सहायता के बिना नही लडा जा सकता। राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे की सफलता का आधार वियतकाग द्वारा किसानो पर अत्याचारो का 'आतक' कहना गलत है। अमरीकी अधिकारियो और सगाव के जनरल यही बताते हैं कि किसान बुरी तरह भयभीत हैं और मुक्ति मोरचे का साथ देने के अलावा वे और कर भी क्या सकते हैं। परतु यह वास्तविकता नही है। सच्चाई यह है कि मुक्ति मोरचे को किसानो का बहुत बडी सख्या मे समर्थन प्राप्त है क्योकि वे उन्हे यह बताने मे सफल हुए हैं कि उनका सघर्ष राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का युद्ध है। देशभक्ति की भावना हमारे किसानो के दिलो मे बडी गहरी है। उन्हे दुनिया के इतिहास या राजनीतिक सिद्धान्तो के बीच चल रहे शीतयुद्ध का न ज्ञान है और न ही कोई सरोकार। वे तो स्पष्ट देखते हैं कि एक बहुत बडी पश्चिमी गोरी जाति की सेना उनके देशवासियो को मरवा डालने की हर सम्भव कोशिश कर रही है —और वह उन देशभक्तो को मरवा रही है जो देश की आजादी के लिए पहले फ्रासीसियो के खिलाफ भी लड चुके हैं। हमारे किसान अमरीकी गोलियो से मरने वालो को मरा हुआ साम्यवादी नही मानते। उनके लिए तो वे हैं शहीद देश भक्त और यह ऐसा सत्य है जिसे अमरीकी सेना नही समझ पाती।"

मुक्ति मोरचे के सदस्यों और समर्थकों में बहुमत उन देशभक्तों का है जो साम्यवादी' नहीं हैं और वियतनामियों का इतिहास तो इस बात की गवाही देता है कि व देशभक्त पहले हैं और फिर कुछ और। फिर चाहे यह सही है कि मोरचे को सनिक सहायता साम्यवादी देशों से मिल रही है और उस पर साम्यवादियों का अधिकार अधिक है। लेकिन विरोधाभास जिसे अमरीका नहीं समझ पाता यह है कि—साम्यवाद को मिटाने के लिए जितनी ही अधिक कारवाई करके वे वियतनामी देशभक्तों की हत्या करवायेंगे और जितनी अधिक फौजें भेजेंगे जितना अधिक बमबमारी करेंगे—उनके हर बम से हर विनाश से वही पनपेगा और बढ़ेगा जिसे कि वे मिटाना चाहते हैं। न केवल मोरचे को शक्ति को बढ़ावा मिलता है बल्कि अधिकाधिक किसानों का समर्थन उसे प्राप्त होता है। और वियतनाम के किसान राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और साम्यवादी जन-आंदोलन के बीच कोई अंतर नहीं मानते। यही कारण है कि मुक्ति मोरचे के नेताओं और सेनानियों का नेतत्व भी किसानों के हाथ में है।

इस सन्दर्भ में यह तथ्य भी ध्यान में रखना चाहिए कि वियतनाम के किसी भी धार्मिक नेता या धर्मगुरु ने मुक्ति मोरचे या वियतकाग के खिलाफ कभी कोई वक्तव्य नहीं दिया है। यहां तक कि वहां के कैथोलिक ईसाइयों तक के एसोसिए शन तथा धर्मगुरु आर्च बिशप ने सगाव शासन और अमरीकी सनिक कारवाइयों के खिलाफ प्रदर्शन किये हैं। वस्तुत वहां की धार्मिक संस्थाएँ भी राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी जनता के साथ साथ मोरचे की सफलता में योग दे रही हैं।

भिक्षु थिच नात हान्ह के अनुसार अगर कोई साम्यवादियों की निन्दा करता है तो उसका मतलब है कि उसे किसी न किसी रूप में अमरीकी डालरों ने खरीद लिया है। पिछले 10 वर्षों में सगाव में सबसे मुनाफे का व्यापार रहा है साम्यवाद को खुलकर गालियां देना जिससे गाली देनेवाले रातोरात मालामाल हो जाते हैं किन्तु साम्यवाद और मोरचे को उससे कोई क्षति नहीं पहुँचती।

अमरीका सगाव के स्वार्थी जनरलों और मुनाफाखोरों को साम्यवाद विरोधी अच्छे आदमी मानकर हथियारों और डालरों से लाद देता है।

वियतनाम युद्ध का यदि अमरीका कोई राजनयिक हल चाहता है तो वाशिंगटन के नेताओं को कोरे साम्यवाद और राष्ट्रभक्ति के बीच का अन्तर समझना होगा। दुर्भाग्यवश पहले फ्रांसीसी वैसा करने में असफल रहे और अब अमरीकी इसे नहीं समझ पा रहे उल्टे उनकी नीतियां इन दो राष्ट्रीय महत्त्वपूर्ण तत्त्वों की एकता और घनिष्ठता को बढ़ावा दे रही हैं। और इसी कारण दक्षिण वियतनाम में मुक्ति मोरचे की शक्ति व लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढ़ती जाती है। आज स्थिति यहां तक पहुंच चुकी है कि गैर-साम्यवादी राष्ट्रवादी शक्तियों के सामने भी कोई और चारा नहीं। एक विदेशी सेना जब आपके देश पर अधिकार जमा बैठी हो और

आपके खेत खलिहानों को जला रही हों, विदेशी फौजें जब आपकी मां बहनों का सतीत्व लूट रही हों, आपके बच्चे और पशुधन को जब हेलिकॉप्टरों से बरसती गोलियों से धराशायी किया जा रहा हो तो कोरे साम्यवाद और शुद्ध राष्ट्रवाद के बीच का अंतर केवल बौद्धिक विलास है। वह तो मानव द्रोह एवं राष्ट्र द्रोह की परा सीमा है।

इससे भी अधिक मोरचे की सफलता का रहस्य है—राष्ट्र भक्ति के साथ-साथ आर्थिक सुधारों को क्रियान्वित करने की क्षमता। जबकि इन प्रश्नों पर अमरीका और सगाव स्थित कठपुतले सर्वथा नाकामयाब रहे हैं। आगे बढ़ते वियतमिन्ह की सेनाएँ फ्रांसीसियों को हराकर जहां जहां पहुँचती थीं बड़े-बड़े रईस जमींदारों से भूमि-अधिकार छीन उन्हें किसानों में बांटती जाती थी। 1954 में वियतमिन्ह ने दक्षिणी क्षेत्र के जीतते हुए इलाकों से जनेवा समझौते के अंतर्गत अपनी सेनाएँ उत्तर में हटा ली थीं। वियतमिन्ह शासन के हटते ही भगोड़े जमींदार अमरीकी संगीनों के साथ वापस लौट आये और गावों और खेतों की जमीनें किसानों से वापस छीन लीं।

फिर भी यह सच हो सकता है कि मुक्ति मोरचे के कार्यकर्ता आतंक का सहारा लेते हों किन्तु केवल विशेष स्थितियों में और न्याय के अनुकूल जो कि जन हिताय होता है। उदाहरणार्थ, सगाव की सरकार सी० आई० ए० और अमरीकी प्रशासन की सलाह पर गांवों-कस्बों में पंच व तहसीलदारों की नियुक्ति करती है। ये शहरी रईसों, सेनाधिकारियों और जमींदारों के लड़के होते हैं जिन्हें सरकार लड़ाई में मारे जाने से बचाकर ऊँचे पदों पर सिफारिश या रिश्वत की वजह से भिजवा देती है। ग्रामीणों का इन बाहरी उद्दण्ड क्रूर, रिश्वतखोरों से चिढ़ होना स्वाभाविक है। अक्सर ऐसे भ्रष्ट अधिकारियों व पंचों को अनेक चेतावनियां देने के बाद, उन पर जनता की अदालतों में मुकदमा चलाकर मोरचे के कार्यकर्ता उनका वध करवा देते हैं। जनता इस सगाव के अत्याचारी प्रतिनिधि को दिया प्राणदण्ड मानती है। किसानों के स्त्री-बच्चों और खेत-खलिहानों को इससे राहत मिलती है और वियतकांग की लोकप्रियता बढ़ती है। दक्षिण वियतनाम के किसानों को एहसास होता है कि मोरचे के 'गुरिल्ला' योद्धा हमें भी हैं जो केवल बात ही नहीं करते किन्तु जुल्मों के खिलाफ लड़ने में व अमरीका जैसी शक्ति से भी लोहा लेने से नहीं डरते। इस तरह प्रश्न आतंक व साम्यवाद का नहीं रह जाता। सवाल है किसानों के अधिकारों उनके जीवन और उनकी इज्जत की सुरक्षा का जिसे अमरीकी और सैगॉव की क्रूर नीतियों से खतरा है। मुक्ति मोरचे के सिपाही उन व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई करते हैं जो जनता का शोषण करते हैं और जिन्हें पहले ही से स्थानीय जनता घृणा करती है। और क्योंकि इस प्रकार आतंककारी कारवाई 'चुनकर' की जाती है जनता उसकी भूरि भूरि प्रशंसा

करती है। किन्तु अंधाधुंध किये गये अमरीकी आतंक की तुलना में इसका कोई स्थान नहीं जिसमें हजारों-लाखों की जानें बमों और गोलियों की बरसात में लुट जाती हैं।

वियतनामी किसानों ने 80 साल के फ्रांसीसी शासन में इतना अधिक विनाश और गोरे सैनिक नहीं देखे थे जितने कि पिछले 3 4 सालों में। 500 000 से अधिक अमरीकी सैनिक और 2 3 लाख अमरीकी नागरिक वियतनाम पर उतर आये और उस छोर से दक्षिणी भाग के खेतों, नदियों, तालाबों व पहाड़ियों को उन्होंने रौंद डाला है बूटों से बंदूकों से, गोलों से और आग उगलनेवाले यंत्रों, जहरीली गैसों और फसल व हरियाली को नष्ट करनेवाले रसायनों के छिड़काव से। आज वियतनामी किसानों के लिए सबसे बड़ा प्रश्न है—'जीवन रक्षा। मैं जीऊं तो क्या खाकर ? खेती करूं तो कहां ? अगर खाना भी पा लूं—तो बमों और जहरीली गैसों से बचकर कहां जाऊं ?

अमरीकी नेता वियतनाम युद्ध को कम्प्यूटरों की भाषा में और टेलिविज़न की तस्वीरों में देखते हैं। अमरीकी लोग टेलिविज़न के स्क्रीन पर डिनर खाते समय जब वियतनाम के युद्ध को देखते हैं—तो उन्हें जलती हुई मानवता के बजाय सिलोलाइड द्वारा प्रदर्शित जलते हुए रोमांचक दृश्य (सीन) दिखलायी पड़ते हैं। किन्तु वियतनाम की जनता के लिए इस युद्ध का मतलब कुछ और है

एक गांव की कच्ची सड़क पर बैलगाड़ी चली जा रही थी जिसमें एक नौजवान किसान लड़की गोद में अपने एक महीने के बच्चे को खिला रही थी। पास में बैठी थी एक वृद्धा—शायद उसकी सास रही होगी। पीछे गाड़ी में उनका सामान लदा हुआ था। अचानक ऊपर आकाश से एक हेलिकाप्टर उतरने लगा। उसके बड़े-बड़े पंखे जोर-जोर से फड़फड़ा रहे थे। बैल बेतहाशा भाग खड़े हुए और सवारियां व सामान उलट-पुलट—दायें-बायें गिर पड़े। सिनेमा के पर्दे पर यह दृश्य हास्यात्मक हो सकता है। किन्तु वस्तुस्थिति कुछ और थी। हेलिकाप्टर से अमरीकी सैनिक उतरे और इशारों से स्पष्ट किया कि वे युवती को साथ ले जाना चाहते हैं। दोनों महिलाओं ने विनती की। दया की प्रार्थना की। गिड़गिड़ायीं। पर अमरीकियों के पास दया कहां थी! युवती ने वृद्धा को बच्चा थमा दिया और उस हेलिकाप्टर में धकेलकर ले उड़े—प्रजातंत्र के सिपाही।[1]

यह है वियतनाम में अमरीकी युद्ध का वह रूप जिसे वियतनाम की जनता, उनके निरीह किसान उनके श्रमगुर और क्रांतिकारी मुक्ति मोर्चे के सेनापति पिछले दो दशकों से देखते आ रहे हैं। हजारों-लाखों नागरिकों की हत्या—किस लिए ? उन्हें प्रजातंत्र का सबक सिखाने के लिए!! 1961 66 के बीच

1 भिक्षु थिक नात हान्ह लोटस इन ए सी ऑफ फायर पृ 66

5 00 000 म अधिक मारिए मारे गय और वाशिंगटन के सरकारी बयाना म अमरीका के बमवार केवल 'कम्युनिस्टो के सैनिक ठिकाना और सम्भावित केन्द्रा पर बम गिराते है। और क्योंकि मुक्ति मोर्चा जनता का आन्दोलन है इसलिए वियतनाम का हर गाँव, हर कस्बा, हर जन सम्भावित कम्युनिस्ट है। क्योंकि वह अमरीकी फौजी की भाषा नही जानता क्योंकि वह अमरीकी सविधान की धाराए नही जानता, क्योंकि उसे अमरीकी इतिहास और उसकी व लोककथाएँ रिाम रेड इण्डियना के जाति सहार और काला की दासता की रोमाचक गाथाए हैं नही मालूम। और इस विदेशी अमरीकी का वियतनाम की भाषा का ज्ञान नही। वह नही जानता कि वियतनाम का सास्कृतिक इतिहास 2 000 वर्ष पुराना है जबकि उसके पूवजा की धरती ने अभी सभ्यता की पहली किरण भी नही देखी थी। रगभेद के विद्वेष की सस्कृति मे पले अमरीकी फौजियो और उनके नेताओ की निगाह म हर एक वियतनामी शत्रु है क्योंकि वह वियतनाम की भाषा बोलता है और शान्ति शान्ति की पुकार करता है। जब हम इनस पूछते हैं कि बताओ वियतनाग कहा छुपे हैं—तो ये गूगे की तरह खडे-खडे मत्र जाप का बहाना बनाते हैं। दरअसल य सब प्रच्छन्न कम्युनिस्ट हैं—जा ऊपर स बौद्ध हाने का स्वाग भरत हैं। और इसलिए मरिन अधिकारी ने एक छोटे-से गाँव (हेमलट) का बमा से उडा देन का हुकम दिया। भिक्षुक थिच नात हान्ह ने ऐसी ही एक और घटना का आखोदेखा वणन इस प्रकार किया है

> मैं अपने 20 समाज स्वयसेवका के साथ एक गाव म ठहरा था। यह वही रात थी जबकि वियतकाग ने सगॉव क हवाई अड्डे पर मोर्टार से हमला किया था। मोर्टार हम से कोई एक किलामीटर दूर छूट रहे हागे क्योंकि हम उनके गोले गिरने की आवाज सुन सकते थे। हमला खत्म हाने के आधा घण्टे बाद और जबकि वियतकाग स्वय हमला रोककर लौट चुके थे अमरीकी जहाज बदला लेने उडे। उन्होने प्रक्षेपणास्त्रो (राकेटा) और बमा स गाव को धूल म मिला दिया। वहाँ कोई वियतकाग नही था और न ही उस रात कोई वियतकाग मारा ही गया। किन्तु गाव उजाड डाला गया था और बहुत से ग्रामीण घायल हो गय। अनक मलबे के नीचे दबकर मर गय। अगर यह कोई छुटपुट घटना हो तो मान लिया जा सकता है कि युद्धा म गलती से ऐसी घटनायें अक्सर हो जाती हैं। परन्तु वास्तविकता तो यह है कि यह एक आम बात है कोई इक्की दुक्की नही। ऐसी घटनाएँ और इससे भी ज्यादा दर्दनाक, हर दिन दिन और रात, हमारे देश के हर भाग मे घटती हैं। और ज्या-ज्या विनाश और आतक बढता जाता है त्या-त्यो अमरीकना के प्रति किसाना के दिलो म नफरत की भावना भी। और अमरीकी सिपाही जोकि

समझता था कि वह सहायता करने आया है घृणा, व निराशा के दलदल म धसता जाता है।[1]

जन क्रांति के गुरिल्ला सनिक उस मछली की तरह होते हैं जो जनता रूपी जल मे सुरक्षित रहते है। इसलिए कोई बाहरी शक्ति सनिक शक्ति स वियतनाम के जन आन्दोलन को कुचल नही सकती। शक्ति के मद म शायद अमरीका जनता को मिटा डालना चाहे लेकिन दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मोर्चे के लडाके तो उसी जोश म है जिसम कभी भारतीय स्वातन्त्र्य-योद्धाओ ने एलान किया था—

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल म है,
देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल म है।

• •

1 भिन्न विक नात हा ह वही प 67

# 10

# प्रजातन्त्र के हिमायतियो की दुश्मन वियतनाम की जनता

*भयानक पमाने पर की जा रही अन्धाधुन्ध बमबारी बुलडोजरों से बड पमाने पर धरती को समतल करना और जहरीले रसायन फलाकर खेती और हरियाली को नष्ट करके हिन्द चीन म भयकर प्र जन सहार (इकोसायड) किया जा रहा है।"*

—श्री ओल्फ पामें (स्वीडेन के प्रधान मन्त्री)
(6 जन 1972 को राष्ट्र सघ के अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृतिक सम्पदा मरक्षा सम्मेलन मे स्टाकहोम म उद्घाटन भाषण देत हए।)

*'अन्तर्राष्ट्रीय सनिक ट्रिब्यूनल के अनुसार निम्नलिखित कार्यों को अथवा उनमे से किसी भी एक को युद्धकालीन अपराध माना जयेगा।*

*नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार युद्धवन्दियों के साथ दुर्व्यवहार, पीडा देना किंवा उनकी हत्या—गाँवों कस्बों और नगरों का मनचाहा विध्वस करना। किसी नागरिक के साथ अमानवीय व्यवहार '*

—द्वितीय म युद्ध के अन्त म नूरेम्बग (जमनी) 1945-46 में स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय सनिक ट्रिब्यूनल के सविधान की एक धारा।

दुनिया के सबसे धनी और सबस शक्तिशाली देश का कुटिल क्रोध आज हमारे युग के एक छोटे से शक्तिहीन निधन देश पर बरस रहा है। विश्व की कोटि-कोटि जनता हतप्रभ और किंकर्तव्यविमूढ मुह उठाये इस हृदयहीन विनाश को देख रही है। समाचारपत्रों म चित्रों म, फिल्मों पर और अपन साफे पर नेट-लेटटलिविजन के पर्दे पर।

वाशिंगटन के सनिक व सरकारी नेताओ व प्रवक्ताओ न हमेशा यह दावा किया है कि उनके सनिक व वमवार 'शत्रु के 'कम्युनिस्ट हमलावरो के केवल

गामरिक महत्त्व के ठिकाना को ही नष्ट करना है। लकिन स्वय अमरीकी पत्रकारा के आंकड़ों से यथाना म यह सिद्ध हा चुका है कि अमरीका की फौजें बड़े पमान पर निर्दोष नागरिका के जानमाल को नष्ट कर रही हैं और ऐसा करने का उद्देश्य मामरिक नहीं किंतु वहाँ के लोगा का आतकित करना है।

न्यूयाक टाइम्स मेगजीन, नवम्बर 28, 1965

—युद्धबदियो के मर पानी म डुबाये जात हैं सगीनें छुरियाँ उनके गला म गाडी जाती हैं।—अगर बन्दी कठिन हुआ तो बाँस की खपच्चियाँ उसके नाखूना क नीचे घुसायी गयीं बिजली के तारा म भुजा स्तन या अडकोष बाँध दिय गय।—

दूसरे देशप्रेमियाके बन्दियो से रहस्य कहलान के लिए आतकवारी काय वाहिया म

बदियो की उँगलियाँ नाखून कान, और मूत्रद्रिय तक काट ली जाती हैं। अक्सर एस कटे गये काना की मालायें सनिका के ठिकानो पर आभूषणा की तरह लटकती दिखलायी देती हैं। न्यूयाक हेराल्ड ट्रीब्यून, अप्रल 25 1965। एसासियेटिड प्रेस क सवाददाता श्री मलकेम ब्राउन न जिन्ह वियतनाम युद्धक्षेत्र से रिपोर्टिंग के लिए पुलिस्ज़ेर पुरस्कार मिला अपनी द फस आफ वार (युद्ध की नयी सूरत) नामक पुस्तक म दक्षिण वियतनाम म चल रहे अत्याचारा की रिपोट म लिखा है

बहुत स सवाददाताओ और स्वय अमरीकी सनिक सलाहकारो ने कुल्हाड़िया स बदियो के कटे हाथ देखे हैं। अक्सर बदियो के अण्डकोष काट दिये जाते है और उनकी आँखें फोड डाली जाती है।

अनेक बार सम्भावित वियतकाग सनिक को पूछताछ के बाद अमरीकी बख्तरबन्द गाड़ी के पीछे बाँधकर जगला और खेता मे घसीटा जाता है। इसस बड़ी वेदनापूण मृत्यु निश्चित होती है। (पष्ठ 116)

न्यूयाक हेराल्ड ट्रिब्यून के सवाददाता बेवर्ली डाप ने 25 अप्रल 1965 का एक डिस्पेच म लिखा

—दो वियतकाग बदियो को पूछताछ के लिए हेलिकाप्टर म सगाव ले जाया जा रहा था। पहले ने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया। उसे 3 000 फुट की ऊँचाई से उडते हुए बाहर फेंक दिया गया। दूसरे ने तुरन्त सब सवालो के जवाब दे दिये। बाद म उसे भी फेंक दिया गया।

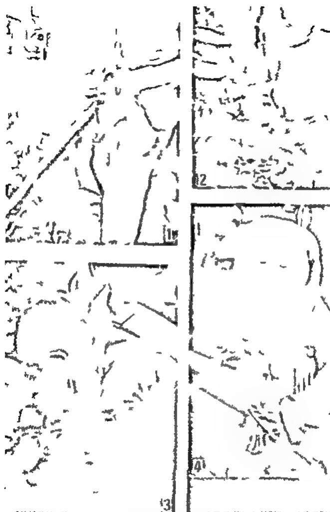
लेकिन यह कोई इक्की दुक्की घटना नहीं। 7 जुलाई 1965 न्यूयाक टाइम्स म एक रिपोट



वॉन ट्रौय एक युवा बिजली कर्मचारी को नमारा की हत्या के प्रयत्न के इलज़ाम ट्रौय को सैगोन नगर में १५ अक्तूबर को गोली मार दी गयी पत्रकारों को देश में कहा था अमरीकियों ने हमारे है जैसे अपनी जनता की भावना का मा के खिलाफ कार्यवाही की है भी देशवासा स्वीकार नहीं किया और जब करी तो उनकी कर्तव्य की वियतनाम

2

दक्षिण वियतनाम की ८५% बहुसंख्यक बौद्ध जनता ने अमरीकी उपनिवेशवाद के विरोध में शुरू में शान्तिपूर्ण ढंग से आन्दोलन चलाये। बौद्ध भिक्षुओं ने आत्माहुति देकर डियाम के अत्याचारी शासन का विरोध किया।



राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा के रहस्य पाने के लिए दक्षिण वियतनाम के नागरिकों को तरह-तरह की यंत्रणाएं दी जाती हैं

१ लकड़ी से गला दबाकर दम तोड़ना।

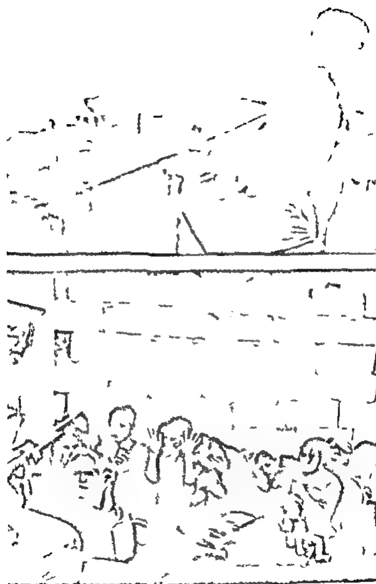
२ पेड़ से औंधा लटकाकर मारना।

नथुनों और चेहरे को कपड़े से ढककर पानी में भिगोना ताकि सांस लेने में तकलीफ हो।

४ पेट में तेज चाकू घोंपना।



निरपेक्ष बूढ़े नागरिकों को भी राष्ट्रीय मुक्ति मार्च में सहानुभूति
रखने के मामले में ऐसी यातनाएं सहनी पड़ती है।
जनयुद्ध का एक ही जवाब है 'जनता को उनके
घरों को स्त्रियों और बच्चों को मिटा दो।
अनेक यन्त्रणाओं के बाद पीछे हाथ बाँधकर इस स्वयंसेवक के चेहरे
का मांस छील दिया गया। फिर भी इसने मुक्ति मार्च के रहस्य न
बताये तब इसे मार डाला ही गया।



अमरीका वियतनाम से सम्मानपूर्वक निकल आना चाहता है —राष्ट्रपति निक्सन। लेकिन सवाल तो अब वियतनाम की स्वतन्त्रता और उसके सम्मान का है जिसके युवकों को गुलामों की तरह फंदे डालकर घसीटा जाता है।



1 'अमरीका ने दक्षिण वियतनाम में आर्थिक सामाजिक सैनिक और शिक्षा सम्बन्धी बड़े-बड़े सुधार किये हैं। और इन्हीं विकास योजनाओं के कारण हमारी विजय निश्चित है।' —मगाव में अमरीकी राजदूत श्री हेनरी कबट लाज।

2 ' देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।

— ' मगाव के विद्रोही।



उत्तरी वियतनाम के प्राय सभी पक्के मकान, हस्पताल, स्कूल और कारखाने बमों में नष्ट कर दिये गये हैं। बमों से बने गढ्ढों से सारा देश भर गया है। चित्र में पानी से भरे गढ्ढे।

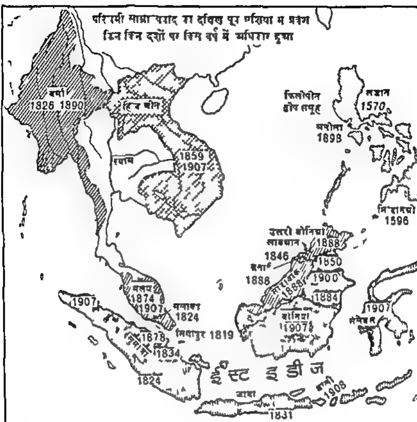




१-२ द्वितीय महायुद्ध म पूरे विश्व म कु" बमबारी तकरीबन ६ करोड टन। वियतनाम में छोट-स प्रदेश पर चौगुना २४ करोड टन बम बरसाय जा चुक हैं यह चित्र १९७२ म उत्तरी वियतनाम पर हुए भयानक बमबारी का है।

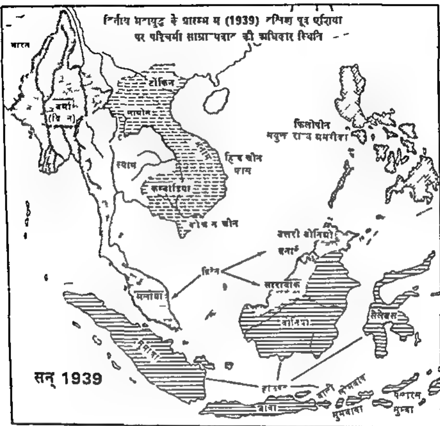
३ 'उस वियतनामी झोपडे को आग लगा दो—अफसर ने हुक्म दिया ... ने लपट दिखा दी। —अमरीकी सैनिक

फ्रान्स द्वारा हिन्द चीन क्षेत्र पर
अधिकार 1859 से 1907 के बीच



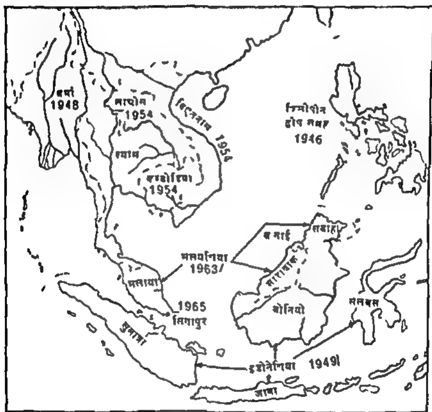

पश्चिमी साम्राज्यवादी देश

- ब्रिटेन
- फ्रांस
- 1750 से पहले / 1750 के बाद — हालैंड
- स्पेन
- 1898 के बाद संयुक्त राज्य अमरीका



(1939)
भारत
बर्मा
टोंकिन
स्याम
कम्बोडिया
फिलीपीन
उत्तरी बोर्नियो
सारावाक
मलाया
सेलिबस
बाली
सन् 1939

द्वितीय महायुद्ध के बाद दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में स्वतंत्रता का आगमन



हिन्दचीन में संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा खुली धमकी और बड़े पैमाने पर सैनिक कार्यवाही शुरू करने से पहले राष्ट्रीय जन शक्तियों की अधिकार स्थिति

भारत

गणतन्त्र चीन

बर्मा

लाओस

स्याम

कम्बोडिया

डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम

दक्षिण वियतनाम

चिह्नित क्षेत्र पर सन् 1964 में बड़े पैमाने पर अमरीकी आक्रमण से पहले उन क्षेत्रों में जन-शक्तियों की प्रभुसत्ता कायम हो चुकी थी

1 डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम (उत्तर में)।

2 दक्षिण वियतनाम का क्षेत्र नेशनल लिबरेशन फ्रंट राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के अधीन था।

3 लाओस में पथेट लाओ का मुक्ति मोर्चा सक्रिय था।

अपगर म प्राप्त हुआ। थी यम न व न फि

'आज मैंने सी० आर्० म० म पायाराय म इसकी तहतारा ना की है कि यह सच है कि सी० आई० ए० दक्षिण वियतनामी नागरिकों को वियतकांग का रूप अपमान क लिए पना देता है।'

जब युद्ध की आग फैलती है तब निर्दोष नागरिकों को सबसे अधिक कष्ट उठाने पड़ते हैं और केवल वियतनामी ही नहीं मग्न। विनाश और यन्ना युद्ध के दूसर नाम हैं किन्तु अमरीका द्वारा लड़ी गयी सब लड़ाइयों से हिन्द चीन और वियतनाम एव भिन्न तरह की लड़ाई है। अमरीका या किसी अन्य देश ने कभी इतने अधिक शस्त्रास्त्रों और गोला-बारूद का इतने छोटे से राष्ट्र के खिलाफ इस्तेमाल नहीं किया। नयी मशीनी क्रूरता के अनुपात म भी यह युद्ध दूसरों से बिल्कुल भिन्न है। इस युद्ध स पहले कभी भी अमरीकी नौजवानों को अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लघन करनेवाले हथियारों और इतनी नृशसता से जो कानून और नैतिकता के स्तर से दूर थान म निन्दनीय है सघर्ष म लड़ने व मरने को न छोड़ा गया। इसलिए अमरीका और दक्षिण वियतनाम के युवकों म न्याय और मानवीयता के उदार तत्त्वों का विनाश होना एक स्वाभाविक अनिवार्यता है।

अमरीका की घृणित अनुदार क्रूर एव कुटिल सामरिक नीतियों के फलस्वरूप जहाँ वियतनाम का जन-जीवन परिवार प्रथा व सांस्कृतिक विकास का तहस नहस किया है वहाँ एसी अश्रुत एतिहासिक विभीषिका का उपकरण मात्र अमरीकी नागरिक और युवक का भी नैतिक ह्रास और मानसिक पतन होना अनिवार्य था।—अमरीकी युवको म भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी लूट उद्दण्डता स्वराष्ट्र के प्रति अश्रद्धा एव अविश्वास तथा निराशाजन्य हिंसात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला है। आज अमरीका म अपराधी प्रवृत्तियाँ बढ़ी हैं। चोरियाँ, डकैतियाँ आत्महत्याएं और कत्ल और अधिक होने लगे हैं। नेताओं की हत्याएँ और आन्तरिक विक्षोभ के दावानल से अमरीका भी जल उठा है। वाटस शिकागो डिट्राय लास एजलिस न्यूयार्क, अलबामा—सब बड छोटे शहर अशान्त हैं।

वियतनाम युद्ध के दौरान पिछले 6 वर्षों म अमरीका म अपराधों और भयानक हिंसात्मक अपराधों कत्ल लूट और बलात्कार तथा आत्महत्याओं म भयानक अनुपात से बढ़ोतरी हुई है। 1964 1969 के कुछ आँकड़े इस प्रकार हैं

—1968 69 के बीच 50 लाख भयकर अपराधों की रिपोर्ट लिखी गयी। 1967 68 की तुलना म 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

1969 म, पिस्तौल व बदूक आदि (आग्नेय अस्त्रों) के प्रयोग द्वारा —9 400 कत्ल हुए 7 300 हमले हुए 1 27,000 डकैतियाँ पड़ी। इन आँकड़ों म बिना अग्निअस्त्र से हुई घटनाएँ सम्मिलित नहीं।

1964 स 1969 म पिस्तौल व बन्दूक स की गयी हत्याओं म 80 प्रतिशत की वद्धि हुई और क्रोध म हमला करने म अस्त्र प्रयोग म 143 प्रतिशत की वृद्धि।

हथियार बन्द डकतियों म, 1964-69 म 147 प्रतिशत की वद्धि। दिन मे घरो म सेंधमार आदि की घटनाओ म 1960-69 म 286 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

1969 म 871,900 कारें चुरायी गयी और 2 97,580 डकतियां तथा 19,49,800 चोरियां हुइ।

—गम्भीर अपराधो के लिए गिरफ्तार हुए नाबालिगो की सख्या 1960 69 म दुगुनी हो गयी और 10 साल स 17 के बच्चो के बीच औसत 27 प्रतिशत की वद्धि हुइ।

1969 के सरकारी आंकडो के आधार पर।
हर 36 मिनट मे 1 कत्ल होता है।
हर 2 मिनट म एक डाकेजनी।
हर 2 मिनट म एक हमला।
हर 16 सेकिण्ड म एक चोरी।
हर 14 मिनट म एक बलात्कार।
हर 36 सेकिण्ड म एक कार चुरायी जाती है।

(न्यूयार्क टाइम्स, इनसाईक्लोपीडिया अलमनक 1971, पृष्ठ 275 से।)

वियतनाम और हिन्द चीन को उजाडन की ऐसी महँगी कीमत तो उसे चुकानी ही पडेगी।

सन 1918 के बाद, यह पहला मौका है जबकि एक प्रजातान्त्रिक देश ने जहरीली गसो का प्रयोग किया हो। लेकिन गस का इस्तमाल इतना बुरा नहीं जितना कि यह तथ्य की अमरीका के सनिक अधिकारी नशीली गसो और नये नय हथियारो का परीक्षणात्मक प्रयोग कर रहे है। मानो कि वियतनाम के नागरिक, स्त्री-बच्चे, नन्हे-नाने खेत-खलिहान और पशु पक्षी—हर जिन्दा और बेजान अमरीका की किसी प्रयोगशाला के बेजुबान चूहे हो याकि कीडे मकोडे।

"—उस गाँव म एक औरत है जिसके दोनो हाथ नेपाम से जल गये है। और उसकी आखो की पलकिया भी इतनी बुरी तरह झुलस गयी है कि वह आँख बन्द नही कर पाती। जब उसके सोने का वक्त होता है तो उसके सम्बन्धी उस कम्बल म ढक देते है। इस महिला क दो जवान बच्चे

भी उसी बमबारी म दूसी की आखा के मामने जल मर—और गांव के दूमर पाच बच्चे भी उसने जलते देखे थे ।

(न्यूयार्क टाइम्स 5 सितम्बर, 1956।)

लेकिन हवाई हमलो म ता निर्दोष नागरिक मरते ही हैं पर इस लडाई म अमरीकी आफिसरा को कहते सुना जाता है

"गाली मार दो मैं कुछ भी जीवित रेंगता नही देखना चाहता।"

और जवान दागते जाते हैं मशीनगनें खेता म धान बोते बच्चा स्त्रियो पर, छप्पर म बठे बूढे पर और पालने मे पडे शिशुओ पर, शान्ति की उपासना मे ध्यानस्थित बौद्ध भिक्षुआ पर।

वियतकाग के लडाक स्वयसेका को गावा के खेत और जगलातो मे रन बसेरा मिलता है। वे जनता के हैं और जनता की स्वतत्रता व रक्षा के लिए लड रहे है। वे जनता के अपने बच्चे हैं और इसलिए वियतनाम का हर घर छप्पर उनके अपने घर हैं। सारा वियतनाम दक्षिण वियतनाम 'वियतकाग' बनकर खडा है दुधष और अमरीकियो को अज्ञात और इसीलिए अजेय। तभी तो अमरीका को मिटाना पड रहा है—हर गांव खेत जहा से 'शत्रु को रसद मिलती है। पर दिन म खेता म काम करती लडकियां ही तो वियतनाम की लडाकू स्वयसेविकाएँ है। घरो के खलिहानो म पडी फसल के धान के मुह खुल हैं स्वतत्रता के लडाके गौव के छोकरो के लिए। और गाव के लोकगीतो म और प्रेम गीतो म स्वतत्रता सग्राम की जात जग रही है। जनक्रान्ति को मिटाने के लिए सारे वियतनाम को ही मिटाना होगा और इसी आतकवाद का मशीनी कम्प्यूटरी हिसाब वाशिंगटन स चलाया जा रहा है।

'अगर किसान अपने गाव म रहता है—तो उम्मीद है कि वह गोला बमा से मारा जाय। अगर वह भाग तो आग बढती सनिक टुकडी उसे भून देगी क्योकि वह डरकर भागता हुआ वियतकाग है।

फिर उस किसान के हाथ म बदूक का होना या कि किसी तरह की युद्धात्मक हरकत करना अमरीकी गाली खाने के लिए जरूरी नही। (लकिन इसी तरह गोरे अमरीकी अपने घर म काला व रड इण्डियना के साथ बरताव करते हैं। अमरीका म पुलिस गोली पहले चलाती है और बात पीछे पूछती है। उन्ह आत्मरक्षा का भय है। और क्योकि वह डरपोक है इसीलिए अधिक हिंसक व खूखार।)

मलकाम ब्राउन ने एसी ही एक और आंखों-देखी घटना का वणन किया है

—(अमरीकी टुकडी गाव की ओर बढ रही थी सगीनें ताने)

अचानक कोई पचास गज की दूरी पर सामने एक आदमी दीखा वह भाग

खड़ा हुआ, जंगल की ओर। चारों ओर से हमारी मशीनगनों, राइफलों, रिस्तोलों टामीगनों की गड़गड़ाहट से गाँव गूँज उठा। उसकी ओर गोलियाँ बरस रही थीं—पर वह भागा जा रहा था। कब तक? मैं—। आखिर टुकड़ी को जाकर उसकी तलाश करने का हुक्म मिला जिसे हमने गोलियों की बौछार में गिरते देखा था।

हम उसे पीठ के बल गारे में पड़ा मिला—चार गोलियाँ से उसका ऊपरी नंगा सीना छिदा हुआ था। खाली काला जाँघिया पहना हुआ था उसने। अभी भी उसमें जान थी हाथ-पाँव हिल रहे थे और उसका मर जाना पीछे झाँक रहा था। उसके मुँह पर खून था। टुकड़ी ने नीचे झुककर देखा—ठहाका मारकर हँस पड़े—

शायद करुणा की भावना में याकि केवल नंगी क्रूरता से एक फौजी ने एक बड़ी-सी पट्टी उठा ली और उसका एक हिस्सा उसके गले के पास गारे में गाड़ दिया। फिर दूसरे हिस्से को घायल की गर्दन पर दबाकर दम घोटने लगा। वह अभी भी हिल रहा था। दूसरा सैनिक दूसरे छोर पर बूट से उछला ताकि गर्दन टूट जाय। लेकिन लकड़ी टूट गयी। एक दूसरे ने घायल की गर्दन को बूट से दबाकर काम पूरा करने की कोशिश की। लेकिन घायल में जीने की तड़प अभी भी बाकी थी। आखिरकार, (अमरीकी) टुकड़ी के जवान जोर से हँसकर अपनी राह पर आगे बढ़ गये।

—दो स्त्रियाँ दोनों ने काला पाजामा और ब्लाऊज पहना हुआ एक झोपड़े से दौड़ी आयीं। एक ने घायल को पहचाना और शोर में मुँह पर हाथ रखा—कि वह उसका पति है। झोपड़े में झपटकर लौटी और एक बाल्टी लेकर उसमें धान के खेत से मैला पानी भर लायी। पति का मस्तक गोद में लेकर उसके जख्मों पर जमे खून को गदले पानी से धोने लगी। कभी कभी वह उसके माथे को सहलाती और कुछ अस्पष्ट-सा बोलती। कोई दस मिनट बाद वह मर गया। विधवा निस्तब्ध थी और पति की निष्प्राण आँखों को उसने ढक दिया था।

धीरे से उसने निगाह उठायी और सैनिकों की ओर देखा, और फिर मुझे घूरते पाया। उसकी प्रश्नवाचक निगाह मुझ पर टिक गयी थी। वे आज भी मुझे कचोटती है—अमरीकनो अमरीकनो! क्या हो गया है तुम्हें वियतनाम में?'

(द फेस आफ वार पृष्ठ 5–6)

लेकिन अमरीकी लेखकों को पत्र-पत्रिकाओं में विचार लिखने और बोलने की स्वतन्त्रता है। जबकि अमरीका के उपनिवेश दक्षिण वियतनाम में अमरीका की आलोचना या कि शान्ति की बात करना मना है। मानो कि वियतनाम के लोगों को उचित अनुचित का ज्ञान न हो। अमरीकी पत्रकार श्री मैल्कम ब्राउन ने जिस आतंकपूर्ण स्थिति का वर्णन किया है उसकी निजी अनुभूति हुई है एक युवा कवि श्री त्रिन कोंग सोन की कविताओं और लोकगीतों में हुई है। श्री सोन की कविताएँ लाखों में बिकी हैं। लेकिन उनकी रचनाओं पर साम्यवादी और बागी कहकर सैगोन शासन ने पाबन्दी लगा दी है और स्वयं श्री सोन की हत्या करा दिये जाने की अफवाह है।

**वियतनामियों के प्रेमगीत**

मेरा एक प्रेमी है जो मर गया
अशाउ के युद्ध में।
मेरा भी एक प्रेमी है जो मर गया
असावधानी से सटे हुए घाटी में।
जो मर गया नंग बदन
पुलिया के नीचे बटुआ लिए मन में।
मेरा एक प्रेमी है जो मर गया
चाउ में (माई लाई में)।
मेरा एक प्रेमी जो मर गया
कल रात एक भयानक मौत।
किसी के लिए नफरत न दो बोल
बिन बोल।
स्वप्नवत शान्ति, मुर्दा लेटा रहा।

—युवाकवि त्रिन कोंग सोन

(जिनके लोकप्रिय युद्ध विरोधी गीतों की एल्बम लाखों में बिक चुके हैं किन्तु सैगोन के शासन ने उनको बगावती कहकर पाबन्दी लगा दी है।)

उपनिवेशवादी देशों ने सदा से प्रजातन्त्र के ऊँचे सिद्धान्तों की दुहाई देकर निर्धन उपनिवेशों के लोगों को दबाया है। ब्रिटेन जब भारत में राष्ट्रीयतावादी लेख लिखने या भाषण देने के लिए तिलक, गांधी व जवाहरलाल नेहरू को 6-6 साल का कारावास देता था तब उन्हीं की राजधानी लन्दन के हाइड पार्क पर श्री कृष्ण मेनन अंग्रेजी साम्राज्य की खुलकर निन्दा कर सकते थे। बल्कि वे सेंट पेंक्रास क्षेत्र नगरपालिका के सदस्य भी चुने गये थे। अंग्रेजी साम्राज्य को उखाड़ फेंकने की बात भारत अफ्रीका आदि ब्रिटिश उपनिवेशों में जहाँ बगावत मानी

जाती थी इंग्लैण्ड में उसे 'अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य' कहा जाता था।

आज अमरीकी साम्राज्यवाद में भी यही होता है। अमरीका में लाखों लोग युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन कर सकते हैं। दर्जनों पुस्तकें और सैंकड़ों लेख आये दिन इस युद्ध और अमरीकी सरकार के खिलाफ प्रकाशित होते हैं किंतु अमरीका के उपनिवेशों में दक्षिण कोरिया फारमोसा, ग्वाम माइक्रोनेशिया द्वीपसमूह पोर्टो रीको पनामा और दक्षिण वियतनाम में लेखकों बुद्धिजीवियों व समाचारपत्रों तथा विश्वविद्यालयों पर सेंसर है। किसी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में शान्ति की बात करना अमरीकी नीति की आलोचना करना अथवा राष्ट्र की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था में सुधार की बात करना 'राष्ट्र द्रोह है उसे साम्यवादी बगावत' कहकर लेखकों को जेलों में डाल दिया जाता है।

दक्षिण वियतनाम के अनेक विद्वान् लेखक, कवि तथा बौद्ध भिक्षु जिन्होंने अमरीकी युद्ध से असहमति प्रकट की है—आज हजारों की संख्या में जेलों में बिना मुकदमा चलाये नजरबन्द हैं या कि देश निष्कासित कर दिये गये हैं। ऐसे ही हजारों में है एक बौद्ध भिक्षु श्री त्रि क्वांग जो वर्षों से सगोंव शासन और युद्ध का विरोध करने के कारण नजरबन्द हैं। उन्हीं के सहयोगी भिक्षु थिक नात हान्ह देश निष्कासित हैं और युद्ध विरोधी जनमत तैयार करने के आरोप में विदेशों के दौरे कर रहे हैं। अमरीका में इस लेखक को भिक्षु नात हान्ह की एक सभा का सभापतित्व करने का अवसर मिला था। उन्होंने सभा में बताया कि किस प्रकार वियतनाम की किसान बालाओं को जिनके घर गांव व खेत उजड़ गये हैं अमरीकी सैनिक अड्डों के इर्द गिर्द फले वेश्यागारों में काम करना पड़ता है ताकि वे धान खरीदने के पैसे कमा सकें। अनेक ऐसी लड़कियों को शरीर बेचकर अपने अनाथ परिवार का पालन करना पड़ता है। और जिस देश का किसान विश्व की अंतर्राष्ट्रीय मण्डियों में रबर, तेल, धान, चाय का निर्यात करता था आज अपनी लड़कियों की रोजी से विदेशों से आयात हुए अमरीकी अनाज को खाकर जीने की कोशिश कर रहा है। भिक्षु नात हान्ह ने धीरे धीरे बड़ी शान्त आवाज में बोलते हुए कहा

> 'दनांग की एक वेश्या अमरीकी सैनिकों से इतना कमा लेती है कि चार व्यक्तियों को खिला सके जबकि एक मजदूर स्वयं अपना ही पेट नहीं भर सकता।'

और सगोंव शासन और अमरीकियों में जैसा भ्रष्टाचार चल रहा है उसकी कहानियाँ सुनायीं जिनके शरणार्थी शिविरों में रह रहे शरणार्थियों तक को लूटा जा रहा है। भिक्षु के भाषण के बाद एक अमरीकी श्रोता ने पूछा लेकिन अगर हमारी फौजें वियतनाम से निकल आवें तो कम्युनिस्ट सारे दक्षिण वियतनाम

का हडप लेंगे और आप सबका कत्ल आम कर दिया जायगा। फिर क्या आप चाहते हैं कि युद्ध रुक जाय और अमरीकी समर्थन छोड जायें ?

बौद्ध भिक्षु ने बडी गम्भीरता से किन्तु दृढता से उत्तर दिया कि वियतनाम के लोग आपस में एक-दूसरे से कैसा सलूक करते हैं यह हमारा घरेलू मामला है। आपकी सरकार को इसमें हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं। फिर थिक नात हान ने समझाया कि "वियतनाम की जनता को एक शान्तिवादी संस्कृति विरासत में मिली है। हम शान्तिप्रिय लोग हैं और इसलिए अगर किसी भी पार्टी ने हिंसात्मक नीति अपनायी तो जनता उसका समर्थन नहीं करेगी। रक्तपात बहुत हो चुका। हमारा देश युद्ध से ऊब चुका है। लेकिन किसी सम्भावित वियतकांग के रक्तपात के बहाने अमरीकियों ने द्वितीय महायुद्ध से भी तिगुना अधिक खून वियतनाम में बहा दिया है। क्या आप सचमुच यह मानते हैं कि वियतकांग इतनी अधिक बमबारी करके स्वयं ही अपने देश को उजाड डालेगा।'

1963 में अमरीकी समर्थित डिक्टेटर डियेम के जुल्मों से तंग आकर जब दक्षिण वियतनाम की जनता ने 'डियेम हटाओ' का आन्दोलन चलाया वह सर्वथा शान्तिपूर्ण था। हजारों लाखों नागरिकों ने हुए, समर्थ और कवागनी म सगोय शासन और अमरीकी नीति के खिलाफ प्रदर्शन किये। फलस्वरूप अमरीकी अधिकारियों ने भयानक दमनचक्र चलाया। डियेम ने हजारों शान्तिवादी वियतनामियों को जेलों में बन्द कर दिया—जिनमें छात्र छात्राएं, बौद्ध व कैथोलिक भिक्षु, मजदूर नेता, बुद्धिजीवी, कवि-लेखक, किसान, सभी शामिल थे। वे 'वियतकांग' के सदस्य न थे। वे थे दक्षिण वियतनाम के नागरिक और उनका अपराध था अपने ही देश में न्याय व शान्ति की मांग करना।

1965 में, बौद्ध भिक्षु नात हान ने पश्चिमी देशों की यात्रा कर लन्दन, पेरिस, रोम, न्यूयार्क में शान्ति के समर्थन में प्रचार किया और 1966 में अमरीका से (वियतनाम लोटस इन ए सी आफ फायर) अर्थात 'वियतनाम एक कमल आग के समुद्र में' नामक पुस्तिका प्रकाशित की। कई पश्चिमी देशों में इसके अनुवाद छप चुके हैं और स्वयं अमरीका में 50 000 से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं। लेकिन दक्षिण वियतनाम में लेखक और उसकी पुस्तक दोनों पर पाबन्दी है। फिर भी 1 00 000 से ज्यादा प्रतियां गुप्त रीति से छापकर वियतनाम में घर घर में पढ़ी जा रही हैं। भिक्षु नात हान के अनुसार 2 00 000 से अधिक लोग—अधिकांश में बौद्ध संघों के स्वयंसेवक व धर्मगुरु आज दक्षिण वियतनाम में नजरबन्द हैं।

'लाखों अमरीकियों के लिए और वाशिंगटन के नेताओं के लिए वियतनाम युद्ध का उद्देश्य साम्यवाद के फैलते प्रभाव को नष्ट करके उसके तथाकथित आक्रमण से एक छोटे एशियाई देश को बचाना है। जबकि

वियतनाम के लिए समस्या है सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय स्वतंत्रता और आर्थिक विकास की। इन समस्याओं के साथ हमारे लोगों को मिल जुलकर काम करना है। बम गिराने से हमारी कठिनाइयाँ और बढ़ती हैं उनका समाधान नहीं होता।'—बौद्ध भिक्षु नात हान्ह की घोषणा है। उनका कहना है कि

> मैं एक बौद्ध भिक्षु हूं, कम्युनिस्ट नहीं हूँ। मुझे मालूम है कि कम्युनिस्ट शासन तंत्र में मुझे कठिनाइयों का सामना करना होगा लेकिन अगर आज मैं इस प्लेटफार्म पर एक वियतनामी कम्युनिस्ट के साथ खड़ा होऊँ तो अमरीकियों को हम दोनों का एक ही जवाब होगा हमारे आपसी मतभेद हमारा घरेलू मामला है तुम्हें हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं।

भिक्षु नात हान्ह के गुरु हैं दक्षिण वियतनाम के शक्तिशाली धर्माचार्य भिक्षु थिक त्रि क्वांग जिन्होंने 1963 में डियम के विरुद्ध जनता को संगठित किया था और 1968 में टट' प्रत्याक्रमण के समय जब ह्वे की पुरानी राजधानी पूर्णतया मुक्त हो चुकी थी भिक्षु त्रि क्वांग और उनके संघ ने राष्ट्रीय संग्राम में महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया था। बाद में अमरीकियों ने सारे नगर पर भयंकर गोलाबारी करके नगर के बौद्ध मन्दिरों तक को नष्ट कर दिया और धर्माचार्य को अज्ञात स्थान पर नजरबन्द कर दिया गया। सगान के अधिकारियों का कहना था कि भिक्षु त्रि क्वांग को स्वयं उनकी ही सुरक्षा के लिए ह्वे से अन्यत्र सुरक्षित जगह पर ले जाया गया है।

धर्माचार्य त्रि क्वांग की एक शिष्या कुमारी काओ गाक फूआंग ने जो सगान विश्वविद्यालय में वनस्पति शास्त्र (बोटनी) पढ़ाती हैं मार्च 1967 में विश्व के शान्तिवादी दलों को एक अपील भिजवायी थी। इस अपील पर 59 प्राध्यापकों और छात्र प्रतिनिधियों के भी हस्ताक्षर थे। जिनमें एक थी 33 वर्षीया कुमारी फाम थी माई। जब उनकी अपील का दुनिया के शक्तिशाली राष्ट्रों पर कोई प्रभाव न पड़ा तो युद्ध की ज्वालाओं में अपने राष्ट्र को बचाने की उद्दाम भावना से कुमारी माई ने 16 मई 1967 को शांति के समर्थन में अमरीकी नेताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए, सगान के एक चौराहे पर पेट्रोल उँडेलकर स्वयं को जला डाला। इस आहुति देने से पहले कुमारी माई ने प्रेसिडेण्ट जानसन के नाम सगान स्थित अमरीकी राजदूत एल्सवर्थ बंकर के द्वारा एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था

> 'हमारे देश के बहुसंख्यक लोग अमरीकियों से बुरी तरह नफरत करते हैं क्योंकि उन्हीं के कारण हमारे देश पर वर्तमान युद्ध की यातनाएँ थोपी गयी हैं।

तुम अमरीकियों ने लाखों टन बमों और डालरों की मार से हमारी राष्ट्रीय आत्मा और शरीर को तहस-नहस किया है।

कुमारी फूआग ने जो कि कुमारी माई की घनिष्ट मित्र थी, 'न्यूयार्क टाइम्स' (मई, 17 1967) के संवाददाता श्री एप्पल से एक भेंट में कहा कि यदि यह युद्ध और अधिक चला तो डर है कि जहाँ लाखों की जानें जायेंगी उसके साथ ही हमारे प्यारे देश की संस्कृति और मानव मूल्यों का भी विनाश हो जायेगा।

बड़ी ही निर्भीकता के साथ सगोंव विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका कुमारी फूआग ने कहा कि वे और उनके सहयोगी इस युद्ध से सहमत नहीं हैं। हम सगोंव के शासन के लिए लड़ने में कोई लाभ नहीं दीखता। अमरीका की लड़ाई हम क्या लड़ें ? और थ्यू व की ने वियतनाम के किसानों के हित में किया ही क्या है ? कम्युनिस्टों से अधिक वे देश को क्या दे सकते हैं ? दक्षिण वियतनाम के जवान इसीलिए रणक्षेत्र में नहीं टिक पाते क्योंकि उनके पास वह सच्चाई नहीं है जिसकी रक्षा के लिए कोई जान देता है।

और कुमारी फूआग ने उस पश्चिमी साम्राज्यवादी सच्चाई की ओर संकेत किया जिसे अमरीकी नेताओं ने बराबर भुलाना चाहा है :

> उत्तरी वियतनाम और वियतकाग के साथ कोई विदेशी सैनिक नहीं लड़ रहे हैं लेकिन हमारे साथ (दक्षिण वियतनाम) इतने सारे (उस समय 5,00,090 से अधिक) हैं। वियतनाम की बहुसंख्यक जनता फ्रांसीसी उपनिवेशवादियों और हमारे अमरीकी 'मित्रों' में कोई अन्तर नहीं देखती और बहुसंख्यक वियतनामियों को प्रेसिडेण्ट जानसन (अब निक्सन) की सच्चाई पर भरोसा नहीं कि वह इस भयानक युद्ध का अन्त करना चाहते हैं।

उन्होंने आगे बताया कि उनके बहुत-से मित्र अमरीकी नीति से तंग आकर वियतकाग के साथ जा मिले हैं। कुमारी फूआग के मत में वियतनाम की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए वियतकाग के अलावा कोई और दूसरा उपाय नहीं है। शान्ति के लिए यह आवश्यक है कि मुक्ति मोरचे से तुरन्त समझौता वार्ता शुरू हो और ऐसा तभी सम्भव है जबकि सगोंव में भ्रष्ट सैनिकों को शासन के स्थान पर सम्मानित नागरिकों की शान्तिवादी सरकार स्थापित होने दी जाये। लेकिन अफसोस अमरीका ऐसा नहीं करने देगा। कुमारी फूआग एक सम्पन्न परिवार की महिला हैं और सगोंव सरकार में उनके सगे-सम्बन्धी ऊँचे पदों पर हैं। उन्हें विश्वविद्यालय में एक विशेष भाषणमाला देने को आमन्त्रित किया गया था। जब वे हवाई अड्डे पर उतरीं—उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और तीन दिन तक नजर

कैदा में रखा गया। उन्हें बताया गया कि उनकी गिरफ्तारी का कारण है कि वे भिक्षु नात हान्ह की शांतिवादी पुस्तक 'वियतनाम : एक कमल आग के समुद्र में लिए घूमती है' जो 'बगावती' है।

तीन दिन बाद उन्हें सगाव लाया गया और तीन दिन जेल में रखने के बाद उन्हें सगाव पुलिस के सर्वोच्च चीफ, ब्रिगेडियर जनरल न्गुयन न्गोक लोन के सामने पेश किया गया।

जनरल लोन ने कुमारी फूआंग से मांग की कि वे उन्हें विश्वविद्यालय को पत्र लिखकर वहां भाषण देना अस्वीकार कर दें। इस मांग के ठुकरा देने पर जनरल लोन ने मांग की कि एक शर्त पर उन्हें जाने दिया जा सकता है कि वे वहां किसी से राजनीति पर बातचीत न करें और न ही किसी पगोडे (बौद्ध मन्दिर) में जायें; और नियम से स्थानीय पुलिस से सम्बन्ध रखें ताकि सरकार को उनकी गतिविधियों का पता रहे।

कुमारी फूआंग ने कहा कि वे एक स्वतन्त्र देश की स्वतन्त्र नागरिक हैं और यदि उन्हें नागरिक स्वतन्त्रता नहीं मिलेगी तो वे ह्वे नहीं जायेंगी। और फूआंग ह्वे नहीं गयीं किन्तु सगाव में सरकार के सफेदपोश गुप्तचर उन पर बराबर निगाह रखते हैं।

अमरीका ने अक्तूबर 1967 में आम चुनावों का नाटक रचा था। और थ्यू का विरोध करनेवाले एकमात्र उम्मीदवार टूआंग दिन्ह त्जू थे जो कि सगाव के एक बड़े धनीमानी वकील थे चुनाव में शान्ति के नाम पर खड़े हुए थे। बड़े लोकप्रिय होने पर भी 'प्रेसिडेण्ट' पद के 11 उम्मीदवारों में 18 प्रतिशत मत से वे दूसरे नम्बर पर रहे। निस्सन्देह थ्यू विजयी रहे। त्जू ने चुनाव पद्धति की आलोचना में कहा था कि "बिना बेईमानी किये थ्यू को 10 प्रतिशत से अधिक वोट नहीं मिल सकते। यह चुनाव धोखा है।"

फलस्वरूप त्जू को अस्पताल से उठाकर गिरफ्तार कर लिया गया और 5 साल के कठोर कारावास की सजा देकर सगाव से 80 मील दूर कोले पाली भिजवा दिया गया है।

एक दूसरे शांतिवादी प्रतिद्वन्द्वी सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री डा० न्गोक आंग थान्ह को जो दो-तीन बार सगाव के अर्जेन्टमण्डल में मन्त्रिपद पर रह चुके हैं—गिरफ्तार कर लिया गया। डा० थान्ह को लम्बे अर्से बाद इस शर्त पर रिहा किया कि वे सपरिवार देश छोड़ जायेंगे। अब वे हजारों अन्य निष्कासित देशवासियों की तरह सपरिवार पेरिस में रह रहे हैं क्योंकि दक्षिण वियतनाम में शांति व न्याय की बात करनेवालों के लिए कोई जगह नहीं है।

दक्षिण वियतनाम के काले पानी को कहते हैं डेविल्स आइलण्ड—भूना का द्वीप जोकि तट से 80 मील दूर समुद्र में एक छोटे द्वीप 'कोन सान' पर है।

लापरवाही से घर मक्ती है इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

इससे भी अधिक एक बड़े लोगों को नजरबंद करने का प्रभाव होता है आम जनता का आतंकित हो जाना। और शासन व्यवस्था पर इसका दुष्प्रभाव पड़ता है—रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार में बढ़ोतरी से। छोटे छोटे सरकारी अफसरान भी छोटे छोटे लोगों को वियतकांग का एजेंट यानि कम्युनिस्टों का सहायक कहकर उनसे पैसे ऐंठने की हरकतें करते है और पारिवारिक एवं धर्म व जाति की साम्प्रदायिक शत्रुता का बदला वियतकांग और कम्युनिस्ट शत्रुओं की हत्या करके लिया जाता है।

कुमारी फूआंग का न्यूयार्क टाइम्स को दिया गया वक्तव्य —कि इस युद्ध स्थिति से दक्षिण वियतनाम का सांस्कृतिक व राष्ट्रीय व्यक्तित्व नष्ट हो रहा है इसी तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं जिसका प्रमाण हम सगाव शासन के दमनचक्र की उक्त घटनाओं से मिलता है। ये घटनाएं उस स्थिति की ओर संकेत करती है जहां के वातावरण में बुद्धिजीवियों कवि-लेखकों विचारकों धार्मिक नायकों धर्मगुरुओं और राजनीति में रुचि रखनेवालों को नागरिक स्वतंत्रता के मूलभूत अधिकारों का प्रयोग करने पर जेल जाना पड़ता है यानि देश से निष्कासित किया जाता है। यानि उन्हें सी० आई० ए० के एजेंट किसी वियतकांग कम्युनिस्ट की गोलियों से मरवा डालते हैं।

1968 फरवरी के टेट प्रत्याक्रमण के समय वियतकांग के स्वयंसेवक सैनिकों ने जनता की राष्ट्रीय भावना का सहारा लेकर 140 शहर गांव और कस्बों को मुक्त करा लिया था। अमरीका की प्रतिक्रिया थी हर उस मकान गांव और शहर को जिस पर मुक्ति मोरचे का झण्डा फहराता हो बमों से मिट्टी में मिला दो। स्वयं सगाव शहर के एक बड़े व्यापारिक इलाके चोलोन पर वियतकांग का अधिकार हो चुका था और मुक्ति मोरचे की स्वतंत्र सरकार का शासनतंत्र दैनिक जीवन की व्यवस्था व नियंत्रण चलाने लगा था। ह्वे की पुरानी राजधानी में भी ऐसा ही हुआ। लेकिन फिर अमरीकी बमवारों ने ग्वाम जापान फिलीपीन और थाईलैंड से उड़ानें भरनी शुरू की और बम बरसा-बरसाकर चोलोन (सगाव) और ह्वे के ऐतिहासिक नगरों को जमींदोज कर डाला। सैकड़ों निरीह नागरिकों की स्त्री पुरुषों और बच्चे-बूढ़ों की जानें गयीं और लाखों बेघरबार हो गये। लेकिन एक अमरीकी कमाण्डर ने डींग मारते हुए कहा

इन नगरों को प्रजातंत्र के लिए सुरक्षित रखने के लिए यह जरूरी था कि हम बमों से मिटा दें।

स्फोटक अस्त्र

वियतकांग के अस्तित्व को नष्ट करने के उद्देश्य से जिन क्षेत्रों में मुक्ति मोरचे

का प्रभुत्व है, वहाँ अमरीकी और उनकी मित्र फौजो ने घरा सेता और खलि हानो को नष्ट करने की नीति अपनायी है। शुरु म यह काम दक्षिण वियतनामी और दक्षिण कोरियाई भाडे के फौजियो से लिया जाता था। लेकिन क्योंकि वे लोग दिल मे काम नही करते और इसलिए विनाश उतना प्रभावकारी नही हो पाता था। 1966 के बाद अमरीका न वीर सिपाहियो न स्वय अपने हाथो स विनाश करना शुरू कर दिया है। नई याजना के अन्तगत वियतकाग प्रशासित इलाका को नक्शा पर बमबारी के लिए निशान लगाकर 'फ्री-बोमबिंग जोन' लिख दिया गया है। अर्थात अब उन क्षेत्रो पर कोई भी बमबार जब चाहे जितना चाहे बमबारी कर सकेगा उन्मुक्त बमबारी क्षेत्र की हर चीज और हर जीवित साँस लेती वस्तु शत्रु है और उस बिना कारण, बिना हुक्म, बिना अनुमति लिये नष्ट किया जा सकता है। घने उपजाऊ जगलो और खेतो को इस याजना के अन्तगत गाली स, गसा स जलाकर राख कर दिया गया है और बमो से शहर के शहर मिटा दिय गय है—और मीलो तक अधजली काली दीवारें खडी हैं—मानो कि गवाही दे रही हो कि जफरसन और अब्राहम लिंकन के देश के लागो न इस देश पर भी प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए 'धमयुद्ध' म इन्सानो की अस्मत स खिलवाड किया है।

सगाँव के पतन की चिन्ता अमरीकियो की नीद हराम किये रहती है। इस लिए सगाव क चारो ओर के घने जगलो को बमो स जलाकर साफ कर दिया गया है। लेकिन इदगिद क किसानो से भी तो खतरा है ही। इवनिंग स्टार (वाशिंगटन से प्रकाशित) 6 जनवरी 1966 म सगाव मे एक रिपोट म बताया गया

'सगाव के पश्चिम म वकापूर्वी नदी के दक्षिण म समतल भूमि पर जो घन और लहलहात खेत ह उन्ही का 173वी हवाई (एयरबोन) ब्रिगड के परा टूपरो न अपनी स्वोच्छ अथ योजना का खास निशाना बनाया ह। जले हुए मकानो के खण्डहर म ब्रिगड क बहादुरो न अपना कम्प लगाया और उनक कम्प के 2 मील क अहाते म कोई भी मकान खडा नही रहने दिया गया। जट बमबारो और भयानक तोपो क गोलो की निरन्तर मार म हर एक ढाँचे को जले हुए मलवे म बदल दिया गया है। कोई भी मकान उनकी राह म आया उस जलाकर मिट्टी म मिला दिया गया। अक्सर ये रिहायशी ढाचे घास फूस के छप्पर थे। लेकिन कुछ बडे बहुत बडे भारी लकडियो के बने मकान भी थे जिनके सामन सुन्दर फुलवाडियाँ और बगीचे लगे थे।

अमरीकी पराटूपस न खाना बनान के हर बतन को कुचल दिया केतल के हर खम्भे को काट डाला, और हर दरी, गद्दे और चादर को फाड डाला। पहले 'सिन सी' कम्पनियो के फौजियो का कोई 60 से अधिक स्त्री बच्चे रोते हुए मिले थे। उनक मकान बमो से नष्ट किये जा चुक थ और वे खाइयो के चारो ओर रोत

छिपाते पड़े थे। उन्हें हेलिकाप्टरों में नदी के उत्तर में वाओ टाई जिले में पुनः स्थापित करने के लिए भिजवा दिया गया था।

इलाके के प्राय सभी वयस्क पुरुष नदी, नालों, नहरों और गन्ने के खेतों में छिपे होंगे ताकि वे आगे बढ़ते अमरीकी सैनिकों की राह में सुरंगें बिछा दें और छुपकर उन पर गोलियाँ बरसायें। इस जिले के कमिश्नर के अनुसार नदी के दक्षिण में रहनेवाला हर व्यक्ति वियतकांग है। या तो ये हम पर गोलियाँ चलाते होंगे या फिर खाइयाँ खोदते होंगे। एक अमरीकी सैनिक ने कहा—जबकि वह एक गड्ढे से दूसरी गड्ढे की ओर बढ़ा। मकानों के इर्द गिर्द और खेतों में, नहरों के आसपास बमबारी से सुरक्षा के लिए ऐसी खाइयाँ चारों तरफ खुदी हुई थीं। कुछ सालों पुरानी (फ्रांसीसियों के समय की) और बहुत-सी हाल की बनी।

अमरीकी सैनिक इस इलाके में कुछ समय और रहेंगे ताकि इस उजड़ (स्कोर्च्ड अर्थ) क्षेत्र का विस्तार किया जा सके। क्योंकि जब हम इस इलाके को छोड़ देंगे, वियतकांग फिर लौटेंगे। वे उसे फिर आबाद करेंगे, फिर से छप्पर बनायेंगे, मिट्टी के बरतन तैयार करेंगे, फिर से मुर्गियाँ पाली जायेंगी, खाइयाँ खुदेंगी और खेत फिर से जोते जायेंगे।

कप्तान हेनरी टकर ने टिप्पणी करते हुए कहा, अगर हम वियतकांग को फिर से घर खड़े करने और खेत जोतने में उलझाये रखें तो उसे हम पर गोली चलाने का मौका ही नहीं मिलेगा।

सेंट लुइस पोस्ट डिस्पेच के संवाददाता ने सगाव से 5 मार्च 1966 को निम्न दर्दनाक रिपोर्ट भेजी

घास फूस के छप्परों में लाल आग तेजी से फैल गयी। अमरीकी फौजों ने घर के उस भाग पर जहाँ अभी आग नहीं जल रही थी हाथ की ,जलती मशाल फेंक दी और लपकती हुई लपटों की असह्य गर्मी से बचने को पीछे हट गये। घर की जलती हुई छत खाली फर्श पर धूल उड़ाती धसक गयी। और आग की लपटें तेजी से निगल गया घर के इष्ट देवता को। बौद्ध धर्म ग्रंथों के कुछ पृष्ठ धीरे धीरे धूएँ में सिमके से फिर भभककर प्रदीप्त हो उठे। पूर्वजों—बाप दादा की लटकी तस्वीरों के शीशे पहले चटके फिर गर्माहट में टूटकर गिर पड़े। और फिर स्वयं चित्र भी अदृश्य हो गये।

वे कहते हैं कि यह एक वियतकांग का घर है। युद्ध की वजह से इसे और इसके आसपास के घरों को नष्ट कर दिया गया है। गाँववाले चाहे जो महसूस करें किन्तु वियतकांग ने इसी गाँव से सगाव की सरकारी सैनिकों पर गोलियाँ चलायी हैं।

कितने वियतकांग मारे जाते हैं या कैद होते हैं—इसका प्रतिदिन हिसाब लगाया जाता है। अमरीकी और उनकी मित्र सेनाओं में कितने मरे और हताहत

हुए या लापता हैं इसकी भी गिनती रखी जाती है। लेकिन कितने वियतनामी नागरिक मारे गये, हताहत हुए, लापता हैं और पिछले 10 सालो म कितन घर (और गाँव) जलाकर नष्ट कर दिये गये हैं—इसका सही-सही अनुमान कोई नहीं लगा सकता।

कुछ लोगा का अनुमान है कि 1,00 000 नागरिक मार गये हाग। लेकिन वे घर बार और उजडे लोगा की तादाद सन 1966 के शुरू म 1,30,00 000 से अधिक कूती गयी है। दक्षिण वियतनाम के नागरिका की यातनाएँ आधुनिक युद्धा म सबसे अधिक हैं।

वियतकाग का दावा है कि उनके और दक्षिण वियतनाम की जनता के बीच मछली-जल का रिश्ता है। और अमरीकी जनरला का कहना है कि अगर जरूरी हुआ तो हम उस जल को ही जला देंगे जिसम मछली जीवित रहती है। और इस लिए स्वोप्ड अथ नीति को अमल म लाया जाता है। घटनाक्रम इस प्रकार है—

वियतकाग की एक सशस्त्र टुकडी किसी जिले मे पहुँचती है। उस इलाके पर सारी रात तापा से गाले बरसाये जाते है। फिर बमबारिया हाती ह। तब भोर स पहले ही हलिकाप्टरा से एक बटलियन या और अधिक अमरीकी गाव के बाहर उतरते हैं। यदि ग्रामीण घरा म रहते हैं ता गोला और बमा से मारे जाते है। अगर वे खेता व जगला म भागते हैं ता अमरीका के बहादुर सिपाहिया की मशीन गना और ऊपर उडते हलिकाप्टरा की स्वयचालित मशीना की गोलिया और राकेटा स भून डाले जाते है। सेंट लुइस नगर के पोस्ट डिस्पेच के सवाददाता ने ऐसी ही एक लडाई का आखो देखा हाल इस प्रकार वर्णित किया था

'—अमरीकी सेना एक शत्रु गाव स गुजर रही थी। कुछ दूर खेत म स एक किसान उठा और सात्वना भरे भाव से उसने हाथ हिलाकर अमरीकिया का अभिवादन किया। एक अमरीकी सनिक न तुरत गोली दाग दी और दो और सनिका ने उसका साथ दिया। दूसरे साथिया न इन तीना के निशानेबाजी का जहाँ मजाक उडाया—किसान न अपना छतरीनुमा हैट एक ओर फेंकते हुए झाडिया से सगीन उठा ली और सुरक्षा के असफल प्रयत्न से पहले अमरीकिया पर गोलिया बरसायी और धराशायी हो गया।

बेचारे ग्रामीणा का शत्रु का नाम देकर उनके गाव को हवाई हमला तोपा और मार्टारा से उजाड दिया जाता है।

जब किसी गाव के खिलाफ अमरीकी फौज सनिक कार्रवाई करती है—तो उसका मतलब होता है—कि हर स्वस्थ पुरुष को गिरफ्तार कर लेना, गोलीबारी से बचे स्त्री-बच्चा को शरणार्थी कम्प म भिजवाना और गाँव की भैसा को और जानवरा को लूट लेना और गाली मार देना धान के खलिहाना का नष्ट करना बिखेर देना और रौंद डालना एव पशुआ के चारा भूसे का, ग्रामीणा के छप्परा को

जला डालना। क्योंकि इन सबका उपयोग वियतकाग भी कर सकते हैं। मलयशिया में 20 साल पहले अंग्रेजों ने भी ऐसा ही किया था। और स्वयं अमरीका में रेड इंडियनों के खिलाफ गोरे अमरीकनों ने भी यही किया था जो आज वे वियतनाम में कर रहे हैं। अंतिम लक्ष्य यही है कि जनता को इतना अधिक आतंकित किया जाये जिससे कि वियतकाग को सफलता की कभी कोई आशा न रहे। गांवों से उन्हें खाना न मिले पनाह न मिले और उनके साथ अमरीकियों से लड़ने के लिए स्वयंसेवक न मिलें। और वे अल्पसंख्यक लोग जो स्वार्थवश स गाँव में अमरीकी शासन का समर्थन करते हैं—गाँवों से हटाकर वियतकाग के प्रभाव से दूर कहीं सुरक्षित इलाकों में बसा दिये जाते हैं।

बुलडोजरों से मीलों के मील जंगलों गावों और ऊबड़-खाबड़ खेतों को सपाट कर दिया गया है। बांसों के जंगलों रबर के पौधों और गन्ने के खेतों को उजाड़ दिया गया है। और प्रजातंत्र की रक्षा के इस महान ऐतिहासिक प्रयत्न में ग्रामीणों को अपने पूर्वजनों की उस थाती से सदा के लिए अलग किया जा रहा है—जहाँ पर उनके पितरों की समाधियाँ बनी हैं—जो कि उनके बौद्ध धर्म विश्वासों के अंतर्गत दैनिक जीवन में विशेष महत्त्व रखती हैं।

सबसे भयावह विनाश अमरीकी वायुसेना ने किया है और सैनिक दृष्टि से लगता है कि कोई और चारा ही नहीं है क्योंकि वियतकाग व्याप्त है ऐसे सुदूर स्थित ग्रामीणों में जो दक्षिणी पूर्वी एशिया के घने जंगलों व पहाड़ों के दुर्गम्य व दुर्भेद्य प्रदेशों में बसे हैं।

साधारणतया 300 से अधिक दैनिक हवाई हमले दक्षिण वियतनामी ठिकानों पर किये जाते हैं। वियतकाग के सम्भावित सैनिक अड्डों अथवा उनसे प्रभावित संदिग्ध इलाकों पर बमों नपामों और तोपों से गोले बरसाये जाते हैं। लेकिन वियतकाग का सम्भावित केन्द्र यानि संदिग्ध प्रभाव क्षेत्र का अर्थ है दक्षिण वियतनाम का अभागा कोई भी गाँव और उसमें रहनेवाले निरीह किसान-स्त्री पुरुष बूढ़े-बच्चे और उनकी मुर्गियाँ भैंसें और धान के खेत-खलिहान।

अमरीकी सेना ने जनवरी 1967 में सीडर फाल्स नामक एक बड़ा सैन्याभियान किया था जिसका उद्देश्य लाहे का त्रिकोण नामक 60 वर्गमील के क्षेत्र को वियतकाग के लड़ाकों से साफ करना था। 'न्यूयार्क टाइम्स' के संवाददाता ने 29 जनवरी 1967 के अंक में उस बहुदिन हमले का वर्णन इन शब्दों में किया है

पिछले बृहस्पतिवार को आपरेशन सीडर फाल्स समाप्त हुआ जिसका उद्देश्य था उस क्षेत्र को तहस-नहस कर डालना जहाँ कि वियतकाग को आराम और पनाह मिलती है। यह सैनिक अभियान (आपरेशन) सैगोन से 30 मील उत्तर पश्चिम में करीब 60 वर्गमील का क्षेत्र है जिसे लोहे का त्रिकोण कहा जाता है

जिसम रबर के बागान हैं घनी झाडियाँ है और धान के खेत हैं।

इस इलाके के सभी गावो को जला डाला गया और फिर बुलडोजरा स उन्हें समतल बना दिया गया। 6,000 लोगा का जिनम कुछ को छोडकर प्राय स्त्रियाँ बच्चे और वृद्ध थे बमबारी का डर दिखाकर स्थानन्तरित शरणार्थी कैम्पा म भिजवा दिया गया।

रबर के खेता को जलाकर भस्मसात कर दिया गया है ताकि वियतकाग की हरकता को खुले म देखा जा सके। जगह-जगह हेलिकाप्टर उतारने के प्लेटफाम तयार किये गये हैं जहाँ कि जरूरत पडने पर तुरत ही फौजें उतारी जा सकें।

वियतकाग के गुरिल्ला सनिका न पिछले 20 सालो म इस इलाके मे जमीन के भीतर खाइयाँ खोद रखी थी। (हजारो वियतकाग स्वयसेवक यहा ट्रेनिंग व विश्राम पाते थे।) उन खाइया म शत्रु के दस्तावेज पाये गये है और खदकों को उडा दिया गया है।

3 709 टन चावल पकडा गया है जो कि 10 000 आदमियो को 1 साल तक खिलाने के लिए पर्याप्त है। 9 000 पौण्ड नमक भी हाथ लगा है और 720 शत्रु मार गय है।

प्रेक्षका का विचार है कि विमानो से रासायनिक छिडकाव करके—जो कि चुपचाप अर्से से चलता रहा है—एक ओर वनसम्पदा को साफ किया जा रहा है दूसरी ओर 'सीडर फाल' की स्कोच्ड अथ कारवाई अपनाकर अमरीका ने एक युद्धनीति अपनायी है जिसका उद्देश्य है कि वियतकाग को देहाता की सहायता से वचित करने के लिए देहाता को ही मिटा दना।

एक और अमरीकी पत्रकार ने 24 माच, 1967 को दक्षिण वियतनाम के गिआउ दिह' नामक स्थान से अमरीकी सनिक कारवाई का आखोन्देखा वणन करते हुए लिखा

—एक वियतनामी ग्रामीण महिला न बाहुओ मे रोते बालक की उपेक्षा की और अमरीकी सनिका की ओर उग्र क्रोध से घूरा। सनिक बदूका से उसकी बतखा और मुगिया का गोलिया से मार रहे थे। दूसरे सनिका ने उसकी भसा को और घर के पालतू कुत्त का गालिया दाग दी।

उसक पति पिता और जवान लडके को पकडकर ले गये और सब सामान सहित घर के छप्पर को आग लगा दी गई। आग की ज्वाला न लील लिया सब कुछ—पितरो क श्राद्ध का पूजास्थल भी।

अमरीकी सनिका को हुक्म मिला हर चीज को मिटा दो जिसका वियतकाग इस्तेमाल म ला सकता है।

—वियतकाग के लिए कुछ मत छोडना—न खाना, न छप्पर। सब नागरिको

को यहा मे हटा दो ताकि वियतकाग को कोई सहायक (स्वयसेवक) न मिल सके।

—100 वर्गमील के क्षेत्र को इसी प्रकार साफ कर दिया गया है।

"अगर कही मेरी पत्नी देख ले जो मैं यहाँ कर रहा हूँ—तो बेहोश हो जायेगी।' एक अमरीकी सनिक ने कहा बूढे चार्ली (वियतकाग) को मारना और बात है। पर कुत्ते के पिल्लो और मुर्गी-बत्तखा के बच्चा को मारना—कुछ और। एक दूसरे अमरीकी पत्रकार ने सगाँव के दौरे पर एक उच्च सनिक अधिकारी से युद्ध स्थिति पर बातचीत करते हुए पूछा "आपके विचार म इस युद्ध का हल क्या हो सकता है ?

उसने बडे उदास मन से कहा—आतक, वियतकाग न आतक द्वारा स्थानीय जनता का सहयोग प्राप्त किया है। यानि कम-से-कम उनका विरोध खत्म कर दिया है। हम (अमरीकिया) को उसस भी अधिक इतना आतक फलाना चाहिए कि लागा को इसका एहसास हो जाय कि उनका हित इसी म है कि वे हमारा साथ दें। जो भी गाँव सगाँव के प्रति दोस्ती का भाव न दर्शाय उसे बमा और राकेटा से उडा देना होगा।

और इस लडाई म एक अमरीकी सनिक किसी झोपडे को इसलिए आग लगा देता है कि उसकी निगाह म वह वियतकाग का हेडक्वाटर या खिलायी पन्ता है।

19 सितम्बर 1968

(न्यूयार्क टाइम्स मगजीन)

सागव हाम्म-आ बाजा लाग माई माई-लाई 1 2 3-अनगिनती-गाँव और जिन हैं समस्त वियतनाम क जिन्ह अमरीकी जट बमवारा ने गिरा डाला है। सयुक्त बमवारी स वियतनाम क पहाडा को रत म बदल दिया गया है और हजारा टन रासायनिक का विमाना म छिडककर जगला का नष्ट कर दिया गया है। गैंडा हाथी भम उन्मुक्त लगूर व वनमानुष हिरण वगर सब मिटा दिये गय हैं वियतनाम म। क्याकि रामायण की वानरसना सी अमरीकिया का विश्वास था कि वियतकाग जगली जानवरा का शस्त्र चलान की ट्रेनिंग द रहे है और हाथिया का सामान क काम ला रह हैं। वियतनाम का उपजाऊ भूमि बजड हो गयी है और हा टूट हुए हवाई जहाज व टुकड ध्वस्त टक मनुष्या और पशुआ क अनगिनती कंकाल चारा आर जहाँ-तहाँ बिखर पड हैं। भूँकत हुए पागल कुत्त और बीयर क खाली टिन और कोकाकोला की खाली बोतला म भर हैं लाखो करोडा गड्ढे—जिन्हें अमरीका क बमा न अनायास खोद डाला है वियतनाम की धरती का चक्कर।

अमानवीयता क्रूरता और हृदयहीनता का जो नग्न ताण्डव अमरीका न

वियतनाम म किया है उसका पूरा लेखा तो किसी भी मानव की लेखनी की शक्ति स पर है किन्तु अमरीका का एक सम्पादकीय इस युद्ध क अनेक पक्षा पर बडी सजीदगी से प्रकाश डालने म समथ हुआ है और हम उसे यहाँ उद्धत करत हैं —

'सम्पादकीय और सम्पादक के नाम पत्र। सम्पादकीय अमरीकी युद्ध के मैदान म वियतनाम युद्ध पर आज तक लिखे हमारे सम्पादकिया स कही अधिक प्रभावपूण और शब्द चित्र खीचन म समय सम्पादक के नाम आया एक पत्र है जिसे आज हम इस पष्ठ पर छाप रहे हैं। हमार नगर क एक नौजवान की प्रतिक्रिया जिसने अपने देश की सेवा के लिए सनिक वर्दी पहनी—।

हत्या व विनाश का जो साहारिक चक्र चलाने का सनिक आदश उसे मिला उससे उसकी अन्तरात्मा म विक्षोभ और वेदना भडक उठी है। यह एक पिता की भी चिट्ठी ह जो एक ओर अपनी राष्टभक्ति और दूसरी आर बाध म बँटा है कि उसक जवान लडके को ऐसे घिनौने कृत्य म डाला गया है।

और एक 16 वर्षीय बहन जिसे विश्वास नही होता कि उसी का बडा भाई निरीह निशस्त्र लोगा का कत्लेआम कर रहा होगा। इसी तरह सयुक्त राज्य अमरीका शष दुनिया की रक्षा कर रहा है? यह पत्र पढिय—और आसू बहाइय।

श्री सम्पादक जी

वियतनाम से हाल ही म मुझे एक पत्र मिला है जिसके कुछ निम्न अश आपका भेज रहा हूँ —

मरा बेटा सेना म भर्ती हुआ था और उसने वियतनाम भेजे जाने की स्वय माग की थी। वह हमारी सरकार की वियतनाम नीति का बडा समथक था—कम-से-कम स्वदेश छोडने तक पिछल नवम्बर म। मेरा विश्वास है कि जो कुछ उसने यहाँ लिखा है उसमे आपकी और आपके पाठका की रुचि हागी

प्रिय माताजी और पिताजी

आज हम एक मिशन पर गय और मैं लज्जित हूँ स्वय पर अपन मित्रा पर और अपन देश पर। हम जा भी झापडी दिखाई दी उसका आग लगा दी।

वहा देहाती गाँवा का एक जमघट-सा था और लोग आपका विश्वास न आयेगा कि कितन गरीब थे। हमारी टुकडी ने उनकी जा कुछ भी थोडी-सी चीजें थी उनको लूट और आग लगा दी। मैं सारी स्थिति का विस्तार स समझाने की कोशिश करूगा।

कुछ बुदबुदाया और लपका मेरे साथी की ओर और खन्दक की ओर। एक दूसरे साथी ने पूरी स्थिति को न समझते हुए फुटवाल की तरह ठोकर लगाकर बूढ़े को रोक लिया और उधर साथी ने खन्दक में हथगोला फेंक दिया। (पिन खींचने के बाद हथगोले के फटने में कोई चार सेकिण्ड का अन्तर होता है।)

उसने जब हथगोला फेंका और (इन चार सेकिण्ड के अन्तर में) हम सुरक्षा के लिए दौड़े खन्दक में हमें एक बच्चे की चीख सुनाई दी। लेकिन तब हम कुछ भी नहीं कर सकते थे। गोला फट चुकने के बाद हमें खन्दक में पड़े मिले एक माता, दो बच्चे (आयु करीब 6 और 12 एक लड़का एक लड़की) और एक नवजात शिशु। तो वह बूढ़ा आदमी यही हमें बताने की कोशिश कर रहा था! खन्दक छोटी और तंग थी। वे सब लाशें आपस में सटी पड़ी थीं। हम तीनों ने उन लाशों को ऊपर झोंपड़े के फर्श पर खींच लिया।

दृश्य बड़ा बीभत्स था। बच्चों के कोमल शरीर चिथड़ा चिथड़ा हो गये थे और क्षत विक्षत होने से पहचाने नहीं जा सकते थे। हमने (अमरीकियों ने) एक-दूसरे की ओर देखा और झोंपड़े को आग लगा दी।

वह बूढ़ा आदमी पागलों की तरह बुदबुदा रहा था अपने जलते झोंपड़े के पास मानो कि उसे विश्वास नहीं हो कि एक पल में उसका सर्वस्व लुट चुका है। हमने उसे वहीं खड़ा छोड़ दिया और आगे बढ़ गये।

मेरी अन्तिम दृष्टि थी एक बूढ़ा एक बूढ़ा आदमी, फटे मैले कपड़ों में लिपटा जलते हुए छप्पर के सामने भगवान बुद्ध की प्रार्थना में घुटने टेके। उसके चाँदी-से सफेद बाल हवा के झोंके में इधर-उधर उड़ रहे थे और उसके झुर्रीदार गालों पर आँसुओं की धाराएँ आगे बह रही थीं।

हम चलते रहे, फिर आगे जाकर हम तीनों (सैनिक) अलग-अलग हो गये। सामने कुछ दूरी पर एक झोंपड़ी दिखाई दी। मेरी टुकड़ी के कप्तान ने मुझे आर्डर दिया कि 'जाओ उसको नष्ट कर दो।' एक अधेड़ सा आदमी झोंपड़े से बाहर निकला।

मैंने सावधानी से जाँच-पड़ताल की कि कोई आदमी तो उसके भीतर नहीं है। फिर मैंने अपनी माचिस निकाली। वह अधेड़ मेरे पास आया और हाथ जोड़कर विनती करने लगा। वह हाथ जोड़े बराबर सर झुकाता था।

वह कितना दुःखी था उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। वह

वाला कुछ नही। वस मर मुआक्र विनती करता रहा कि उसका छप्पर न जलाऊँ। हम दाना थ यहाँ उस जगह अजन। और, पिताजी, वह आपकी ही उमर का रहा होगा। मैंन झिझकत हुए झापड को माचिस दिखा दी और भारी कदमा स अपनी टुकडी म लौट आया।

पिताजी मैं उसकी ओर मुँह उठाकर नही दख पा रहा था। फिर भी मैंने मुँह फरकर देखा। काश कि मैं दहाड मारकर रो पाता लकिन अब मैं रो भी नही सकता।

मैंन अपनी रायफल फेंक दी और जलती झापडी की ओर लपका। और मैंन वह सब कुछ बचान की कोशिश की जो कुछ बचा सकता था— फूस को धधकती आग स बचाया धान का सामान कपड वगरह।

वाद म उस अधेड न मरा हाथ अपन हाथ म थाम लिया और सिर झुकाकर मरे हाथ म बार-बार अपन मस्तक को छुता रहा।

अब हमारे गाव (कम्प) की ओर मशीनगनें चल रही हैं। और जबकि मैं यह लिख रहा हू हम पर हमला हो रहा है। मुझ अवश्य जाना चाहिए।

अगले दिन अब सब कुछ शान्त है। वह कोई खास हमला न था। मामूली-सी गोलाबारी। लकिन फिर भी मुझे देर रात डयूटी पर जागना पडा। खर, पिताजी आप जानना चाहते थे कि यहाँ (वियतनाम) म कसा लगता है। अब आपको यहा की स्थिति का कुछ अनुमान होगा।

मेरा लेख ठीक नही बन पडा। क्षमा करना। मैं कुछ भावुक अधिक हो उठा था और शायद कुछ सहम भी गया था।

आपका बेटा

यूयाक टाइम्स 18 अगस्त, 1967

हमने उस गाव क हर मकान को जला डाला है। वियतकाग याद रखेगा हम उनके यहा आन से डरत नही।

लेफ्टिनेण्ट विलियम बिशप आयु 26 वष शिकागो निवासी न कहा हमन 14 टन चावल नष्ट कर दिया। 53 मकान जला डाल और 14 सुरंग नष्ट कर दी 6 नौकाएँ डुबो दी।

इस लफ्टिनण्ट ने कहा।

दक्षिण वियतनाम के राष्टीय सग्राम के सेनानियो के सघटन वियतनाम को नष्ट करन के लिए जहा अमरीकियो ने वियतनाम की जन-जाति वन सम्पदा प्राकृतिक व सास्कृतिक वातावरण को ही समाप्त कर डालन की क्रूर नीति

अपनायी है वहाँ अपनी जनता और अपने देश को भयंकर विनाश से बचाने के लिए वियतनाम ने एक नयी नीति का सहारा लिया है और वह है ठहरो मत। शत्रु के ठिकानों पर हमला बोलो। उसे मिटा दो, और अदृश्य हो जाओ। क्योंकि एक जगह जमे रहने का मतलब है बमबारी से मिटा दिया जाना और वियतनाम के पास न वायुसेना है और न ही जलसेना।

फरवरी 1968 के टेट प्रत्याक्रमण के अंत में दक्षिण वियतनाम के दो तिहाई भाग पर मुक्ति मोर्चे का अधिकार हो चुका था। किंतु उसके बाद अमरीकियों द्वारा अपने क्षेत्रों को विनाश से बचाने के उद्देश्य से उन्होंने उन्हें खाली कर दिया। लेकिन वियतनाम की जड़ें बहुत गहरी हैं। वे जनता के हैं जनता के लिए हैं और जनता में हैं। इसीलिए उनका भूमिगत शासन बराबर सक्रिय है और वे जब चाहें तब अमरीकी ठिकानों पर हमले कर सकते हैं। नूरेम्बर्ग अंतर्राष्ट्रीय सैनिक न्याय संविधान जिसके अंतर्गत जर्मन और जापान के सैनिक अधिकारियों को उनकी अनुपस्थिति और उनके बिना जाने भी उनके आधीन सैनिकों द्वारा किये गये अपराधों के लिए दोषी ठहराकर प्राणदण्ड दिया गया था उसी न्याय संविधान में में कहा गया है

"—नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार—युद्धबंदियों के साथ दुर्व्यवहार पीड़ा देना किंवा उनकी हत्या—गाँवों कस्बों और नगरों का मनचाहा विध्वंस करना—किसी नागरिक के साथ अमानवीय व्यवहार—को अंतराष्ट्रीय सैनिक न्यायालय में युद्धकालीन अपराध माना जायगा।

लेकिन इतने अधिक प्रमाणों के प्रकाशित होने के बावजूद जबकि दुनिया हर कोने में लोगों ने माइ लाई के सचित्र प्रमाण देखे हैं—एक भी अमरीकी सैनिक या कमाण्डर को निश्शस्त्र निरीह नागरिकों की हत्या दुर्व्यवहार यानि उनके जान माल को आग लगाने के दोष में सजा नहीं दी गई। इसी स्थिति पर न्यूयार्क टाइम्स के एक सम्पादकीय ने कहा

माई लाई के हत्याकाण्ड में—जिन्होंने भाग लिया उनमें से कुछ थोड़े ही—केवल 13 सैनिकों और अफसरों के विरुद्ध शुरू में कारवाई की गयी थी। उनमें से भी केवल लेफ्टिनेण्ट कैली को दोषी माना गया और जब स्वयं प्रेसिडण्ट (निक्सन) के हस्तक्षेप से उसकी सजा को भी घटाकर मात्र 20 साल के (साधारण) कारावास में बदल दिया गया है।

(न्याय के इस नाटक से) सेना विभाग या उसके सर्वोच्च सेनापति (प्रेसिडेण्ट) का मान नहीं बढ़ता। बल्कि इससे एक बार फिर अमरीका के इरादों के प्रति संदेह उठता है कि कहाँ तक अमरीका अंतराष्ट्रीय युद्ध नियमों का पालन करने को तैयार है। एक ओर तो लेफ्टिनेंट कमाण्डर एंथानी हबट को वियतनाम में निरीह लोगों पर सैनिकों द्वारा आये दिन

किय जा रहे अत्याचारा को रुकवाने के अधिकारिक प्रयत्न करने के लिए वियतनाम स हटाकर रिटायड किया जा रहा है और दूसरी ओर दोषिया का बरी किया जा रहा है।

—न्यूयार्क टाइम्स, शुक्रवार, 24 सितम्बर, 1971

लगता ऐसा है जिस देश की जनता स्वय ही अशान्त हो उससे यह आशा कैसे की जा सकती है कि वह किसी दूसरे के साथ शान्ति से रह सकेगी। आज अमरीका स्वय ही भीतर भीतर सुलग रहा है। यदि उसकी राष्ट्रीय हिंसक प्रवत्तिया को वियतनाम और कम्बोडिया व लाओस सरीखा निकास न मिल तो सम्भव है कि वे स्वय अमरीकी समाज को ही मिटा दें।

लेकिन वियतनाम हिन्द चीन और एशिया के लिए हमारे लिए सवाल अमरीका के पतन और विनाश का नही बल्कि दक्षिण-पूर्वी एशिया के विकास और सुरक्षा का है।

अमरीकियो, अमरीकियो ! तुम्हे वियतनाम म क्या हो गया है !!!

• •

# 11

# अमरीकी साम्राज्यवाद का अन्तिम पडाव
(1964 1972)

## पेरिस मे शान्ति-सम्मेलन

प्रथम अप्रल 1968 को प्रेसिडण्ट जॉनसन द्वारा यह घोषणा किय जान के बाद कि व उत्तरी वियतनाम पर बमबारी को रोकने का हुक्म द चुके हैं—उत्तरी वियतनाम ने पेरिस म शान्ति वार्ताओ मे भाग लेना स्वीकार किया। अब तक राष्ट्रपति हो की सरकार का यही कहना था कि जब तक उनके देश पर हवाई हमल चालू हैं व हमलावरो म किसी प्रकार क समझौते की बातचीत नही कर सकत।

मई म पेरिस म शान्ति-सम्मेलन का सिलसिला शुरू हुआ। कई सप्ताह तक तो सम्मेलन म भाग लेनेवाले पक्षो और टेबल क आकर प्रकार पर ही बहस होती रही क्योकि एक ओर अमरीका केवल उत्तरी वियतनाम को प्रतिद्वन्द्वी मानने को तयार था जबकि उत्तरी वियतनाम सगाव म अमरीकी समर्थित शासन को दक्षिण वियतनाम का प्रतिनिधि न मानकर केवल अमरीका स ही बातचीत करना चाहता था। लम्बी वार्ताओ के बाद यह समझौता हुआ कि मुख्य रूप म केवल दो ही पक्ष रहग अमरीका और वियतनाम (उत्तरी)। लेकिन टेबल क अमरीकी पक्ष की ओर अमरीका और दक्षिण वियतनाम (सैगॉव) के प्रतिनिधि बठेंगे।

दूसरी ओर वियतनाम और नेशनल लिबरेशन फण्ट क प्रतिनिधि दक्षिण वियतनाम की राष्ट्रीय अस्थायी सरकार क रूप म भाग लेंगे। आधिकारिक रूप म अमरीका ने केवल सगौव के शासन को मान्यता दी जबकि उत्तरी वियतनाम न केवल मुक्ति मोरचे को ही दक्षिण का सच्चा प्रतिनिधि माना। 1968 72 के बीच पेरिस म शान्ति का विवाद चलता रहा। उधर जानसन न उनकी वियतनाम युद्ध

नीति का देश विदेश में प्रबल विरोध होने के कारण फिर से चुनाव में न खड़े होने का निश्चय किया और रिचर्ड निक्सन 1969 में अमरीका के प्रेसिडेंट चुने गये। कोई 50 000 से अधिक अमरीकी वियतनाम में मारे जा चुके थे और 2 00 000 से अधिक हताहत हुए। हजारों लापता थे यानि युद्धबन्दी बन चुके थे।

उत्तरी वियतनाम की विमानभेदी तोपों ने 6 000 से अधिक अमरीकी जेट मार गिराये थे और सैकड़ों अमरीकी हवाबाज उसके कब्जे में आ चुके थे। दक्षिण वियतनाम में भी लगभग 4 000 हेलिकाप्टरों को मुक्ति मोर्चे के सैनिकों ने नष्ट कर डाला था। फलस्वरूप अमरीका में रोष और विक्षोभ बढ़ता जा रहा था और उत्तरी वियतनाम में बन्द हवाबाजों की पत्नियों ने अमरीका में आन्दोलन शुरू किया कि किसी भी प्रकार उनके पतियों को वापस लाया जाय। उत्तरी वियतनाम ने मानवीय भावना का परिचय देकर कुछ बन्दियों को रिहा भी किया और अमरीकी शान्तिवादी कार्यकर्ताओं के हाथों युद्धबन्दियों की पत्नियों को सन्देश के पत्र भिजवाये। साथ ही उत्तरी वियतनाम ने कुछ ऐसे भी सुझावों का स्वागत किया कि यदि निक्सन वियतनाम से अमरीकी फौजों को पूरी तरह हटा लेने की तारीख निश्चित कर दें तो वे अमरीकी बन्दियों को रिहा कर देंगे। लेकिन वाशिंगटन सरकार ने ऐसा न करके सैनिकों को धीरे धीरे हटा लेने की घोषणा की। और युद्ध कारवाइयों के वियतनामीकरण की नीति अपनायी। इसके अन्तर्गत सैगाव शासन द्वारा 10 00,000 गरीब दक्षिण वियतनामी नागरिकों को जबरन्स्ती सेना में भरती करके अमरीकी फौजियों के स्थान पर लड़ाई का भार सँभालने को विवश किया गया।

एक ओर अमरीकी सैनिकों की संख्या घटाने की घोषणा की जाने लगी तो दूसरी ओर—कम्बोडिया लाओस और दक्षिण उत्तर वियतनाम में अमरीकी हवाई हमलों की संख्या 12 000 प्रति माह से बढ़ाकर औसतन 25 000 प्रति माह कर दी गयी। अमरीकी सैनिक मशीनरी अब दक्षिण वियतनाम से लाओस और कम्बोडिया में भी सक्रिय हो गयी।

फरवरी 1971 के पहले सप्ताह प्रेसिडेण्ट निक्सन के आदेश पर 30 000 से अधिक अमरीकी व सैगांव के सैनिकों ने टैंकों और जेट बमवारों और हेलिकाप्टरों की सहायता से लाओस के दक्षिणी भाग पर आक्रमण किया। राष्ट्र संघ के महामन्त्री श्री ऊथान्त ने कहा इस हमले से 1962 में हुए जेनेवा समझौते का उल्लंघन हुआ है। और रूस फ्रांस भारत व चीन ने इसकी भर्त्सना की। लेकिन निक्सन अप्रैल 1970 में कम्बोडिया पर भी ऐसा ही एक हमला कर चुके थे और अब सपूर्ण हिन्द चीन में अमरीका की देखरेख में इन देशों के अल्पसंख्यक सम्प्रदायों व जातियों के लोगों तथा भ्रष्ट एवं स्वार्थी अधिकारियों के बड़े सैनिक संगठन तैयार किये जाने लगे। पिछले 3 सालों में लाखों लोगों को अमरीकी रसद गोला

वाहन नये शस्त्रास्त्रों की ट्रेनिंग देकर उन्हें मनोयुद्ध के तरीकों से साम्यवाद विरोधी प्रवृत्तियों और भावनाओं से भरा जा रहा है।
अप्रैल, 1970 के बाद से निक्सन की वियतनामीकरण नीति के अधीन दक्षिणी वियतनाम में 10,00 000 सैनिक तैयार किये जा रहे हैं।

| | |
|---|---|
| कम्बोडिया में | 5 00 000 |
| लाओस में | 5 00 000 |

गरीब दशा में सामाजिक व आर्थिक 'यथास्थिति' को बनाये रखने और अमरीकी आर्थिक व सैनिक हितों को बनाये रखने के लिए इतनी बड़ी-बड़ी सेनाओं का भार लाद देने का अर्थ होगा कि वे देश पूरी तरह अमरीकी सैनिक सहायता पर आधारित हो जायेंगे। उनका आर्थिक व औद्योगिक विकास नहीं हो पायेगा और लम्बे अर्से तक वे अमरीकी पूंजीवादी व्यवस्था के पुर्जे मात्र बने रहेंगे।

1968 72 तक जबकि अमरीका पेरिस की शान्तिवार्ताओं में भाग लेते रहने का नाटक करता रहा उसने युद्ध विराम का लाभ उठाकर हिन्द चीन के क्षेत्र में और अधिक सैनिक तैयारियां की और सी० आई० ए० की सहायता से इस बात के पूरे यत्न किये कि कम्बोडिया और लाओस की तटस्थतावादी शासकों को पलटकर अमरीकी समर्थक सरकारें स्थापित की जायें। फिर जब उनकी सेनाएँ अमरीकी सलाहकारों के अधीन बड़े-बड़े शस्त्रास्त्रों से लैस हो चुकें तब अमरीकी परिस में वियतनाम से सेनाएँ हटा ले जाने को तैयार हो जायेंगे। इसी बीच सैनिक दृष्टि से पूरे हिन्द चीन और दक्षिणपूर्व एशिया में उसने हवाई अड्डों का जाल बिछ चुका होगा। इस प्रकार पेरिस की शान्तिवार्ता अमरीका की सैनिक तैयारियों के लिए समय पाने की चाल सिद्ध हुई।

लेकिन उत्तरी वियतनाम और दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे को इन चालों का पता था। उन्होंने अपने राष्ट्र निर्माण और सैनिक तैयारियों में कमी न आने दी। साथ ही साथ लाओस और कम्बोडिया में भी उन देशों के मुक्ति मोर्चा ने देशभक्तों और वामपंथी तत्वों के संयुक्त मोर्चे द्वारा अमरीकी हमलों और योजनाओं को विफल करने की कोशिशें की। मुठभेड़ें चलती रहीं और अमरीका के खुले और गुप्त हवाई हमले व सैनिक कारवाइयां भी होती रहीं।

पिछले 20 वर्षों में युद्धरत होकर भी उत्तरी वियतनाम ने एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय प्रगतिशील समाजवादी शासकीय व्यवस्था में जो चमत्कारी सामाजिक आर्थिक और औद्योगिक विकास दिखाया वह भी स्वयं में एक अनूठी मिसाल है। और इसका प्रभाव पड़ोसी राष्ट्रों के जीवन पर पड़े बिना नहीं रह सकता था। दक्षिण पूर्व एशिया में एक मात्र आधुनिक इस्पात का कारखाना उत्तरी वियतनाम में चीन की सहायता से बनाया गया था। गांव-गांव और शहर-कस्बों में स्कूल और चिकित्सा की सुविधाएँ मुहैय्या की जा चुकी थी। कृषि और भूमि में सुधार किये

गये। नये-नये उद्योग धंधे, मैडिकल कॉलेज और नये राष्ट्र की नयी पीढ़ी तैयार हो चुकी थी जिसने माँ की गोदी में युद्ध और गणतन्त्र का पाठ पढ़ा था। दक्षिण वियतनाम जो 1954 से अमरीकी उपनिवेशवादी, दमन नीतियों के नीचे पिस रहा था, उत्तर वियतनाम की तुलना में पिछड़ चुका था। जो लोग कभी फ्रांसीसी सेनाओं में ऊँचे पदों पर थे वे अब अमरीकी शासन में दक्षिण वियतनाम राज्य के प्रेसिडेण्ट, वाइस प्रेसिडेण्ट और उच्चाधिकारी व नेता थे जिनके प्रति देश की जनता में न श्रद्धा थी न विश्वास। बुद्धिजीवियों और देशभक्तों को हजारों की संख्या में जेलों में नजरबन्द किया जा चुका था। शांति, युद्ध विराम, समझौता या 'तटस्थता' की बात करना दक्षिण वियतनाम में 'कम्युनिस्ट' होने का लक्षण है और इसीलिए देशद्रोह माना गया।

स्कूल और अस्पतालों के स्थान पर दक्षिण वियतनाम में ग्राम नये नजरबन्दी कम्प, शरणार्थी बस्तियाँ और लाखों फौजियों के लिए वेश्यालय। हजारों गरीब अपंग सड़कों पर लोटने लगे जबकि चन्द अमीरों के लड़के अनिवार्य सैनिक भर्ती कानून से बचकर किसी ऊँचे सरकारी पद पर या फिर पेरिस, न्यूयार्क में उच्च शिक्षा पाने निकल गये। सगाँव के वाइस प्रेसिडेण्ट थीयू ने एक प्रेस संवाददाता सम्मेलन में कहा था

> मेरे बैंक में पैसा बहुत जमा हो चुका है। मैं वियतनाम छोड़कर जा सकता हूँ। लेकिन अगर अमरीका हमसे अपना काम करवाना चाहता है तो उसे उसकी कीमत तो देनी ही पड़ेगी।

और सगाँव का शासन ऊपर से नीचे तक भरा गया है भ्रष्ट सैनिक अफसरों से जिनके प्रति दक्षिण वियतनाम के लोगों के मन में नफरत है, घृणा है, भय है और अविश्वास भरा हुआ है। सीनेटर फुलब्राइट ने इसी स्थिति पर बोलते हुए कहा था कि

> राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे की माँग उचित है कि वे सगाँव में हमारे कठपुतली अफसरों से किसी तरह की बातचीत नहीं करना चाहते। सगाँव का शासन हमारी (अमरीका की) सहायता के बिना [redacted] घण्टे से अधिक नहीं टिक सकता।

अमरीका के राजनीतिक सम्बन्धों के सुप्रसिद्ध व्याख्याकार श्री जेम्स रेस्टिन ने भी इस स्थिति पर टिप्पणी करते हुए लिखा था

> हमारा हाथ बढ़ा था एक वैधानिक सरकार की रक्षा के लिए। लेकिन सगाँव न तो वैधानिक है न वहाँ कोई 'सरकार' है। हमने वचन

दिया था दक्षिण वियतनाम की सहायता का, उसे मिटा देने का नहीं।'

'यूयार्क टाइम्स'

18 मई 1966

## निक्सन की वियतनामीकरण नीति

अमरीकी शासकों को इस बात का एहसास है कि उनकी सेनाओं के हटते ही इस क्षेत्र के लोग भी उत्तरी वियतनाम का ही अनुसरण करना चाहेंगे और फलस्वरूप यथास्थिति कायम नहीं रह सकेगी। फलस्वरूप अमरीकी हितों का राष्ट्रीयकरण होगा और अमरीकी माल के बाजार खत्म हो जायेंगे। उत्तरी वियतनाम की विकासोन्मुखी आर्थिक व्यवस्था तेजी से पनपेगी और कुछ ही सालों में पूर दक्षिण-पूर्व एशिया की मण्डियों में अमरीकी माल की तुलना में सस्ता और अच्छा उत्तरी वियतनाम में बना सामान बिकने लगेगा। वर्तमान में दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में उनकी आवश्यकता का 85% प्रतिशत से अधिक लोहा टीन व मशीनों का निर्यात जापान अमरीका तथा पश्चिमी पूंजीपति देशों से होता है। अमरीकी सैनिक सत्ता के हट जाने के बाद इन पूंजीवादी देशों को उत्तरी वियनाम और चीन से भी प्रतियोगिता करनी पड सकती है। और इसीलिए उत्तरी वियनाम पर ऐसी भयानक बमबारी का लक्ष्य है—उसकी तेजी से बढ़ती हुई औद्योगिक शक्ति को तहस-नहस कर डालना।

सन 1965 1966 में उत्तरी वियतनाम के बडे-बडे कारखानों और बिल्डिंगों को नष्ट कर डाला गया था और एकमात्र आधुनिक इस्पात के कारखाने को भी बमों से उडा दिया गया था। 1968 में बमबारी के रुक जाने के बाद 2 3 सालों में ही उसका पुनर्निर्माण हो चुका था। मई 1972 में निक्सन के आदेश पर उसको दुबारा नष्ट कर दिया गया है।

वियतनाम अभी भी एक कृषि प्रधानदेश है और उसके पूरे के पूरे सैनिक सुरक्षा के शस्त्रास्त्र चीन, सोवियत संघ तथा अन्य साम्यवादी देशों से आते हैं। ऐसी स्थिति में उसके एकमात्र इस्पात के कारखाने को नष्ट करने का उद्देश्य—स्पष्ट ही सामरिक नहीं है। बल्कि उत्तरी वियतनाम की औद्योगिक क्षमता को मिटाना है।

1972 के शुरू में भी उत्तरी वियतनाम पर घोषित-अघोषित हवाई हमले चलते रहे। और जब-जब पेरिस में वियतनाम प्रतिनिधियों ने इसका विरोध किया तो वाशिंगटन ने उनको प्रोटेक्टिव एक्शन अर्थात 'सम्भावित हमले से पहले ही सुरक्षात्मक कार्यवाही बताया। 1970-1972 के बीच निक्सन की 'वियतनामीकरण नीति' के अन्तर्गत सैगॉव के फौजियों को लेकर अमरीकी कमाण्डरों ने

गय। नय-नय उद्योग धधे मैडिकल बनिज और नाय राष्ट्र की नयी पीढ़ी तयार हो चुकी थी जिसन माँ की घुट्टी म युद्ध और गघप का पाठ पढा था। दक्षिण वियतनाम जो 1954 स अमरीकी उपनिवेशवादी दमन नीतियो क नीच पिस रहा था उत्तर वियतनाम की तुलना म पिछड चुका था। जो लोग कभी फ्रासीसी सेनाओ म ऊँचे पदो पर थे वे अब अमरीकी शासन म दक्षिण वियतनाम राज्य क प्रसिडेण्ट वाइस प्रसिडण्ट और उच्चाधिकारी व नेता थ जिनक प्रति देश की जनता को न श्रद्धा थी न विश्वास। बुद्धिजीवियो और देशभक्तो को हजारो की सख्या म जलो म नजरबन्द किया जा चुका था। शान्ति युद्ध विराम समझौता या तटस्थता की बात करना दक्षिण वियतनाम म 'कम्युनिस्ट होन का लक्षण है और इसीलिए देशद्रोह माना गया।

स्कूल और अस्पतालो के स्थान पर दक्षिण वियतनाम म खोल गय नजरबन्दी कम्प शरणार्थी बस्तियाँ और नाखो फौजियो क लिए वेश्यालय। हजारो गरीब अपग सडको पर लोटने लग जबकि चन्द अमीरो क लडके अनिवार्य सनिक भर्ती कानून से बचकर किसी ऊचे सरकारी पद पर या फिर पेरिस 'यूयाक' म उच्च शिक्षा पाने निकल गये। सगांव क वायस प्रेसिडेण्ट श्री न एक प्रेस सवाददाता सम्मेलन म कहा था

> मेरे बैंक म पसा बहुत जमा हो चुका है। मैं वियतनाम छोडकर जा सकता हू। लेकिन अगर अमरीका हमसे अपना काम करवाना चाहता है तो उसे उसकी कीमत तो देनी ही पडेगी।

और सगाव का शासन उपर स नीच तक भरा गया है भ्रष्ट सनिक अफसरो से जिनके प्रति दक्षिण वियतनाम क लोगो के मन म नफरत है घृणा है भय है और अविश्वास भरा हुआ है। सनटर फुलब्राइट ने इसी स्थिति पर बोलते हुए कहा था कि

> राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे की माग उचित है कि वे सगाव मे हमारे कठ पुतली अफसरो स किसी तरह की बातचीत नही करना चाहत। सगाव का शासन हमारी (अमरीका की) सहायता के बिना छ घण्टे से अधिक नही टिक सकता।

अमरीका के राजनीतिक सम्बन्धो के सुप्रसिद्ध व्याख्याकार श्री जेम्स रस्टिन ने भी इस स्थिति पर टिप्पणी करते हुए लिखा था

> हमारा हाथ बढा था एक वधानिक सरकार की रक्षा के लिए। लेकिन सगाव न तो वधानिक है न वहा कोई सरकार है। हमने वचन

ल्या था दक्षिण वियतनाम को सहायता को, उसे मिटा दने को नहीं।

न्यूयार्क टाइम्स

18 मई, 1966

## निक्सन की वियतनामीकरण नीति

अमरीकी शासकों को इस बात का एहसास है कि उनकी सेनाओं के हटते ही इस क्षेत्र के लोग भी उत्तरी वियतनाम का ही अनुसरण करना चाहेंगे और फलस्वरूप यथास्थिति कायम नहीं रह सकेगी। फलस्वरूप अमरीकी हितों का राष्ट्रीयकरण होगा और अमरीकी माल के बाजार खत्म हो जायेंगे। उत्तरी वियतनाम की विकासोन्मुखी आर्थिक व्यवस्था तेजी से पनपेगी और कुछ ही सालों में पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया की मण्डियों में अमरीकी माल की तुलना में सस्ता और अच्छा उत्तरी वियतनाम में बना सामान बिकने लगेगा। वर्तमान में दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में उनकी आवश्यकता का 85% प्रतिशत से अधिक लोहा, टीन व मशीनों का निर्यात जापान, अमरीका तथा पश्चिमी पूंजीपति देशों से होता है। अमरीकी सैनिक सत्ता के हट जाने के बाद इन पूंजीवादी देशों को उत्तरी वियतनाम और चीन से भी प्रतियोगिता करनी पड़ सकती है। और इसीलिए उत्तरी वियतनाम पर ऐसी भयानक बमबारी का लक्ष्य है—उसकी तेजी से बढ़ती हुई औद्योगिक शक्ति को तहस-नहस कर डालना।

सन् 1965-1966 में उत्तरी वियतनाम के बड़े-बड़े कारखानों और बिल्डिंगों को नष्ट कर डाला गया था और एकमात्र आधुनिक इस्पात के कारखाने को भी बमों से उड़ा दिया गया था। 1968 में बमबारी के रुक जाने के बाद 2-3 सालों में ही उसका पुनर्निर्माण हो चुका था। मई 1972 में निक्सन के आदेश पर उसको दुबारा नष्ट कर दिया गया है।

वियतनाम अभी भी एक कृषि प्रधान देश है और उसके पूरे के पूरे सैनिक सुरक्षा के शस्त्रास्त्र चीन, सोवियत संघ तथा अन्य साम्यवादी देशों से आते हैं। ऐसी स्थिति में उसके एकमात्र इस्पात के कारखाने को नष्ट करने का उद्देश्य—स्पष्ट ही सामरिक नहीं है। बल्कि उत्तरी वियतनाम की औद्योगिक क्षमता को मिटाना है।

1972 के शुरू में भी उत्तरी वियतनाम पर घोषित-अघोषित हवाई हमले चलते रहे। और जब-जब पेरिस में वियतनाम प्रतिनिधियों ने इसका विरोध किया तो वाशिंगटन ने उनको प्रोटेक्टिव एक्शन अर्थात् सम्भावित हमले से पहले ही सुरक्षात्मक कार्यवाही बताया। 1970-1972 के बीच निक्सन की 'वियतनामीकरण' नीति के अन्तर्गत सैगॉन के फौजियों को लेकर अमरीकी कमाण्डरों ने

आर यार उत्तरी वियतनाम म गुप्त सनिक कारवाइयाँ भी की। और 1971 म कम स-कम एक बार खुल रूप म उत्तरी वियतनाम म घुसकर हेलिकॉप्टरा म अमरीकी युद्धबन्दिया का निकाल लान का असफल प्रयास किया गया। उस रात जब अमरीकी विशेष सनिक दस्त हेलिकॉप्टरा म सवार होकर हनाई स केवल 10 मील दूर एक बन्दी कम्प पर उतर तब उन्ह अपन मिशन की सफलता पर पूरा विश्वास था। लकिन उत्तरी वियतनाम की राष्ट्रीय सुरक्षा सनिका की मुस्तदी स उन्ह खाली हाथ न मिली। कम्प पूरी तरह खाली था। इस हमल की तयारी और ट्रेनिंग म कई महीन लग थ और निक्सन का भरोसा था कि व इस तरह स छुडाय गय अमरीकी बन्दिया को अमरीका लाकर अपनी लोकप्रियता को बढा पायेंगे।

सगोव और वाशिंगटन क अधिकारी कवल इन हमलावार कारवाइया स ही सतुष्ट न थ बल्कि आय दिन इस बात के आसार दिखाई देन लग कि किसी भी दिन सगोव क फौजिया को अमरीकी हवाई सना के साथ म उत्तरी वियतनाम पर चढाई करन का हुक्म मिल सकता है। एसी स्थिति म अप्रल 1972 को उत्तरी वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचा—वियतकाग की सनाओ का प्रत्या क्रमण करन का आदश दिया गया और देखत ही दखत एन लाक क्वाग त्री हू और सगोव क इर्दगिर्द क जिला को मुक्त करा लिया गया। सगोव क फौजिया म भगदड मच गयी और हजारा की तादाद म उन्होंने हथियार डाल दिय। और कई हजारा न अमरीकी वर्दिया उतार फेंकी और वियतनाम की राष्ट्रीय सना म जा मिल।

वियतनामी करण नीति की इस भयानक असफलता पर प्रसिडेण्ट निक्सन न खीजकर और अधिक विनाशक शक्ति का प्रदशन किया। 21 फरवरी 1972 को वे पीकिंग म माओत्स तुग स मिल चुक थ और मई क महीने म अमरीकी प्रसिडेण्ट मास्को म क्रमलिन क नताओ स मिलन वाल थ। 8 9 मई को उन्होंन उत्तरी वियतनाम क समुद्री तटा पर सुरगें बिछा दी। सारे देश की रेलगाडिया पटरियाँ और कच्ची पक्की सडका का दिन रात की घमासान बमबारिया स उडा डालन की कोशिशें की गयी। 21 मई को जब व मास्को म रूसी नताओ स मिल रह थे उस समय उत्तरी वियतनाम पर हजारा टन बम बरस रहे थे और उससे एक सप्ताह पहल ही सारे वियतनाम की नाकेबन्दी की जा चुकी थी। और इसी प्रकार निक्सन की पीकिंग यात्रा के दौरान भी उत्तरी वियतनाम को भयकर बमबारी का सामना करना पडा था। जून 1972 के प्रथम सप्ताह तक उत्तरी वियतनाम के हस्पताला स्कूलो गिरजाघरा तथा सभी बड-बडे भवना का ध्वस्त किया जा चुका था। 25 जून 1972 को इस्पात का कारखाना नष्ट करने के बाद 26 जून को अमरीकी फेन्टम जेट बमबारा न थाईलण्ड के अड्डो स उडान

भरकर हनोइ के प्रमुख बिजलीघर को उडा दिया।

उत्तरी वियतनाम की रेल यातायात व्यवस्था को तहसनहस कर डाला गया। उसके छोटे-बडे पुलों को, औद्योगिक केन्द्रों को सैगाव की यूनिवर्सिटी और अपंगों के हस्पताल को उसके बन्दरगाहों को हाईफाम के बन्दरगाह को हजारों, लाखों टन बमों से उडा दिया गया है।

और अब समाचार आ रहे हैं कि फिर अमरीका ने जहरीली गैसों के बमों तथा बीमारियों को फलानेवाले अस्त्रों के परीक्षण भी वियतनाम में शुरू कर दिये हैं। वाशिंगटन के एक सरकारी प्रवक्ता ने स्वीकार किया है कि पिछले कुछ वर्षों में पेंटागान ने वियतनाम में जलवायु युद्धात्मक अस्त्रों के भी परीक्षण किये हैं। इन अस्त्रों से जलवायु में सैनिक आवश्यकतानुसार परिवर्तन लाया जा सकता है। अमरीका ने घनी बारिशें और सूखा लाने के लिए हिन्द चीन में अनेक नये-नये अस्त्रों व यन्त्रों का प्रयोग किया है।

जून 1972 के दिनों में उत्तरी वियतनाम ने कई बार समाचार प्रसारित किये कि अमरीकी विमान बरसाती नदियों के बांधों को नष्ट कर रहे हैं जिनसे उत्तर वियतनाम में लाखों लोगों की जान-माल को खतरा पैदा हो गया है। इसके उत्तर में निक्सन के विशेष सलाहकार हावर्ड यूनिवर्सिटी के भूतपूर्व प्रोफेसर डा० किसिंगर ने एक प्रेस इण्टरव्यू में इस आरोप को झूठा बताया और कहा कि अमरीकी केवल सामरिक महत्त्व के ठिकानों पर ही हमले कर रहे हैं। लेकिन हनोई स्थित स्वीडेन के राजदूत ने एक वक्तव्य में अमरीका की कटु आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से अमरीकी जेटों को बांधों पर बम बरसाते देखा है। अमरीका उत्तरी वियतनाम के आर्थिक व औद्योगिक ठिकानों पर हमले कर रहा है। वास्तव में तो वह उनकी हर चीज को मिटा डाल रहा है ताकि उसका विध्वंस हमेशा के लिए पूरी तरह से कर डाला जाय। लेकिन जहां एक ओर उत्तर और दक्षिण वियतनाम पर नापेवर्षा करके अमरीका हजारों टन बमों से जहरीली गैसों और जलवायु अस्त्रों से इस छोटे-से अभागे देश को उजाडने में लगा रहा—दूसरी ओर पीकिंग और मास्को वाशिंगटन से अपने-अपने सम्बन्ध सुधारने की होड में लगे रहे और उत्तरी वियतनाम के सैनिक और दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मोर्चे के सेनानी अपने राष्ट्रीय सम्मान की लड़ाई के मोर्चे में अमरीकी महाशक्ति को चुनौती देते लड़ाई के मैदानों में अकेले डटे रहे हैं—अजय एवं अपराजित।

डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम तथा दक्षिण की अस्थायी क्रान्तिकारी सरकार की सेनाओं को समूचे वियतनाम की जनता का समर्थन प्राप्त है। इसी-लिए उनके राष्ट्रीय सैनिक—बराबर सैगांव की ओर बढ रहे हैं। हिन्द चीन की जन शक्तियां इतनी सक्षम हैं कि वे जब चाहें सैगाव, नामपेन (कम्बोडिया की

राजधानी) और विएन तिआन (लाओस की राजधानी) को मुक्त करा सकती हैं। किन्तु मुक्त करा लेने के बाद थाईलैण्ड और 7वें बेड़े के विमानवाहकों से उड़कर अमरीकी जैट इन सब नगरों को उनके नागरिकों समेत धूल में मिला देंगे। फरवरी 1968 में समाँव के चोलान भाग को, हुई के ऐतिहासिक नगर को ऐसे ही मिटा दिया गया था। लेकिन हिन्द चीन के एशियाई राष्ट्रीय सैनिकों के पास जल व नभ सेना का अभाव है। और इन्हीं कारणों से अमरीकी सेनाओं को वियतनाम से खदेड़ना कठिन सिद्ध हो रहा है। किन्तु जनता का समर्थन अमरीका के साथ नहीं है—और इसीलिए वह इतना विनाश करके भी वियतनाम को दक्षिण वियतनाम से मिटा नहीं सकता। परन्तु कभी इतिहासकार पूछेगा कि 1972 में सोवियत संघ के जंगी जहाज और वायुसेना के उड़ान कहाँ थे? महाभारत की तरह वियतनाम के देशभक्त अभिमन्यु आज अमरीकी युद्ध्वार मशीनों से घिरे तो खड़े हैं किन्तु महाभारत के अभिमन्यु की तरह वे दबाये न जा सकेंगे। यह उनके इतिहास और असीम सहनशीलता के पराक्रम से स्पष्ट है।

## साम्प्रदायिक मतान्धता

एक अमरीकी प्रोफेसर ने एक बार इस लेखक से पूछा कि—

अगर उत्तर वियतनाम चाहे/तो शान्ति तुरन्त स्थापित हो सकती है। वे ही तो पेरिस में हमारी शर्तों को ठुकराये जाते हैं। जबकि वाशिंगटन बार-बार समझौते की कोशिशें कर रहा है। क्या आप सचमुच समझते हैं कि अमरीका इस युद्ध को चालू रखना चाहता है। और यही बात एक भारतीय जनसंघी नेता ने इस लेखक से कही थी। उन दिनों वे हमारी लोकसभा के सदस्य थे।

हनाई से अधिक शान्ति का आतुर कौन हो सकता है? जिसके घर पर चारों ओर से आग बरस रही हो वह शान्ति नहीं तो और क्या चाहेगा? लेकिन वाशिंगटन को ऐसी किसी आग का खतरा नहीं और लड़ाई चल रही है उसकी सीमाओं से 10 000 मील दूर और उसकी बड़ी बड़ी कम्पनियों का काम बढ़ रहा है। वियतनाम, हिन्द चीन व दक्षिणपूर्व एशियाई देश अब अमरीका के सैनिक व आर्थिक प्रभाव क्षेत्र बन चुके हैं। तो जब तक वाशिंगटन को प्रत्याक्रमण की आँच का खतरा न दिखलायी दे उसे पेरिस में समझौते की उत्सुकता क्यों होगी? और आज जो कुछ हिन्द चीन में हो रहा है (और जो कुछ ही साल पहले इण्डोनेशिया में हुआ जहाँ कोई 10 00 000 लोगों का कत्ल आम हुआ जिन पर कि साम्यवादियों से सहानुभूति रखने का संदेह था) ठीक वही है जिसकी कि योजना अमरीका की नेशनल सिक्यूरिटी कौंसिल ने 1952 में बनायी थी जिसमें कहा गया था कि अमरीका के दक्षिण पूर्व एशिया में आर्थिक व सैनिक हितों की रक्षा के लिए टाकिन पर अधिकार रखना जरूरी है। (देखिये 1952 का दस्तावेज पृष्ठ 30)

वियतनाम की जनता ने 80 साल में अधिक और अकेले ही फ्रांसीसी साम्राज्य-वाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी है। उसके हजारों नौनिहाल इसलिए स्वतंत्रता की वेदी पर बलिदान नहीं हुए कि उनका छोटा-सा देश अमरीकी साम्राज्यवाद के हवाले कर दिया जाये।

हमारे युग की यह एक विशेष देन है कि जब अपने अधिकारों के प्रति सजग लोग संघठित होकर अपनी स्वतंत्रता की माँग करते हैं तब साम्राज्यवाद के विरुद्ध गुरिल्ला जन युद्ध ही एकमात्र उपाय रह जाता है क्योंकि रूस व अमरीका दोनों महाशक्तियाँ एक-दूसरे के विरोध में सीधी कारवाई नहीं करते और ऐसे जनयुद्ध के विरुद्ध दो ही समाधान सम्भव हैं, या तो आक्रान्ता वास्तविकता स्वीकार कर ले कि सारा राष्ट्र उसके खिलाफ है और पीछे हट जाये। और शान्ति और समझौता स्वीकार कर ले। अन्यथा सैनिक परम्परा की सामरिक व्यवस्था को जन-युद्ध के खिलाफ बेकार समझकर अपने 'स्वार्थों को क्षति पहुँचाये बिना यदि सम्भव हो तो सारी जनता का ही सीधा और स्पष्ट सफाया कर डाले। कोई और तीसरा हल नहीं है और जब तक वाशिंगटन के स्वार्थों को क्षति पहुँचने का कोई अंदेशा नहीं तब तक अमरीका शान्ति की चाहना नहीं करेगा। सुप्रसिद्ध दार्शनिक सार्त्र के अनुसार — जबकि अमरीकी सेनाएं पूरी शक्ति के साथ वियतनाम में जम रही हैं भयानक बमबारी और जन-संहार बनाती जा रही है लाओस को अपने अधीन करने की कोशिशें कर रही हैं कम्बोडिया पर आक्रमण कर रही हैं—इस बात में कोई सन्देह नहीं रह जाता कि—अमरीकी सरकार हिन्द चीन में नर-संहार का निश्चय कर चुकी है फिर चाहे वह इस तथ्य को झुठलाने का कितना ही स्वाँग क्या न रचे।'

अमरीकी सरकार की वियतनाम नीति का आधार उसके आर्थिक व सैनिक स्वार्थ हैं किन्तु उसके पीछे जो बौद्धिक व राजनीतिक समर्थन उसे प्राप्त है उसका कारण है अमरीकी जीवन में साम्प्रदायिक मतान्धता की अधिकता। एक बार एक अमरीकी विश्वविद्यालय में दार्शनिक नैतिकता पर बोलते हुए इस लेखक ने कहा था

> हर आस्तिक व्यक्ति धर्मात्मा नहीं होता।
> हर धर्मात्मा आस्तिक नहीं होता।
> हर नास्तिक बुरा नहीं होता।
> हर बुरा व्यक्ति नास्तिक नहीं होता।
> और हर कम्युनिष्ट बुरा नहीं होता।
> हर बुरा व्यक्ति कम्युनिस्ट नहीं होता।

मेरे सेमिनार में कुछ अमरीकी दार्शनिक भी उपस्थित थे। उन्हें मेरे तर्क

मे तो काई शिकायत न थी किन्तु मेरे दो अंतिम उदाहरण वाक्या म काफी कठिनाई महसूस हो रही थी।

इसी प्रकार एक अमरीकी प्रोफेसर न एक बार मुझे टाककर कहा

"आप बर्ट्रेण्ड रसल की बात करते हैं वह तो नास्तिक हैं।

मानो कि भगवान के अस्तित्व म विश्वास न करनेवाले सत्यपरक विचार करने की क्षमता ही नष्ट कर बठते हो और अमरीकियो को यह बात समझ नहा आती कि बौद्ध और जैन दार्शनिक दष्टि म नास्तिक हैं। और एक नास्तिक भी मानवोचित कम करने की क्षमता रखता है।

इसी कारण अमरीका का राष्ट्रीय वाक्य है।

"भगवान म हम विश्वास करते हैं।" (इन गाड व्ही ट्रस्ट)

जबकि निजी जीवन म अमरीकियो का विश्वास भगवान स अधिक डालर और बदूको पर है। और वे इसे अपना धार्मिक कत्तव्य समझते हैं कि डालर व्यवस्था के शत्रुओ को नष्ट कर दिया जाना चाहिए क्योकि व नास्तिक कम्यु निष्ट है। फिर जिस किसीको भी पेंटागान और सी० आई० ए० अमरीका का शत्रु मान ले—वही भगवान और अमरीका का दुश्मन बन जाता है। जिसका अथ होता है कि भगवान की रक्षा के लिए उसके दत्तक पुत्र अमरीका की सुरक्षा तथा अमराका की सुरक्षा का मतलब है—प्रजातन्त्र की रक्षा। और प्रजातन्त्र का अथ है डालर को बढावा और क्योकि अमरीकी राष्ट्र भगवान म विश्वास रखता है अतएव यह उसका धार्मिक कत्तव्य है कि वह भगवान के दिय मिशन को पूरा करे अर्थात सारी पृथ्वी को नास्तिको के चगुल से मुक्त कर दे।

प्रसिडेण्ट जानसन और निक्सन दानो क धार्मिक गुरु है बिली ग्राहम। बिली ग्राहम युद्ध के दिना मे विशेष प्रवचन प्रसारित करके घोषणा करते है कि—

प्रभु यीसू का पुनर्आगम होने वाला है।

तब तक इस पृथ्वी को बचाये रखना हागा। शतान के दूत कहा इस पृथ्वी पर कब्जा न कर लें इसलिए हमे (अमरीकनो) अपने भयानक राकेट तयार रखने होगे। वियतनाम मे विजय हमारी होगी। मिस्टर प्रेसिडेण्ट! हम आपको विश्वास दिलाते है कि हम आपके साथ है।

एक रविवासरीय प्रार्थना सभा म 1966 म इस प्रवचन के समय प्रेसिडेण्ट जानसन उपस्थित थे। और यह मना ध धमप्रचारक प्रेसिडण्ट निक्सन का घनिष्ठ मित्र व गुरु माना जाता है।

1 मई 1972 को जब प्रेसिण्डेट निक्सन ने उत्तरी वियतनाम के समुद्री तटो पर सुरग बिछा देने और हवाई हमला को बढाने का हुक्म दिया उस दिन भी उन्होने प्रजातन्त्र की सुरक्षा और भगवान के नाम की दुहाई दी थी।

इसी प्रकार 1898 में अमरीकी प्रेसिडेण्ट मैकिनले ने जब हवाई, पोर्टोरीको और समोआ द्वीप-समूहों को हड़पने के बाद फिलीपीन पर आक्रमण किया था तब उन्होंने भी भगवान की दुहाई दी थी और कहा था कि भगवान ने ही अमरीकी सैनिकों को मनीला (फिलीपीन की राजधानी) में विजयी बनाया है। फिलीपीन और वियतनाम में काफी समानताएँ हैं।

जून 23, 1898 में फिलीपीन की जनता ने डा० आगिनाल्डो के नेतृत्व में सर्वप्रथम अपने स्वतन्त्र गणतन्त्र की स्थापना की थी। प्रेसिडेण्ट आगिनाल्डो ने एक राष्ट्रीय सेना का संगठन करके अमरीकी सैनिकों को स्पेन की उपनिवेशवादी फौजों के खिलाफ मदद दी थी क्योंकि उनका विश्वास था कि अमरीका फिलीपीन की आजादी में सहयोग देगा। लेकिन अमरीका ने स्पेन को हराकर फिलीपीन पर अपना आधिपत्य जमाया और वहाँ की गुफाओं से गुरिल्ला युद्ध जारी रखा। मार्च 1901 में आगिनाल्डो को धोखे से पकड़ लिया गया, फिलीपीनी गणतन्त्र का पतन हुआ। इस युद्ध में 16 000 फिलीपीन लड़ते हुए मरे और 2 00 000 से अधिक अकाल व महामारियों के कारण मारे गये। करोड़ों की सम्पत्ति का नाश हुआ।

इसी प्रकार डा० हो ची मिन्ह ने भी द्वितीय महायुद्ध के समय वियतमिन्ह राष्ट्रीय सेना का संगठन करके जापानियों को हराने में अमरीकियों का साथ दिया था किन्तु युद्ध की समाप्ति पर अमरीका ने अपनी सैन्य शक्ति वियतनामी स्वतन्त्रता-आन्दोलन के खिलाफ जोड़ दी।

इतिहास इसका साक्षी है कि जब कभी समझौते और युद्ध के बीच का सवाल आया, अमरीकी सरकार ने युद्ध चुना। 1898 में स्पेन स्थित अमरीकी राजदूत द्वारा स्पेन ने वाशिंगटन की शर्त मानकर समझौते की अपील की थी। किन्तु प्रेसिडेण्ट मकिनले ने उसकी नितान्त उपेक्षा करके कप्तान डयूवी को स्पेनिश उपनिवेशों पर हमलों का हुक्म दिया—जिनमें क्यूबा भी शामिल था। द्वितीय महायुद्ध के अन्तिम चरण में जापानी सरकार ने मास्को द्वारा अमरीका को समझौते की शर्त भिजवायी थी, लेकिन प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन की सरकार ने शक्ति के मद में और एटोमिक विनाश के प्रदर्शनार्थ, हीरोशिमा और नागासाकी पर आणविक बम गिराये। अब, वियतनाम में भी ठीक ऐसी ही स्थिति है। पिछले 10 वर्षों से वाशिंगटन ने समझौते के और राजनीतिक हल ढूँढने के हर सुझाव को ठुकराकर युद्ध की आग और वियतनाम के विनाश को बढ़ावा दिया है। अमरीका ने इतिहास का यह पाठ नहीं सीखा कि समझौता से नर-संहार और विनाश की भयंकर पीड़ा से मानव-जाति को बचाया जा सकता है।

प्रेसिडेण्ट निक्सन या किसी भी अमरीकी अधिकारी ने इस बात से इन्कार नहीं किया कि वाशिंगटन ने अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों और कानून की अवहेलना की

है। निक्सन इस बात से भी भली भाँति अवगत हैं कि उनकी 'वियतनामीकरण' की नीति बिलकुल निष्फल रही है। लेकिन न्याय और राजनीतिक हल के स्थान पर अमरीकी प्रेसिडेण्ट, अब अमरीकी मान रक्षा की दुहाई दे रहे हैं और प्रजातन्त्र के पवित्र नाम पर दक्षिण व उत्तर वियतनाम लाओस तथा कम्बोडिया के यमा की आग में झुलस रहे हैं। लगता है कि किसीने निक्सन को पेंटागान के दस्तावेज नहीं दिखाये हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि अमरीका ने वियतनामी जनता की इज्जत से खिलवाड़ किया है। उसी ने जनेवा-संधि को झुठलाया सीटो का सैनिक-संगठन खड़ा किया मिशीगन स्टेट यूनिवर्सिटी की आड़ में सी० आई० ए० द्वारा शिक्षा सामग्री के नाम पर हथियार भिजवाये और डियेम नामक अत्याचारी डिक्टेटर को दक्षिणी वियतनाम पर थापा।

1954 में अमरीकी विदेशमन्त्री डलस ने कहा था कि वे वियतनाम और हिन्द चीन को साम्यवादी प्रभाव में नहीं जाने देंगे और युद्ध के लिए तयार रहेंगे। वियतनामी स्वातन्त्र्य संग्राम के विरुद्ध फ्रांस के सैनिक खर्च का 80 प्रतिशत खर्च अमरीका उठाता रहा और दीयाँ बीयाँ फू के प्रांगण में जब फ्रांसीसियों ने हथियार डाल, अमरीका ने फ्रांस को एटम बम तक देने की तत्परता दिखायी थी। लेकिन जहाँ फ्रांस ने हार मानकर राजनीतिक समझौता करना उचित समझा वाशिंगटन ने युद्ध और विनाश का रास्ता अपनाया।

जेनवा समझौते के अन्तर्गत वियतनाम के दक्षिणी भाग में 1956 में आम चुनाव किये जाने थे जिसके आधार पर वियतनाम का भविष्य निर्धारित होता। लेकिन प्रेसिडेण्ट आइज़नहावर ने स्वयं अपने संस्मरणों में स्वीकारा कि उनकी सरकार ने चुनाव इसलिए नहीं होने दिये क्योंकि उनको यह पता था कि डा० हो ची मिन्ह 80 प्रतिशत के बहुमत से जीत जायेंगे। काश कि वाशिंगटन सरकार ने तब दक्षिणी भाग के जनमत का आदर किया होता तो आज वह अभागा देश युद्ध की ज्वाला में न जलाया जाता और एक संयुक्त स्वतन्त्र एवं सबल वियतनाम हमारे बीच तटस्थ राज्य होता।

आज 2 000 से अधिक अमरीकी सैनिक अड्डे एशिया और प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में स्थापित हैं। कोरिया में 65 000 अमरीकी फौजें हैं जापान में 60 000 फारमोसा में 10 000 ओकीनावा तथा ग्वाम द्वीपों में 60 000 वियतनाम में 100 000 75 000 थाईलैण्ड में 60 000 फिलीपीन में और 60 70 हजार आस्ट्रेलिया में और 7वें बेड़े के जंगी जहाजों पर। इसके अलावा अमरीका ने सगाव के पास एक भूमिगत मिनि-पेंटागान केन्द्र का 10 अरब डालर की लागत से निर्माण किया है जिसमें आधुनिकतम कम्प्यूटर नियन्त्रित परमाणु-युद्ध सज्जा साधन किसी सम्भावित तृतीय युद्ध के लिए कमाण्ड पोस्ट के रूप में तयार हैं। 1954 में ही एक वरिष्ठ अधिकारी ने वहाँ की सैनिक-उपसमिति के

समक्ष सैनिक बजट की मांगों पर बोलते हुए कहा था

अमरीका सुदूर पूर्व में, अनिश्चित काल तक अपनी सैनिक प्रभुसत्ता बनाये रखने की तैयारियाँ कर रहा है।' इससे यह स्पष्ट है कि वाशिंगटन के एशियाई नीति निर्धारकों ने एशिया में पश्चिम साम्राज्यवादियों के निकल जाने के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद को फैलाने की साजिशें कीं। उन्हें कभी हमारी जनता की मान मर्यादा, या हमारे प्रजातांत्रिक विश्वास की चिन्ता नहीं हुई।

1965 में वहाँ के सेना विभाग ने एक विज्ञापन छापा जिसमें कहा गया था

आवश्यकता है सेवाएँ और साधनों की जिसमें अमरीकी साम्राज्य शीर्षक योजना पर अनुसंधान किया जा सके। इसके अंतर्गत निम्न बातों पर कार्य किया जायगा (क) राष्ट्रीय शक्ति तत्त्व (ख) चुने हुए देशों की क्षमता जिन पर हमारे राष्ट्रीय शक्ति-तत्त्वों का प्रयोग किया जा सके (ग) अनेक प्रकार के विश्वयुद्धों की सम्भावनाएँ जिनमें अमरीकी प्रभुसत्ता का भविष्य में अन्य देशों पर हावी रखा जा सके।

फरवरी, 1971 में अमरीकी विश्वविद्यालयों में एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ

एक शानदार अवसर

यदि आपको कोई विदेशी भाषा आती हो तो सुरक्षा विभाग के गुप्तचर विभाग आपकी सेवाएँ विदेशों में इस्तेमाल कर सकते हैं। दुनिया के बहुत-से भागों में—और आप स्वयं चुन सकते हैं अपना कार्यक्षेत्र

इस प्रकार अमरीकी सरकार ने पिछले 20 वर्षों से अधिक शान्ति के स्थान पर युद्ध मित्रता के स्थान पर शत्रुता और विश्वास के स्थान पर अविश्वास के किले खड़े किये हैं ताकि वह अपने साम्राज्य को लम्बे अर्से तक एशिया में जमाये रखें। यही कारण है कि एशिया की स्वातन्त्र्य शक्तियाँ व आन्दोलन पश्चिमी साम्राज्यवाद के पुनर्जागरण की सम्भावना से उत्प्रान्त हो उठे हैं।

अमरीका को किसी सिद्धान्त विशेष का प्रचार करने के अधिकार से किसी को इन्कार नहीं। ना ही इस बात में किसी को शिकायत होगी कि वह अपने आर्थिक व अन्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा करे। लेकिन आपत्ति उनके इस रवैये पर है कि व्हाइट हाउस में बैठा एक आदमी यह कहे कि तुम एशियाइयों के लिए मैं एक योजना बना लाया हूँ। अगर तुम लोगों ने मुझे ठुकराया और साम्यवाद को वोट दिये तो मैं तुम्हें घूलिसात कर दूँगा। तुम्हें साम्यवादी देखने की बजाय मैं तुम्हारी मुर्दा लाशें देखना पसन्द करूँगा। और अपने किसी गुर्गे का थाप दे सँगाँव पर। सैनिक तानाशाही पनपती है वाशिंगटन की छत्रछाया में। यही हुआ फारमोसा में कोरिया में क्यूबा में दक्षिणी वियतनाम में। और याह्या खाँ भी

तो इन्ही के बूते अकड़े थे। अमरीका के सैनिक अधिकारियों ने इतनी बमबारी की धमकियाँ दी हैं कि 'हम वियतनाम को पाषाण-युग में पहुँचा देंगे।' लेकिन दुर्धर्ष वियतनाम का जवाब है, 'पराधीनता से हम पाषाण युग में जाना पसन्द है।'

1898 में फिलीपीन पर अमरीकी आक्रमण के समय एशियाई देशों में राजनैतिक जाग्रति न थी। ना ही हमारे बीच एकता का भाव था। हमारे सभी देश पश्चिम साम्राज्यवाद के डर से 'आत्मरक्षा' की आपाधापी में लगे थे। लेकिन आज एशिया की हालत कुछ और है। एकता है, जाग्रति है और जहाँ तक वियतनाम में अमरीकी हस्तक्षेप का सम्बन्ध है—एशिया में पूर्ण ऐक्य मत है। कुछ एक फौजी जनरलों को छोड़कर—किसी एशियाई प्रजातान्त्रिक राष्ट्र का समर्थन अमरीका को नहीं मिला। सोवियत संघ की सैनिक सहायता तथा वियतनामी जनता की विजय में दृढ़ आस्था इस संघर्ष के दो बड़े महत्वपूर्ण तत्त्व हैं।

अमरीकी फौजें लड़ाई के मैदान में जो जीत न पायीं—उसे प्रेसिडेण्ट निक्सन पेरिस की मेज पर पाना चाहते हैं। जब 10 00 000 से अधिक सैगोन के 'पमाघोर' सैनिकों ने अपनी स्वतन्त्रता के सेनानियों के सामने लड़ने से इन्कार कर दिया तब सबसे बड़ी समस्या है वाशिंगटन की कि सैगोन को अमरीकी कब्जे में कैसे बनाये रखा जाये। वरना वहाँ की सरकार दक्षिणी भाग की जनता को स्वयं अपना भाग्य निर्णय क्या नहीं करने देगी? यही कारण है कि निक्सन राजनीतिक समझौते से बचना चाहते हैं। और जब जब भी हनोई तथा दक्षिण की अस्थायी सरकार समझौते की बात करती है अमरीका सैनिक कार्रवाई को बढ़ावा देता है।

आप सोते को जगा सकते हैं। पर जब कोई जागते हुए सोये तो उसे क्या किया जाय? पिछले 10 वर्षों में अनेक बार हनोई ने शान्ति के सुझाव रखे। 1963 में डॉ० हो ची मिन्ह एक तटस्थ दक्षिण वियतनाम मानने के लिए तैयार थे। 1965 और 1966 में उन्होंने कनाडा सरकार द्वारा समझौते की बात चलायी। जिसका जवाब जानसन ने 5 00 000 सैनिक और 6 000 विमान युद्ध में झोंककर दिया। 1967 में सेनेटर राबर्ट कैनेडी यूरोप की राजधानियों में परामर्श करके और उत्तरी वियतनामी प्रतिनिधियों से मिलकर एक ठोस प्रस्ताव लेकर प्रेसिडेण्ट जानसन के पास ले गये। जवाब आया—उत्तरी वियतनाम पर भयंकर बमबारी। शान्ति के प्रस्तावों को हनोई की दुर्बलता माना गया। राष्ट्र संघ के तत्कालीन महामन्त्री श्री ऊ थान्त ने सब शान्ति प्रयत्नों की असफलता पर दुःखित होकर कहा था कि अमरीकी जनता को सच्चाई का ज्ञान नहीं। यदि उन्हें पता हो तो वे इस युद्ध की आग में वियतनाम को झुलसने न देंगे। राजनीतिक ढंग से समझौता सम्भव है।

कुछ दिनों तक यह कहा जाता था कि अमरीका बेचारे फँस गये और अब वे आत्मसम्मान के साथ एशिया से निकल जाना चाहते हैं। यह एक मनचाही

आत्म प्रवचना है। यदि वे ऐसा चाहते तो उन्हें बहुत से ऐसे अवसर दिये जा चुके है। वियतनामी जनता ने इतना बलिदान और अपमान सहा है कि अब सवाल निक्सन और अमरीका की इज्जत का नही बल्कि वियतनाम की इज्जत और विजय का है। भारत की तरह वियतनाम भी शान्तिपूर्वक स्वतन्त्र हो सकता था। किन्तु फ्रांस व अमरीकी साम्राज्यवादी शक्तियो ने ऐसा नही होने दिया। वियतनाम और हिन्द चीन मे शान्ति स्थापना तभी सम्भव है जबकि एक संयुक्त व स्वतन्त्र वियतनाम की स्थापना हो और उसकी प्रभुसत्ता की अक्षुण्णता की अन्तर्राष्ट्रीय गारंटी दी जाय। अमरीकी साम्राज्यवाद का हर अवशेष वियतनाम कम्बोडिया, लाओस से हटा दिया जाय और अमरीकी वायुसेना के सैनिक अड्डे थाईलैण्ड और अन्य एशियाई क्षेत्रो से उठा लिये जायें।

हम अमरीका के पतन और पराजय से सरोकार नही। हम तो वियतनाम के ग्रामीण किसानो के उज्ज्वल भविष्य की दरकार है।

स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के पवित्र नाम अपवित्र हो जाते है जब उनके हाथ निर्दोष लोगो के खून से सने हो।

—महात्मा गांधी

## उपसंहार

उत्तर वियतनाम तथा दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के नेताओ ने अनेक बार इस बात की घोषणा की है कि वे दोनो भागो की एकता चाहते है किन्तु उसे शान्तिपूर्वक धीरे धीरे ही 15 20 वर्षों मे प्राप्त किया जा सकता है। उत्तर दक्षिण का विभाजन अप्राकृतिक व अस्वाभाविक है। आर्थिक पहलू से भी दोनो की एकता विकास और समृद्धि के लिए अनिवार्य है। किन्तु किसी भी प्रकार का राजनीतिक निर्णय करने का अधिकार वहा की जनता को है।

संगोष्ठ के बौद्ध नेता भिक्षु नाह हान्ह का कहना है

'वियतनाम के बौद्ध और वियतकांग का अमरीकियो को एक ही जवाब है आपसी मतभेद हमारा घरेलू मामला है। तुम्हे हस्तक्षेप का कोई अधिकार नही।

दक्षिण वियतनाम की अस्थायी क्रान्तिकारी सरकार पी० आर० जी० की विदेश मन्त्री श्रीमती न्यूयन थी बिन्ह ने पेरिस शान्ति-सम्मेलन के 119वें अधिवेशन मे जुलाई 1 1971 को एक सप्त सूत्री प्रस्ताव रखा था जिसमे कहा गया था

वियतनामी जनता की शान्ति और स्वतन्त्रता की इच्छा के अनुसार अमरीकी जनता और विश्व जनमत की शान्ति चाहना का ध्यान मे रखते हुए, और पेरिस

शांति तथा राष्ट्रीय सौमनस्य के प्रति शुभकामनाओं के प्रतीक के रूप में दक्षिण वियतनाम की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार घोषणा करती है कि

1 अमरीकी सेनाओं के पूरी तरह हटाए जाने की तारीख निश्चित किए जाने के बारे में।

अमरीकी सरकार वियतनाम में आक्रमण बन्द करे, वियतनामीकरण योजना छोड़ दे, दक्षिण वियतनाम में अपनी और अपने पिछलग्गुओं की सारी सैनिक कार्रवाइयाँ समाप्त करे और बिना किसी शर्त के अमरीकी सैनिक मदद हटा ले।

अमरीकी सरकार अपनी और अपने साथियों की पूरी की पूरी सेनाओं को दक्षिण वियतनाम से हटाने की निश्चित तारीख की घोषणा करे।

अगर अमरीका 1971 में पूरी फौज हटाने की तारीख निश्चित कर देता है—

(क) हटते हुए सैनिकों की सुरक्षा तथा

(ख) सभी सैनिक बंदियों (उत्तरी वियतनाम में बन्दी अमरीकी हवाबाजों) की रिहाई की तैयारियों के लिए समझौता हो सकता है। अमरीकी फौज हटाने की तारीख निश्चित होते ही दक्षिण वियतनामी मुक्ति सेना और अमरीका तथा उनके साथी सैनिकों के बीच युद्ध विराम स्थिति का पालन किया जायगा।

2 दक्षिण वियतनाम में राजनैतिक सत्ता के प्रश्न पर।

अमरीकी सरकार दक्षिण वियतनाम की जनता के आत्मनिर्णय के अधिकार के सिद्धान्त का सम्मान करे, वहाँ के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप बन्द कर दे तथा सायगोन शासन पर युद्धोन्मादी तानाशाही गुट द्वारा थ्यू को थोपना बन्द कर दें।

दक्षिण वियतनाम की राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक शक्तियाँ शांति व स्वतंत्रता की भावना से आपस में मिलकर हर सम्भव उपायों से एक प्रजातांत्रिक स्वतंत्र तटस्थ शान्तिवादी शासन की स्थापना करें। दक्षिण वियतनाम की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार एक शासन से तुरन्त ही निम्न प्रश्नों पर बातचीत के लिए तैयार रहेगी

(क) किस प्रकार शान्ति स्थापना और आम चुनावों के मध्यान्तर में विभिन्न राष्ट्रीय तत्वों का मिला-जुला शासन कायम हो जो कि शान्ति स्थापना और आम चुनावों का उत्तरदायित्व संभाल सके। ऐसी एक राष्ट्रीय सरकार के स्थापित होते ही दक्षिण वियतनाम के मुक्ति मोर्चे और सायगोन शासन के सैनिकों के बीच युद्धविराम स्थिति रहेगी।

(ख) नयी सरकार ऐसे कदम उठायेगी जिससे कि देश में अराजकता न

फले, वदने की कारवाइयाँ न की जा सके, राजनीतिक व दियों को रिहा कर दिया जाय, नजरबन्दी कम्प समाप्त कर दिये जायें और जनता को फिर से दैनिक जीवन के कार्यों में उन्मुक्तता का एहसास हो गया।

(ग) लोगों के दैनिक जीवन में स्थिरता और विश्वास पैदा किया जा सके ताकि वे अपनी योग्यता व सामथ्य को युद्ध विध्वस्त देश के पुनर्निर्माण में लगा सकें।

(घ) दक्षिण वियतनाम में स्वतन्त्र व प्रजातान्त्रिक आम चुनावों की व्यवस्था की जा सके।

3 दक्षिण वियतनाम सेनाओं के भविष्य के बारे में।

वियतनामी पार्टियाँ विदेशी हस्तक्षेप के बिना राष्ट्रीय एकता समानता आपसी सम्मान, तथा युद्धोपरान्त स्थिति को देखते हुए दक्षिण वियतनाम की सुरक्षा सेनाओं के प्रश्न पर हल आपस में ढूँढ निकालेंगे।

4 उत्तर व दक्षिण भागों के शान्तिपूर्ण एकीकरण के बारे में।

(क) वियतनाम का पुन एकीकरण धीरे धीरे शान्तिपूर्ण तरीकों में आपसी बातचीत व दोनों क्षेत्रों के बीच समझौते से ही किया जायेगा।

पुन एकीकरण में सैनिक कारवाई तथा विदेशी हस्तक्षेप नहीं होने दिया जायगा।

जब तक पुन एकीकरण नहीं होता दोनों भागों के बीच लोगों का आवागमन पत्र व्यवहार आदि की पूर्ण स्वतन्त्रता होगी।

(ख) जेनेवा सम्मेलन की शर्तों के अनुसार जब तक पुन एकीकरण नहीं होता, उत्तर-दक्षिण के दो अस्थायी भागों में बटा रहेगा। किन्तु कोई भी किसी सैनिक गुट्ट में शामिल नहीं होगा कोई विदेशी सैनिक अड्डे नहीं बनने देगा ना ही विदेशी सेनाओं का किसी भी प्रकार की तैयारियाँ व कारवाइयाँ आदि की अनुमति देगा।

5 दक्षिण वियतनाम की शान्ति तथा तटस्थतावादी विदेश नीति के बारे में।

दक्षिण वियतनाम शान्तिपूर्ण तटस्थतावादी विदेशनीति अपनायगा राजनीतिक सिद्धान्तों में भेदभाव किये बिना सभी स्वतन्त्र राष्ट्रों से कूटनयिक सम्बन्ध रखेगा। 'पंचशील' के शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व सिद्धान्त के आधार पर।

इन्ही सिद्धान्तों के आधार पर युद्धोपरान्त दक्षिणी वियतनाम सयुक्त राज्य अमरीका से राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करेगा।

6 अमरीका द्वारा वियतनाम के दोनों भागों में किये गये विध्वंस के बारे में।

अमरीकी सरकार दोनों भागों की वियतनामी जनता के जान व माल को उस द्वारा पहुँचायी गयी क्षति की जिम्मेवार होगी।

7 समझौते को पालना के प्रति अन्तर्राष्ट्रीय गारंटी के बारे में।

सम्मेलन में भाग लेनेवाले सभी पक्ष इस समझौते को क्रियान्वित करने की अन्तर्राष्ट्रीय गारंटी देंगे ताकि इसका भली प्रकार पालन किया जा सके।

इस सप्तसूत्री प्रस्ताव को डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम का समर्थन प्राप्त है।

किन्तु अमरीका को यह स्वीकार नहीं। वाशिंगटन के नेताओं और पेंटागॉन व सी० आई० ए० की इच्छा है कि वे सगाव में किसी न किसी रूप में अपना सैनिक कब्जा बनाये रखें ताकि उस क्षेत्र में उपलब्ध कच्चे माल, तेल व खनिज पदार्थों पर अमरीकी कम्पनियों का अधिकार बना रहे। अन्यथा इस प्रस्ताव में किसी के भी प्रति बदले की भावना नहीं है और उत्तर दक्षिण के झगड़े को शान्तिपूर्वक सुलझाने की तत्परता स्पष्ट रूप में कही गयी है। लेकिन अमरीका अब किसी भी कीमत पर इस क्षेत्र से हटना नहीं चाहता। यहां तक कि उत्तरी वियतनाम को आर्थिक सहायता देने का लालच अमरीका दिखा चुका है। लेकिन वियतनाम के राष्ट्रीय तत्त्वों का अब तो एक ही आग्रह है और वह यह कि अमरीका की सेनाएँ हिन्द चीन के क्षेत्र से पूरी तरह हटा ली जावें। इसके बिना दक्षिण-पूर्व एशिया और हिन्द चीन के देशों की स्वतन्त्रता का कोई वास्तविक महत्त्व नहीं है।

इन पंक्तियों के लिखते समय भी अमरीका की जल, थल व वायु सेनाएँ एशिया तथा दक्षिण अमरीकी देशों में अपने शत्रुओं को मिटा देने में लगी हैं। दुनिया के दूसरे भागों में भी सम्भावित अमरीकी सैनिक कारवाइयों की योजनाएँ पहले से तैयार हैं। प्रेसिडेण्ट निक्सन ने ह्वाईट हाऊस में घुसने के बाद प्रशान्त महासागर में जापान के नीचे स्थित ग्वाम द्वीप पर अमरीकी सलाहकारों व सैनिक अफसरों का एक सम्मेलन बुलाया था। उसके बाद जिन नीतियों की घोषणा की गयी उन्हें ग्वाम का सिद्धान्त कहा जाता है।

इस ग्वाम घोषणा के अनुसार एशिया के किसी भी देश में और जब कभी वाशिंगटन के विचार में स्वतन्त्रता (अमरीकी हितों) को खतरा दिखायी देता अमरीकी स्वेच्छा से सैनिक कार्यवाही करेंगे।

यद्यपि अमरीकी नेताओं ने एशिया की स्वतन्त्रता का दावा किया है, लेकिन

आश्चय इस बात का है कि 'ग्वाम सम्मेलन मे भी किसी एशियाई देश के प्रतिनिधि या सरकार से कोई परामश नही लिया गया । तथाकथित ग्वाम सिद्धान्त' और वियतनामी युद्ध से निक्सन और अमरीकी सरकार जो कुछ करना चाहती है उसका लक्ष्य है कि एशिया की उन राजनीतिक व सामाजिक प्रवत्तियो को धमकाना जिन्ह सी० आई० ए० के मत मे अमरीका विरोधी ठहरा लिया गया है। एशियाई महाद्वीप के जो देश वाशिंगटन-पेंटागान की नीतियो से सहमत नही होते उन्ह ग्वाम घोषणा से डरकर सीधे रास्ते पर लान का कोशिश की गयी है।

ग्वाम सम्मेलन के बाद ही अमरीकी सरकार के अधिकारियो ने यह भी प्रकट किया कि अमरीका हिन्द महासागर के 'दिएगो गार्सिया द्वीप म अपने सनिक अडडे स्थापित करने की तयारिया कर रहा है। और यह घोषणा तब की गयी है जबकि भारत और श्रीलका—दो प्रमुख प्रजातान्त्रिक देशो न यह स्पष्ट कह दिया है कि वे हिन्द महासागर को 'शान्ति का सागर' बनाये रखकर ठडे या गम युद्ध स इसे बचाये रखना चाहते हैं। लेकिन सम्भव है अमरीकी सरकार की नीयत एशियाई सभ्यताओ मे सचमुच भ्रातृभावना से भरी हो। मानवतावादी भावना से उद्दीप्त होकर व करोडो एशियावासियो और विशेषकर वियतनाम के पिछडे हुए किसानो के 'प्रजातान्त्रिक अधिकारो की रक्षा करना चाहते हो। परन्तु दक्षिण पूव एशिया और दक्षिण एशिया के देशो न पिछले 150 साल पश्चिमी उपनिवेशवाद से सघष किया है और उस सघष म इन देशो को अमरीका स कभी कोई सहायता नही मिली। और आज भी दक्षिण अफ्रीका रोडेशिया अगोला और मोजाम्बीक म अश्वेत जातियो के मानवीय व प्रजातान्त्रिक अधिकारो का अल्पसख्यक गोरी जाति के देश कुचल रहे हैं। अमरीका की आर्थिक व सनिक सहायता अत्याचारी साम्राज्यवादियो को खुल रूप मे उपलब्ध है। लेकिन अश्वेत लोगो के स्वातन्त्र्य सघष के समथन म अमरीकी सरकार कोई कदम नही उठाती। वियतनाम और हिन्द चीन के देशभक्त पूछते है कि जब फ्रासीसियो साम्राज्यवादियो न हजारो देशभक्तो को जेलो म ठूस दिया था, जब हमारी जनता के नागरिक अधिकारो का उन्होने 80 साल तक अपहरण किया था—तब अमरीका के दमदार कहा थे? अश्वेत जातियो के राजनीतिक हितो की रक्षा मे, अमरीका ने आज तक कभी एक भी गोली नही चलायी। बल्कि वास्तविकता तो यह है कि जब यूरोपीय देश एशिया, अफ्रीका और लटिन अमरीका पर फल रह थे उसी समय अमरीका भी उनकी प्रतियोगिता म अपना विस्तार करने की होड मे लगा था।

चीन की मण्डियो म अमरीका प्रवश पा चुका था और यूरोपीयो की तरह हो उसने वहाँ पर विशेषाधिकार पा लिये थ जिनके आधार पर अमरीकीयो पर भी चीनी कानून लागू नही होते थे और 1853 मे अमरीकी जगी बेडा न जापानी

समुद्र मे घुसकर अल्टीमेटम दिया था। जिन दिनो फ्रास हिन्द चीन पर अपने पाव जमा रहा था उसी समय जफ्सन का प्रजातातिक अमरीका क्यूबा पनामा हवाई द्वीप समूह ग्वाम कारिया और फिलीपीन पर सनिक कारवाइया करन म लगा था।

लेकिन सम्भव है कि तब से अब तक वाशिंगटन की एशियाई विदेश नीति म परिवतन आ चुका हो। 1950 से वियतनाम मे उसन जा नीति अपनायी है और बाद के वर्षों म हिन्द चीन के पूरे क्षेत्र म उसने आक्रमणो और अत्याचारो और का जो नग्न रूप दिखाया है उससे उसके पवित्र इरादो का इजहार नही होता।

सयुक्त राज्य अमरीका का इतिहास दूसरो पर हमले करने और उनकी जमीने हडपकर अमरीका के नक्शे का फलाते जाने की लम्बी कहानी है। और क्योकि अभी तक उनका झण्डा कही झुका नही। इससे उनके धमान्ध लोगो का यह विश्वास और भी दृढ हो गया है कि वे भगवान के दत्तक पुत्र हैं जिन्हे इस पृथ्वी पर धन और धम की रक्षा का भार नियति से मिला है।

1776 म जब अमरीका ने ब्रिटिश साम्राज्य से स्वतन्त्रता छीन ली तब सयुक्त राज्य अमरीका केवल 13 राज्यो का एक छोटा सा सघ था। अब वह 50 राज्यो और बीसियो उपनिवेशो (टेरेटरीज) का एक विशाल साम्राज्य बन चुका है। उसके कूटनीतिक व सनिक इतिहास से पता चलता है कि उसने अब तक 200 स अधिक बार विदेशी सीमाओ पर हमले किये हैं। 50 से अधिक बार थोडे बहुत समय तक दूसरे देशो पर अधिकार जमाय रखा है और 30 स अधिक बार आक्रमण करके हथियाई गई जमीन को बाद म अमरीका का सघीय भाग बना लिया गया है।

ऐसी विस्तारवादी आर्थिक व सनिक पृष्ठभूमि म जब हम प्रसिडेण्ट निक्सन की ग्वाम घोषणा को पढते है उनकी वियतनामीकरण नीति उत्तरी वियतनाम के समुद्री तटो पर सुरगें बिछाना और समूचे क्षेत्र को नेपाम्म और लेसर बमो स उल्टे-सीधे विध्वस्त करन के बबर काण्डो के समाचार पढ़ते हैं तो समझ नही आता कि आखिर इन सबका मतलब यह कसे निकलता है कि अमरीका दक्षिण पूर्वी एशिया स घर लौट जाना चाहता है? अमरीका के बहुत से सनिक उपकरणो नये-नये विध्वसक शस्त्रास्त्रो क परीक्षणो और सनिक कारवाइयो का कम्बोडिया लाओस थाईलण्ड सिंगापुर और अब हिन्द महासागर म फलाने का मतलब यह कसे निकाल लिया जाय कि पेंटागान क नता अब इस लडाई स ऊब चुके है! उनका लक्ष्य तो अमरीका की सुरक्षा प्रजातन्त्र की सुरक्षा और सम्मानपूवक शान्ति स्थापित करके घर लौट जाना है?

1969 71 के बीच प्रसिडेण्ट निक्सन ने जो वियतनामीकरण की नीति अपनायी उसका लक्ष्य दक्षिण-पूर्वी एशिया म युद्ध की आग को कम करना नहीं था

बल्कि अमरीकी जवानों की जान बचाना था ताकि अमरीकीयों में वपन वाशिंग टन लौटने बन्द हो जायें और युवकों को उनके घरों, स्कूलों व कॉलेजों से जबरदस्ती भर्ती करके वियतनाम न भेजना पड़े। तब अमरीका में बढ़ते हुए युद्ध-विरोधी आंदोलन को, जनता का सहयोग भी कम मिलने लगेगा। और अमरीकी बन्दूकें वियतनामियों के कन्धों पर रखकर चलायी जा सकेंगी।

अमरीकी अधिकारी चीन कोरिया भारत, आदि की तरह ही वियतनाम को भी दो भागों में बाँटे रखना चाहते हैं ताकि उस क्षेत्र में अमरीकी स्वार्थ बने रहें और आपसी मनमुटाव के कारण अमरीकी शस्त्रास्त्रों का व्यापार चलता रहे। पिछले वर्ष, वाशिंगटन की एक रिपोर्ट में बताया गया था कि अमरीका दक्षिण पूर्वी एशिया अफ्रीका और लैटिन अमरीका के 25 देशों में सैनिक सहायता बनायगा जिसके अन्तर्गत उन देशों में भीतरी शत्रुओं को नष्ट करने और 'गुरिल्ला छापामार,' का कुचलने की गुप्त ट्रेनिंग दी जायेगी। उक्त देशों की सूची में जो नाम हैं उनमें कुछ मुख्य ये हैं

ट्यूनिशिया, कांगो कोलम्बिया, होण्डूरास, जमैका, पनामा और दक्षिण वियतनाम। अमरीकी सेना विभाग (जिसे डिफेन्स अर्थात सुरक्षा विभाग कहते हैं।) ने ए० आई० डी० के द्वारा पिछले 10 वर्षों से अनेक देशों में षडयन्त्रकारी कामों की गुप्त ट्रेनिंग दी है। अकेले दक्षिण वियतनाम में उन्होंने कोई 2 00 000विशेष पुलिस तैयार की है जिसने 1970 में कोई 1,53 000 नागरिकों को गिरफ्तार किया जिनमें अधिकतर एसे लोग थे जिन पर वियत कांग होने का सन्देह केवल सन्देह था। (न्यूयार्क टाइम्स जून 14 1971)

प्रेसिडेण्ट निक्सन के वियतनामीकरण नीति के काल में ही 15 करोड डालर से 129 नये अस्त्रों को तैयार किया गया है जिनके परीक्षण वियतनाम और लाओस में किये गये हैं और वर्तमान में किये जा रहे हैं।

(न्यूयार्क टाइम्स, मार्च 22 1971)

ऐसी कारवाइयों और सैनिक तैयारियों से लगता है कि अमरीका जो कुछ पेरिस की टेबल पर नहीं पा सका उसे वह लडाई के मैदान में लेना चाहता है और जो उसे लडाई के मैदान में प्राप्त न हुआ उसे वह षडयन्त्रों से हिन्द चीन के देशों में अन्दरूनी मनमुटाव व अशान्ति फैलाकर पाने की कोशिश कर रहा है। अन्यथा यदि अमरीकी नीतियों को जनता के बहुमत का समर्थन प्राप्त हो तो उनके बीच गुप्त षड्यन्त्रकारी कारवाई करने की उसे आवश्यकता क्या हो ?

पेंटागान दस्तावेजों के अनुसार अमरीका के एक जासूसी दस्ते ने दक्षिण वियतनाम के कुछ नामी ज्योतिषियों को पैसा खिलाकर उनसे ऐसे पचांग लिखवाये जिनमें वियतमिन्ह की राष्ट्रीय सेनाओं और हो ची मिन्ह की स्वतन्त्र सरकार विरोधी भविष्यवाणियां की गयी थीं। इन पचांगों को अमरीका रक्षा विभाग के

गर्भे ग गर्गाव म दूतावास मन् 1954 म गुप्त रीति स हजारों भिजवाया गया और सी० आई० ए० के गुप्त एजण्ट द्वारा उन लोगों म बँटवा दिया गया। इसी प्रकार दिएतमिन्ह के नाम स झूठे पर्चे बाँटे गय तथा अफवाह फैलवायी गयी कि उत्तरी वियतनाम म कम्युनिस्टों के हाथ में आते ही वियतमिन्ह की सरकार लोगों की जमीन पर कब्जा कर लेगी। जमीनें छीन ली जायेंगी, चीनी कम्युनिस्टों के साथ उत्तरी वियतनाम मिला लिया जायगा, चीनी फौजी वियतनामी लडकियों को उठा ले जायेंगे—आदि आदि।

(पेंटागान पेपर्स)

फलस्वरूप लोगों में आतंक छा गया और भगदड़ मच गयी। हजारों लोग उत्तरी वियतनाम से दक्षिण की ओर भाग खड़े हुए और वाशिंगटन की प्रचार एजेंसियों ने कहना शुरू कर दिया कि उत्तरी वियतनाम में लोगों का कत्लेआम हो रहा है। लाखों शरणार्थी दक्षिण में आ रहे हैं। ऐसी स्थिति में वियतमिन्ह की नयी राष्ट्रीय सरकार को जनता को फिर से आश्वस्त करने में काफी समय लगाना पड़ा।

प्रश्न यह है कि जब एक छोटा-सा देश फ्रांसीसी साम्राज्यवाद से स्वतन्त्रता पा रहा हो, उस समय की उथल-पुथल और अशान्त वातावरण में एक समृद्ध देश की सेना और गुप्तचर एजेंसियाँ ऐसी हरकतें करके प्रजातन्त्र के किस पक्ष की रक्षा करती हैं?

आज दक्षिण-पूर्व एशिया और विशेषकर वियतनाम और हिन्द चीन एक ऐसे युग से गुजर रहे हैं जिससे पश्चिम के देश 18वीं और 19वीं सदी में गुजर रहे थे। वे राजनीतिक व सामाजिक उथल-पुथल के दिन थे। पश्चिमी देशों में धर्म, जमीन, राष्ट्रीय उच्चता, प्रान्तीयता व राजनीति के ढाँचे और सामाजिक न्याय के युद्ध व क्रान्तियाँ चल रही थीं। विज्ञान के नये चमत्कारों के कारण लोगों की परम्परागत आस्थाएँ हिल चुकी थीं और पुराने जीवन मूल्य नष्टप्राय हो रहे थे। आम जनता निर्धन थी, अशिक्षित थी और शोषित व पददलित। लोगों में नये अधिकारों को पाने और नयी अर्थ समाज व्यवस्था को स्थापित करने की उग्र लालसा थी।

पश्चिमी साम्राज्यवाद के कारण एशियाई होने के कारण हम पश्चिमी देशों की लड़ाइयाँ लड़ते रहे। इसीलिए भारत के जवान हमेशा अंग्रेजी राज की ओर से लड़ते थे, वियतनामी फ्रांस की तरफ से और फिलीपीनवासी अमरीका की ओर से।

एशियाई देशों का आर्थिक व सामाजिक ढाँचा 20-21वीं शताब्दी की माँगों के साथ मेल नहीं खाता। और हमारे देश स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उथल-पुथल, प्रान्तीयता तथा उग्र परिवर्तनवादी तत्त्वों के कारण अनेक प्रकार के भीतरी व बाहरी संघर्षों में लगे हैं। ये प्रगति और विकास के अनिवार्य लक्षण हैं। यथा

स्थिति या स्टेटस को इस पिछड़ेपन से तो जोड़े रखा जा सकता है किन्तु एक सुखी व न्यायप्रिय समाज-व्यवस्था लाने के लिए यथास्थिति न तो आवश्यक है और न ही वाछनीय। क्या अमरीका 1776 में यथास्थिति की अंग्रेजी माग को स्वीकार कर सकता था? यदि नहीं तो वियतनाम की जनता से यह कैसे अपेक्षा की जा सकती है कि व अमरीका की यथास्थिति को स्वीकार कर ले?

किन्तु 19वीं शताब्दी के पश्चिम की उथल-पुथल में किसी बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप नहीं हुआ। जबकि आज एशियाई देशों की जनक्रान्तियों के अशान्त वातावरण में बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप हमारे विकास और परिवर्तन की गति को धीमा किये डाल रहा है। और स्थानीय प्रजातान्त्रिक शक्तियों के विकास में बाधक बन रहा है। जिस प्रकार 1962 में भारतीय सीमाओं पर चीनी सेनाओं के आगमन से भारत में साम्यवादियों की लोकप्रियता को आघात पहुँचा ठीक उसी तरह अमरीका द्वारा वियतनाम तथा एशिया में स्वच्छाचारिता में सैनिक कार्रवाइयां करने से इस क्षेत्र की गैर-साम्यवादी शक्तियों को भयानक चोट पहुँची है। वियतनाम और एशिया तथा अफ्रीका और लैटिन अमरीका की जनता के सामने प्रश्न सैद्धान्तिक विवाद का नहीं है—वह एक बौद्धिक विलास या कि एकेडेमिक सवाल हो सकता है। उनके सामने तो वास्तविकता आर्थिक न्याय, सुधार तथा विराम की है। और अफसोस इस बात का है जहां विज्ञान और तकनीकी में संयुक्त राज्य अमरीका बड़ा ही क्रान्तिकारी देश है—(सेक्स और फैशन के मामले में भी) वहीं अमरीका राजनीति और धर्म के मसलों पर भयानक रूप से पिछड़ा हुआ और दकियानूसी है।

एशिया और वियतनाम में शान्ति स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि अमरीका के नेताओं के राजनीतिक चिन्तन और एशिया के प्रति उनके दृष्टिकोण में सैद्धान्तिक परिवर्तन लाया जाये। वरना सेनेटर जार्ज मैकगवर्न जो इस वर्ष 1972 नवम्बर में वियतनाम में शान्ति स्थापना के नारे पर अमरीकी प्रेसिडेण्ट पद के उम्मीदवार और निक्सन के प्रतिद्वन्द्वी थे अगर चुनाव जीत भी जाते और उनकी हत्या न हो पाती तो भी वे पेंटागान के विशाल सैनिक संगठन और उसकी जासूसी कारवाइयां रुकवाने में समर्थ हो सकें इसमें हमें सन्देह है।

लेकिन थाईलण्ड की जनता वहां के सैनिक डिक्टेटरों के शासन को नष्ट कर प्रजातन्त्र की स्थापना को लालायित है। किसी सम्भावित क्रान्ति की स्थिति में थाईलण्ड स्थित अमरीका की 52 के सैनिक अड्डों का भविष्य क्या होगा? क्या अमरीका उनकी रक्षा के लिए सैनिक कारवाई नहीं करेगा? इसी प्रकार सयाम के दक्षिणी तट पर अमरीकी तेल कम्पनियों ने जो विशेषाधिकार ले लिये हैं—उनकी रक्षा कैसे होगी? थाईलण्ड में अमरीका के आर्थिक हितों को कौन बचायेगा?

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था प्रजातन्त्र का पर्याय नहीं होती। और अमरीकी उसे पर्यायवाची मानने लगे हैं। अमरीकी नेताओं को यह महसूस कराना होगा कि गैरपूंजीवादी भी प्रजातान्त्रिक हो सकता है।

वियतनाम का स्वातन्त्र्य संग्राम अभी समाप्त नहीं हुआ है। संयुक्त राज्य अमरीका का हिन्द चीन में हस्तक्षेप अभी भी जारी है।

छपते-छपते

अमरीकी प्रवक्ता ने वाशिंगटन की एक प्रेस इण्टरव्यू में यह मान लिया है कि अमरीकी जेट बमबारों ने गलती से उत्तर वियतनाम के बांधों को उड़ा दिया है।

हनोई के ब्राडकास्ट में कहा गया है कि बांधों के टूट जाने से भयानक बाढ़ें आ गयी हैं और 10 00 000 से अधिक लोगों के जान माल का गहरा खतरा पैदा हो गया है। हाय फांग और हनोई पर भयङ्कर बमबारी हुई हैं।

अमरीकी लोग टेलिविजन के स्क्रीन पर डिनर खाते समय जब वियतनाम के युद्ध की फिल्में देखते हैं तो उन्हें जलती हुई मानवता के बजाय फ्लैशलाइट द्वारा चित्रित जलते हुए रोमांटिक दृश्य (सीन) दिखाई पड़ते हैं। अब उन्हें लोग डूबते, तैरते कलाबाजियां खाते भी दिखलायी देंगे। परन्तु वियतनाम की जनता के लिए इस युद्ध का मतलब है—मौत या जिन्दगी, आजादी या दासता, राष्ट्र का अस्तित्व या विनाश, उनके नौनिहालों का भविष्य। हनोई और बांधों को धूल में मिलाने के बाद अमरीका और क्या कर सकता है। पर वियतनाम के लोग लड़ते रहेंगे। वियतनाम की विजय सत्य न्याय और मानवता की विजय है।

• •

परिशिष्ट 1

# वियतनामी स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र

## 2 सितम्बर, 1945

(द्वितीय महायुद्ध के अन्तिम चरण में दक्षिण पूर्वी क्षेत्र स्थित जापानी सेनाओं द्वारा हथियार डाल देने पर जो उथल-पुथल मची उसमें अनेक राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का उदय हुआ। इसी ऐतिहासिक घड़ी में इसी साल में हुए वियतनाम ने स्वयं को फ्रांस की दासता से मुक्त एक पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्र होने की घोषणा की थी।

इस घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर हैं वियतनाम के राष्ट्रपिता प्रेसिडेण्ट हो ची मिन्ह के और इसका प्रारम्भ हुआ है संयुक्त राज्य अमरीका के 1776 में हुए स्वतन्त्रता घोषणा पत्र के उद्धरण से जो हमारे युग में अनेक देशों के राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य संग्राम का प्रेरणा स्रोत रहा है।

'सब मनुष्य समान ही जन्म लेते हैं। उन्हें स्रष्टा ने अविभाज्य जन्मसिद्ध अधिकार दिये हैं जिनमें प्रसन्नता प्राप्ति के प्रयत्न, स्वतन्त्रता एवं जीवन-अस्तित्व प्रमुख हैं।'

इस अमर वाक्य का उद्घोष 1776 में संयुक्त राज्य अमरीका के स्वातन्त्र्य घोषणा पत्र में हुआ था। —1791 में फ्रांसीसी क्रान्ति के मानव जाति व नागरिकों के अधिकारों की घोषणा में भी कहा गया है

सब मनुष्यों को स्वतन्त्रता व समानाधिकार जन्म से प्राप्त हैं और इसलिए उन्हें हमेशा स्वतन्त्र व समान रहना चाहिए। इस घोषणा के बावजूद, पिछले 80 वर्षों से अधिक फ्रान्सीसी साम्राज्यवादियों ने स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व का झण्डा फहराने का ढोंग रचकर हमारी पितृभूमि का अपमान किया है और हमारे नागरिकों को कुचला गया है। उन्होंने मानवता व इंसाफ के आदर्शों की हत्या की है।

राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने हमारी जनता को हर प्रकार की स्वतन्त्रता से वंचित किया।

अमानवीय कानून हम पर थोपे गये हमारी एकता को नष्ट करने हेतु उत्तर, मध्य व दक्षिणी प्रान्तों में उन्होंने तीन नीतियां अपनायीं।

उन्होंने—स्कूलों से ज्यादा जेलखाने खोले। हमारे देशभक्तों को क्रूरता से मार डाला। उन्होंने हमारे क्रांतिकारी जिलों को निर्दोष खून की बाढ़ों से डुबो दिया। उन्होंने हमारे जनमत को ठुकराया निरक्षरता को बढ़ावा दिया।

हमारी जाति के ह्रास हेतु अपने देश में उत्पादित अफीम व शराब का इस्तेमाल हमारी जनता पर थोपा।

आर्थिक क्षेत्र में हमारे नागरिकों को उनकी हर सम्पत्ति से वंचित किया व्यक्तियों को निर्धनता में जकड़ा और हमारी धरती को उजाड़ा।

उन्होंने हमारे धान के खेतों को हमारी खानों को हमारे जंगलातों को और हमारी खनिज सम्पदा को लूटा है। बैंक नोटों के छापने पर निर्यात आयात व्यापार पर अपना स्वत्वाधिकार रखा। गैर कानूनी टैक्स लगाकर हमारी जनता को विशेषकर हमारे ग्रामीणों को भयानक गरीबी की यातनाओं में बदल दिया। उन्होंने हमारे व्यापारी वर्ग के विकास को रोका। हमारे मजदूरों को बड़े ही वहशियाना तरीकों से शोषित किया। 1940 की पतझड़ में जब जापानी फासिस्टों ने हमारी भूमि को अपवित्र किया फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों ने घुटने टेक दिये और आत्म समर्पण करके हमारे देश को फासिस्टों के हवाले कर दिया और फ्रांसीसी बेड़ियों के साथ-साथ ही जापानी बेड़ियों में भी हमें जकड़ दिया था। उस दिन से आज तक वियतनामी जनता ने जिन कठिन यातनाओं को सहा है मानव जाति के इतिहास में उसका अन्य उदाहरण नहीं है।

इस दोधारी दमन का परिणाम भयंकर था क्वांगत्री से उत्तरी सीमा से बीच 20 00 00 लोगों को 1945 के शुरू में भूख की मौत मार डाला गया।

9 मार्च 1945 को जापानियों ने फ्रांसीसी सेना के हथियार छीन लिये। एक बार फिर फ्रांसीसी भाग खड़े हुए या बिना शर्त हथियार डाल दिये। इस प्रकार उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि वे हमारी सुरक्षा करने में सर्वथा असमर्थ हैं। इससे बुरी बात उन्होंने हमें दो बार जापान को बेच डाला।

मार्च से पहले कई बार वीयतमिह ने फ्रांसीसियों से मांग की थी कि वे जापानियों के विरुद्ध वीयतमिन्ह की सेनाओं का साथ दें। साम्राज्यवादी फ्रांसीसियों ने जवाब तक न दिया। इसके बजाय उन्होंने अपनी आतंकवादी हरकतें और बड़े पैमाने पर शुरू कर दी। भागने से पहले उन्होंने हमारे बहुत-से देशभक्तों को जो येनबाइ तथा काओबांग में कैद थे मार डाला।

इन सबके बावजूद हमारी जनता ने फ्रांस के लोगों के प्रति हमेशा से

मानवता एव सहनशीलता का रुख अपनाया है। मार्च, 1945 के जापानी प्रत्याक्रमण के समय मे वीयतमिन्ह मनिकों ने बहुत-से फ्रासीसीयो को सीमा पर सुरक्षित पहुँचाया, कुछ को जापानी जेलो से छुड़ाया और कभी भी फ्रासिसियो की जान माल की रक्षा म आच नही आने दी।

आज वियतनाम की सम्पूर्ण जनता इस प्रजातन्त्री सरकार के प्रति राजभक्ति की आम भावना से एकता के सूत्र म प्रतिबद्ध है और फ्रासीसी साम्राज्यवादियो के नापाक इरादो को मिटाने के लिए सयुक्त एव दृढप्रतिज्ञ है।

हम इसका भरोसा है कि मित्र राष्ट्र—तेहरान तथा सान फ्रासिसको म स्वीकृत आत्मनिर्णय तथा राष्ट्रो की समानता के सिद्धान्तो के अनुसार वियतनाम की स्वतन्त्रता को मान्यता देने से इनकार न करेंगे।

जिन लोगो ने 80 साल फ्रासीसीयो की दासता का उखाड फेंकने के लिए लम्बी जद्दोजहद की है जिन्होंने पिछले (द्वितीय महायुद्ध) वर्षों मे फासिस्टो के खिलाफ मित्र राष्ट्रो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर वीरता स लडाई की है ऐसे लोगो को कोई गुलाम नही रख सकता ऐसा राष्ट्र अवश्यमेव स्वतन्त्र रहेगा।

उक्त धारणा से हम, वियतनाम—अन्तरिम सरकार के सदस्य दुनिया को बता देना चाहते हैं कि आजादी वियतनाम का जन्मसिद्ध अधिकार है। वास्तव मे अब वह एक मुक्त एव स्वतन्त्र देश बन चुका है।

हम दुनिया को यह भी बता देना चाहते हैं कि वियतनाम की जनता अपनी आजादी को बनाये रखने के लिए दृढ प्रतिज्ञ है और अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वह बड़ी से बडी कुर्बानी करने के लिए तयार है।

2 सितम्बर, 1945

हस्ताक्षर (राष्ट्रपति) हो ची मिन्ह तथा अन्य सदस्य

• •

परिशिष्ट 2

# जेनेवा-सम्मेलन का अन्तिम घोषणा-पत्र

## 21 जुलाई 1954

(जून 16 से जुलाई 21 1954 कम्बोडिया प्रजातान्त्रिक वियतनामी गणतन्त्र फ्रांस लाओस चीनी गणतन्त्र वियतनाम राज्य समाजवादी सोवियत संघ गणराज्य ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमरीका के प्रतिनिधियों का हिन्द चीन कम्बोडिया लाओस तथा वियतनाम में युद्ध विराम तथा शांति की स्थापना के उद्देश्य से एक सम्मेलन हुआ था।

इसका घोषणा-पत्र जेनेवा सम्मेलन 1954 के नाम से विख्यात है। इस सम्मेलन के अनुसार उपस्थित राष्ट्रों ने सिद्धान्तरूपेण कम्बोडिया लाओस तथा वियतनाम तीन देशों की स्वतन्त्र इकाइयों को मान्यता दी तथा उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय गुटबन्दी से तटस्थ रहकर अपना विकास करने का मौका देने का आश्वासन दिया। वियतनाम को उत्तर व दक्षिण के दो प्रान्तों (देशों या राष्ट्रों में नहीं) में अस्थायी रूपेण 17वीं समानान्तर रेखा पर विभाजित किया गया। 1956 में एक आम चुनाव द्वारा उत्तर दक्षिण को एक संयुक्त शासन के अन्तर्गत एक इकाई के सिद्धान्त को मान्यता दी गयी थी।

किन्तु दीयाँ बीया फू में करारी हार खाने के बाद फ्रांस की सरकार जहाँ समझौते के साथ वियतनाम और हिन्द चीन के उपनिवेशों को छोड़ने के लिए तत्पर थी अमरीकियों के इरादे कुछ और थे। अमरीकी प्रतिनिधि ने सम्मेलन के घोषणा-पत्र को नहीं स्वीकारा। उसकी कठपुतली वियतनाम राज्य (सगाव) सरकार ने भी जेनेवा सम्मेलन के सिद्धान्तों की अवहेलना का रुख अपनाया।

जेनेवा-सम्मेलन की इस घोषणा से फ्रांसीसी साम्राज्य का जहाँ हिन्द चीन में

अन्त हुआ वहा युद्धात्मक इतिहास के एक बडे अध्याय की भी समाप्ति हुई। किन्तु अमरीकी सनिकवाद तथा साम्राज्यवादियो न जेनवा सम्मेलन के सिद्धान्तो को कुचलकर हिन्द चीन म युद्ध व अत्याचारो का एक नया अध्याय जोडा।)

(1) यह सम्मेलन उन समझौतो का नोट करता है जिनके अन्तगत कम्बोडिया लाओस और वियतनाम म युद्ध-समाप्ति, और समझौत क समविन्द को कार्यान्वित करने हेतु अन्तर्राष्टीय कट्रोल व पयवक्षण की व्यवस्था की गयी है।

(2) यह सम्मलन, कम्बोडिया, लाओस व वियतनाम म युद्ध-समाप्ति पर सतोप प्रकट करता है। सम्मेलन यह विश्वास करता है कि यदि इस घोषणा की धाराओ तथा युद्ध-समाप्ति के समझौत की शर्तों को नियान्वित किया गया तो भविष्य म कम्बोडिया, लाओस व वियतनाम अपनी स्वतन्त्रता व प्रभुसत्ता को बनाय रख सकेंगे तथा शान्तिपूर्ण राष्ट्रो के बीच अपना उचित योगदान दे सकेंगे।

(3) यह सम्मलन कम्बोडिया व लाओस सरकारो की इस घोषणा को नोट करता है कि व अपन अपन देश के हर नागरिक को राष्टीय जीवन का अग बनकर रहन देन के उपाय करेंगे, विशेषकर सबकी मूल (बेसिक) स्वतन्त्रता की रक्षा की जायगी और उन सबको गुप्त मतदान द्वारा आम चुनावो म अभिव्यक्ति का अधिकार होगा जो कि उन देशो क विधानानुसार 1956 क साल म किये जायेंगे।

(4) यह सम्मेलन वियतनाम म युद्ध-समाप्ति समझौते की उन धाराओ को नोट करता है कि वियतनाम म विदेशी सेनाओ, सनिक कायकत्ताओ तथा हर प्रकार के सनिक शस्त्रास्त्रो के प्रवेश पर पाबन्दी लगायी गयी है।

(5) यह सम्मलन युद्ध-समाप्ति समझौत की उन धाराओ को नोट करता है जिनक अन्तगत वियतनाम म लडाई बन्द हुई और जिनम कहा गया है कि—कोई भी विदेशी सरकार अपन सनिक अड्डे वियतनाम क किसी भाग (उत्तर, दक्षिणी क्षेत्र) म जहा कि दोनो सेना ने अपने पुन सगठन के क्षेत्र स्थापित किय हैं-नही बनायगी। ना ही य सेना दल अपने दो (उत्तर-दक्षिण) क्षेत्रो का किसी सनिक गुट का भाग या अड्डा बनायेंगे ना ही वे अपन क्षत्रो को पुनयुद्ध की तयारी या किसी प्रकार की युद्धात्मक नीति के लिए इस्तमाल होने देंगे।

(6) यह सम्मलन स्वीकार करता है कि वियतनाम म युद्ध-समाप्ति समझौते का मुख्य उद्देश्य वियतनाम म लडाई खत्म करना तथा सनिक समस्या का

हल निकालना है, और महज विराम-संधि रेखा (उत्तर-दक्षिण) मामा रेखा अस्थायी है और किसी भी रूप म उस राजनैतिक किंवा भौगोलिक सीमा रेखा क रूप म नहीं लिया जाना चाहिए।

इस सम्मेलन की यह धारणा और विश्वास है इस घोषणा की धाराएं तथा युद्ध समाप्ति समझौते की शर्तें ऐसी आवश्यक भूमि प्रदान करती हैं जिस पर कि निकट भविष्य म वियतनाम म एक राजनैतिक समाधान पाने का आधार बन सकता है।

(7) यह सम्मलन घोषणा करता है कि जहाँ तक वियतनाम का प्रश्न है स्वतन्त्रता एकता एव भौगोलिक सीमा की अक्षुण्णता क सिद्धान्त क अनुसार एव राजनैतिक समाधान स वियतनामी लोगों क गुप्त मतदान द्वारा सस्थापित प्रजातान्त्रिक सस्थाओं द्वारा प्रतिपादित स्वतन्त्रता क मौलिक अधिकारों का लाभ व सुख मिलेगा।

(8) युद्ध-समाप्ति समझौते के उन मसविदा का जिनका उद्देश्य लोगों क जान माल की सुरक्षा करना है का दृढ़ता के साथ पालन किया जाना चाहिए। तथा हर वियतनामी नागरिक को इस बात की पूरी छूट हो कि वह स्वेच्छया चाहे जिस (उत्तरी या दक्षिणी) क्षेत्र म अपनी रिहायश चुन।

(9) वियतनाम क दोनों क्षेत्रों तथा कम्बोडिया व लाओस क अधिकारियों का इस बात का हर प्रयत्न करना चाहिए ताकि किसी व्यक्ति या वग क विरुद्ध बदले की कारवाई न की जाय जिन्होंने युद्ध के दौरान एक दूसरे के विरोधी पक्षों का साथ दिया।

(10) यह सम्मेलन फ्रासीसी सरकार की इस घोषणा को नोट करता है कि फ्रास कम्बोडिया, लाओस और वियतनाम की सरकारों क कहने पर उनकी सीमाओं स एक पूव निश्चित अवधि म अपनी सेनाएँ हटा लेने को तैयार है।

(11) यह सम्मेलन फ्रासीसी सरकार की इस घोषणा को नोट करता है जिसम कहा गया है कि शान्ति की पुन स्थापना तथा शान्ति बनाये रखने म सम्बन्धित समस्याओं के समाधान म फ्रास की सरकार कम्बोडिया लाओस और वियतनाम देशों क साथ स्वतन्त्रता प्रभुसत्ता एकता तथा उनकी भौगोलिक सीमाओं की अक्षुण्णता क सिद्धान्त पर चलेगी।

(12) इस सम्मेलन के सदस्य राष्ट्र इसका आश्वासन देते हैं कि वे कम्बो

डिया, लाओस और वियतनाम से अपने सम्बन्धो मे उक्त देशो की प्रभुसत्ता स्वतंत्रता, एकता तथा भौगोलिक सीमाओ की अक्षुण्णता का आदर करेंगे तथा उनके आतरिक मामलो मे हस्तक्षेप से बचेंगे।

(13) इस सम्मेलन के सदस्य राष्ट्र स्वीकार करते हैं कि अतर्राष्ट्रीय सुपरवाइजरी कमीशन द्वारा भेजी गयी किसी भी समस्या पर वे आपस मे एक दूसरे से सलाह मशवरा करेंगे ताकि कम्बोडिया, लाओस और वियतनाम मे हुए युद्ध समाप्ति समझौते को सफल बनाने सम्बन्धी आवश्यकताओ को समझा जा सके।

जेनेवा 21 जुलाई, 1954।

• •

परिशिष्ट-3

# लाओस सम्बन्धी जेनेवा घोषणा 1962 के कुछ अंश

लाओस म शान्ति स्थापनाथ एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मलन हुआ। 23 जुलाई 1962 को 13 राष्ट्रो ने जिनमे सयुक्त राज्य अमरीका उत्तर वियतनाम तथा दक्षिण वियतनाम भी सम्मिलित थ एक घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किय जिसक मुख्य अश निम्न थे

1

(भाग लेनेवाले राष्ट्र) सजीदगी के साथ घोषणा करते हैं कि लाओस राज्य की सरकार व जनता की इच्छा का आदर करत हुए लाओस की प्रभुसत्ता स्वतन्त्रता तटस्थता, एकता तथा सीमाओ की अक्षुण्णता को स्वीकारते हैं और हर प्रकार से इनकी प्रतिष्ठा बनाये रखेंगे।

2

व वचनवद्ध हैं विशेषकर निम्न बातो के लिए

(क) वे किसी भी रूप म ऐसी कारवाई न करेंगे जिसस प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे लाओस की प्रभुसत्ता स्वतन्त्रता तटस्थता एकता किंवा सीमाओ को किसी प्रकार का आघात पहुचे।

(ख) व कोई सनिक कारवाई न करेंगे। ना ही शक्ति प्रयोग की धमकी या कोई और एसा कदम उठायेंगे जिसस कि लाओस म शान्ति का खतरा पहुँचे।

(ग) वे लाओस के घरेलू सम्बन्धो म प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष हर प्रकार के हस्तक्षेप से बचेंगे।

(घ) लाओस को दी गयी किसी प्रकार की सहायता पर कोई राजनीतिक शर्त नहीं लगायेंगे।

(च) व लाओस को किसी प्रकार के सनिक गुट म शामिल नही करेंगे ना ही किसी ऐसे समझौते म जिससे कि उसकी तटस्थता को धक्का पहुँचे।

(छ) व लाओस की इस इच्छा को मान्यता देंगे कि वह किसी भी सनिक गुट की सुरक्षा नही चाहता, सीटो गुट भी ऐसा ही एक गुट है।

(ज) वे किसी भी विदेशी सनिक अथवा सनिक कार्यकर्ताओ को किसी भी रूप म लाओस म नही भेजेंगे और नाही उन्ह गुप्त रूप मे घुसाने का कोई षड्यन्त्र रचेंगे ना ही ऐसी किसी कारवाई म भागीदार बनेंगे।

(झ) व कोई विदेशी सनिक अड्डा नही बनायेंगे अडडे या किसी प्रकार की सनिक शक्ति को बढावा देने की कोशिश नही करग, ना ही वैसा करने के षडयन्त्रो का रचेंगे न ऐसे किसी षड्यन्त्र म भागीदार बनेंगे।

(य) वे किसी और देश के घरेलू मामलो म हस्तक्षेप करने क लिए लाओस की भूमि का प्रयोग नही करेंगे।

(फ) व लाओस के घरेलू मामलो मे हस्तक्षेप करने हेतु अपनी अथवा किसी अन्य देश की भूमि का प्रयोग नही करेंगे।

3

व अन्य सभी राष्ट्रो मे अपील करते है कि व भी लाओस की प्रभुसत्ता, स्वतन्त्रता तटस्थता तथा एकता एव सीमाओ की अक्षुण्णता को मान्यता द और कोई ऐसा काम न करें जिनम इनका क्षति हो अथवा जोकि इस घोषणा के सिद्धान्तो के विपरीत हो।

## लाओस मे अमरीकी हस्तक्षेप का कैलेण्डर

जुलाई 21 1954 जेनेवा सम्मेलन म एक समझौते के अन्तगत हिन्द चीन युद्ध समाप्त हुआ और लाओस कम्बोडिया और वियतनाम—तीन स्वतन्त्र एव तटस्थ देश स्थापित हुए।

सयुक्त राज्य अमरीका न सम्मेलन की घोषणाओ का आदर करन का आश्वासन तो दिया किन्तु हस्ताक्षर करन स इन्कार किया।

दिसम्बर 31, 1960 लाओस की मिली-जुली सरकार भग हुई और वाममध्य-दक्षिणपन्थी दलो म शक्ति परीक्षण सघष आरम्भ हुआ।

प्रेसिडण्ट आइजनआवर न घोषणा की कि हम लाओस को साम्यवाद के चगुल म नही जाने दे सकते फिर चाहे हम युद्ध ही क्या न करना हो।

अप्रल 19 1961 प्रेसिडेण्ट कनडी न 300 अमरीकी सनिक सलाहकारो का दस्ता लाओस भेजने की अनुमति दी। बाद म 300 और सनिक भेज गय।

जुलाई 23 1962 अमरीका न 12 अन्य देशो क साथ जनेवा म एक समझौते पर हस्ताक्षर किये जिसम लाओस की तटस्थता को मान्यता दी गयी थी। बाद म लाओस स्थित 600 अमरीकी सनिक वापस बुला लने की घोषणा की गयी।

जुलाई 1962 1963 के जेनेवा समझौते क बाद एक ओर 600 सनिको का

धानग मुआ म ? की भावना की गयी था दूसरी ओर आ० आई० ए० का संघ न म ए० आई० डी० तथा पीस कार आदि न द्वारा लाओस म गडबडी हरकता को कराने का आरम्भ किया।

मई 19 1964 एक अमरीकी विमान लाओस क दक्षिणी भाग म मार गिराया गया। वाशिंगटन सरकार न स्वीकार किया कि उसक विमान लाओस पर भी उडानें भर रहे हैं।

जनवरी 1965 संयुक्त राज्य अमरीका न यह स्वीकार किया कि वह लाओस क दक्षिणी भागा पर बमबारी कर रहा है।

मार्च म अमरीका न एक विशेष स्कारगाना जिसम रिटायर्ड सनिक अधिकारियों की देखरख म लाओस म दक्षिणी वियतनामी पायलट ■ सनिक ट्रेनिंग दी जाने लगी।

अक्तूबर 26-28 न्यूयार्क टाइम्स न एक विशेष सम्पादकीय प्रकाशित की जिसम रहस्योद्घाटन किया गया कि अमरीका गुप्त रूप म लाओस को फौजी सहायता द रहा है और 40 000 पहाडियों की एक गुप्त सना तयार कर रहा है।

मार्च 6 1970 प्रेसिडण्ट निक्सन न कहा कि अमरीकी हस्तक्षेप हवाई कार वाई और लाओस पर बमबारी अमरीकी तथा मित्र सनिकों की जीवन रक्षा हतु की जा रही है। निक्सन ने एलान किया कि लाओस म अमरीकी स्थल सनिक नहीं भेज गए हैं। लकिन 1 040 अमरीकी नागरिक वहाँ हैं जिनम 320 सनिक सलाह कार 323 सनिक सुरक्षा विशेषज्ञ सब सुरक्षित हैं।

जून ए० आई० डी० के डायरेक्टर डा० जान हन्ना ने वाशिंगटन पोस्ट दनिक क सम्वाददाता के प्रश्नो का उत्तर देते हुए स्वीकार किया कि 1962 स अमरीकी राष्ट्रीय हितों की रक्षार्थ ए० आई० डी० को सी० आई० ए० की हर कतो के लिए इस्तेमाल किया गया है। खबरें आने लगी कि सी० आई० ए० के हवाई जहाज लाओस पर खुलकर बमबारियाँ कर रहे हैं।

जनवरी 19 1971 अमरीकी सरकारी प्रवक्ता न बताया कि अमरीकी विशाल तोपो स लस हेलिकाप्टर गनशिप्स लाओस की दक्षिणपंथी सना के समथन म उडानें भर रहे हैं। एक अन्य प्रवक्ता न कहा कि बी 52 बमबार जट बमबार तथा दूसर लडाकू विध्वसक विमान भी लाओस म सनिक कारवाई कर रहे हैं।

फरवरी 5 पिछले 6 दिनो से खबरो पर पाबन्दी लगान क बाद आज सगौन (दक्षिणी वियतनाम) म अमरीकी हाई कमान ने एलान किया ■ 000 अमरीकी

सनिक 20 000 दक्षिण वियतनामी भाडे के फौजियो ने लाओस के दक्षिणी भाग पर हमला किया है।

यह हमला अमरीकी सनिक कमान के मतानुसार लाओस स्थित उत्तरी वियतनाम के रसद के अडडा को खत्म करना तथा उनकी रसद के 'हो ची मिन्ह दुर्भेद्य जगली रास्ता को मिटाना था।

फरवरी 8 लाओस की वामपथी सरकार 'पथेटलाओ' ने सोवियत सघ और ब्रिटेन से अमरीकी द्वारा लाओस पर किये गये हमले का रुकवाने के लिए तुरन्त कदम उठाने की अपील की है।

चीन, सोवियत सघ फ्रान्स, भारत आदि बडे देशा ने अमरीकी आक्रमण की कटु आलोचना की। राष्ट्र सघ के महामन्त्री ऊथान्त ने कहा "दक्षिण वियतनाम की सेनाओ ने अमरीकी वायुसेना की सहायता से लाओस पर हमला बोल दिया है। इससे 1962 के जेनेवा समझौते की हत्या की गयी है और क्रूर व लम्बे हिन्द चीन के बबर युद्धात्मक इतिहास म एक और घार निन्दनीय घटना है।

• •

# पृथ्वी पर अमरीका की सैनिक स्थिति के आँकडे

| | |
|---|---|
| **(क) एशिया 1968 69** | |
| दक्षिण वियतनाम | 5 60 000 सनिक |
| *दक्षिण कोरिया* | *60 000 सनिक* |
| थाईलण्ड | 75 000 स निक |
| फिलीपीन | 35 000 सनिक |
| ओकिनावा | 35 000 सनिक |
| ग्वाम | 35 000 सनिक |
| जापान | 36 000 सनिक |
| प्रशान्त महासागर | 2 25 000 |
| 7वें जगी बेडे पर | 50 000 |
| | 11 11 000 सनिक |
| **(ख) यूरोप** | |
| पश्चिमी जमनी | 2 25 000 |
| पश्चिमी बर्लिन | 5 000 |
| इटली | 10 000 |
| स्पेन | 25 000 |
| फ्रान्स | 15 000 |
| ब्रिटेन | 35 000 |
| आइसलण्ड | 5 000 |
| ग्रानलण्ड | 6 000 |
| ग्रीस (यूनान) | 25 000 |

| | |
|---|---|
| अतलान्तिक महासागर | 2,25,000 |
| भूमध्यसागर | 35 000 |
| यूरोप मे कुल | 6 16 000 |

(ग)

| | |
|---|---|
| अमरीकी महाद्वीपीय क्षेत्र | |
| सयुक्त राज्यअमरीका | 17,20 027 |
| डोमिनिकनरिपब्लिक | 8 000 |
| करिबियन समुद्र | 10 000 |
| | 17 38,027 |

| | |
|---|---|
| (क) | 11,11 000 |
| (ख) | 6,16 000 |
| (ग) | 17,38 027 |
| | 34 65 027 |

इनके अतिरिक्त टर्की आस्ट्रिया ग्रीस पुर्तगाल तथा दक्षिणी अमरीका तथा दक्षिण अफ्रीका रोडेशिया आदि स गुप्त सनिक सधियो के अतगत कितने और सनिक अड्डे कहा कहा है ये तथ्य सरकारी रहस्य है।

• •

# पृथ्वी पर अमरीका की सैनिक स्थिति के आँकड़े

| | |
|---|---|
| **(क) एशिया 1968 69** | |
| दक्षिण वियतनाम | 5 60 000 सैनिक |
| दक्षिण कोरिया | 60 000 सैनिक |
| थाईलैण्ड | 75 000 सैनिक |
| फिलीपीन | 35 000 सैनिक |
| ओकिनावा | 35 000 सैनिक |
| ग्वाम | 35 000 सैनिक |
| जापान | 36 000 सैनिक |
| प्रशान्त महासागर | 2 25 000 |
| 7वां जंगी बेड़ा पर | 50 000 |
| | 11 11 000 सैनिक |
| **(ख) यूरोप** | |
| पश्चिमी जर्मनी | 2 25 000 |
| पश्चिमी बर्लिन | 5 000 |
| इटली | 10 000 |
| स्पेन | 25 000 |
| फ्रान्स | 15 000 |
| ब्रिटेन | 35 000 |
| आइसलैण्ड | 5 000 |
| हालैण्ड | 6 000 |
| ग्रीस (यूनान) | 25 000 |

| | |
|---|---|
| अतलांतिक महासागर | 2,25 000 |
| भूमध्यसागर | 35,000 |
| यूरोप म कुल | 6,16,000 |

(ग)

| | |
|---|---|
| अमरीकी महाद्वीपीय क्षेत्र | |
| सयुक्त राज्यअमरीका | 17,20 027 |
| डामिनिकनरिपब्लिक | 8 000 |
| करिबियन समुद्र | 10 000 |
| | 17 38,027 |

| | |
|---|---|
| (क) | 11 11,000 |
| (ख) | 6 16 000 |
| (ग) | 17 38 027 |
| | 34 65 027 |

इनक अतिरिक्त टर्की आस्टेनिया ग्रीस, पुतगाल तथा दक्षिणी अमरीका तथा दक्षिण अफीका राटेशिया आदि मे गुप्त सनिक सधियो के अन्तगत कितने और सनिक अड्डे कहा-कहाँ है य तथ्य सरकारी रहस्य हैं।

• •

# अमरीकी युद्ध-नीति हिन्द चीन और अमरीकी जीवन पर दुष्प्रभाव

हिन्द चीन में अमरीकी आक्रमण से बेघरबार हुए शरणार्थियों की संख्या

| | |
|---|---|
| दक्षिण वियतनाम | 13 000 00 000 |
| लाओस | 7 50 000 |
| कम्बोडिया | 10 00 000 |

—न्यूयार्क टाइम्स अप्रैल 21 1971

30 अप्रैल 1971 को कम्बोडिया पर अमरीकी सीधे हमले से कोई 5 00 000 शरणार्थी और बने हैं और 9 फरवरी 1972 में उत्तरी वियतनाम पर भयंकर बमबारी का जो और प्रेसिडेंट निक्सन के हुक्म पर शुरू हुआ है उससे कोई 10 00 000 से अधिक लोगों के और उजड़ने का अनुमान है।

(2) कम्बोडिया पर अमरीकी हमले के बाद वहां की 80 000 की छोटी-सी फौज को अब वाशिंगटन ने 2 50 000 कर दिया है और इतनी बड़ी सेना का सारा खर्च व ट्रेनिंग का भार अमरीका उठा रहा है।

(3) द्वितीय महायुद्ध में जापान और जर्मनी पर कुल मिलाकर कोई 60 00 000 टन बम बरसाये गये थे। जबकि वियतनाम के छोटे-से देश पर 1 80 00 000 टन बम बरसाये जा चुके हैं। यानि द्वितीय महायुद्ध की बमबारी से तिगुना है।

(4) वियतनाम की औसत आय है 50 डालर प्रतिवर्ष और एक आम अमरीकी की औसत आय 50 डालर प्रति सप्ताह। अमरीका का युद्ध व्यय है 30 00 000 डालर प्रति घण्टा। एक वियतनामी को मारने पर अमरीका का खर्च होता है 4 00 000 डालर प्रति गुरिल्ला जिससे कोई 8 000 वियतनामियों को पूरे एक साल की रोजी दी जा सकती है।

(5) बमों की मार से पचास जिसका वजन 1 00 00 000 से ज्यादा पाउंड है हिन्दचीन की धरती पर गिराये जा चुके हैं।

(6) कोरिया युद्ध के 3 साल में 17 000 टन बम गिराये गये थे। द्वितीय

महायुद्ध के दौरान यूरोप और अफ्रीका में 48,000 टन। केवल मार्च 1966 के महीने में 50 000 टन बम उत्तरी वियतनाम पर गिराये गये और हिन्द चीन पर 61,000 टन।

—श्री मकनमारा (अप्रल 20, 1966)
तत्कालीन अमरीकी रक्षा सचिव

127 000 वर्गमील के क्षेत्र और 2,50 00 000 की आबादी के अनुपात से इसका अर्थ होता है—प्रति वर्गमील के क्षेत्र पर 5 टन और हर 40 व्यक्तियों के लिए 1 टन बम गिराये गये। 1966 और 1972 के बीच यह बमबारी कोई पांच गुना बढ़ गयी है।

अमरीकी इतिहास में सबसे पहला और अकेला देश है जिसने परमाणु शक्ति का युद्धात्मक प्रयोग किया है। लेकिन हीरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम गिराने के बाद से पैदा हुए अमरीकी बच्चों ने शान्ति के दिन नहीं देखे हैं। द्वितीय महायुद्ध के बाद कोरिया और फिर हिन्द चीन और वियतनाम—अमरीका एशिया भूमि पर 1941 से बराबर लड़ता आ रहा है। अमरीकियों को जहां तक याद आता है वे लड़ते ही रहे हैं। सन 1964 में जो बच्चे 6 साल के रहे होंगे—उन्होंने तब से अब तक लड़ाई बर्बरता खून यातनाएँ उजड़े हुए जंगल और गांव अधजली लाशों के ढेर तथा बलात की सच्चुरशन बमबारियों के चित्र और वर्णन पत्र पत्रिकाओं में और सुने हैं। अमरीका की फिल्मों में टेलिविजन के पर्दों पर व पत्र पत्रिकाओं में—कोई 54 000 से अधिक बार।

परमाणु युद्ध की विभीषिका की अनिश्चितता और अमरीकी परम्परा की हिंसात्मक प्रवृत्तियों का उनके जीवन की वर्तमान वास्तविकताओं ने इतना कमजोर किया है कि अमरीकी जीवन के भौतिक सुख उन्हें अब अभिशाप लगने लगे हैं। उनके सामने इन निरन्तर चलते चले जानेवाले लक्ष्यहीन युद्धों के कारण स्वयं अमरीकी राष्ट्र के जीवन मूल्यों के प्रति अनास्था पैदा हो चली है। विश्वासहीन वे पूछते हैं — अमरीका क्या है? हम जीवें तो किसलिए? हम क्या हैं?—हत्यारे! बर्बर हमलावर। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्री मार्शल मैक्लूहान का कहना है कि— टेलिवीजन से पली (अमरीकी) पीढ़ी का न अपना कोई स्वरूप है और न ही उनका निजी व्यक्तित्व। इसीलिए एक नये स्वरूप और व्यक्तित्व की तलाश की नारेबाजी में वे भयानक हिंसात्मक प्रवृत्तियों का सहारा लेते हैं।

स्वयं अमरीका के जन जीवन में अपराधी प्रवृत्तियां बढ़ चुकी हैं। और उस राष्ट्र का सन्तुलन कष्टप्राय हुआ दिखलाई पड़ता है। इतिहासकार उसे शायद वियतनाम का अभिशाप कहेंगे। यानि फिर—वियतनाम और हिन्द चीन का विनाश अमरीका की आन्तरिक शान्ति का एक दूसरा बाहरी रूप है। • •

# वियतनाम के राष्ट्रपिता डॉ० हो ची मिन्ह

(जन्म 1890 मृत्यु 1969)

वियतनाम का स्वातन्त्र्य युद्ध और डा० हो ची मिन्ह एक-दूसरे के पर्याय से हो गये हैं। और उसका कारण है कि हो की जीवनी को वियतनाम की आजादी और जन क्रांति से अलग नहीं किया जा सकता। इतिहास में हो का नाम वियतनाम के साथ उसी तरह जुड़ा हुआ है जिस तरह कि महात्मा गांधी का भारत के साथ।

हो ची मिन्ह एक साधारण परिवार में वियतनाम के मध्य प्रदेश के एक छोटे से गांव किम-लियन में पैदा हुए थे।

उनके पिता कृषक परिवार के थे। स्वयं परिश्रम से उन्होंने डिग्री प्राप्त की

दूरदर्शी थे। लेखक, कवि विचारक, चिन्तक योद्धा, षडयंत्रकारी क्रांतिकारी व गरीब असहायों के सहायक और अंततोगत्वा एक स्वतंत्र राष्ट्र के जन्मदाता वियतनाम के राष्ट्रपिता थे।

मार्क्स व लेनिन को तत्कालीन मध्यमवित्त जीवन की सुविधाएँ उपलब्ध थी। लेनिन ने स्विटजरलैण्ड के प्रवास का लाभ उठाकर गहरा चिंतन और लेखन किया तो मार्क्स ने जर्मनी से निकाले जाकर इंगलैण्ड में बैठकर दास कैपिटल लिखा। गांधी और जवाहरलाल नेहरू को अंग्रेजों के कैदखानों में भी समय व सुविधाएँ प्राप्त हुई जहां बैठकर वे अपने विचारों को लिख सकते थे। माओत्से तुंग यद्यपि साधारण परिवार के थे उन्हें यनान के सुरक्षित क्षेत्र में अपने अनुयायियों का सहयोग प्राप्त था। उन्हें मकान का किराया देने की फिक्र न होती थी और कभी भूखे रहे तो अकेले नहीं, सभी साथियों के साथ। लेकिन हो ची मिन्ह की जीवनी कठिनाइयों से अकेले जूझने की एक लम्बी कहानी है और प्रतीक रूप में वह स्वयं वियतनाम की आजादी की लम्बी लड़ाई के अकेलेपन का प्रतिनिधित्व करती है।

हो ची मिन्ह को विदेशियों के बीच अमैत्रीपूर्ण वातावरण में किसी तरह रोजी कमानी पड़ी। उन दिनों वियतनाम में भी ऊँची शिक्षा और धन कमाने के लिए 'विलायत' जाना भाग्यशाली माना जाता था। लेकिन विदेश जाना केवल रईसों का ही नसीब होता था। महत्वाकांक्षी हो ने एक फ्रेंच जहाजी कम्पनी में बावर्ची के सहायक की नौकरी कर ली और समुद्री मालवाहक जहाज में 1911 में विदेश को निकल पड़े। इसी जहाज पर वे अफ्रीका, दक्षिण अमरीका के बंदरगाहों पर रुके और संयुक्त राज्य अमरीका के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों पर भी उतरे। इसी नौकरी में उन्हें सबसे पहली बार गरीब फ्रांसीसी लोगों से मिलने का मौका मिला और उन्हें पता चला कि वियतनाम में जो गोरे साहब शोषण और दमन का राज्य चलाते हैं आम जनता उनसे भिन्न है। गरीबी का संघर्ष किसी देश व जाति की सीमाएँ नहीं मानता।

हो ने अमरीका भी देखा और पाया कि वहां भी करोड़ों लोग गरीबी में पिस रहे हैं। अमरीका में खासकर रेड इण्डियन और काली जातियों के लोगों की पिछड़ी हालत और गोरों द्वारा उन पर किये जाते अत्याचारों में युवा हो को गोरे फ्रांसीसियों द्वारा अफ्रीकी उपनिवेशों और हिन्द चीन में किये जाते शोषण व अत्याचारों की प्रतिच्छाया दिखलायी दी। उन्होंने अमरीका और फ्रांस के सर्वहारा लोगों की दुर्दशा पर लेख लिखे और निजी जीवन की दैनिक जरूरतों के संघर्ष में युवक हो को दुनिया के हर कोने में जूझते असहाय नवयुवकों के संघर्ष का अनुभव हुआ। उन्हें पता चला कि गरीबी और पूंजीवादी शोषण अर्थव्यवस्था, रंग और राष्ट्रीय सीमाओं में मुकय्यद रहना नहीं जानती।

हो ची मिन्ह ने विलायत की भर म अन्तर्राष्ट्रीय सौवियेन की वास्तविक्ताओं का निजी अध्ययन किया और उन्ह एहसास हुआ कि वियतनाम की आजादी की लडाई पश्चिम उपनिवेशवाद और पूजीवादी अथव्यवस्था के खिलाफ जो व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय सघर्ष चल रहा है—उसी का एक रूप है। डा० हो के लेखो म अफ्रीका मध्य एशिया तथा दक्षिण अमरीका के देशा मे पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघर्ष को दुनिया के लोगो का न्याय व मानव अधिकारो का युद्ध माना। उन्ह लगा कि साम्राज्यवादी पूजीवाद के खिलाफ हिन्द चीन की लडाई लडने म व अकेले नही हैं—और जब वियतनाम की जनता विदेशी जूये और अथ व्यवस्था से मुक्ति युद्ध कर रही है—तो इस प्रयत्न म वह स्वार्थी नही है—वह तो एक अन्तराष्टीय मुक्ति-सघर्ष है। यदि वियतनाम म साम्राज्यवादियो को मात दी जाती है तो उससे अगोला और दक्षिण अफ्रीका राडेशिया ग्वाटेमाला गयाना पेरू और मक्सिको क लोगो के सघर्ष म भी सहायता मिलती है।

पश्चिमी प्रजातान्त्रिक पूजीवादी देशा म रग भेद की जो साम्कृतिक परम्परा चली आयी है एक हद तक बौद्धिक दष्टि स साम्राज्यवादी नीतिया का वह भी आधार रही है। पश्चिमी आक्राताओ न सत्र्व यह माना कि गोरे होने का अथ है श्रेष्ठ और भगवान न गोरी जातिया को अश्वेत लोगा पर शासन करन के लिए इस पृथ्वी पर पदा किया है। स्वय हो को पश्चिमी देशा म रग भेद नीतियो का शिकार होना पडा। गोरा के प्रजातान्त्रिक समाज म अश्वेत 'कलड' लोगा को मानवीय स्तर से कुछ कम समझा जाता है और हो न उन्के आदर्शो—मानवीय एकता के उच्च सिद्धान्ता को दष्टि स ओझल किये बिना पश्चिमी साम्राज्यवाद के इस विपल आधार को ठीक ठीक समझा। क्योकि 13 वष के बाद स्कूल स निकाले जाकर उन्होने दुनिया के विशाल क्लासरूम म पश्चिमी 'प्रजातन्त्र का नग्न रूप स्वय देखा था। उन्ह पश्चिमी प्रजातन्त्र से भयकर निराशा हुई क्योकि उपनिवेशो गरीबो और अश्वेत जातियो क लिए उसकी वास्तविक्ता बिल्कुल अप्रजातान्त्रिक थी।

प्रथम महायुद्ध की शुरुआत क दिनो कुछ वष समुद्र म खानाबदोशी करन क बाद नौकरी की तलाश म युवक हो लन्दन पहुचे और हजारो अश्वेत गरीब हिन्दुस्तानियो और वस्ट इण्डीज वालो की तरह हो को धक्क खान पडे। एक साधारण रसोइय की नौकरी उन्हें मिली। सदियो म लन्दन के स्कूलो के मैदानो म बफ साफ करक व कुछ अतिरिक्त पसे कमा लेते थ। लेकिन राजी कमान और जवानी आन क बीच क महत्त्वपूण सालो म उस होनहार की जिन्दगी म क्या कुछ गुजरा हम इसका पता नही। लेकिन 25 वष क होत युवक हो लन्दन स पेरिस चले गय। प्रथम महायुद्ध का अन्त हो चुका था और फ्रास युद्ध की बमबारियो स ध्वस्त था। उस समय लगभग 80 000 वियतनामी जिन्ह अनाम वासी अनामी

कहा जाता था फ्रांस में थे। इनमें से अधिकतर अनामी फ्रांस की सुरक्षा सेना में थे और उनकी स्त्रियां लड़ाई के सामान बनानेवाली फैक्टरियों में मजदूरी करती थीं।

चिंतक हो ने यहां देखा कि एक फ्रांसीसी साहब जो पीछे हिंद चीन में एशियाई किसानों पर रौब डालता है—यहां वही गोरा साहब एक साधारण मजदूर भी है और जर्मनी की बढ़ती हुई फौजों के सामने वही फ्रांसीसी पराजित भी हो सकता है।

प्रथम महायुद्ध पश्चिम के पूंजीवादी साम्राज्यवादी देशों के बीच स्वार्थ और लालच की लड़ाई थी। प्रजातंत्र के किसी सिद्धांत की रक्षा की लड़ाई न थी। हो के विचारक मन ने समझा कि गोरी जातियां पश्चिम का सभ्य 'ईसाई और विज्ञान में बढ़ता हुआ इंसान इतना लालची और खूंख्वार है कि जब अश्वेत लोग न रहे तो वह आपस में एक दूसरे का गला काटने से भी नहीं झिझकता। यूरोप और पश्चिम एक निर्धन एशियाई युवक का स्वप्नलोक विलायत हो के लिए अब एक मुखद स्वप्न न होकर वास्तविकता की अपूर्णता बन चुका था।

और इसी समय पश्चिमी देशों में सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक उथल पुथल मच रही थी। जनता सामंती व राजशाही का नष्ट कर सामाजिक न्याय व शासन व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तनों को उतावली थी। रूस में लेनिन के नेतृत्व में क्रांति सफल हो चुकी थी और जर्मन साम्राज्य के खिलाफ क्रान्ति के लाल झण्डे चारों ओर फहरा रहे थे। अमरीका में हजारों लोगों का सरकार उलटने के षड्यन्त्र के सन्देह में देश निकाला दिया गया और नजरबन्द कर लिया गया था। मजदूरों के नेता साको तथा वन्जेती को झूठे आरोप लगाकर फांसी पर चढ़ा दिया गया था और इस बात के पूरे आसार दिखलायी पड़ते थे कि स्वयं फ्रांस में समाजवादी शक्तियां मार्क्सवादी अर्थ-व्यवस्था को क्रियान्वित करने ही वाली हैं।

यूरोप की समाजवादी पार्टियों में उपनिवेश के लोगों के प्रति समानता की नीति अपनाने का मार्क्सवादी आग्रह था। इसीलिए विशेषकर फ्रांस और ब्रिटेन की समाजवादी पार्टियों में उनके उपनिवेशों के राजनयिक कार्यकर्ताओं का आन्दोलनों में प्रमुखता से शामिल करने की नीति रही थी। श्री जवाहरलाल नेहरू और कृष्ण मेनन को ब्रिटिश लेबर पार्टी का काफी समर्थन मिला था और फ्रांस में एक उत्साही अनामी युवक हो को वहां की समाजवादी पार्टी ने राजनीति में आगे बढ़ने का अवसर दिया।

फ्रांस के समाजवादी आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के बावजूद युवक हो कभी भी अपनी राष्ट्रीय पुकार का अनसुना न कर सके। उनकी जीवनी से ऐसा लगता है कि मानो किसी ऐसे साधन की तलाश में हों जिससे वियतनाम का मुक्ति

दिला मक । लेकिन समाजवादियों से निराश होकर वे 'अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन' की ओर झुके । किन्तु वे चाहे किसी भी दल या विचार के समर्थक रहे हों अपनी जनता की आजादी उन्हें कचोटती रही। अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट सम्मेलनों में उनके भाषण पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरोध पर केन्द्रित होते थे। अपने राजनीतिक आंदोलनों के समय हो ने अनेक नाम बदले किन्तु प्रत्येक का अभिप्राय देशभक्ति से भरा था।

उनका सबसे अधिक प्रचलित नाम था "यूयन आई क्वोर"। "यूयन" वियत नाम का एक आम नाम है और आम जनता से सम्बन्ध का द्योतक। "आई क्वोर"—का अर्थ है देशभक्ति यानी कि जिसे देश से प्यार हो। "यूयेन" उनका पारिवारिक नाम भी था और बाल्यकाल में उनका नाम रखा गया था "यूयन यत थान्ह"। 1920 में हो ने एक और नाम से लेख लिखे थे और वह था "यूयन ओ फप" जिसका मतलब होता है। "यूयन जिसे फ्रांसीसियों से घृणा है।

डा० हो ची मिन्ह का चिंतन और व्यक्तित्व स्वतंत्रताप्रिय था। उन्हें अपने राष्ट्र और दूसरे दलित देशों की स्वतंत्रता से ही प्यार न था किन्तु विचारों की स्वतंत्रता से भी। 1930 के बाद के वर्षों में और द्वितीय महायुद्ध के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन का 1935 जुलाई अगस्त में हुए 7वें कमिंटर्न सम्मेलन ने, यूरोप जर्मनी और इटली के फासिस्टों और जापान के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा तैयार करने का आदेश दिया था। और स्टालिन के निर्देश में उपनिवेशों की कम्युनिस्ट पार्टियों को मित्रराष्ट्रों की साम्राज्यवादी सरकारों से सहयोग करने का हुक्म मिला था। लेकिन हो ची मिन्ह ने हिंद चीन और उपनिवेशों की जनता की आजादी के सवाल को प्रमुखता दी जाने की नीति अपनायी। 1940-45 के बीच जहाँ उन्होंने जापान के विरुद्ध मित्र राष्ट्रों का साथ दिया वहाँ वियतनाम के राष्ट्रीय मोर्चे वियतमिन्ह को कभी कमजोर न पड़ने दिया। और आज रूस व चीन के बीच सैद्धान्तिक मनमुटाव में भी वियतनाम ने जिस स्वतंत्रता का परिचय दिया है वह इसका सबूत है कि हो की नीतियों में उनका स्वतंत्रताप्रिय व्यक्तित्व झलकता है।

हो ची मिन्ह के जीवन में एक महान उदात्तता पायी जाती है—जो कि उनकी भीतरी सच्चाई और निर्भीकता का प्रतीक है। उनका जीवन बड़ा सादा, निडर और सत्यनिष्ठ था। सादगी की तुलना में और व्यक्तित्व की उदारता में उनकी तुलना गांधीजी से की जा सकती है अन्तर केवल स्टाइल का था। जहाँ गांधी जी का निवास अक्सर अमीर मित्र-मालिकों और ठेकेदारों के यहाँ होता था—हो ची मिन्ह का रैन बसेरा गरीब किसानों और मजदूरों के यहाँ होता था।

18 अगस्त 1956 को राष्ट्रपति हो ची मिन्ह ने डमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम के रेडियो स्टेशन से राष्ट्र के नाम एक भाषण में खुले रूप से स्वीकारा

कि 'उनकी सरकार और पार्टी की सेंट्रल कमेटी ने भूमि-सुधार नीतियों में अनुभवशून्यता के कारण बडी भारी भूलें की हैं। और ये वे दिन थे जबकि स्वयं उत्तरी वियतनाम के किसान साम्यवादी सुधारों से अशांत हो उठे थे।

17 जुलाई, 1966 को जबकि अमरीकी बमवार वियतनाम पर दिन रात हमले कर रहे थे, राष्ट्रपति हो ने राष्ट्र के नाम एक संदेश ब्राडकास्ट करते हुए कहा था कि 'संयुक्त राज्य अमरीका उत्तरी वियतनाम के हर शहर-बस्ती को मिटा देगा।' उस समय जबकि दुश्मन के जहाज बम बरसा रहे हों, ऐसी घोषणा से जनता में आतंक छाने की पूरी सम्भावना थी। लेकिन हो अपनी जनता से सच्चाई नहीं छुपा सकते थे। उसी ब्राडकास्ट में उन्होंने यह भी एलान किया कि "युद्ध के जल्दी खत्म होने के आसार नहीं दिखायी देते और 5 10 और 20 साल तक लड़ाई चल सकती है।

साम्यवादी और गैर साम्यवादी किसी देश के मुखिया में इतना गहरा आत्मविश्वास और इतनी जन निष्ठा नहीं दिखायी देती जो ऐसा खुला सत्य बोल सके। गैर साम्यवादी देशों में झूठे वायदे करके वोट प्राप्त किये जाते हैं तो साम्यवादी देशों में सच्चे झूठे आँकड़े देकर लोगों को बुद्धू बनाया जाता है। किन्तु हो जनता से डरते न थे। वे तो स्वयं जनता के थे, जनता के लिए थे और जनता पर थे। इसीलिए उन्हें जनता का प्रेम, विश्वास और अटूट श्रद्धा प्राप्त थी।

उनके मन में किसी के प्रति शत्रुता या बदले की भावना न थी। जब फ्रांस की सेनाओं ने हजारों वियतनामी देशभक्तों का कत्ल किया तब भी राष्ट्रपति हो ने फ्रांसीसियों के प्रति मित्रता और क्षमा की नीति अपनायी। सन 1946 में उन्होंने एक आदेश में कहा (स्वतन्त्रता के युद्ध में लड़ते हुए) सैनिकों नागरिक सुरक्षा गार्ड, स्वयंसेवकों, अर्ध-सैनिकों तथा देश के तीनों भागों में युद्धरत देशभक्तों को डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम की सरकार की ओर से मैं हुक्म देता हूँ कि—

(1) अगर फ्रांसीसी फौजें हम पर हमला करें तो हर सम्भव हथियार से उनका मुकाबला किया जाय। सारी वियतनाम जनता को पितृभूमि की रक्षा के लिए संयुक्त होकर रहना है।

(2) हर एक विदेशी की जो हमारे बीच रह रहे हैं की जान माल की रक्षा करनी चाहिए और युद्ध-बंदियों के साथ मानवोचित व्यवहार करना चाहिए।

हो ची मिन्ह

दिसम्बर 21 1946।

प्रेसिडेण्ट हो ने 7 जनवरी, 1947 को फ्रांस की सरकार, नेशनल एसेम्बली और फ्रांसीसी जनता के नाम एक संदेश में वियतनाम की मैत्रीपूर्ण भावना को दुहराते हुए कहा था:

वियतनाम की जनता और सरकार की ओर से मैं पूरी संजीदगी के साथ यह घोषणा करता हूँ कि—

(1) वियतनाम की जनता फ्रांस और उनके लोगों के खिलाफ नहीं लड़ रही है। वियतनाम की जनता अब भी फ्रांस और फ्रांसीसियों के प्रति मित्रता और प्रशंसा की भावना रखती है। और—

(2) वियतनाम की जनता संजीदगी और समानता के आधार पर भाइयों की तरह फ्रांस की जनता के साथ सहयोग करना चाहती है।

(3) वियतनाम की जनता फ्रांसीसी यूनियन (फ्रांस के उपनिवेशों के कामनवेल्थ) का भाग बने रहकर अपनी राष्ट्रीय स्वतंत्रता और एकता बनाये रखना चाहती है।

(4) वियतनाम की जनता केवल शान्ति चाहती है। सच्ची शान्ति जिससे कि वह ईमानदार फ्रांसीसी मित्रों के सहयोग से अपने राष्ट्र का विकास एवं निर्माण कर सके।

(5) वियतनाम की जनता फ्रांस के आर्थिक व सांस्कृतिक हितों को वियतनाम में सुरक्षा की न केवल गारण्टी देती है—बल्कि दोनों देशों के हितों में उनके विकास के लिए भी प्रयत्न करेगी।

हमारे बहुत से गाँव और शहर नष्ट कर डाले गये हैं, हजारों वियतनामी स्त्रियों, बच्चे व बूढ़ों को हवाई हमलों और तोपों की मार से मौत के घाट उतार दिया गया है। बहुत-से फ्रांसीसी और वियतनामी सैनिक मारे गये हैं और घायल हुए हैं। विनाश पर विनाश फैल रहा है और खून की नदियाँ बहा दी गयी हैं। हम फ्रांस की सरकार व जनता से केवल एक माँग करते हैं—वियतनाम की आजादी और एकता की मान्यता। वियतनाम और फ्रांस की मैत्री जिन्दाबाद।

डा० हो के जीवन में एक महामानव और संत सरीखे ऊँचे विचारों का व्यक्तित्व था। जहाँ एक ओर उनका बाहरी रूप बड़ा ही सादा, कोमल दुबला-पतला तथा सहज निश्छल आश्वस्त प्रेम व आदर का भाव उत्पन्न करता था—जिस कारण वियतनाम की कोटि-कोटि जनता उन्हें प्यार से 'चाचा हो' पुकारती थी, वहीं उसी तीन-स्तान एशियाई किसान के दुबले शरीर में छुपा था एक लौह पुरुष,

फौलादी क्रान्तिकारी की वीर दुर्घर्ष आत्मा। संस्कृत की यह उक्ति कि महात्माओं का चित्त "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि" (वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होता है)—चाचा हो के चरित्र पर शत प्रतिशत सही उतरती थी।

1945-46 के बीच जबकि फ्रांसीसी सेनाओं से वियतमिन्ह की लड़ाई चल रही थी और फ्रांसीसी विदेशी फौजें तरह-तरह के अत्याचार कर रही थीं डा० हो ची मिन्ह ने अपने देशवासियों से एक अपील में कहा था :

जहां तक फ्रांसीसी युद्धबन्दियों का सवाल है हमें बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए कि वे भाग न जायें लेकिन इसके साथ ही हमें उनके प्रति उदारता से बर्ताव करना चाहिए। हमें दुनिया को विशेषकर फ्रांस की जनता को दिखा देना है कि हम केवल स्वतन्त्रता और मुक्ति के लिए लड़ रहे हैं। हम किसी से निजी शत्रुता और मनमुटाव के लिए नहीं लड़ रहे हैं।

हम सारी दुनिया को दिखा देना है कि हम (वियतनामी) लोग ऐसी बुद्धिमान जाति के लोग हैं जो कि पश्चिमी खूंख्वार हमलावरों से कहीं ज्यादा सभ्य हैं। (सितम्बर 26 1945)

5 अप्रैल, 1948 को प्रेसिडेण्ट हो ची मिन्ह ने वियतनाम की आजादी की लड़ाई में विदेशियों और जन-जीवन के शत्रुओं के लिए हानिकारक तत्त्वों के विरुद्ध संघर्ष में लगे सैनिकों, स्वयंसेवकों और देशभक्तों को बारह सुझाव नामक एक आदेश जारी किया था जिसमें छः नकारात्मक नियम थे जो कि सैनिकों को नहीं करने चाहिए और छः विधि नियम जिन्हें करना चाहिए। इस सुझाव पत्र का अन्त एक कविता से हुआ है। चाचा हो ची मिन्ह की यह एक विशेषता थी कि वे कविता से लोगों के दिलों में राज किया करते थे।

## बारह सुझाव

राष्ट्र की शक्ति का आधार जनता होती है।

आजादी की लड़ाई और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण जनता के सहयोग पर निर्भर करते हैं। इसलिए हमारे सैनिकों, सरकारी बाबुओं और राष्ट्रीय संगठनों के सभी कार्यकर्ताओं को जो ग्राम जनता के बीच रहते हैं याकि उनके सम्पर्क में आते हैं निम्न बारह सुझावों को भली प्रकार पालन करना चाहिए।

### छः नकारात्मक नियम

(1) मत करो—कोई ऐसा कर्म जिससे जनता की चीजों और उनके मकानों

का तुरगार प र यदि उसका जवाब और गला का किसी प्रकार का शांति हो।

(2) मत परीक्षा—या उधार मा कोई तथा चीज आदि माग वगना या उधार ली वस्तु न करना।

(3) मत साथा—जिन युवतियों पहाड़ों म वन आदिवासिया के घरा म (क्यादि य उस अशुभ मानते हैं)

(4) मत यान ताना।

(5) मत अपमान करा—जनता क विश्वासा और रूढ़ रिवाजा का (जसे कि पूजा क देवता के सामने लटना चूल्हे पर पाँव रखना बूढ़ा के सामने अभद्रता से बरतना आदि।)

(6) मत बोलो कठोर वचन और मत करो ऐसी बात जिससे जनता की भावनाओं को ठेस पहुंचे।

## छ विधि नियम

(1) जनता के दनिक कामों म हाथ बटाना चाहिए (जसे कि फसल काटना जगल स लकड़ियाँ ढोना पानी लाना कपड़े सीना बच्चो की देखभाल करना आदि।)

(2) जब सम्भव हो दूर गाँवा म बस लागो के लिए मण्डियो स जरूरी सामान खरीदकर ले जाना चाहिए।(जसेकि नमक तेल सूई धागा चाकू कागज पेंसिल आदि।)

(3) फुरसत के समय ग्रामीणो को सीधी-सादी रोचक छोटी-छोटी ऐसी कहानियाँ सुनानी चाहिए जिनसे 'आजादी की लड़ाई' म उनका सहयोग बढ़े लेकिन कहानियो म हमारे युद्ध-योजना के रहस्य न खुलने पायें।

(4) जनता को हमारी राष्ट्रीय लिपि और स्वास्थ्य-सफाइ के नियम पढ़ाने चाहिए।

(5) हर प्रदेश के रीति रिवाजो को समझना चाहिए ताकि उस क्षेत्र के लोगो के साथ पहले सहानुभूतिपरक वातावरण तैयार किया जा सके और फिर धीरे धीरे उनके अंधविश्वासो से छुटकारा पाने के लिए उन्हे तयार किया जा सके।

(6) जनता को इस बात का एहसास करा देना चाहिए कि तुम्हारा व्यवहार उचित है, तुम अपने कर्त्तव्य में सजग हो और अनुशासननिष्ठ हो।

## प्रेरणादायक कविता (स्मरणार्थ)

ऐसे हैं ये बारह नियम
जिनका पालन बहुत सरल'
अगर तुम्हें है प्यार वतन से
याद रहेंगे ये तुम्हें स्वयम।
जिनकी आदत एक सरीखी
वे बंध जाते एक सूत्र में।
सफलता उनके चरण चूमती
जिनकी जनता सच्ची
और सैनिक महान।

गहरी जड़ के पेड़ ही होते हैं ऊंचे, चिरजीवी
देश की जय के मूलस्तम्भ जन जन महान ॥

(अंग्रेजी से हिंदी भावानुवाद—श्याम विमल)

हिंद चीन में साम्राज्यवाद का अंत तथा वहां की जनता का उज्ज्वल भविष्य जिन्हा की साधना में हो ची मिन्ह का सारा जीवन लगा। किसान की झोपड़ी में 19 मई 1890 को मध्य वियतनाम में जिस बालक का जन्म हुआ था वही न्यूयेन थत थान्ह परिश्रम और लगन से अपने राष्ट्र और दुनिया के सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के लिए कोई 70 वर्ष निरंतर लड़ता रहा। विश्व जन क्रांति की प्रेरणा का मसीहा, कोटि-कोटि जनता का हृदय सम्राट चाचा हो अपने समय की तीन बड़ी साम्राज्यवादी शक्तियों से लड़ा—फ्रांस जापान और अमरीका। संयोग कुछ ऐसा बना कि न्यूयेन थत थान्ह को आजीवन संघर्ष करने पड़े—निजी भूख के खिलाफ, और हिंद चीन की आजादी के दुश्मनों के खिलाफ।

3 सितम्बर 1969 को जब 80 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हुआ वे डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ वियतनाम के राष्ट्रपति थे और दुनिया की सबसे बड़ी ताकत अमरीका की फौजों ने उनके देश के दक्षिणी भाग पर कब्जा किया हुआ था। उनके देश पर बमबारियां चल रही थी। हो ची मिन्ह का जीवन सफलता असफलता की सीधी-सी भाषा में नहीं आंका जा सकता। वियतनाम की आजादी की लड़ाई में उनका निबाह हुआ था और दुनिया का हर सर्वहारा उनके विशाल परिवार का सदस्य था।

[illegible] किया था।

[illegible] —(5 सितम्बर 1969) [illegible]

[illegible]

डॉ० [illegible] और [illegible] और कूटनीति का समन्वय था।

• •

# दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रसल की अपील

20वीं शताब्दी के महान दार्शनिक बर्ट्रेण्ड रसल (1872 1969) ने जून 1966 को एक अंतर्राष्ट्रीय न्याय पनल की स्थापना की जिसके समक्ष अमरीकी प्रेसिडण्ट जानसन तथा अन्य अमरीकी नेताओं पर, द्वितीय महायुद्धोपरान्त हुए नूरम्बर्ग अभियोग की तरह वियतनाम में हो रहे युद्ध-अपराधों के लिए मुकदमा चलाने की व्यवस्था की गयी। उस अवसर पर रसल ने अमरीकी जनता के नाम एक सन्देश दिया था जिसके कुछ अंश हैं

अमरीका के नागरिको ! एक ऐसा इन्सान होने के नाते जिसे स्वतन्त्रता और सामाजिक न्याय से लगाव है आपसे अपील करता हूँ। आपमें से बहुतों को यह एहसास होगा कि आपका अपना देश भी इन्हीं आदर्शों का हामी है और यह सच भी है कि अमरीका स्वयं एक क्रान्तिकारी परम्परा का देश रहा है जिसकी स्थापना मानव स्वतन्त्रता तथा सामाजिक न्याय के लिए हुई थी। अफसोस यही है कि आज उन्हीं आदर्शों की हत्या—अमरीका के कुछ थोडे से शासक कर रहे हैं।

आपको यह भली प्रकार ज्ञात नहीं है कि किस हद तक आपके देश का जीवन थोड़े से उद्योगपतियों के चंगुल में है—और जिनकी शक्ति अमरीका के दुनिया पर आर्थिक विस्तार में निहित है।

यद्यपि अमरीकी जनसंख्या विश्व का केवल 6 प्रतिशत है—इस पृथ्वी के 60 प्रतिशत से अधिक प्राकृतिक सम्पदा व स्रोतों पर इसका अधिकार है। इस ग्रह के खनिज पदार्थों तथा इसकी सम्पदा पर बहुत थोड़े से अमरीकी उद्योगपतियों ने कब्जा जमाया हुआ है। मैं चाहता हूँ कि आप अपने ही नेताओं के वक्तव्यों को भली प्रकार समझें जिनसे उन द्वारा किये गये शोषण का रहस्य खुलता है।

20 जनवरी 1950 को न्यूयार्क टाइम्स ने लिखा था

वियतनाम एक कीमती चीज है जिसके लिए बाजी खेली जा सकती है। इसके उत्तरी भाग में टीन मैंगनीज टंगस्टीन कोयला इमारती लकड़ी चावल

[illegible] और [illegible] है। [illegible]
[illegible] 100 [illegible] का [illegible]
करता था।

[illegible] अमरीका [illegible]

[illegible] दूसरी [illegible]

1953 में वियतनाम [illegible] प्रतिशत [illegible] था

अब [illegible] और [illegible] और [illegible] है—[illegible]। [illegible] है [illegible] और [illegible] है—[illegible] और [illegible] द्वारा [illegible]।

[illegible] स्पष्ट हो जाता है कि वियतनाम का [illegible] है [illegible] ने पूर्वी यूरोपीय [illegible] था। [illegible] है कि [illegible] अमरीकी [illegible] है। आखिर कि इस युद्ध का [illegible] के लिए [illegible] भयंकर [illegible] हथियारों [illegible] उन औद्योगिक [illegible] गये हैं जिनके डायरेक्टर [illegible] जनरल हैं—[illegible] की मांग [illegible] है। यह सिद्ध है कि [illegible] और [illegible] उद्योगपतियों ने अपने [illegible] के लिए [illegible] लिया है।

सत्य यह है कि वियतनामी जनता का स्वातंत्र्य संघर्ष ठीक वैसा ही है जैसा कि ब्रिटेन के विरुद्ध अमरीकी क्रांतिकारी संघर्ष था। तब 18वीं सदी में ब्रिटेन भी अमरीकी उपनिवेशों के आर्थिक व राजनीतिक जीवन पर नियंत्रण रखता था। वियतनामी संघर्ष आजादी का वैसा संघर्ष है [illegible] जर्मनी के विरुद्ध फ्रांस [illegible] यूगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों ने [illegible] और [illegible] के छापामारों ने जर्मनी के नात्सी आधिपत्य के खिलाफ लड़ा था और यही कारण है कि एक छोटा सा किसानों का देश इस धरती के सबसे अधिक शक्तिशाली-औद्योगिक देश की विशाल सेना के दांत खट्टे किये हुए है।

अमरीकी नागरिकों [illegible] कि अमरीकी सरकार [illegible] वियतनाम

की जनता पर कम निदयता म अत्याचार किये है। जहरीली गस व रासायनिक पदाथ तथा जली गसालीन व फासफारस क बमा स सम्पूण वियतनाम को नस्तो नाबूद किया जा रहा है। क्या किसी भी तक म एस विनाश का उचित ठहराया जा सकता है ? यद्यपि अमरीकी समाचार पत्र इन गसा और रासायनिक पदार्थो के बार म झूठ बालते है—इनके सही रूप और प्रभाव के बार म जा प्रमाण उप लब्ध हैं—वे वडे ही भयकर ह। नेपाम और फासफोरस बमा की आग शरीर से चिपट जाती है और तब तक जलाती है जब तक कि सारा का सारा जिस्म जल कर राख नही बन जाता। अमरीका बडे भयानक अस्त्रा का प्रयाग कर रहा है जिनम एक कहलाता है नेजी डाग—आलसी कुत्ता। इस बम म 10 000 तज छोटी छुरिया रहती है जा कि पैनी छुरी की तरह निरीह किसाना क शरीर को छोटी-छोटी घास की पत्ती की भाति काट डालती है। उत्तरी वियतनाम के एक बहु सख्यक जिले पर पिछले 13 महीना म 100 करोड स भी ज्यादा—एसी छुरिया नागरिका पर बरसायी गयी है।

अमरीकी अखबार जिसे—'वियतकाग कहते हैं वह वास्तव म बहुत म राष्ट्रीयतावादी राजनीतिक तत्त्वा का एक मिला जुला सघटन है—ठीक वसा ही जसाकि यूरोप क लाकप्रिय स्वतत्रता आन्दालन (द्वितीय महायुद्ध म नात्सी शासन के विरुद्ध) जिनम कथालिक ईसाइया म लेकर साम्यवादिया तक सभी एक साथ है। राष्ट्रीय मुक्ति आन्दालन (नशनल लिबरशन फ्रण्ट) का वियतनामी जनता का अडिग समथन प्राप्त है। इस वास्तविकता स कस कोइ आख मूद सकता है ! क्या आपका पता है कि 70 लाख वियतनामिया को कटिदार तारा क नजरबन्दी कम्पा म महीना त बन्द कर उनमे मजदूरी करवायी गयी ? क्या आपका मालूम है कि इन कम्पा म भयकर यातनाएँ दी गयी। राजनीतिज्ञा, व आदोलनकारिया सम्भ्रात नागरिका और बौद्ध भिक्षुआ की निमम हत्याएँ की गयी।—और यह सब कुछ चलता ह अमरीकी सरकार के इशारा पर ? क्या आपको पता है कि—जहरीली गसा और रसायनिक तत्त्वा के छिडकाव स जो पिछले पाँच साला स निरतर किया जाता रहा है—वहा क ग्रामीणा म अधापन लकवा और स्नायविक निश्चित मौत की विभीषिका छा गयी ह ? कल्पना कीजिये उस दुदशा की जबकि कोई विदेशी सेना आपके देश पर 12 साला से अधिकार जमाये हो और बराबर अमरीका की धरती पर गोले बरसा रही हा ? तब आपका कसा लगेगा— अगर कोई विदेशी आपके न्यूयाक शिकागा लास एजलिस सेण्ट लुईस नगरा पर फास्फारस तथा लेजी डाग बमा की भयकर बमबारी से छिड़ा डाले ? तब आप क्या करेंगे यदि वह विदेशी सेना आपके हर गाव-कस्बे म घुसकर जहरीली गसा व रासायनिक तत्त्वो का छिडकाव ? क्या आप सचमुच यह मानते हैं कि अमरीकी जनता एसे अत्याचारी आक्राताओ का स्वागत

करेगी ?

सच्चाई यह है कि दुनिया के सारे [illegible] अमरीकी [illegible] को बदनाम किया है? उन्होंने गद्दार और लुटेरे पैदा किए हैं [illegible] अधिक [illegible] हित प्रजातन्त्र है। इस अमरीकी शासक वर्ग की सभी [illegible] का [illegible] करने को तैयार है जो कि [illegible] और आक्रमण के विरुद्ध [illegible] का दुस्साहस करते हैं।

## अमरीकी सुरक्षा विभाग

अमरीका ने वियतनाम के विरुद्ध युद्ध छेड़ा—और उसमें पराजय उठाई। 10 वर्षों तक चलने वाले वियतनाम के विनाश कार्य में जिस तरह रुपया उड़ाया गया—उस समय अमरीकी रक्षा विभाग [illegible] डालर (160 बिलियन डालर) की सम्पत्ति का मालिक था। अब उसकी सम्पत्ति दुगनी हो गयी है। अमरीकी रक्षा विभाग दुनिया का सबसे बड़ा मालिक है। अमरीका में 3 0,000 लाख एकड़ भूमि पर उसका अधिकार है और विदेशों में और अधिक जमीनों पर। हर डालर का 75 सेंट अमरीका के भावी युद्ध तथा भावी युद्धोन्मुख योजनाओं पर खर्च करता है। अमरीका का [illegible] अधिकारियों का असर इतना बढ़ गया है जिससे कि राष्ट्रपति आइजनहावर को आखिर चेतावनी देनी पड़ी कि [illegible] सीमा तक पहुँच गई है कि आज अमरीकी जन जीवन के हर पहलू पर उसका प्रभाव है। कौन सी सबसे बड़ी कम्पनियाँ हैं—यू० एस० स्टील, बैथलेहेम स्टील, [illegible] अमरीकन टेलिफोन एण्ड टेलिग्राफ कम्पनी, जनरल मोटर्स तथा जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी। पेंटागन इन सब कम्पनियों की सम्पत्ति का [illegible]—उनसे चार गुना मूलधन का स्वामी है। इन सब कम्पनियों में जितने लोग काम करते हैं उससे तीन गुना अधिक को पेंटागन नौकरी देता है। रक्षा विभाग अरबों के ठेके देता है और अमरीकी उद्योग का एक बड़ा भाग सेना के ठेकों से चलता है। सन 1960 तक 21 अरब डालर फौजी सामान पर खर्च किए गए थे। इस विशाल धनराशि में से साढ़े सात अरब डालर 10 बड़े कारखानों में बँटे और 5 बड़े कारखानों को 1.1 अरब प्रति कम्पनी का आर्डर मिला।

इन्हीं बड़ी कम्पनियों के ऊँचे कार्यालयों (अधिशासी एक्जीक्यूटिव आफिसों) में 1400 से अधिक सैनिक अधिकारी बैठे हैं जिनमें 261 रिटायर्ड जनरल भी हैं। जनरल डायनेमिक्स कम्पनी में 187 आफिसर तथा 27 जनरल व एडमिरल तथा भूतपूर्व सेना मंत्री भी वेतन पाते हैं। तो यह हैं—अमरीका के वास्तविक शासक—जो सत्ता शक्ति सँभाले रहते हैं फिर चुनावों में आप चाहे जिसे गद्दी पर बिठा दें। हर प्रेसिडेण्ट को इस शक्तिशाली गुट की राय माननी पड़ती है। इस प्रकार अमरीकी प्रजातन्त्र निस्सार है क्योंकि जनता उन लोगों को हटा नहीं

सकती जो वास्तव म उन लोगो पर शासन करते हैं।

शक्ति के ऐसे केन्द्रीयकरण की वजह से स्वय पेंटागान तथा बडे औद्योगिक सस्थान के लिए यह अनिवाय हो जाता है कि वे शस्त्रास्त्रो के निर्माण की होड बनाये रखें। ये बडे-बडे औद्योगिक सस्थान बडे-बडे सैनिक ठेका से छोटी कम्पनिया को छोटे छोटे ठेक देती है और इस प्रकार युद्धपरक ठेका से अमरीका के हर शहर, कस्बे म उद्योग धधे चलते हैं और इस प्रकार करोडो लोगो की रोजी पर इसका असर पडता है। 40 लाख से अधिक लोग अमरीकी सेना विभाग स रोजी कमाते हैं जिनका कुल वतन एक अरब बीस करोड डालर बनता है। यह अमरीका क मोटर उद्योग (जो दुनिया म सबस बडा है) के कुल वतन व्यय का दुगना है।

इसके अतिरिक्त और चालीस लाख व्यक्ति सीधे शस्त्रास्त्रा के कारखाना मे काम करते हैं। अनेक शहरा के उद्योग धधा का 80 प्रतिशत सैनिक उत्पादन है और अमरीका के कुल राष्ट्रीय उत्पादन का 50 प्रतिशत सेना पर खच किया जाता है। इस विशाल सनिक व्यवस्था ने इस धरती पर 3 000 सनिक अड्डा का एक विशाल जाल बिछाया हुआ है। और इसका उद्देश्य केवल वही एक है जिस प्रेसिडेण्ट आइजनहावर, विदेश मन्त्रालय के सलाहकार तथा 'न्यूयाक टाइम्स' के उद्धरणा से मैं ऊपर आपको बता आया हूँ। वियतनाम स लकर डोमिनियन रिपब्लिक, मध्यपूव से कागो तक कुछ एक बड व्यापार सस्थाना क हिता को अक्षुण्ण बनाये रखना। और य वही सस्थान है जो सनिक उत्पादन के ठेको स चल रहे हैं और सेना विभाग जो स्वय अमरीकी जन-जीवन का भाग्य विधाता बना हुआ है। य ही हैं व वग और व्यक्ति जिनकी आज्ञा पर अमरीका भूखी व असहाय मानवता पर हमले करता है और उन्ह दासता म जकडता है।

## विजय सत्य की होती है

इन सबके बावजूद कि अमरीका भयानक रूपेण धनी है बावजूद इसके कि व पृथ्वी का 6 प्रतिशत होते हुए भी धरती के दो तिहाई नसर्गिक पदाथ सम्पदा स्रोता पर अधिकार जमाये हुए हैं बावजूद इसके कि दुनिया का तल रबर टगस्टन, कोबाल्ट, कच्चा लोहा तथा अन्य खनिज पदार्थों पर इनका कब्जा है बावजूद इसके कि थोडे-से अमरीकी व्यापार सस्थान दुनिया म कोटि-कोटि जनता का भूखा मारकर अरबा का मुनाफा कमा रहे हैं—इन सबके बावजूद स्वय सयुक्त राज्य अमरीका के 6 करोड 60 लाख नागरिक गरीबी की चक्की म पिस रहे हैं। अमरीका मे शहर कगालो की झुग्गिया (स्लम्स) स भरे हुए हैं। इन गरीबो पर लदा हुआ है—युद्धा के कर का भार जिनके द्वारा साम्राज्यवादी युद्ध और नग्न आक्रमण किये जाते हैं। मैं आप सबस अपील करता हूँ कि आप इसका बौद्धिक विश्लेषण करें और देखें कि किस तरह आपके चारो ओर होनेवाली दनिक

जीवन की घटनाओ का आपसी सम्बन्ध क्या है। सोचिये कि किस प्रकार इस सनिक औद्योगिक व्यवस्था ने अमरीकी जन जीवन पर हावी होकर उसकी प्रगतिवादी राष्ट्रीय व्यवस्था को एक विश्व साम्राज्य के उपकरण म बदल डाला है।

तीन महाद्वीपो की निधन जनता अमरीका की इसी विशाल सनिक व्यवस्था को, उसके औद्योगिक सस्थानो तथा उनकी गुप्तचर एजेंसियो को—अपनी भूख और कठिनाइयो का स्रोत और जन-जीवन का सबसे बडा शत्रु मानती है।

विदेशो की ऐसी सरकार जो अमरीकी सनिक सहायता पर जीवित हैं अनिवाय रूपेण रईसो जमीदारो और बडे पूजीपतियो का ही समथन करनेवाले शासन है और सच्चाई है कि ब्राजील म पेरू म वेनजुएला म थाईलण्ड म दक्षिण कोरिया म जापान म और दुनिया के हर हिस्से म यही वास्तविकता है। इसका परिणाम यह होता है कि एक राष्ट्रीय क्रान्ति को कुचलने के लिए जसा कि वियतनाम में हो रहा है अमरीका को वे ही हथकण्डे अपनाने पडते हैं जो कि जापानियो ने दक्षिण-पूर्वी एशिया म अपनाये थे। यह अक्षरश सत्य है।

दक्षिण वियतनाम म नजरबन्दी कम्पो मे 60 प्रतिशत ग्रामीण जनता को बन्द करके उनको भयकर यातनाएँ दी जाती हैं उन्ह सताया जाता है और बहुतो की सामूहिक हत्याएँ की जाती हैं। नये-नये शस्त्रास्त्रो को—जसा जेली-बम्ब आदि का प्रयोग वहा किया जा रहा है जो द्वितीय महायुद्ध म नात्सियो द्वारा इस्तेमाल किये गये किसी जघन्य हथियार से कही अधिक भयानक हैं। हालांकि यह सच है कि जिस प्रकार जमन नात्सियो ने व्यवस्थापूवक यहूदियो की जाति सहार किया था वसा अमरीकी नही कर रहे। परन्तु जमनो ने पूर्वी यूरोपीय देशो पर जस घणित जुल्म ढाये थे उन्ह अमरीकी वियतनाम म दोहरा चुके है कई हजार गुना पमाने पर और इस निपुणता से कि व कही अधिक भयानक और कही ज्यादा प्रभावशाली हैं।

## अन्तर्राष्ट्रीय सधियो की हत्या

ऐसे सभी अन्तर्राष्ट्रीय समझौतो की अवहेलना करके जिन पर अमरीकी राष्ट्रपतियो ने हस्ताक्षर किये और जिन्ह अमरीकी काग्रेस (ससद) न अनुमोदित किया जानसन की सरकार न युद्धकालीन अपराध किये है मानव जाति के खिलाफ जुल्म किये है और शान्ति की हत्या की है। जानसन शासन न य सब अपराध इसलिए किये हैं क्योंकि अमरीकी शासन का अस्तित्व वहा क पूजीवादियो द्वारा दूसरो के आर्थिक शोषण को बनाये रखने तथा दूसरो पर अमरीकी सनिक प्रभुसत्ता कायम करने के निमित्त है। सेण्ट्रल इटलिजेंस एजेंसी (सी० आई० ए०) जिसका बजट विश्व म अमरीकी दूतावासो के कुल खच का 15 गुना है अन्य देशो की सरकारो का तख्ता पलटने तथा अन्य देशो के अध्यक्षो की हत्या के षडयत्र म

लगा हुआ है। सी० आई० ए० की एसी जघन्य हरकता का उद्देश्य उन लोगो के राजनयिक सघटन तथा नेतृत्व को नष्ट करना है जोकि अमरीका के आर्थिक व राजनीतिक फन्दे से छूटने की कोशिश कर रहे हैं।

अमरीकी सनिकवाद सडे गले पूजीवाद से पथक नही किया जा सकता जिसन स्वय अमरीकी जनता को हमारे युग की भयकर निधनत के स्तर पर ला खडा किया है। और इन्ही अनिवाय कारणा से वियतनाम पर कही बडे पमाने पर बबर एव दानवीय अत्याचार किय जा रहे हैं।

## अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय

मैंने दुनिया के बुद्धिजीविया तथा प्रसिद्ध स्वतन्त्र चिन्तका से अपील करके एक ऐसे अन्तर्राष्टीय युद्ध-अपराध-न्यायालय (ट्रिब्यूनल) की स्थापना की ह जिसके सामने अमरीकी सरकार द्वारा वियतनाम म किये गये जुल्मा के प्रमाण प्रस्तुत किये जायेंगे।

आपको ध्यान होगा कि उन जमना को—जिन्होने अपनी सरकार की नीति से सहमति की थी यानि उसकी बरबूता को स्वीकारा था—युद्धकालीन अपराधा का दोषी माना गया था। जमना की इस दलील को कि उन्हे गम की भट्टिया का नजरबन्दी कम्पा का उनम दी गई यातनाआ और अगभग किय जाने का पता तो था लेकिन व उन्ह रोकने म असमथ थे—किसी न जमना को क्षमा करने का पर्याप्त कारण नही माना।

## अमरीकियो अपनी मानवीयता को याद करो

मैं आपसे एक इसान के नाते दूसर इसान से अपील करता हूँ। याद करो अपनी मानवीयता को और स्वय के आत्म-सम्मान को। वियतनामी जनता के विरुद्ध छेडा गया यह युद्ध बबरतामय है। यह दूसरा के अधिकार का हडपने की भावना स प्रेरित एक हमलावर युद्ध है। अमरीकी स्वातन्त्र्य-युद्ध के समय (1776) किसी को यह बताने की जरूरत नही थी कि वह किस उद्देश्य के लिए लड रहे हैं ना ही किसी को जबरदस्ती भरती करना पडता था और ना ही अमरीकी फौजिया को 10 000 मील दूर किसी अन्य देश की भूमि पर जाकर लडना होता था। स्वातन्त्र्य युद्ध के उन दिना म अमरीकी सनिका ने खेता और जगला म फटे टाट पहनकर अपन समय की सबसे शक्तिशाली विदेशी सेनाआ के दात खट्टे किय थे। हालांकि अमरीकी गरीब और भूखे थे—उनका मुकाबला था साम्राज्यवादी सेनाआ से जिनसे उन्होंने हर घर-द्वार पर लडाई लडी थी।

उस मुक्ति युद्ध म लडनेवाले अमरीकी क्रान्तिकारिया का अग्रेजा की साम्राज्यवादी सरकार ने आतकवादी व बगावती के फतवे दिय थे। अमरीका के

राष्ट्रीय वीरा को नायन हेल व पेटिक हेनरी सरीखा के वचना से प्रेरणा मिलती थी। "मुझे मुक्ति दो, या मौत" जसी उदात्त भावनाएँ उनकी भावना रोन थी। ठीक ऐसी ही भावनाएँ वियतनाम की जनता को अमरीकी आक्रमण व अधिकार के खिलाफ लडने मरने को प्रोत्साहित करती हैं।

वियतनाम के नायन हेल एव पेटिक हनरी अमरीकी फौजा म नही हैं। राष्ट्र भक्ति, वीरता और याय, आजादी म अटूट विश्वास—मान्यता के इन गुणा न 1776 म अमरीकी जनता को प्रेरित किया था, आज व वियतनामी जन-जीवन की प्रेरणा हैं और इसलिए वे राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के क्रान्तिकारी नतत्व म स्वतन्त्रता सग्राम म जूझ रहे हैं। और थोडे-से लोग जो न केवल वियत नामिया को बल्कि स्वय अमरीकी जनता का शोषण कर रहे हैं—अमरीका के युवको को तोपा का बारूद बनाने को तयार है।

ये अमरीकी ही हैं जोकि वियतनामिया की हत्या कर रहे है, उनके गावा पर हमले कर रहे हैं शहरा पर खेता पर कब्जा किये हुए हैं। जहरीली गसा व रासायन फला रहे हैं। वियतनाम के स्कूला व हस्पताला पर बमबारियाँ कर रहे हैं। और नृशसताओ का उद्देश्य अमरीकी पूजीवाद के मुनाफे को बनाये रखना है। अनिवाय सनिक भर्ती क आदेश वही अधिकारी देते हैं जो अपन ही लाभ हेतु बडे बडे सनिक ठेका के आडर देते है। य ही हैं वे जा बडी-बडी कम्पनिया के चौकीदार की भाँति नौजवाना को वियतनाम म लडने भेजते है—और चोरी व शोपण क मुनाफे की दौलत को सुरक्षित बनाये रखना चाहते है।

## अमरीका मे क्रान्ति की आवश्यकता

इस प्रकार आजादी व प्रजातन्त्र के लिए वास्तविक सघर्ष तो स्वय अमरीका के भीतर होना है जहाँ कि कुछ स्वार्थी वर्गों ने अमरीकी समाज को हथिया लिया है।

मुझे इसम रत्तीभर भी स देह नही कि यदि काई विदेशी कभी अमरीका पर आक्रमण कर और यन्त्रणाओ और जुल्मा का ताँता बाध दे, जैसाकि अमरीकी सरकार व सेना न वियतनाम म किया है तो अमरीका की जनता का जवाब वसा ही हागा जसाकि वियतनाम की जनता न अमरीकी सेना व सरकार के जुल्मा के खिलाफ दिया है।

## शान्ति आन्दोलन

अमरीका के शान्ति आन्दोलन ने विश्वभर म युद्ध विरोधी भावना का बनावा दिया है। व्यक्ति-स्वातन्त्र्य एव सामाजिक न्याय के प्रति अमरीकी सहानुभूति का केवलमात्र प्रतिनिधित्व इसी आन्दोलन म दिखायी देता है। स्वातन्त्र्य

युद्ध की रणभूमि तो वास्तव में स्वयं वाशिंगटन में है—जहाँ कि युद्धात्मक जुल्म करने के दोषी जॉनसन, रस्क, मैकनमारा बठे हैं—जिन्होंने अमरीका व अमरीकी जनता के नाम को बदनाम किया है। ये ही हैं वे अपराधी जिन्होंने अमरीका को उसकी जनता से छीनकर अपवित्र कर डाला है और आज दुनिया के लोगों को उस महान देश के नाम से सड़ाँध की बू आती है।

यह एक कटु सत्य है। लेकिन ऐसा सत्य है जिसका निरंतर व अटूट प्रभाव अमरीकी जन-जीवन पर पड़े बिना रह नहीं सकता। इस सच्चाई से मुँह छुपाया नहीं जा सकता। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि युद्धात्मक अपराध नहीं हो रहे कि जहरीली गैसों और रासायनिकों का इस्तेमाल नहीं हो रहा या कि यंत्रणाएँ व नेपाम से निशस्त्र निरीह स्त्री-बच्चे नहीं सताये जा रहे और कि अमरीकी सैनिक व अमरीकी बमबार वियतनाम के वीर ग्रामीणों के हजारों की संख्या में कत्ल आम नहीं कर रहे। यदि साहस के साथ तथ्यों को निरीक्षण करके अन्याय का विरोध न किया गया तो उसमें आपकी मानवता के गर्व को धक्का पहुँचेगा। अब तो केवल एक ही उपाय है अमरीकी जनता को स्वयं ही उन अत्याचारियों के चंगुल से छुटकारा पाना होगा जोकि उस महान देश की जनता के प्रतिनिधि के रूप में उसकी कीर्ति को कलुषित कर रहे हैं। आशा की किरण इसी में छुपी है कि अब अमरीकी जनता भी जाग रही है और वियतनामियों की तरह ही दृढ़ता व साहस के साथ शान्ति के समर्थन में उग्र होती जा रही है। वाटस हारलम तथा अमरीका के दक्षिणी राज्यों में काली जाति के (नीग्रो) लोगों का संघर्ष अमरीकी छात्रों का विद्रोह और इस घृणित युद्ध के प्रति आम जनता में बढ़ता हुआ रोष सम्पूर्ण मानव जाति के लिए आशा का सम्बल है। क्रूर व लालची अब और अधिक दिन अमरीकी राष्ट्र को धोखा देकर उसकी शक्ति का दुरुपयोग नहीं कर पायेंगे।

मुझे इस बात का पूरा एहसास है कि अमरीका के शासकों ने प्रोपेगण्डे के हर साधनों को प्रयोग में लाकर शासकों के गंदे रूप को तथा उनके निन्द्य व्यवहार की सच्चाइयों को अमरीकी जनता में छुपाने का भरसक प्रयत्न किया है। अब्राहम लिंकन ने इस सिद्धान्त की घोषणा की थी कि जब जनता जाग जाती है तब कोई शक्ति उसे धोखा नहीं दे सकती। मैं उन सब अमरीकनों से अपील करता हूँ जिन्हें वियतनाम में हो रहे जुल्मों का स्वयं अनुभव है—(क्योंकि वे सैनिक की हैसियत से लड़ चुके हैं)—या कि जिन्होंने अपने मित्र-सम्बन्धियों से तथ्यों को सुना है—कि यह समय है कि वे सामने आवें। विश्व के हर भाग में फैले हुए युद्ध विरोधी आन्दोलन में लग अपने भाइयों का साथ दें और सच्चाई को प्रकाश में लावें। आपका संघर्ष स्वयं अमरीका को विनाश के शस्त्रास्त्रों के निर्माण से मुक्त करना है हत्यारों और युद्ध-अपराधियों से बचाना है शोषण से मुक्ति दिलानी है और

औपनिवेशिक जन जाति के प्रति घृणा व हीन भावना से अमरीका को निमुक्त करना है। ये लोग अमरीका के जन-साधारण की ओर आस लगाये हैं कि आप उनकी कठिनाइयों को समझ सकेंगे और आप उनके संघर्ष में अपना योग स्वयं अमरीका में सुधार द्वारा व्यक्ति-स्वातन्त्र्य एवं सामाजिक न्याय की पुनः स्थापना से देंगे। अंतर्राष्ट्रीय युद्ध अपराध ट्रिब्यूनल इस संघर्ष में अमरीकी जनता के प्रयत्नों का ही एक दूसरा रूप है।

इस ट्रिब्यूनल में हम वियतनाम में किये गये अत्याचारों का खुला चिट्ठा सप्रमाण प्रस्तुत करके एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया पैदा करना चाहेंगे जिससे कि फिर कभी किसी और भूभाग में ऐसे अमानवीय कृत्य न किये जा सकें।

• •

परिशिष्ट-8

# ऐतिहासिक तिथियाँ

1450 हिन्द चीन में स्पेनिश, पुर्तगाली और यूरोपीय इसाई मिशनरियों व्यापारियों और सैनिकों का पहला आगमन।

1858 1884 फ्रांसिसी सेनाओं का हिन्द चीन पर आक्रमण कोचीन चीन, कम्बोडिया अनाम लाओस पर कब्जा।

1940 जापान का आक्रमण फ्रांस की वीची सरकार के आदेश पर स्थानीय फ्रान्सीसियो द्वारा बिना युद्ध शक्ति हस्तान्तरण शुरू के वर्षों में फ्रांसीसी अधिकारियों द्वारा जापानी शासन चलाना।

1941 वियतनामी देशभक्तों द्वारा साम्यवादी नेता हो ची मिन्ह के नेतृत्व में राष्ट्रीय कांग्रेस वियतमिन्ह की स्थापना। वियतमिन्ह की राष्ट्रीय सेना द्वारा गुरिल्ला युद्ध द्वारा जापानी शासन के खिलाफ संघर्ष।

9 अगस्त, 1945 हीरोशिमा नागासाकी पर एटम बम। जापान का बिना शर्त आत्मसमर्पण।

2 सितम्बर, 1945 डा० हो ची मिन्ह द्वारा स्वतन्त्र वियतनाम गणतन्त्र की घोषणा इण्डोनेशिया में डा० सुकर्ण द्वारा हालण्ड के विरुद्ध स्वातन्त्र्य-युद्ध।

8 मार्च 1946 फ्रांस द्वारा वियतनामी गणतन्त्र को मान्यता और फ्रान्सीसी सेनाओं के पाँच वर्षों में हटा लेने का समझौता।

नवम्बर 1946 फ्रान्स की सेनाओं द्वारा हायफाग और हनोई पर अचानक हमला फ्रान्स हिन्द चीन युद्ध का पुनरारम्भ।

6 जनवरी 1947 वियतनाम गणतन्त्र की राष्ट्रीय संसद का पहला आम चुनाव जिसमें हो ची मिन्ह की मिली-जुली राष्ट्रीय पार्टी का 300 में से 230 सीटें प्राप्त हुई।

13 फरवरी 1947 फ्रान्स के प्रधान मन्त्री पाल रमेदियर ने 6 मार्च 1946 के समझौते से मुकरने का एलान किया।

15 अगस्त, 1947 श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा भारत की स्वतन्त्रता की

घोषणा और भारत-पाकिस्तान विभाजन।

1949 चीन में माओत्से तुंग की जन क्रांति की विजय और पराजित च्यांग काई शेक का अमरीकी सहायता से फारमोसा द्वीप पर कब्जा।

1950 (क) जनवरी 1950, सोवियत संघ और चीन द्वारा लोकतन्त्र वियतनाम गणतन्त्र को मान्यता प्रदान।

(ख) स्वतन्त्र इण्डोनेशियाई गणतन्त्र की स्थापना और डा० सुकर्ण राष्ट्रपति चुने गये।

(ग) अमरीका द्वारा फ्रांस को वियतमिन्ह के विरुद्ध सैनिक सहायता की घोषणा।

(घ) जून 1950 कोरिया में गृहयुद्ध और अमरीका द्वारा सैनिक कारवाई।

27 जुलाई 1953 कोरिया में युद्ध विराम समझौता।

1954 (क) मार्च 7 12 दीयेन बीयेन फू वियतनाम में फ्रांस की सेनाओं द्वारा, वियतनामी जनरल वो न्गूयेन जियेप की फौजों के सामने आत्मसमर्पण।

(ख) मई जौलाई जेनेवा सम्मेलन लाओस, कम्बोडिया व वियतनाम का पूर्ण स्वतन्त्रता व तटस्थता की घोषणा। तथा वियतनाम में 17वीं समानान्तर रेखा पर युद्ध विराम एवं उत्तर-दक्षिण वियतनाम का 1956 के चुनाव तक अस्थायी विभाजन।

(ग) अमरीका द्वारा दक्षिण-पूर्वी एशिया सुरक्षा (सैनिक) संधि सीटो संगठन की स्थापना।

1955 (क) बांडुग इण्डोनेशिया में अफ्रीका व एशिया के स्वतन्त्र देशों का पश्चिमी उपनिवेशवाद व आपसी समस्याओं पर प्रथम अफ्रेशियाई बांडुग कान्फ्रेंस।

(ख) सी० आई० ए० (अमरीका) की सहायता से न्गो दिन्ह डियेम का वियतनाम के दक्षिण भाग का प्रेसिडेंण्ट बनना।

(ग) अमरीकी सैनिक सलाहकार सहायता ग्रुप माग द्वारा दक्षिण वियतनाम में सैनिक ट्रेनिंग शुरू।

(घ) प्रधान मंत्री डियेम द्वारा उत्तरी वियतनाम का 1956 में होने वाले चुनाव व्यवस्था सम्बन्धी वार्ता का निमंत्रण अस्वीकार।

(च) डियेम द्वारा राजा बाओ दाई को पदच्युत करके स्वयं प्रेसिडण्ट' बनने की घोषणा।

1956 प्रेसिडेंण्ट आइजनहावर और प्रेसिडेंण्ट डियेम द्वारा जेनेवा सम्मेलन में स्वीकृत चुनाव करवाने से इन्कार।

1957 मलयेशिया संघ स्वतन्त्र हुआ।

1959 (क) जन क्रान्तिकारी 'पथट लाओ' दल न लाओस म भूमि सुधार आन्दोलन छेड़ा।

(ख) दक्षिण अमरीका, क्यूबा मे जन क्रान्तिकारी शक्तियो द्वारा अमरीकी समर्थित बतीस्ता की आततायी सरकार का पतन और अमरीका म गहरी प्रतिक्रिया।

1960 20 दिसम्बर 1960 को अमरीकी उपनिवेशवाद और उसकी कठपुतली डियेम की डिक्टेटरशाही से मुक्त कराने के लिए दक्षिण वियतनामी बौद्धो समाजवादियो और साम्यवादी देशभक्तो द्वारा मिलकर एक सयुक्त राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे की स्थापना और उसके सनिक सगठन 'वियतकाग' द्वारा डियम विरोधी कारवाई।

1961 (क) भारत द्वारा पुतगालियो क शासन से गोआ दमन और दयू की मुक्ति।

(ख) वियतनाम म अमरीका द्वारा हजारो की सख्या म सनिक सलाहकार भेजना।

1963 (क) जून अक्तूबर सगाव विरोधी प्रदशन, सात बौद्ध भिक्षु विरोध प्रदशनाथ जिन्दा जले डिक्टेटर डियेम की हत्या और सगाँव शासन का पतन (नवम्बर)।

(ख) उदारवादी प्रेसिडेण्ट कनेडी की टक्सेस म हत्या कर दी गई (23 अगस्त)।

1964 (क) चीन द्वारा प्रथम सफल परमाणु परीक्षण।

(ख) फ्रास द्वारा चीन को मान्यता।

(ग) 27 अगस्त 1964 को 7वें जगी बेडे द्वारा उत्तरी वियतनाम पर हमलवार हरकत।

(घ) अमरीकी काग्रेस द्वारा टाकिन की खाडी प्रस्ताव पास कर उत्तरी वियतनाम के तथाकथित आक्रमण के प्रतिशोध पर प्रेसिडेण्ट जॉनसन को सनिक कारवाई का अधिकार।

1965 (क) 13 फरवरी 1965 अमरीका द्वारा उत्तरी वियतनाम पर भयकर बमबारी शुरू।

(ख) इण्डोनेशिया म अमरीकी सहायता प्राप्त सनिको द्वारा डा० सुकण की सरकार का पलडा पलट और करीब 5 00 000 कम्युनिस्टो और गर मुसलमानो का सना द्वारा कत्लेआम।

*(ग) चीन म लाल स्वयसेवको द्वारा माओत्से तुग क सिद्धान्तो पर* सास्कृतिक क्रान्ति आन्दोलन की शुरुआत जो 1968 तक चली।

1966 (क) हनोई हायफाँग क्षेत्र पर भयकर बमबारी।

(ख) श्रीमती इदिरा गाधी भारत की प्रधान मन्त्री बनी।

1967 (क) चीन द्वारा उज्जन बम का प्रथम सफल विस्फोट।

(ख) अमरीका द्वारा सगाँव म यूयन फान थ्यू और हवाई कमाण्डर यूयन काओ की क्रमश प्रेसिडेण्ट और वाइस प्रेसिडेण्ट पदो पर नियुक्ति।

(ग) अमरीका म युद्ध विरोधी आदालन भडक।

1968 (क) जनवरी 30 31 1968 को मुक्ति मोरचे ने टेट प्रत्याक्रमण कर 140 नगर व कस्बो को अमरीकी शासन से मुक्त कर दिखाया। सगाँव म अमरीकी दूतावास पर भी कुछ समय तक कब्जा।

(ख) 1 अप्रल को जानसन द्वारा दुबारा चुनाव न लडने और उत्तर वियतनाम पर बमबारी रोक देने की घोषणा। जनवरी 1965 स 1968 तक अमरीका ने 60 00 000 टन से अधिक बम गिराये।

(ग) 3 अप्रल उत्तर वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे द्वारा परिस म शान्ति वार्ता म भाग लेना स्वीकार।

(घ) शान्तिवादी मार्टिन लूथर किंग और राबर्ट कनेडी की अमरीका म हत्या।

1969 (क) रिचड निक्सन अमरीकी प्रेसिडण्ट चुने गये 25000 अमरीकी सनिको को घर बुलाया।

(ख) कम्बोडिया म राष्ट्रपति सिहानूक की अनुपस्थिति म उनकी लोकप्रिय तटस्थतावादी सरकार की सी० आई० ए० की सहायता से सनिक जनरलो द्वारा पलडा पलट।

(ग) वियतनाम म 1961 से जून 1969 तक अमरीका के 5586 हवाई जहाज मार गिराये गये और पेंटागान के एक वक्तव्यानुसार 1960 म 17 मई 1969 तक दक्षिण वियतनाम के 81 536 सनिक मारे गये। उत्तरी वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के 5 06 178 सनिक शहीद हुए।

1961 70 के बीच अमरीकी सना के 38 866 सनिक मारे गये 1,19 376 घायल हुए।

प्रेसिडण्ट निक्सन ने वियतनाम म सनिको को सम्बोधित कर कहा इतिहास का यह एक शानदार अध्याय है क्योकि हमने एक बहुत ही मुश्किल काम उठाया था और उसे पूरा किया है।

(घ) राष्ट्रपति हो ची मिन्ह का देहावसान (3 सितम्बर 1969) वियतनामियो ने स्वतन्त्रता युद्ध जारी रखने की प्रतिज्ञा दोहरायी।

1970 अप्रल म निक्सन द्वारा कम्बोडिया म सनिक भेजने की घोषणा। निक्सन सरकार द्वारा 1971 के मध्य तक अमरीकी सेनायें वियतनाम स हटा लेने का एलान।

1971 (क) मार्च 1971 पाकिस्तानी डिक्टेटर जनरल याह्या खां द्वारा तात्कालिक पूर्वी बंगाल में हुए प्रथम आम चुनावों में चुने गये जन-नेता मुजीबुरहमान की मांगों को ठुकराया जाना और उन्हें अज्ञात स्थान पर नजर बंद करना।

(ख) मार्च-नवम्बर 1971 पाकिस्तानी फौजों द्वारा बंगाल पर भयंकर दमन 1,00,00 000 शरणार्थियों को भारत में शरण।

(ग) बंगाल की 'मुक्तिवाहिनी' और भारतीय सेना द्वारा 3-18 दिसम्बर 1971 ढाका को कूच बंगला देश की मुक्ति घोषणा अमरीकी 7वें बेड़े के विमानवाहक पोत 'एंटरप्राइज' का वियतनाम से हटकर बंगाल की खाड़ी में प्रवेश।

1972 (क) 21 फरवरी 1972 पेकिंग में निक्सन माओ भेंट।

(ख) भारत द्वारा उत्तरी वियतनाम को पूर्ण कूटनयिक मान्यता।

(ग) अप्रैल, 1972 'राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे' द्वारा क्वांगत्री, एनलाक और कोन्तुम की मुक्ति।

(घ) 8-9 मई, मास्को में 21 मई की सरकारी वार्ता के पूर्व निक्सन द्वारा उत्तरी वियतनाम में भयंकर बमवर्षा और नाकेबन्दी।

(घ) 10 जून, 1972 अमरीकी बी 52 और जेट बमवारों ने पिछले 48 घण्टों में 500 हवाई हमला में लाल नदी के 29 महत्वपूर्ण बांधों और 32 ऊँची दीवारों को नष्ट करके मानवरचित बाढ़ों से जान माल का भयंकर नुकसान पहुँचाया है। अमरीका के कुल 390 बी 52 विशाल बमवारों में से 200 से अधिक हिंद चीन में बमबारी के लिए भेज दिए गये हैं और 1968 के टेट प्रत्याक्रमण के बाद पहली बार साइगाव की सुरक्षा के लिए उसके इर्द गिर्द 25 मील के क्षेत्र में बी 52 विमानों से बमबारियाँ की गयी।

उत्तरी वियतनाम और वियतनाम की राष्ट्रीय सेनाओं ने 6 अप्रैल से शुरू हुई बमबारी के दौरान 135 से अधिक अमरीकी विमान मार गिराये।

जुलाई, 1972

• •

(ख) श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधान मन्त्री बनीं।

1967 (क) चीन द्वारा उदजन बम का प्रथम सफल विस्फोट।

(ख) अमरीका द्वारा सगॉव म न्यूयन वान थ्यू और हवाई कमाण्डर न्यूयन काओ की क्रमश प्रेसिडेण्ट और वाइस प्रेसिडेण्ट पदों पर नियुक्ति।

(ग) अमरीका म युद्ध विरोधी आन्दोलन भड़के।

1968 (क) जनवरी 30 31 1968 को मुक्ति मोरचे न टट प्रत्याक्रमण कर 140 नगर व कस्बों को अमरीकी शासन से मुक्त कर दिखाया। सगॉव म अमरीकी दूतावास पर भी कुछ समय तक कब्जा।

(ख) 1 अप्रल का जानसन द्वारा दुबारा चुनाव न लड़न और उत्तर वियतनाम पर बमबारी रोक देन की घोषणा। 1 जनवरी 1965 स 1968 तक अमरीका न 60 00 000 टन से अधिक बम गिराये।

(ग) 3 अप्रल उत्तर वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे द्वारा पेरिस म शांति वार्ता म भाग लेना स्वीकार।

(घ) शांतिवादी मार्टिन लूथर किंग और राबट कनेडी की अमरीका म हत्या।

1969 (क) रिचड निक्सन अमरीकी प्रेसिडेण्ट चुने गये, 25000 अमरीकी सनिकों को घर बुलाया।

(ख) कम्बोडिया म राष्ट्रपति सिंहानूक की अनुपस्थिति म उनकी लोकप्रिय तटस्थतावादी सरकार की सी० आई० ए० की सहायता स सनिक जनरलों द्वारा पलटा पलट।

(ग) वियतनाम म 1961 से जून 1969 तक अमरीका क 5586 हवाई जहाज मार गिराये गये और पेंटागान के एक बक्त यानुसार 1960 से 17 मई 1969 तक दक्षिण वियतनाम के 81 536 सनिक मारे गये। उत्तरी वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के 5 06 178 सनिक शहीद हुए।

1961 70 के बीच अमरीकी सना के 38 866 सनिक मारे गये, 1,19 376 घायल हुए।

प्रेसिडेण्ट निक्सन ने वियतनाम म सनिकों को सम्बोधित कर कहा इतिहास का यह एक शानदार अध्याय है क्योंकि हमने एक बहुत ही मुश्किल काम उठाया था और उसे पूरा किया है।

(घ) राष्ट्रपति हो ची मिन्ह का देहावसान (3 सितम्बर 1969) वियतनामियों ने स्वतन्त्रता युद्ध जारी रखने की प्रतिज्ञा दोहरायी।

1970 अप्रल म निक्सन द्वारा कम्बोडिया म सनिक भेजने की घोषणा। निक्सन सरकार द्वारा 1971 के मध्य तक अमरीकी सेनायें वियतनाम स हटा लेने का एलान।

1971 (क) मार्च 1971 पाकिस्तानी डिक्टेटर जनरल याह्या खाँ द्वारा तात्कालिक पूर्वी बगाल म हुए प्रथम आम चुनावा म चुन गय जन-नेता मुजीबुरहमान की माँगा का ठुकराया जाना और उन्हे अज्ञात स्थान पर नजरबन्द करना।

(ख) मार्च-नवम्बर 1971 पाकिस्तानी फौजा द्वारा बगाल पर भयकर दमन 1 00 00 000 शरणार्थियो को भारत मे शरण।

(ग) बगाल की 'मुक्तिवाहिनी' और भारतीय सेना द्वारा 3 18 दिसम्बर 1971 ढाका को कूच बगला देश की मुक्ति घोषणा, अमरीकी 7वें बड़े के विमानवाहक पोत 'एटरप्राइज' का वियतनाम म हटकर बगाल की खाड़ी म प्रवेश।

1972 (क) 21 फरवरी, 1972 पेकिंग म निक्सन माओ भेंट।

(ख) भारत द्वारा उत्तरी वियतनाम का पूर्ण कूटनयिक मान्यता।

(ग) अप्रल, 1972 'राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे' द्वारा क्वागत्री एनलाक और कान्तुम की मुक्ति।

(घ) 8 9 मई, मास्का मे 21 मई की सरकारी वार्ता के पूर्व निक्सन द्वारा उत्तरी वियतनाम म भयकर बमवर्षा और नाकेबन्दी।

(ङ) 10 जून, 1972 अमरीकी बी 52 और जेट बमवार्का ने पिछले 48 घण्टा म 500 हवाई हमला म नाल नदी क 29 महत्त्वपूर्ण बाधा और 32 ऊँची दीवारा का नष्ट करके मानवरचित बाढ़ा म जान-माल को भयकर नुकसान पहुँचाया है। अमरीका क कुल 390 बी 52 विशाल बमवारा म स 200 से अधिक हिन्द चीन म बमबारी के लिए भेज दिय गये हैं और 1968 के टेट प्रत्याक्रमण के बाद पहली बार सगाव की सुरक्षा के लिए उसक इर्द गिर्द 25 मील क क्षेत्र म बी 52 विमाना स बमबारियाँ की गयी।

उत्तरी वियतनाम और वियतनाम की राष्ट्रीय सेनाआ न 6 अप्रल म शुरू हुइ बमबारी के दौरान 135 स अधिक अमरीकी विमान मार गिराय।

जुलाई, 1972

• •

(ख) श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रधान मन्त्री बनीं।

1967 (क) चीन द्वारा उदजन बम का प्रथम सफल विस्फोट।

(ख) अमरीका द्वारा सगोंन म न्यूयन वान थ्यू और हवाई कमाण्डर न्यूयन काओ की क्रमश प्रेसिडेण्ट और वाइस प्रेसिडेण्ट पदों पर नियुक्ति।

(ग) अमरीका म युद्ध विरोधी आदोलन भडक।

1968 (क) जनवरी 30 31 1968 को मुक्ति मोरचे ने टेट प्रत्याक्रमण कर 140 नगर व कस्बों को अमरीकी शासन से मुक्त कर दिखाया। सगोंन म अमरीकी दूतावास पर भी कुछ समय तक कब्जा।

(ख) 1 अप्रल को जानसन द्वारा दुबारा चुनाव म खडे न होने और उत्तर वियतनाम पर बमबारी रोक देने की घोषणा। 8 जनवरी 1965 स 1968 तक अमरीका न 60 00 000 टन से अधिक बम गिराये।

(ग) 3 अप्रल उत्तर वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे द्वारा पेरिस म शान्ति वार्ता म भाग लेना स्वीकार।

(घ) शान्तिवादी मार्टिन लूथर किंग और राबर्ट कनेडी की अमरीका मे हत्या।

1969 (क) रिचर्ड निक्सन अमरीकी प्रेसिडेण्ट चुने गये 25000 अमरीकी सनिकों को घर बुलाया।

(ख) कम्बोडिया म राष्ट्रपति सिंहानूक की अनुपस्थिति म उनकी लोकप्रिय तटस्थतावादी सरकार का सी० आई० ए० की सहायता से सनिक जनरलों द्वारा पलटा पलट।

(ग) वियतनाम म 1961 से जून 1969 तक अमरीका के 5586 हवाई जहाज मार गिराये गये और पेंटागान के एक वक्तव्यानुसार 1960 स 17 मई 1969 तक दक्षिण वियतनाम के 81 536 सनिक मारे गये। उत्तरी वियतनाम और राष्ट्रीय मुक्ति मोरचे के 5 06 178 सनिक शहीद हुए।

1961 70 के बीच अमरीकी सेना के 38 866 सनिक मारे गये 1,19 376 घायल हुए।

प्रेसिडण्ट निक्सन न वियतनाम म सनिकों को सम्बोधित कर कहा इतिहास का यह एक शानदार अध्याय है क्योंकि हमने एक बहुत ही मुश्किल काम उठाया था और उसे पूरा किया है।

(घ) राष्ट्रपति हो ची मिन्ह का देहावसान (3 सितम्बर, 1969) वियतनामियों न स्वतन्त्रता युद्ध जारी रखने की प्रतिज्ञा दोहरायी।

1970 अप्रल म निक्सन द्वारा कम्बोडिया म सनिक भेजने की घोषणा। निक्सन सरकार द्वारा 1971 के मध्य तक अमरीकी सेनायें वियतनाम स हटा लेने का एलान।

1971 (क) मार्च 1971 पाकिस्तानी डिक्टेटर जनरल याह्या खाँ द्वारा तात्कालिक पूर्वी बंगाल में हुए प्रथम आम चुनावों में चुने गये जन-नेता मुजीबुर्रहमान की मांगों को ठुकराया जाना और उन्हें अज्ञात स्थान पर नजरबन्द करना।

(ख) मार्च-नवम्बर 1971 पाकिस्तानी फौजों द्वारा बंगाल पर भयंकर दमन, 1,00 00 000 शरणार्थियों को भारत में शरण।

(ग) बंगाल की मुक्तिवाहिनी और भारतीय सेना द्वारा 3 18 दिसम्बर 1971 ढाका का कूच, बंगला देश की मुक्ति घोषणा, अमरीकी 7वें बेड़े के विमानवाहक यान 'एन्टरप्राइज' का वियतनाम से हटकर बंगाल की खाड़ी में प्रवेश।

1972 (क) 21 फरवरी, 1972 पेकिंग में निक्सन माओ भेंट।

(ख) मास्को द्वारा उत्तरी वियतनाम को पूर्ण कूटनयिक मान्यता।

(ग) अप्रैल, 1972 'राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा' द्वारा क्वांगती, एनलाक और कोतुम की मुक्ति।

(घ) 8 9 मई, मास्को में 21 मई की सरकारी वार्ता के पूर्व निक्सन द्वारा उत्तरी वियतनाम में भयंकर बमवर्षा और नाकेबन्दी।

(च) 10 जून 1972 अमरीकी बी 52 और जेट बमवारों ने पिछले 48 घण्टों में 500 हवाई हमलों में लाल नदी के 29 महत्वपूर्ण बांधों और 32 ऊँची दीवारों को नष्ट करके मानवरचित बाढ़ों से जान माल को भयंकर नुकसान पहुँचाया है। अमरीका के कुल 390 बी 52 विशाल बमवारों में से 200 से अधिक हिन्द चीन में बमबारी के लिए भेज दिये गये हैं और 1968 के टेट प्रत्याक्रमण के बाद पहली बार सैगाव की सुरक्षा के लिए उसके इर्द गिर्द 25 मील के क्षेत्र में बी 52 विमानों से बमबारियां की गयीं।

उत्तरी वियतनाम और वियतकांग की राष्ट्रीय सेनाओं ने 6 अप्रैल से शुरू हुई बमबारी के दौरान 135 से अधिक अमरीकी विमान मार गिराये।

जुलाई, 1972

• •

# सहायक ग्रन्थ-सूची

America *In the Name of America*

The conduct of the war in Vietnam by the armed forces of the United States as shown by published reports compared with the Laws of War binding on the United States Govt and on its citizens

With contributions by Seymour Melman and Richard Folk, (A Study commissioned and published by Clergy and Laymen Concerned about Vietnam) January 1968

**Browne, Malcolm W**

*The New Face of War* New York Bobbs Merrill 1965

**Burchett, Wilfred G**

*Vietnam Will Win* New York Monthly Review Press 1968 (A Guardian Book)

**Buss, Claude A**

*Southeast Asia And The World Today* New York Van Nostrand Reinhold Co 1958 (An Anvil Original)

**Chomsky, Noam**

*At War With Asia* New York Pantheon 1969

**Cole, Allan B**

*Conflict in Indo China and International Repercussions A Documentary History* 1945 1955 (Ithica Cornell University Press 1956)

***Cook, Fred J***

*The Warfare State* (Foreword by Bertrand Russell) New York The Macmillan Co 1964 (A Collier Books ed )

**Dellinger, David**

*Revolutionary Non Violence* Indianapolis & New York Bobbs—Merrill (An Anchor Book)

**Domhoff William G**

*Who Rules America ?* Englewood Cliffs New Jersey Prentice Hall Inc 1967 (A Spectrum Book)

**Draper, Theodore**

*Abuse of Power*—US Foreign Policy form Cuba to Vietnam London Pelican Books 1969

**Fall, Bernard B**

*The Viet Minh Regime* Rev ed New York Institute of Pacific Relations 1956

**Fal Bernard B (Ed )**

*Ho Chi Minh On Revolution* Selected writings 1920 66 New York The New American Library Inc 1968 (A Signet Book)

**Fall, Bernard B**

*Last Reflections On A War* Preface by Dorothy Fall New York Doubleday & Co 1967 (ed )

**Fulbright, William J**

*The Arrogance of Power* New York Random House 1966 (A Vintage Book)

**Great Britain**

*Further Documents relating to the Discussion of Indo China at the Geneva Conference* June 16—July 21 1954 Miscella neous No 20 (1954) Cmd 9239 (London 1954)

**Greene, Felix**

*Vietnam Vietnam* In photographs & text Palo Alto (Cali fornia) Fulton Publishing Co 1966

**Hanh Thich Nhat**

*Vietnam Lotus In A Sea of Fire* A Buddhist Proposal for Peace (Foreword by the late Father Thomas Merton) New York Hill & Wang 1967

Hersh, Seymour M

*My LAI 4* New York Random House (A Vintage Book)

Hofstadter, Richard

*The Paranoid Style in American Politics & Other Essays* New York Random House 1965 (Vintage Books)

Ho Chi Minh

*On Revolution* Selected writings 1920-66 edited with an introduction by Bernard B Fall New York The New American Library Inc 1968 (A Signet Book) (S e also Fall Bernard B )

Indo China

*The Destruction of Indo China* By the Stanford Biology Study Group Box 3724 Stanford California 94305 (paper)

Lach Donald F

*Asia in the Making of Europe* (16th Century of Discovery Vol I Book one ) Chicago University of Chicago Press 1965 (Vol I Books I 2 Vol I book one)

Lacouture Jean

*Vietnam Between Two Truces* New York Random House 1966

Myers Gustavus

*History of Bigotry in the United States* (Rev ed by Henry M Christman) New York Random House (Capricorn Book) 1960

Oglesby, Carl & (Shaull Richard)

*Containment and Change* New York The Macmillan Co 1967

Scheer Robert

*How The United States Got Involved In Vietnam* A Report to the Center for the Study of Democratic Institutions Box 4068 Santa Barbara California 1965

Sheehan Neil

Should We have War Crime Trials *The New York Times Book Review* March 28 1971

Sheehan Neil and Messrs Smith, Kenworthy and Butterfield

*The Pentagon Papers* as published by *The New York Times*

The Secret History of the Vietnam War New York Bantam Books Inc , July 1971 (A Bantam Book)

Sheinbaum Stanley K

The University on the Make (or how Michigan State University helped arm Madame Nhu) *Ramparts* Vol 4 No 12 April 1966

Snow, Edgar

*War and Peace in Vietnam* New York Marzani and Munsell 1965

Steel Ronald

*Pax Americana* The Cold war empire—how it grew and what it means New York The Viking Press 1968 (Viking Compass ed )

Swomley, John M , Jr

*American Empire* the Political Ethics of Twentieth Century Conquest New York The Macmillan Co 1970

Taylor, Telford (US Chief Counsel at Nuremberg)

*Nuremberg and Vietnam An American Tragedy* New York Bantam Books Inc May 1971 second printing

Weisberg Barry

*Ecocide In Indo China* New York Canfield Press—Harper & Row (Illustrated)

Williams William Appleman

*The Tragedy of American Diplomacy* Rev enlarged ed New York Dell Publishing Co Inc 1962 (A Delta Book)

Wise, David and Thomas B Ross

*The Invisible Government* (CIA) New York Random House Inc 1965 (A Bantam Book)

•

The Secret History of the Vietnam War New York Bantam Books Inc July 1971 (A Bantam Book)

Sheinbaum, Stanley K

The University on the Make (or how Michigan State University helped arm Madame Nhu) *Ramparts* Vol 4 No 12 April 1966

Snow, Edgar

*War and Peace in Vietnam* New York Marzani and Munsell 1965

Steel, Ronald

*Pax Americana* The Cold war empire—how it grew and what it means New York The Viking Press 1968 (Viking Compass ed )

Swomley, John M , Jr

*American Empire* the Political Ethics of Twentieth Century Conquest New York The Macmillan Co 1970

Taylor, Telford (US Chief Counsel at Nuremberg)

*Nuremberg and Vietnam An American Tragedy* New York Bantam Books Inc May 1971 second printing

Weisberg Barry

*Ecocide In Indo China* New York Canfield Press—Harper & Row (Illustrated)

Williams William Appleman

*The Tragedy of American Diplomacy* Rev enlarged ed New York Dell Publishing Co Inc 1962 (A Delta Book)

Wise David and Thomas B Ross

*The Invisible Government* (CIA) New York Random House Inc 1965 (A Bantam Book)

